श्री उत्तराध्ययन सूत्र मूळ, भाषान्तर तथा टीका.

छापी प्रसिद्ध करनार—महेता मोहनलाल दामोदर,

राजकोट—काठिआवाड.

प्रस्तावना.

घणाखरा धार्मिक सम्प्रदायोमां अमुक काळ व्यतित थतां एक एवो समय आवी लागे छे के, तेना अनुयायीओनुं स्वधर्मना मूळ उद्देश प्रति दुर्लक्ष्य थाय छे अने तेओ धर्मना मात्र बाह्याचारनेज वळगी रहे छे, एथी परिणाम ए आवे छे के मनुष्य जीवन उपर धर्मनी जे उमदा असर रहेवी जोइए ते रहती नथी, आवो समय आवे छे त्यारे केळवायेल वर्ग धर्मना ए पडछायाने तेना तरीके स्वीकारवा तरफ उदासीनता धारण करे छे, अने अशिक्षित वर्ग जे मार्ग जतो होय ते मार्गे तेने जवा दे छे, एवे वखते सामान्य जन मंडळ धर्मना अमुक आचार अने क्रियाने वळगी रहे छे खरा, परंतु परापूर्वथी चालता आवेला रीवाज अने रूढीने लइनेज तेओ तेम करे छे; जिंदगीना सत्यमार्ग दर्शक भोमिया तरीके, तत्त्वज्ञानने अभावे, धर्मनो तेओ उपयोग करी शकता नथी.

घणाखरा धर्म अने पंथनी अत्यारे आवी स्थिति जोवामां आवे छे, जैन धर्मनी सांप्रत स्थिति पण ए प्रवाहना वेगने मळती छे, जैन माबापने पेटे जन्मेला केटलाक केळवायेला युवानो जडवादना संस्कारोने लइ, स्वधर्मने तत्त्वने बदले पडछायारूप माने छे, तेओ पोते एम समजे छे अने अन्यने पण समजावे छे के मनुष्य जीवनमां धर्म जेवी वस्तुनी कशी जरूर नथी, एटलुंज नहिंपण धर्म जेवो अने नमानी शकाय एवी कल्पनाओनुं संग्रहस्थान छे अने तेथी ते नुकशानकारक छे, अने आपणने आगळ वधतां अटकाववामां ते कंटक समान छे, अर्थात धर्मने तेओ एक दर्दरूप माने छे अने ए दर्दथी मुक्त थवाने पोते प्रयत्न करे छे अने अन्यने प्रयत्नशील थवा उपदेश करे छे.

केळवायेला वर्गने धर्म तरफ आवो अणगमो शाथी उत्पन्न थयो हशे अने ए गेरसमज केम दूर थाय ए प्रश्नो अति महत्वना छे धर्मने नामे मात्र बाह्याचार पाळनारा अने अमुक अमुक क्रिया करनारा मनुष्योना विचार, वाणी अने कर्ममां परस्पर विरुद्धता मात्र जोइनेज तेओ एम मानवाने उतावळ करे छे के धर्म मनुष्यने उन्नतिना मार्गे चढाववाने अशक्त छे.

बीजु कारण ए जणाय छे के ऐहिक सुख एज जिंदगीनुं सार्थक मनावा लाग्यु छे अने संसार-विषय-वासनानी तृप्ति साधवान तन, मननी तमाम शक्तिओनो उपयोग पण एज मार्गे थतो जणाय छे, स्वधर्मनी अज्ञानता अने पाश्चात्य प्रजाना रीत-रीवाज अने रहेणी-करेणीना अनुकरणनु ए परिणाम छे एम कहीए तो खोटु नथी.

टूंक अने शाळामा अपाती केळवणीमांथी धार्मिक शिक्षणनो बहिष्कार अने प्रचलित भाषामां धर्म-पुस्तकोना भाषान्तरोनो अभाव ए पण धर्मनी अवनतिना अन्य कारणो छे.

ए गेर समज दूर करवाने ज्ञाननो प्रसार एज मात्र एक उपाय छे. जीवदया याने प्राणी मात्र प्रति भ्रातृभाव उपर रचायेला जैन धर्मनो पायो अति ऊडो अने सुदृढ छे. आत्मवत् जगतने जोनार प्राणी समजे छे के सकळ सृष्टि एकज शरीर रुप छे अने तेमां रमतां प्राणीओ तेना अवयव रुप छे, अने तेथी तेमाना एकाद अवयवने इजा करता आखा शरीरने व्यथा पहोंचे छे अने तेना परिणाम तमाम अवयवोने भोगववा पडे छे धर्मनो आवो प्रौढ अने उच्च सिद्धान्त होवा छतां जैन कुळमां जन्मेल तरीके ओळखावनार केटलाकनु वर्तन एथी विपरित जोवामां आवे छे तेनु कारण शु? कारण मानी लीधेलो स्वार्थ अने अज्ञानता. आपणे हाथे थती प्रत्येक भूल, अपराध अने पापनु मूळ तपासीशु तो स्वार्थ सिवाय बीजु भाग्येज हशे. अने ए स्वार्थ बुद्धिनु उत्पति स्थान अज्ञानताज छे. तेटलाज माटे जैनधर्मना पुस्तकोमा फरमाव्यु छे के प्रथम ज्ञान अने पछी दया. ऊडो विचार करी जोवाथी जणाशे के अन्यना भोगे पोतानो स्वार्थ साधनार अज्ञानी पामर प्राणीज हशे. अर्थात ते स्वार्थ-परायण छे कारण के ते अज्ञान छे.

विचार ए एक प्रबळ शक्ति छे. वाणी अने कर्म एतो मात्र विचार वृक्षनी शाखाओ छे प्राणी मात्र तरफ प्रेमभावना विचार वृक्षने प्रेमना, अने द्वेषभावना विचार वृक्षने द्वेषना फळ लागे ए कुदरतना निर्विकल्प नियम छे. तेटला माटे काम, क्रोध, लोभ, मोह मदादिने विचारमा पण स्थान आपवु ए केवळ अज्ञानी मनुष्यनु काम छे पशु पक्षीओ तरफ दर्शावेलो प्रेमभाव पण व्यर्थ नथी जतो, तो पछी मनुष्य तरफनो ए भाव निरर्थक नज जाय ए वात स्वतः सिद्ध छे अने सुख अने शान्तिनो एज साचो मार्ग छे अने जैन धर्मनी पण एज प्ररुपणा छे.

नवा आवा विचारोने लइने ज्ञानना प्रसार अर्थे सूत्रना भाषान्तर करवानुं कार्य हाथ धर्यु छे श्री उत्तराध्ययन सूत्र मूळ सूत्रोमा प्रथम पद भोगवे छे. तेनो उद्देश दाखला दलीलोथी कर्त्तव्यनु ज्ञान आपवानो, संसारना भय अने लालचोथी चेतावनाने अने जैन धर्मना मुख्य सिद्धान्तो समजाववानो छे. तेमां अन्य मत मतान्तरोनु स्पष्टीकरण अने खडन पण कोइ कोइ स्थळे करेलु छे. जीव दया उपर रचायेला जैन धर्मनो प्रथम अने मुख्य हेतु जीव-अजीवना भेद समजाववानो होवो जोइए अने तेथी छेल्ला एटले छत्रीसमा अध्ययनमा जीव-अजीवना भेदनुं वर्णन विस्तार अने स्पष्टताथी करवामा आवेलु छे

समर्थ विद्वानोए पोताना अपूर्व ज्ञान अने व्होळा अनुभवने परिणामे निष्पक्षपात बुद्धिथी, सर्वानुमते एकत्र थइ जे सूत्रो, स्मरण स्थानपरथी आपणा माटे पानापर लखवा श्रम कर्यो ते सूत्रोनो सुरम्य प्रकाश, शब्दोद्वारा प्रदर्शीत करवानु काम सहेलु नथी. परमात्माना वास्तव स्वरुपनी झाखी निर्दोष शब्दो अने रसात्मक वाक्यो वडे सूत्रोमां घणी सरळताथी करावावामा आवी छे. ए चमत्कृति मात्र अनुभव गम्यज छे. शब्दोथी तेनु सपूर्ण वर्णन कोइथी कदि थइ शकेज नहि तेमाथी ज्ञानामृतना कीरणो स्फुरे छे- बोधामृतना झरा तेमाथी उछळे छे वाचता के साभळताज अलौकिक असर उत्पन्न थवा माडे छे. फीलसुफीना संगीन तत्वोथी ते भरपुर छे. तेनो 'दिव्यनाद' श्रवण करवा अने 'मर्म वाक्यो' समजवानो आपणो प्रयास, ए शुभ भविष्यनु सूचन छे. जैन तरीकेनु जीवन गाळवा माटे, सूत्रो ए कीमती कायदाओ छे. जे महाप्रभुना एक अक्षर मात्रथी अनेक अमूल्य शिक्षाओना प्रवाह छुटे छे, तेवी शिखामणोना सग्रह भंडार रुप आवा उपयोगी पुस्तकोनु ज्ञान स्वधर्मी बन्धुओमां प्रसारवु, ए उत्तम सघ भक्ति छे- ए उत्तम अमूल्य प्रभावना छे- ज्ञानावर्णीय कर्मनो क्षय करवानी ए अचुक औषधी छे

वर्तमान जैन शासन प्रवर्चक महाप्रभु श्री महावीर स्वामी-चरम तीर्थकरनी चरम प्रसादि रुप श्री उत्तराध्ययन सूत्र विशेष उपकारी अने विशेष चमत्कारी मनाय छे. आयुष्यना अवशेष छेल्ला बे दिवसो गुजराती आशो वद १४-०)) बे उपवास-छठना तपमां श्रीवीरभगवाने ५५ पुण्य फळना अने ५५ पाप फळना विपाक, ते समये एकठा थयेला विद्वान् मुनी, राजा माहाराजाओना

प्रश्नोना उत्तर रूपे फरमाव्या बाद, अनुयायीओना उपकारार्थे वगर * पुछ्ये आ सूत्रना ३६ अध्ययनो फरमाववानी कृपा करी. जे पगरूपी नररत्न पासे, इंद्रभूति प्रमुख चौदहजार मुनि, चंदन बाला प्रमुख छत्रीस हजार साध्वि, शंखजी, शतकजी प्रमुख एक लाख ओगणसाठ हजार श्रावक, सुलसा अने रेवती प्रमुख त्रण लाख ने अढार हजार श्राविका, सातसें केवलज्ञानी, सातसें वैक्रीय लब्धि धारी, तेरसें अवधि ज्ञानी, पाचसें मनः पर्यव ज्ञानी, त्रणसें चौद पूर्वधारी, वीगेरे परिवार हतो, ते प्रभुश्रीना, छेवटना शब्दो केवा अमरकारक होय तेनो ख्याल वाचको पोतेज करी शके एक साधारण संसारी पण, मृत्यु समये पोता पासे गुप्त राखेलु द्रव्य तथा बाकी रहेलु ज्ञान पुत्रो वीगेरे ने आपे छे अने साधारण वातो करतां अतनी शिक्षाओ संसारीनी पण वधारे उपयोगी अने महत्वनी होय छे, तो परम उपकारी अने सर्व प्राणीओने पोता समान गणनारा प्रभुश्रीना अतना उद्गारो अवर्णनीय, अलौकिक होय तेमां आश्चर्य नथी. आ सूत्र आवा उद्गारोना अपूर्व संग्रह रूप छे. ते श्री संघना चारे अंग साधु-साध्वि-श्रावक श्राविकाओने बोधक अने एक सरखु उपयोगी छे.

पाश्चात्य प्रसिद्ध जैन शास्त्राभ्यासीओ प्रोफेसर जेकोबी, कोल्ब्रुक, बुहलर, लेसन, वेबर, बार्थ, विल्सन वीगेरे जेओ परधर्मी छतां, जैन सूत्रोनी स्याद्वाद वाणीपर आटला बधा आग्रहथी वळग्या छे, ते अपूर्व ज्ञान मृतथी आत्माने शान्त करवामां, छता साधने, आपणे जैनो जो आळस करीए तो, पाकी बोरडी नीचे सुता छतां पासेज पडेला बोर माटे अन्यनी मदद मागवा, जेवी निर्माल्य अने हास्य जनक दयामणी स्थितिना भोगवो नहि थइ पडीए, ए वात आपणे खास विचारवी जोइए.

सूत्रोनी भाषा आपणामांना घणां, ते भाषाना खास अभ्यासने अभावे, वांची समजी न शकता होवाथी, तेनो जोइए तेवो लाभ लेवातो नथी अने अमूल्य शीखामणोना भंडारथी अज्ञान रहेवु पडे छे अशुद्ध गुजराती भाषामां आ उपयोगी सूत्रोनी टीकाओ छे. छतां सरळ स्वभाषामां तेनां भाषांतर थवानी जरूरीयात विषे श्री श्वेतांबर कोन्फरन्स अने विद्वान श्रावको ठराव करीनेज बेसी नहि

* षट्त्रिंशतम प्रश्न व्याकरणान्य भिधाय च । प्रधानं नाम यध्यनं जगद्गुरु र भावयत । स्वामिनो मोक्ष समय विज्ञापन कृपतः ।

रहेता, तेनो अमल तुरतमां थयेलो जोवा इच्छे छे. पण सूत्रोना भाषान्तरथी श्रावक वर्ग माहित थाय ए केटलाक शिथिलाचारीने भयरुप लागे छे अने अनेक विघ्नो नांखे छे. वर्तमान समय आवी अडचणो तरफ लक्ष आपे एम नथी.

देरावासी प्रसिद्ध घणुए घणा सूत्रो छपाव्या छे. जाणीता जैन बुकसेलर श्रावक भीमसींह माणेके ते परथी केटलाक सूत्रो छपाव्या छे. पण तेमां लखाण विशेष छे अने भाषा वर्तमान समयने अनुसरती सरल नथी. स्थानकवासी विद्वान् डोक्टर जीवराज घेलाभाइ, एल. एम. एन्ड एस. एमणे जर्मनीना प्रो. हर्मन जेकोबीनी सलाह लइ श्री दशवैकालिक अने श्री उत्तराध्ययनजी सूत्रोनां भाषान्तर प्रसिद्ध करेल छे अने हजी बीजा सूत्रो माटे तेनो स्तुत्य प्रयास चालुज राख्यो छे. देरावासी प्रो. रवजी देवराज तथा मोरवीना स्था. जैन स्कोल्रोए मळी उपयोगी प्रथम अंग श्री आचारांगजी सूत्रनुं भाषान्तर प्रसिद्ध करेल तेनी प्रथमावृत्तिनी तमाम नकलो खलास थतां बीजी आवृत्ति छपाववी पडी. आ बधी बीनाथी साबीत थाय छे के अनुयायीओ आ अगत्यता स्वीकारी उत्तेजन आपवा तैयार छे. आवी आशाए अमारो उत्साह टकावी राख्यो छे. श्री प्रश्न व्याकरण सूत्रमां पण परम उपकारी भगवान आवा उपयोगी सूत्रोना अर्थो समजी शीखवानु खास फरमान करी गया छे.

उक्त सूत्रनु भाषान्तर करवामां कलकत्ता आवृत्ति अने ते उपर श्री लक्ष्मीवल्लभनी टीका संस्कृतमां करायेली, भावविजयी अने शान्त वैताली टीकाओ तथा प्रो. हर्मन जेकोबीकृत अंग्रेजी भाषान्तर उपर खास आधार राखवामां आवेलो छे. ए बन्नेनी वच्चे ज्यां ज्यां गाथा अथवा अर्थमां तफावत जणायो त्यां त्यां विद्वान साधु मुनिराजनो अने अन्य आवृत्तिओनो आश्रय लइ शक्ति अनुसार स्पष्टीकरण कर्युं छे, अने पृष्ठने तळीये ते संबंधे खुलासो कर्यो छे. उपरांत अल्पज्ञान ने अवकाश मल्यो त्यां सुधी फुटनोटमां समज आपेली छे. मूळ पाठ तमाम प्रतोनो मळतो नथी. ह्रस्व दीर्घ दोष थवाना आ सबळ कारणो छे. शा. १६१२ नी माळवानी प्रत तथा बीजी हस्त लीखित प्रतो साथे मूळ पाठ मेळववा प्रयास कर्यो छे छतां अमने भीति छे के आ पुस्तक ते दोषथी मुक्त रही शक्युं नथी.

सूत्र मळवानां ठेकाणां :—

राजकोट—प्रसिद्ध कर्त्ता महेता मोहनलाल दामोदर.

अमदावाद—शा. गालाभाइ छगनलाल, ठे:—फीका भटनी पोळ.

" —शा. त्रीभोवनदास रुगनाथदास, ठे:—आका शेठ कुआनी पोळ

मोरबी—सघवी अभेचंद वृजपाळ, जैन लाइब्रेरीना सेक्रेटरी.

महेता मोहनलाल दामोदरे 'श्री राजकोट प्रिन्टिंग प्रेस'मां छापी प्रसिद्ध कर्युं-राजकोट.

॥ ॐ असिआउसाय नमः ॥

श्री उत्तराध्ययन सूत्र मूळ, भाषान्तर तथा टीका.

अध्ययन १. *विनय

संजोगा विप्प मुक्कस्स अणगारस्स भिक्खूणो । विणयं पाउ करिस्सामि आणुपुव्वि सुणेह मे ॥ १ ॥

आणा निद्दे स करे गुरूण मुववाय कारए इंगिया गार सपन्ने सेविणीएत्ति वुच्चई ॥ २ ॥

जेणे बाह्य संयोगो[१] (धन, धान्य, पुत्र, कलत्रादि) तथा अभ्यतर सयोगो [मिथ्यात्व, क्रोध, मान, माया, लोभ वगेरे]नो त्याग करेलो छे, एवा घर रहित साधुनो विनय अनुक्रमे प्रकट करु छु ते सांभळो.[१]. गुरुनी आज्ञा प्रमाण करनार, गुरुनी वृत्ति अने चेष्टा[२]ना जाणपणा सहित, गुरुनी दृष्टि अने वचनने विषे रहेला कार्यनो करनार शिष्य विनित कहेवाय. [२].

---

* विनयथी मोक्ष मार्ग सधाय छे, जैन धर्म, विनय मूल छे:—वीगेरे कारणोथी विनयने अत्र प्राधान्य आपेलछे. अन्य सूत्रोमां पण विनयने अधिक अगत्य आपवामा आवी छे. " विणओसासणेमूलं, विणओ निव्वाणसाहगो, विणयाओविप्पमुक्कस्स कओधम्मोकओतवो. विणयाओनाण नाणाओदसणचरणेहिं " वीगेरे घणां प्रमाणो अनुमोदन माटे मळी शके छे. १. सयोगनो खुल्लो अर्थ परिग्रह छे. २. प्रोफेसर हर्मन जेकोबी आ गाथानो अर्थ करे छे के:—"A monk who,on receiving an order from his superior, walks upto him watching his nods and motions, is called well-behaved"

आणा निद्दे स करे गुरूग मणुववाय कारए। पडिणीए असंवु हे अविणीएत्ति वुच्चइ ॥३॥ जहा सुणी पुइ कन्नी निक्कसिज्जई सव्वसो । एव दुस्सील पडिणीए मुहरी निक्कसिज्जई ॥४॥ कण कुडग चइत्ताण विठ भुजइ सूयरे । एव सिल चइत्ताण दुस्सीले रमई मिए ॥५॥ सुणिया भाव साणस्स सूयरस्स नरस्सय । विणए ठविज्ज अप्पाग इच्छंतो हिय मप्पणो ॥ ६ ॥ तम्हा विणय मेसेज्जा सील पडि लभेज्जओ । बुद्ध पुत्त नियागट्ठी ननिक्कमिज्जई कन्हुइ ॥ ७ ॥

गुरुनी आज्ञा प्रमाणे न वर्ते, गुरुथी दूर वेसी रहे, गुरुना काम न करे, गुरुना प्रत्यनीक वेरी सरखो होय अने तत्वनो अजाण होय ते शिष्य अविनित[1] कहेवाय. [३]. जेम कोहेला [रुधिर वहेता] कानवाळी कुतरीने ज्या जाय त्याथी काढी मूकवामा आवे छे, तेम भूडा आचारवाळा, गुरुना प्रत्यनीक[2] वेरी सरखा, अने असम्बन्ध भाषि[3] शिष्यने [गच्छथी] काढी मूकवो जोइए. [४]. जेम सूकर [डुक्कर] अन्न कुड छांडीने विष्टा भोगवे छे, तेम पशु जेवो अविनित शिष्य भला आचार छांडीने भूडा आचारने विषे प्रवर्ते छे. [५]. श्वान अने सूकरनी साथे अविनित मनुष्यनी सरखामणीनुं आ दृष्टात सांभळीने, जे कोइ पोताना आत्मानुं हित इच्छतो होय तेणे विनयने विषे दृढ थवु जोइए. [६]. तेटला माटे तु विनय कर जेथी तु भलो आचार पामीश. मोक्षार्थी[4] बुद्धपुत्र[5] [विनित शिष्य]ने गच्छादिकथी कोइ काढी मूकतु नथी [७].

---

१. अविनीत अर्थ समजाववा टीकाकारे कूटवालुनु दृष्टात आपेलु छे. २. पडिणीये=Insubordinate ३. Talkative =वातोडीओ. ४. 'नियागट्ठी' हमेशा 'मोक्षार्थी'ना भावार्थमा वपराय छे, तेथी प्रोफेसर जकोबी ते माटे Who desires liberation लखे छे, परन्तु अहि तथा २० मी गाथामा 'नियोग' तेना सामान्य अर्थ "आज्ञा order" मा वपरायो जणाय छे, तेथी 'मोक्षार्थी'ने बदले 'आज्ञार्थी' [He who waits for an order] लइए तो पण वध बेसतु थशे. ५. अहिं बुद्ध, आचार्य–गुरुना अर्थमा छे. बुद्ध पुत्र एटले गुरु पुत्र–शिष्य.

निसते सिया मुहरी बुद्धाण अतिए सया । अठ जुत्ताणि सिक्खेज्जा निरठ्ठाणिउ वज्जए ॥ ८ ॥अणुसासिउ न कुप्पिज्जा[1] खति सेविज्ज[2] पडिए । खुडेहिं सहससग्गिं हास कीडंच वज्जए ॥९॥ माय चडालिय कासी बहुय माय आलवे। कालेण य अहिज्जित्ता तओ झाइज्ज एगओ[3] ॥१०॥ आहच्च चडालिय कट्टु ननिन्हविज्ज कयाइवि । कड कडित्ति भासिज्जा अकड नोकडित्तिय ॥ ११ ॥

१ पाठांतरे 'कुप्पेज्जा' छे. २. केटलीक मतोमा 'सेवेज्ज' छे. ३. केटलीक मतोमा 'एकओ' छे

आचार्यनी समीपे सदा शान्त (क्रोध रहित) थवु; वाचाळ थवु नहि, सिद्धान्त वाक्यो (ज्ञान तत्व)नुं ज्ञान मेळववु अने *निरर्थक शास्त्र [स्त्री लक्षणादि दर्शक कोकशास्त्र, ज्योतिष, वैद्यक वगेरे]नो त्याग करवो. (८) [सूत्रार्थ शीखता गुरु] कठण वचने शिखामण दे त्यारे डाह्या शिष्ये कोप न करवो पण क्षमा राखवी. क्षुद्र मनुष्यनी साथे संसर्ग, हास्य, क्रीडा वगेरे त्यागवु (९). नीच[2]कर्म अने मिथ्या भाषण करवु नहि, पण सिद्धान्त भणीने एकान्तमा धर्म ध्यान करवुं [१०]. कदाचित (क्रोधने लीधे) काइ दुष्कृत्य थइ जाय तो ते छूपाववुं नहि, पण जो कर्यु होय तो एम कहेवु के 'में ते कर्यु छे', न कर्यु होय तो एम कहेवु के 'में ते कर्यु नथी. [११].

* समार त्यागी साधुओने संयम मार्गमा बाध करनारा होवाथी, तेमने ते तद्दन [Worthless] निरर्थक छे, त्यागवा योग्य छे. १. बालक तथा पासत्यादिक-प्रोफेसर हर्मन जेकोबी ते आवी गाथानो एवो अर्थ करे छे के :—"When reprimanded, a wise man should not be angry, but he should be of a forbearing mood, he should not associate, laugh, and play with mean man" २. चडालिय-क्रोधादिक-निचकर्म.

मा गलियस्सेव कसं वयण मिच्छेपुणो पुणो । कसंव दट्टु माइन्ने पावगं परिवज्जाए ॥ १२ ॥ अणासवा थूलवया कुसीला मिउंपि चंडं पकरंति सीसा। चित्ताणुया लहु दक्खोववेया पसायए तेहु दुरासयंपि॥ १३॥ नापुट्ठो वागरे किंचि पुट्ठोवा नालियं वए। कोहं असच्चं कुविज्जा [1]धारिज्जा पियमप्पियं ॥ १४ ॥ अप्पाचेव दमेयव्वो अप्पाहु खलु दुद्दमो। अप्पादंतो सुही होइ अस्सिंलोए परत्थय ॥ १५ ॥

[1] पाठांतरे 'कुवेज्जा' 'धारेज्जा' छे

अणपलोटायेलो अश्व जेम चाबुकनी राह जुए छे, तेम तेणे गुरुना आदेशनी वारवार राह जोवी नहि, पण जातवंत [पलोटायेलो] घोडो जेम चाबुक देखीने भारना भावे चाले छे, तेम विनित शिष्य गुरुनी अंग चेष्टा समजीने तेना भावे वर्ते छे अने पाप कर्मने तजे छे. [१२] गुरुनी आज्ञानो भंग करनार, दुष्ट भाषण करनार अने भूंडा आचारवाळो शिष्य, क्रोध रहित गुरुने पण क्रोध उपजावे छे, पण गुरुनी इच्छानुसार वर्तनार अने वगर कीधे कार्य करनार विनित शिष्य अति क्रोधी[1] गुरुने पण प्रसन्न करी शके छे. [१३]. पूछया विना बोलवुं नहि, अने पूछ्या पछी जूटुं बोलवुं नहि, क्रोधने [2]निष्फळ करवो अने इष्ट-अनिष्ट वचन सांभळीने ते उपर [3]रागद्वेष करवो नहि. (१४). आत्मदमन कर, कारण के आत्मदमननुं काम अति दोहिलुं छे. आत्मदमनथी आ लोके अने परलोके सुखी थवाय छे.[4] (१५).

१. अहिं टीकाकार चंद्रुद्राचार्यनी कथा आपेलीछे. २-३. टीकाकार आ ठेकाणे कुल पुत्र अने मातंगीनी कथा आपे छे. ४. आ सत्य ठसाववा टीकाकार पल्लीपती चोर अने सिंचानक हाथीनो दृष्टांत टांके छे. मनुष्य मात्रने मनन अने मुखपाठ करवा लायक आ ने गाथाओ प्रोफेसर जेकोबीना शब्दोमां स्मरीए:—" Subdue your self, for the self is difficult to subdue, if your self is subdued, you will be happy in this world and in the next Better it is

उ.अ. १, ९

वरं मे अप्पा दंतो संजमेण तवेणय । माहं परेहिं दम्मंतो बंधणेहिं वहेहिय ॥१६॥ पडिणीयंच बुद्धाणं वाया अदुव कम्मुणा । आवीवा जइवा रहस्से नेवकुज्जा कयाइवि॥१७॥न पक्खओ न पुरओ नेव किच्चाण पिट्ठओ । न जुंजे ऊरुणा ऊरु सयणे नो पडिस्सुणे ॥१८॥ नेव पल्हत्थियं कुज्जा पक्खपिंडंव संजए। पाए पसारिए वावि न चिट्ठे गुरुणंतिए॥१९॥आयरिएहिं वाहित्तो तुसिणीओ न कयाइवि । पसाय पेही नियागट्ठी उवचिट्ठे गुरुं सया ॥ २० ॥

बीजाओने हाथे रसी (राढवा)थी बंधावा करता अने लाकडीना मारथी जीतावा करता [सत्तरे भेदं] संयम अने [बारे भेदे] तपस्याथी हुं ज मारा आत्माने दमुं [जितेन्द्रिय थाउं] तो वधारे सारु'. (१६). वचने करीने अथवा कार्ये करीने जाहेरमा अथवा एकान्तमां *गुरु समीपे शत्रुभाव दर्शाववो नहि. (१७). गुरुनी साथे एक पंक्तिए बेसवुं नहि, गुरुनी अगाडी तेमज पूठे पण बेसवुं नहि, पोताना साथळे करीने गुरुना साथळने संघट्टो करवो नहि (साथळ वसाडी एम अडोअड न बेसवुं), अने पथारीमा रह्या रह्या गुरुने उत्तर आपवो नहि. [१८]. सुशिष्ये गुरुनी सामे वस्त्रवति हाथ पगनी पलांठी वाळीने अथवा पग लांबा करीने बेसवुं नहि; अथवा तो गुरुनी छेक पासे उभा रहेवुं नहि. [१९]. गुरु बोलावे त्यारे अणबोल्या रहेवुं नहि, पण मारा उपर गुरुए कृपा करी एम समजवुं. मोक्षार्थी सुशिष्ये सदाकाळ गुरुनी विनय पूर्वक सेवा करवी. (२०).

---

that I should subdue my self by self-control and penance than be subdued by others with fetters and corporal punishment "सर्व धर्मोमां आ सिद्धान्त प्रतिपादन छे अने बुद्धिने माटे जोइए तेटलां प्रमाणो मळी शके एम छे. अत्र विशेष विवेचनने अवकाश नथी.

* 'बुद्धाण' अहिं गुरु Superiorsना अर्थमां वपरायेल छे.

आलवंते लवंतेवा ननिसीइज्जा कयाइवि । चइऊण आसणं धीरो जओ जुत्त पडिस्सुणे ॥ २१ ॥ आसणगओ न 'पुच्छिज्जा नेव 'सिज्जागओ कयाइवि । आगमु क्कुडुओ संतो पुच्छिज्जा पंजलीउडो॥ २२ ॥ एवं विणय जुत्तस्स सुत्त अत्थंच तदुभयं। पुच्छमाणस्स सीसस्स वागरेज्ज जहा सुयं ॥२३॥ मुसं परिहरे भिक्खू नय ओहारिणिं वए। भासा दोस परिहरे मायंच वज्जए सया ॥२४॥ नलविज्ज पुट्ठो सावज्ज ननिरठ्ठ नमम्मय। अप्पणठ्ठा परठ्ठावा उभयस्सत रेणवा ॥२५॥

कोइ मतमां १. 'पुछेज्जा' 'सेज्जागओ' छे.

गुरु एकवार बोलावे अथवा वारंवार बोलावे, छतां अधीरा थवुं नहि. बुद्धिवंत शिष्ये आसनेथी उठीने, गुरु जे काइ आज्ञा करे, ते ध्यान अने आदर सहित पाळवी. (२१) पोताने आसने या पथारीमां बेठां बेठां (गुरुने) काइ प्रश्न पूछवो नहि, परंतु आसनेथी उठी, गुरु समीपे आवी, बे हाथ जोडीने पूछवुं (२२) उपर प्रमाणे विनय सहित शिष्य सूत्र अथवा सूत्रार्थ अथवा ए बन्ने विषे प्रश्न करे तो गुरुए पोताना गुरु पासथी सांभळ्यो होय तेवो उत्तर आपवो [२३] साधुए मृषावाद (जूठुं बोलवुं ते) तजवो, तेमज तेणे [भविष्यने माटे] निश्चयात्मक भाषा वापरवी नहि भाषा दोष परिहरवो [त्यागवो], अने दगा [माया]थी सदा दूर रहेवुं [२४] 'पोताना आत्मने अर्थे अथवा तो बीजाना आत्माने अर्थे अथवा तो विना प्रयोजने साधुए पाप वचन, अर्थ रहित वचन, या तो मार्मिक वचन भाखवुं नहि. (२५).

१. भाषा सुमति संबंधीनी आ गाथाना प्रोफेसर जकोबीए वापरेला अंग्रेजी शब्दो आ छे " He should not tell anything sinful or meaningless or hurtful, neither for his own sake nor for anybody else's, nor without such a motive "

समरेसु अगारेसु संधीसुय महापहे एगोएगि थ्थिए सद्धिं। नेव चिट्ठे न सलवे॥ २६॥जमे बुद्धाणु सासति सीएणं फरु सेणवा। ममलाभोत्ति पेहाए पयओत्त पडिसुणे ॥२७॥ अणुसासण मोवाय दुक्कडस्सय चोयण। हियत मन्नइ पन्नोवेस्सहोइ असाहुणो ॥२८॥ हियविगय भया बुद्धा फरुसपि अणुसासण। वेर.त होइ मूढाण खति सोहि करं पय ॥२९॥ आसणे उवचिट्ठिज्जा[1] अणुच्चे अकुए थिरे। अप्पुट्ठाइ निरुट्ठाइ निसीइज्ज[1] प्पकुकुए ॥३०॥

१. कोइ प्रतमा 'चिठेज्जा' 'निसीएज्ज' छे.

*लुहारादिना मकानमा, सूना घरमां, बे घर वचेनी आतरावाळी जग्यामां (नेळमा) अथवा राज्य मार्ग उपर, एकला साधुए एकली स्त्री सगाते उभा रहेवुं नहि अन तेनी साथे वात करवी नहि [२६] गुरु शीतल वचने अथवा कठोर वचने ज्ञानादि आचार शीखवे तो ए मारा पोताना लाभने अर्थे छे, एम समजी बुद्धिवंत शिष्ये गुरुनी शिक्षा प्रयास साथे प्रमाण करवी [गुरुना कठोर वाक्यो उपर क्रोध करवो नहि] (२७).गुरुनी शीक्षा, ते आपवाना रीत, अने दुष्कृत्यने माटे ठपको, बुद्धिवंत शिष्यने हितकारक लागे छे; पण कुशिष्यने ते द्वेषोत्पादक लागे छे. [२८]. तत्वनो जाण अने सप्तभय रहित साधु आचार्यनुं अनुशासन कठोर होय तो पण ते हितकारक समजे छे; पण मूर्ख साधुने गुरुनु ए शिक्षा वचन क्षमाकर अन आत्म शुद्धि करनारुं होवा छतां द्वेष कारक जणाय छे. (२९). सुशिष्ये नीचा अने निश्चळ आसन उपर बेसवु अने विना प्रयोजने उठ वेस करवी नहि, तेमज हाथ पग हलाववा नहि. [हरफर करवी नहि]. [३०].

* जेकोबी 'हजामनी दुकान' लखे छे, टीकाकार 'लुहारादिनु मकान' लखे छे. घणेनु तात्पर्य ए जणाय छे के 'एवा हलका वर्णना मकानमां'.

कालेण निक्खमे भिक्खू कालेणय पडिकमे । अकालंच विवज्जिता[1] काले कालं समायरे ॥३१॥ परिवाडिए न चिट्ठिज्जा भिक्खू दत्ते सणवरे। पडिरूवेण एसित्ता मिय कालेण भक्खए ॥३२॥ नाइदूर मणासन्ने नन्नेसिं चक्खूफासओ। एगो चिट्ठिज्ज भत्तट्ठा लंघित्ता त नइक्कमे ॥ ३३ ॥ नाइ उच्चेव नीएवा नासन्ने नाइदूरओ। फासुयं परकडं पिंडं पडिगाहिज्ज[2] संजए ॥ ३४ ॥

१. पाठांतरे 'विवज्जेता' छे. २. पाठांतरे 'पडिगाहेज' छे.

विनित शिष्ये योग्य वखते गोचरीए जवुं अने वखतसर गोचरीथी पाछा फरवु, अकाळे कांइ काम करवुं नहि. समय साचवीने योग्य काळे योग्य क्रिया आचरवी (३१). साधुए जमणवारनी पगत बेठी होय त्यां जवुं नहि, परन्तु पृथक पृथक गोचरी करवी, स्थापित थयेला नियम मुजब शुद्ध आहार व्होरी लाव्या पछी तेमाथी क्षुधा शान्त थाय[1] एटलो भाग बराबर काळे विधि पूर्वक खावो [३२]. अन्न पाणी आदि व्होरवाने अर्थे तेण ग्रहस्थने घेर साथेना साधुओथी अति दूर अथवा तो छेक नजीकमां उभा रहेवु नहि ग्रहस्थनी नजर तेनाज उपर पडे एवी रीते बीजा भिक्षुकनी आडे उभा रहेवुं नहि. अगाउथी आवी उभेला बीजा साधुने उल्लघीने तेणे आगळ थइ जवुं नहि. (३३). अन्यने अर्थे तैयार करेलो [2]प्रासुक आहार साधुए छेक अक्कडपणे पण नहि तेम बहु नीचा नमीने पण नहि, बहु दूर उभा रहीने नहि तेम छेक नजीक आवीने पण नहि—एवी स्थितिमा व्होरवो. (३४).

१. नियमसर वर्तनार साधुने, शारीरिक मानसिक सपूर्ण सुखकारी मळे छे ते आवा नियमोनेज आभारी छे. प्रोफेसर जेकोबीना शब्दोमां आपणे ते पुनः याद करीशु'—" Having begged according to the sanctioned rules, he should eat a moderate portion at the proper time " २ जीव रहित—free from living beings

अप्पपाणअप्पवीयमि पडिछन्नमि सवुडे। समय मजए भुजे जय अप्परि साडियं ॥ ३५ ॥ सुकडेत्ति सुपक्कित्ति सुछिन्ने सुहडे मडे। सुनिट्ठिए सुलट्ठेत्ति सावज्ज वज्जए मुणी ॥३६॥ रमए पडिए सास हय भद्द वबाहए। वाल समइ, सासतो गलियस्सव, वाहए ॥ ३७ ॥ खड्डुयामे, चवेडामे अक्कोसाय वहाय मे। कल्लाण मणुसासंतो पाव दिट्ठिरि मन्नई ॥३८॥ पुत्तो मे भायनाइत्ति साहु कल्लाण मन्नइ। पावदिट्ठिओ अप्पाण सासं दासित्ति मन्नई ॥३९॥

उपरथी अने चोतरफथी ढकायेली जग्याए वेसी, बीजा साधुओ सगाथे, बे इन्द्रियादिक जीव अने बीज रहीत खोराकनो आहार, जयणा अने पोताना आचार विचार प्रमाणे करवो. [३५]. सारी रीते तैयार करेलु अन्न वगेरे, सारी रीते पकवेल घेवर वगेरे, मसालादार शाक पादडुं अने अथाणु, स्वादिष्ट लाडु वगेरे, मीठा अने मसालेदार भोजन साधुए त्यागवा जोइए (३६). जेम पळोटायेला घोडाने शीखवता अश्वारने आनद उपजे छे तेम विनित शिष्यने शिक्षण आपता गुरुने आनद उपजे छे; पण अण-पळोटायेला अश्वने शीखवतां जेम अश्वारने कटाळो उपजे छे तेम अविनित शिष्यने शिक्षण आपता गुरुने खेद उपजे छे. (३७). अविनित शिष्य एम धारे छे के:–'गुरु मने टोंके छे, मारे छे, दुर्वचन कहे छे, दंड दे छे; कोटवाळ जेम बदीवानने मारे तेम मने मारे छे;' टुकामा परम हितकारी शीख देनार आचार्यने ते पाप दृष्टिवाळो [द्वेषी] माने छे. (३८). विनित शिष्य गुरुने पोताना परम हितकारी समजे छे अने माने छे के:–'गुरु मने पोताना पुत्रनी माफक, भाइनी माफक अथवा नजीकना सगानी माफक गणे छे.' पण अविनित शिष्य एम समजे छे के गुरु मने दास जेवो गणे छे.[१] [३९].

---

१. प्रोफेसर जेकोबीना शब्दो–" A good pupil has the best opinion (of his teacher), thinking that he treats him like his son or brother or a near relation, but a malevolent pupil imagines himself treated like a slave. "

अ. १.

न कोवए आयरियं अप्पाणपिनकोवए । बुद्धो वघाइ नसिया नसिया तोत्त गवेसए ॥४०॥ आयरियं कुविय नच्चा-पत्तिएण पसायए । विज्झविज्ज पजली उडो [1]वइज्ज न पुणोत्तिय॥४१॥धम्मज्जियंच ववहार बुद्धेहायरियं सया ।तमा-यरतो ववहार गरह नाभिगच्छई ॥४२॥ मणोगय वक्कगय जाणित्ताय रियस्सउ । त परिगिज्झ वायाए कम्मुणा उववायए ॥ ४३ ॥ वित्ते अचोइए निच्च खिप्प हवइ सुचोइए । जहोवइट्ठ सुकय किच्चाइ कुव्वईसया ॥ ४४ ॥ नच्चा नमइ मेहावी लोएकित्ती सेजायए । हवइ किच्चाण सरण भूयाण जगईजहा ॥४५॥

१० १. कलकत्तानी प्रतोमां 'वएज्ज' छे.

गुरुने कोपाववा नहि, तेम पोते पण कोप करवो नहि, तेमज आचार्यना छिद्र खोळीने तेना उपघाति [कृतघ्न] थवु नहि.१ [४०].आचार्यने कोपेला जोइने, तेमने विश्वास उपजे एवा वचनोथी तेमनो कोपाग्नि शान्त करवो, अने बे हाथ जोडी खमावीने एम कहेवु के 'फरीथी एवो अपराध हुं नहि करूं.'[४१] बुद्ध पुरुषोए [तत्व ज्ञानीओए]क्षमादिक गुणोए करीने जे साधु धर्म प्राप्त कर्यो छे, अने सदा पाळ्यो छे तेवो आचार पाळनारो अविनितपणाना दोषथी मुक्त थवाय छे [४२].मनोगत भावथी अथवा वचनथी गुरुनो अभिप्राय जाणी लइने गुरुनुं कार्य प्रमाण करवुं. वचने करीने कहेवु के 'हु ए काम करीश.' अने कायाये करीने ए कार्य संपूर्ण करवुं. [४३]. विनित शिष्य अणप्रेर्यो कार्य करवाने सदा तत्पर रहे छे, अथवा तो गुरुनी सूचना मुजब वगर विलंबे करे छे. गुरुए जे रीते कार्य करवानु कहयुं होय ते रीते सदा करे छे. (४४). आ विनय शिक्षा जाणीने जे बुद्धिवान साधु *[लिय आदरे छे, ते आ लोकमां कीर्ति प्राप्त करे छे, अने एवो विनयवान साधु, पृथ्वी जेम सर्व जीवना आधाररूप छे, तेम सर्व उचित कार्यना आधाररूप थइ पडे छे. (४५).

१. अहिं टीकाकार कुशिष्यनु दृष्टांत आपे छे. * नमई=नमति=शब्दार्थे Bows down

पुज्जा जरस पसीयंति सबुद्धा पुव्वसंथुया । पसन्ना लाभइस्साति विउलं अट्ठियं सुय ॥४६॥ स पुज्जसथ्थेसुविणीय ससए मणोरुइ चिट्ठइ कम्मसंपया । तवो समायारि समाहि सबुडे महज्जुई पंचवयाइपालि या ॥४७॥ सदेव गधव्व मणुस्स पूइए चइत्तु देह मलपंकपुव्वय । सिद्धेवाहवइ सासए देवेवा अप्परए महिड्ढिएत्तिबेमि ॥४८॥

❁ ॥ इति विणयनामा झयण पढम सम्मत्त ॥ १ ॥ ❁

तत्वनुं शुद्ध ज्ञान धरावनार अने प्रथमथीज विशुद्ध आचार पाळनार[१] गुरु शिष्योना विनयथी प्रसन्न थइने तेमने विस्तीर्ण अने मोक्ष उत्पादक[२] ज्ञाननो लाभ आपे छे [४६]. एवा सुशिष्यना ज्ञाननी प्रशसा थशे, तेना संदेह टळशे, ते पोताना सुकृत्योथी गुरुना अंतःकरणने आनद उपजावशे अने दश विध क्रिया [आचार] पाळीने, तप अने समाधीए करीने महाद्युति [महा तपना तेज-वाळा] समान ते साधु महा पचव्रतनो पाळणार थशे[३]. [४७]. उपरनां लक्षणोथी विभूषीत विनयी शिष्य, देव, गधर्व अने मनुष्यथी पूजाशे अने मळ मूत्रवडे भरेली आ देहथी मुक्त थया पछी ते कांतो जन्म मरण रहित सिद्ध[४] थशे अथवा तो मोटी रिद्धि अने ओछी अविद्या वाळो देवता उपजशे. [४८]. हु आम कहु छु.[५] *॥ प्रथम अध्ययन संपूर्ण ॥*

---

१. पुव्वसथुया=शब्दार्थ=पूर्व काळथी प्रसिद्ध- Already famous २.अट्ठिय=अर्थिक=मोक्षार्थी=Leading to liberation ३. आ गाथा माटे प्रोफेसर जेकोबी नीचेना शब्दो वापरे छे—"His knowledge will be honoured, his doubts will be removed, he will gladden the heart of his teacher by his good acts, kept in safety by the performance of austerities and by meditation, being as it were a great light, he will keep the five vows " ४ Liberated or perfected soul ५. त्तिबेमि=दरेक अध्ययनने अंते आ शब्दो वपराय छे, श्री सुधर्मा स्वामी, श्री जबु स्वामी प्रत्ये कही सभळावे छे.

अध्ययन २. बावीश परिसहनां स्वरुप.

सुय मे आउस तण भगवया एव मक्खाय । इह खलु बावीस परीसहा समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेईया । जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूय भिक्खायरियाए । परिव्वयतो पुट्ठो नो [1]विहन्निज्जा । कयरे खलुते बावीस परीसहा समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेईया । जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूय भिक्खायरियाए परिव्वयतो पुट्ठो नो विहन्निज्जा । इमे खलुते बावीस परिसहा समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेईया । जेभिक्खू सोच्चानच्चाजिच्चा अभिभूयभिक्खायरियाए परिव्वयतो पुट्ठो नो विहन्निज्जा । तझहा[2] ।

१. कोइ मतोमां 'विहन्नेज्जा' छे २. केटलीक मतोमां आ शब्द नथी.

हे आयुष्मन जंबु[2] ! में ([1]सुधर्मा स्वामीए) श्रमण भगवंत श्री महावीर पासेथी बावीश परीसह[3] नीचे प्रमाणे सांभळ्या छे. काश्यप गोत्रमां उत्पन्न थयेला श्रमण भगवंत श्री महावीर देवे जिन शासनने विषे बावीश परीसह कह्या छे, ते भिक्षाने अर्थे विचरता साधुए शीखवा, जाणवा, जीतवा, सर्व प्रकारे सहन करवा अने तेनाथी हारी जवु नहि. ते बावीश परीसह नीचे प्रमाणे छेः—

१. सुधर्मा स्वामी—श्री महावीर भगवानना ११ मा गणधर. २. जंबु स्वामी—सुधर्मा स्वामीना शिष्य. ३ प्रोफेसर हर्मन जेकोबी परीसहनो एवो अर्थ करे छे के=That which may cause trouble to an ascetic, and which must be cheerfully borne

दिगिंछा परिसहे १ पिवासा परिसहे २ सीय परिसहे ३ उसिण परिसहे ४ दस मसय परिसहे ५ अचेल परिसहे ६ अरई परिसहे ७ इथ्थी परिसहे ८ चरिया परिसहे ९ निसीहिया परिसहे १० सिज्जा परिसहे ११ अक्कोस परिसहे १२ वह परिसहे १३ जायणा परिसहे १४ अलाभ परिसहे १५ रोग परिसहे १६ तणफास परिसहे १७ जल्ल परिसहे १८ सक्कार पुरक्कार परिसहे १९ पन्ना परिसहे २० अन्नाण परिसहे २१

(१).दिगछा [क्षुधा] परीसह. [२].पिवासा [तृषा] परीसह. [३]. सीय (शीत, टाढ) परीसह. [४]. उसिण (उष्ण, ताप) परीसह. [५]. दंस मसय [डांस, मच्छरादिना डख] परीसह. [६]. अचेल[1] (वस्त्रनी ताण) परीसह. [७]. अरइ[2] [अरति, अधीरपणुं] परीसह. (८). इत्थी [स्त्री] परीसह. (९). चर्या [भटकती जींदगी] परीसह. (१०). निसीहिया[3] (नैपेधिकी, स्वाध्याय) परीसह. (११). सिज्जा (शय्या) परीसह. [१२]. अक्कोस (आक्रोप, अशुभ वचन) परीसह. [१३]. वह [वध, मार] परीसह. [१४]. जायणा (याचना) परीसह. [१५] अलाभ (कोइ आपवानी ना पाडे ते) परीसह. [१६]. रोग [मदवाड] परीसह. [१७]. तणफास [तृण स्पर्श] परीसह. (१८). जल्ल [मळ, मेल] परीसह. [१९]. सक्कार–पुरक्कार (सत्कार–पुरस्कार, आदर–सत्कार) परीसह. (२०) पन्ना [प्रज्ञा, ज्ञान] परीसह. [२१]. अन्नाण (अज्ञान) परीसह.

१. आ शब्दनो अर्थ मो जेकोबी Nakedness करी ते फक्त जीन कल्पीने लागु पडवानु जणावे छे अने टीकाकार देवेन्द्र रत्ननी अल्पता सुचवे छे. भावार्थ एवो लेवानो छे के वस्त्रो पुरां न मळ्यां होय तो पण समता राखवी २. टीकाकार तेने माटे–संयमने विषे अधीरपणु छांडवु ए शब्दो वापरे छे त्यारे मो जेकोबी एवो अर्थ करे छे के–To be discontented with the object of control ३. Place for study–अमुक स्थळे बेसी रहेवानो भावार्थ समावेलो छे.

दंसण परिसहे २२ परीसहाणं पविभत्ती कासवेणं पवेइया । तंभे उदाहरिस्सामि आणुपुव्विं सुणे हमे॥१॥ दिगिंछा परिगए देहे तवस्सी भिक्खू थामवं । नछिंदे नछिंदावए न पये नपयावए ॥२॥ काली पव्वंगसंकासे किसे धमणि सतए । मायन्ने असण पाणस्स अदिण मण सोचरे ॥३॥ तओ पुट्ठो पिवासाए दोगुछी लज्ज सजए । सी उदग न सेविज्जा वियडस्से सण चरे ॥ ४ ॥ छिन्नावाएसु पथेसु आउरेसु प्पिवासिए । परिसुक्क मुहादीणे त तितिक्खे परिसह ॥५ ॥

[२२]. [1]दंसण [दर्शन, सम्यक्त्व] परीसह. ए बावीश परीसहनां स्वरुप काश्यपे (श्री महावीर भगवाने) मने (सुधर्मा स्वामीने) कथां छे ते हवे हु तमने [जंबु स्वामीने] अनुक्रमे समजावुं छुं. [१].* (१) शरीरने विषे क्षुधा व्यापी होय छता तप अने संयमने विषे दृढ साधुए पोते फळ वगेरे छेदवां नहि, तेमज बीजा पासे छेदाववां नहि. पोते अन्न पकववुं नहि, तेमज बीजा पासे पकाववुं नहि. (२). कागडाना पग जेवां दुर्बळ गात्र थइ गयां होय अने शरीर हाडकाना माळा जेवुं बनी गयुं होय, छता पोताना उदर पोषणने माटे अन्न पाणीनुं प्रमाण साधुए जाणवुं अने [आकुल व्याकुळ न थता] प्रसन्न मनथी संयम मार्गे प्रवर्त्तवुं.[2] (३) (२) तृषाए पीडाता छतां अनाचारनो त्यागी साधु लज्जाए करीने सचेत जळ पीतो नथी, पण अचेत पाणी मेळववानो प्रयत्न करे छे (४) वन, अटवी, आदि निर्जन रानमां तृषाथी अति पीडातो होय, म्हों सूकाइ जतुं होय, अत्यंत व्याकुळ थतो होय, छतां साधुए तृषानो परीसह सहन करवो.[3] (५)

*आ अध्ययननो आ पहेलानो भाग गद्यमां छे, त्यार पछीनो श्लोकमां छे. प्रत्येक परीसह उपर बब्बे श्लोक छे. [1]. सूत्रोना मूळ पाठमां 'दंसण' शब्द छे पण प्रो. जेकोबी 'समत्त' शब्द वापरे छे. [2]. अहिं टीकाकार हस्ति मित्र अने तेना पुत्रनुं दृष्टांत आपे छे. [3]. अहिं टीकाकार धन मित्र अने तेना पुत्रनुं दृष्टांत आपे छे.

चरत विरय लूह सीय फुसइ एगया । ना इवेल मुणी गछे [1]सुचाण जिणसासग ॥६॥ न मे निवारण अथि छवित्ताणं नविज्जई । अहतु अगिं सेवामि इइ भिख्खू नचिंतए ॥७॥ उसिण परिया वेण परिदाहेण तज्जिए । धिंसुवा परितावेण साय नो परिदेवए ॥८॥ उन्हाहि तत्तो मेहावी सिणाण नोवि पथ्थए । गाय नो परिसिचिज्जा नविएज्जाय अप्पय ॥ ९ ॥ पुठोय दंम मसएहिं समेरेव महामुणी । नागो सगाम सीसेवा सूरो अभि हणे पर ॥ १० ॥

१. कोइ मतमां ' सोच्चाणं ' छे.

३ शीत काळने विषे एक गामथी बीजे गाम जतां शरीरे टाढ वाय तो पण साधुए, जिन शासननी शिक्षा लक्षमा लइने, कवेळाए स्थानान्तर करवुं नहि. (विहार करवो नहि.) [६]. टाढ दूर करवाने माटे मारे घर नथी, शरीर ढाकवाने वस्त्र पण नथी, माटे हु अग्नि सेवुं एवो विचार पण साधुए करवो नहि.१ (७). (४) तापे करीने तपेली जमीनथी, बाग्र (परसेवो, मेल वगेरे) अने अभ्यतर [तरस वगेरे] गरमीनी थती पीडाथी, ग्रीष्म ऋतुना सूर्यना तापथी पीडावा छता, साधुए शीतळतानी वान्छना करवी नहि. [८]. तापनी अत्यत पीडा पामवा छतां मर्यादावंत साधु स्नाननी इन्छा करे नहि, शरीर उपर पाणी रेडे नहि, अथवा पन्खावति पवन नाखे नहि.२[९]. [५] डास मच्छरादिनी पीडा महान साधुए सहन करवी जोइए. जेवी रीते हाथी सग्राममे मोखरे रहीने शत्रुने हणे छे, तेम महा मुनिए क्रोधादि अभ्यंतर शत्रुने हणवा जोइए. (१०).

१. अहिं टीकाकार चार वणिक मित्रोनुं दृष्टांत टाके छे. २. अहिं टीकाकार दत्त अने भद्रानुं दृष्टात आपे छे.

नसंतसे नत्तारिज्जा[1] मणंपि नपओसए । उवेह नहणे पाणे भुंजते मंमसोणियं ॥११॥ परिजुन्नेहिं वत्थेहिं । होक्खामित्ति अचेलए । अदुवा सचेलएहोक्ख इइभिक्खु न चिंतए ॥१२॥ एगया अचेलए होइ सचेलयावि एगया। एय धम्म हियं नच्चा नाणीनोपरिदेवए ॥१३॥ गामाणुगामरीयतं अणगारअकिंचण । अरई अणुप्पवेसे ततितिक्खे परिसहं ॥१४॥ अरई पिट्ठओ किच्चा विरए आय रक्खिए । धम्मारामे निरारंभे उवसते मुणी चरे ॥ १५ ॥

१. कोई प्रतमां ' चारज्जा छे.

म, मच्छरने माय उपजाववो नहि, चटको भरता अंतराइ न करवी, तेमज मने करीने पण तेना उपर क्रोध करवो नहि. ास अने लोही तेओ खाइ जाय, छतां सर्व सहन करवुं पण तेमने हणवा नहि १ [११]. [६] ' महारां वस्त्र जीर्ण थइ , तेथी हुं वस्त्र रहित फरीश अथवा तो म्हारां फाटेला कपडां जोइने कोइ धर्मात्मा दाता मने नवां कपडां आपे तो ठीक ' विचार साधुए करवा नहि. [१२].कोइ वखत [जिन कल्पना प्रमाणे] वस्त्र रहित थइ जाय, अथवा कोइ वखत [स्थविर प्रमाणे] वस्त्र सहित होय, तो वस्त्र रहित अने वस्त्र सहितपणाना बन्ने धर्मो हितकारी जाणीने ज्ञानी साधुए खेद करवो). (७) परिग्रह रहित अणगारने गामो गाम विचरतां संयम मार्ग तरफ अधीर उत्पन्न थाय तो ते परीसह तेणे सहन) तथा साधुए आ अधीरपणु त्यागवु, अने हिंसादिकथी दूर रहीने, दुर्गतिना मार्गथी आत्माने दूर राखीने, धर्म रुपी मन विषे आनंद मानीने आरंभ रहित थइ, संपूर्ण शान्तिथी संयम मार्गने विषे विचरवु.[3] (१४).

१. अहिं श्रमण भद्रनुं दृष्टांत आपेलुं छे २ अहिं सोम देवनु दृष्टांत आपेलुं छे. ३. अहिं अपराजीतनुं दृष्टांत आपेलुं छे.

संगो एस मणुस्साण जाओ लोगंमि इत्थिओ। जस्स एया परिन्नाया सुकडं तस्स सामन्नं ॥१६॥ एवमादाय मेहावी पंकभूयाओ इत्थिओ। नो ताहिं विहन्नेज्जा चरेज्जत्तगवेसए ॥१७॥ एग एव चरे लाढे अभिभूय परीसहे। गामे वा नगरे वावि निगमे वा रायहाणिए॥ १८ ॥ असमाणो चरे भिक्खू [1]नेव कुज्जा परिग्गहं असंसत्तो गिहत्थेहिं अणिकेओ परिव्वए ॥१९॥

१. कोइ प्रतमां ' नोयकुज्जा ' छे.

[८]आ संसारमां मनुष्योने स्त्रीनी कुदरती इच्छा होय छे, ते जाणीने जे कोइ तेनो परित्याग करे छे तेज खरा श्रमण तरीके पोतानो साध्वाचार सफळ करी शके छे. (१६.) जे बुद्धिमान पुरुष स्त्रीने खुची जवाय एवा कादव समान,(मुक्ति मार्गने विषे बंधनरूप) माने छे, तेने तेनाथी काइ इजा थती नथी,पण ते आत्माना उद्धारने अर्थे धर्मानुष्ठान आचरे छे [1] (१७). (९)एकलो, राग द्वेष रहित, निर्दोष आहार उपर निर्वाह करीने, अने सघळा परीसह सहन करीने. साधुए गाम, नगर, निगम[2] अथवा राजधानीने विषे विहार करवो (१८) गृहस्थादिकथी(संसारीथी)अलग रहीने साधुए विहार करवो, परिग्रहने विषे ममता करवी नहि; पण गृहस्थनो परिचय त्यागीने घर रहित थइने विचरवु. (अमुक स्थळेज विना कारण पडी रहेवु नहि.)[3] (१९).

१ आ गाथानो प्रो. हर्मन जेकोबी एवो अर्थ करे छे के— A wise man who knows that women are a slough, as it were will get no harm from them, but will wander about searching for the self आ परिसह माटे टीकाकार शकडाल मंत्रीनु दृष्टांत आपे छे २. वाणीआनो वास होय ते जग्यो. प्रो जेकोबी ते माटे Market place शब्द वापरे छे. व्यापार वाणिया ओनोज प्राचिन समयथी होवो जोइए, एम साबीत थइ शके छे. ३. आ फरमानमां जेटली शिथिलता तेटली भूलता समजवी थी सने आवी शिथिलता जती करवाथी अनेक अनर्थ उत्पन्न थाय छे, अने थवाना छे. टीकाकार अन्यदा दत्त शिष्यनु दृष्टांत आपे छे

सुसाणे सुन्न गारेवा रुक्ख मूलेव एगओ । अकुकुओ निसीएज्जा नायवित्ता सए परं ॥२०॥ तत्थ मे अच्छमाणस्स उवसग्गाभि धारए । सङ्काभीओ न गच्छेज्जा उठ्ठित्ता अन्न मासणं ॥ २१ ॥ उच्चा वयाहिं सेज्जाहिं तवस्सी भीक्खु थामव । नाइवेलं विहनेज्जा पावदिठ्ठी विहन्नई ॥ २२ ॥ पइरिक्कु वस्सयं लध्धु कल्लाण अदु पावग । किं मेगराइ करिस्सइ एव तत्थ हियासए ॥ २३ ॥ अक्कोसेज्ज परो भिक्खू न तेसि पडिस जले । सरिसो होइ बालाण तम्हा भिक्खू न सजले ॥ २४ ॥

---

[१०] स्मशानमां, सूना घरमां, अथवा तो वृक्ष नीचे, रागद्वेष अने कुचेष्टा रहित रहीने पोतानुं अने अन्य जीवने [उदर वगेरेने] त्रास उपजाववो नहि [२०] एवां स्थळे रहेता साधुने उपसर्ग उपजे ते सहन करवो पण ते उपसर्गथी डरीने त्यांथी उठीने बीजे स्थानके जवुं नहि.[1] [२१] (११) तपस्वी अने धीरजवान साधु सारी शय्यार मळवाथी अति हर्ष पामतो नथी, तेमज खराब शय्या मळवाथी अति विषाद पामतो नथी; पण पाप दृष्टिवाळो आचार हीन साधु एवे प्रसंगे हर्ष विषाद पामे छे. (२२). स्त्री रहित सारा अथवा नरसा मकानमां आश्रय मळता तेमां तेणे रहेवुं अने विचारवुं के, 'मारे तो आमां एक रात रहेवुं छे, तेमां सुख दुःख शुं थवानुं छे?' [अर्थात्–समभाव राखवो].[2] (२३) [१२] कोइ ग्रहस्थ साधुने दुर्वचन कहे, तो पण तेणे तेना उपर क्रोध करवो नहि, तेने अज्ञान बाळक जेवो समजीने साधुए तेना उपर कोप करवो नहि. [२४].

---

१. टीकाकारे कुरुदत्त मुनीश्वरनुं दृष्टांत टांक्युं छे. २. उपाश्रय Lodging house ३ यज्ञदत्त ब्राह्मणना ने पुत्रनुं दृष्टांत टीकाकार टांक्युं छे.

सोच्चाण फरुसा भासा दारुणा गाम कण्टगा । तुसीणीओ उवि हिज्जा[1] न ताओ मणसी करे ॥२५॥ हओ न स जले भिक्खू मण पि न पओसए । तितिक्ख परम नच्चा भिक्खू धम्मवि चितए ॥ २६ ॥ समण स जय दत हणिज्जा कोई कत्थइ । नत्थि जीवस्स नासोत्ति एव पेहेज्ज स जए ॥ २७ ॥ दुक्कर खलु भोनिच्च अणगारस्स भिक्खूणो । सव्वसे ज इय होइ नत्थिकिंचि अजाइय ॥२८॥ गोयरग्गपविठ्ठस्स पाणीनोसूपसारए । सेओ आगारवासोत्ति इइ भिक्खू न चिंत्तए ॥ २९ ॥

---

१. कोइ मतमा 'उवहेज्जा' 'हणेज्जा' छे.

कठोर, कटक समान भाषा साभळीने, मौन्य धारण करीने तेने काइ हिसाबमां गणवी नहि, अने एवी भाषा बोलनार उपर द्वेष करवो नहि. [२५] (१३) साधुने कोइ मार मारे तो पण तेणे कोप करवो नहि, तेमज मनथी पण तेनु बुरु इच्छवु नहि, परतु क्षमा ए उत्कृष्ट धर्म छे एम जाणीने दश प्रकारना यतिधर्मनु चिंतन करवु [२६] कोइ अनार्य, सयममा दृढ अने जितेन्द्रिय साधुने, मार मारे तो तो तेणे एम विचारवु के 'एथी काइ मारा आत्मानो नाश थतो नथी.' (अर्थात्–पण जो शरीर नाशना अवसरे हु क्रोध करीश तो मारा धर्मरूप जीवितनो नाश थशे एटले मारो धर्म हारी जइश.)[2] [२७]. (१४) सकेत रहित साधुने, याचनाथी सर्व वस्तु मळवी जोइती छे, तेमज याचना सिवाय काइ मळी शकतुं नथी. [२८]. गोचरीने विषे फरता साधु तरफ [सर्व दाता, गृहस्थनो] हाथ हसता खुशीथी लंबातो नथी, पण तेथी साधुए एम न धारवु के आथी गृहस्थाश्रम वधारे सारो[3] (२९)

---

१. अहिं अर्जुनमालीनु दृष्टात टीकाकार आपे छे २. स्कन्दाचार्यना पाचसो शिष्यनु दृष्टात टीकाकारे अहि टाकेलु छे.
३ आ याचना परिसह उपर श्री बळदेव ऋषीश्वरनु दृष्टात समजवु.

घरेसु घासमेसेज्जा भोयणे परिनिट्ठिए । लद्धे पिंडे अलद्धे वा नाणुतप्पेज्जपंडिए ॥३०॥ अज्जेवाहं नलब्भामि अवि-लाभो सुए सिया । जो एवं पडिसंचिक्खे अलाभोत नतज्जए ॥ ३१ ॥ नच्चा उप्पइय दुक्खं वेयणाए दुहट्टिए । अदीणो थावए पन्नं पुट्ठो तत्थ हियासए ॥३२॥ तेगिच्छं नाभिनन्दिज्जा सचिक्खत्त गवेसए । एयं खु तस्स सामन्नं जन कुज्जा नकारवे ॥ ३३ ॥ अचेलगस्स लूहस्स सजयस्स तवस्सिणो । तणेसु सुयमाणस्स होज्जा गाय विराहणा ॥ ३४ ॥ आयवस्स निवाएण अउला हवइवेयणा । एवंनच्चा नसेवंति ततुजतणं तज्जिया ॥ ३५ ॥

---

[१५] ग्रहस्थने घेर तेमने माटे भोजन तैयार थयु होय तेमाथी तेणे आहारने माटे मागी लेवुं, आहार मळे या न मळे तेने माटे पंडित मुनिए खेद करवो नहि [३०]. " आजे काइ आहार न मळ्यो, तो काले काइ मळी रहेशे. " जे साधु आ प्रमाणे विचार करे छे तेने अलाभ परीसहथी काइ दुःख उपजतु नथी १ [३१]. (१६) जो मदवाड अथवा वेदना आवी पडे तो पीडातां मुनिए प्रसन्न मुखे मनने स्थिर राखवुं अने रोग परीसह सहन करवो.[३२]. रोग टाळवाना उपायने माटे तेणे आतुर बनवु नहि; (दवा सारवारनी चाहना नोधी) पण आत्माना गवेषक साधुए आत्म हित माटे पोतानु चारित्र पाळवुं, पोते रोगनी चिकित्सा करे नहि अने बीजा पासे करावे नहि ते साचो श्रमण (साधु) कहेवाय २ [३३]. [१७] जो के वस्त्र रहित अथवा अल्प वस्त्रवाळा, संयमवंत, तपस्वी साधुने तृणने विषे सूतां बेसतां शरीरे पीडा थाय छे, अने ताप पडवाथी तेने असह्य वेदना थाय छे, तो पण तृण स्पर्शथी पीडाता छतां जिन स्थवी साधु वस्त्र भोगवतो नथी.४ [३४–३५]

---

१. ढंढण कुमारनु दृष्टांत अलाभ परिसह उपर आपेलु छे. २. अहि कालवेस कुमारनु दृष्टांत टीकाकारे टांकेलुं छे. ३. 'तंतुज'=What is manufactured from thread ४ जीतशत्रु राजाना पुत्र भद्रकुमारनी कथा अहि आपेली छे

किलिन्नगाय मेहावी पंकेण वा रएण वा । धिंसु वा परितावेण सायनो परिदेवए ॥ ३६ ॥ वेइज्ज निज्जरा पेही आयरिय धम्म मणुत्तरं । जावसरीर भेउत्ति जल्लं काएण धारए ॥३७॥ अभिवायण मब्भुट्ठाण सामीकुज्जा निमंतणं । जेताइ पडिसेवंति नतेसिं पीहए मुणी ॥ ३८ ॥ अणुक्कसाइ अप्पिच्छे अन्नाएसी अलोलुए । रसेसु नाणुगिज्झेज्जा नाणुतप्पेज्ज पन्नवं ॥ ३९ ॥ [1]सेनूण मए पुव्वं कम्मा नाण फलाकडा जेणाहं नाभिजाणामि पुट्ठो केणइ कन्हुइ ॥ ४० ॥

१. कोइ मतमां 'सोनूण' छे.

(१८)उन्हाळाना तापे करीने शरीरे परसेवो थाय, अथवा मेल अने रजथी शरीर भराय तो पण मर्यादावंत साधुए सुख शातानी हानि माटे शोच करवो नहि. (१६) कर्मनो क्षय करवा अने सर्वोत्कृष्ट चारित्र धर्म पाळवा साधुए आ सघळुं सहन करवुं; अने शरीरनो नाश थतां सुधी कायाये मेल धारण करवो. [३७] (१९)कोइ ग्रहस्थ साधुने अभिवंदन करे अथवा तेने आवतो जोइने पोताना आसनेथी उठीने तेनुं सन्मान करे, अथवा भिक्षाने माटे आमंत्रण करे, आवी रीते सत्कार करनार तरफ साधुए अनुराग राखवो नहि. (३८). क्रोध रहित अल्प इच्छावाळो, अजाण्याने त्यांथी [आपनारनुं जाति, कुळ, द्रव्य वगेरे जाण्या सिवाय] आहार लेनार, स्वादिष्ट भोजनने माटे लालच रहित, प्रशांत साधु रस, स्वादनी इच्छा करतो नथी अने पोतानो सत्कार न थवाथी कोप करतो नथी.[3] (३९) [२०] प्रशांत साधु एम जाणे छे के निश्चे में पूर्व जन्मान्तरे, जेनुं फळ अज्ञान छे एवां कृत्यो करेलां होवां जोइए, कारण के कोइ माणस कोइ स्थानकमां काइ सुगम प्रश्न मने पूछे छे, तेनो उत्तर हुं आपी शकतो नथी. [४०].

१. निर्जरा. २. आर्द्र श्रेष्ठि पुत्रनुं दृष्टांत टांकेलुं छे. ३. आ सत्कार परिसह उपर एक साधुनुं दृष्टांत टांकेलुं छे.

अह पच्छा उइज्जंति कम्मा नाण फला कडा॥एव मस्सासि अप्पाणं नच्चा कम्म विवागयं॥४१॥निरट्ठगंमि विरओ मेहुणाओ सुसंवुडो। जोनख नाभिजाणामि धम्मं कल्लाण पावग॥४२॥तवो वहाण मादाय पडिम पडिवज्जओ। एवपि विहरओ मे छउमव्य ननियट्टइ ॥ ४३ ॥ नत्थिनूणं परेलोए इड्ढी वावि तवस्सिणो। अदुवा वंचिओ मित्ति इइ भिक्खू नचिंतए ॥४४॥ अभूजिणा अत्थिजिणा अदुवावि भविस्सई। मुसंते एवमाहंसु इइ भिक्खू न चिंतए ॥४५॥

हुं रखी पूर्व जन्मांतरे कीधेलां कर्मो, जेनुं फल अज्ञानछे; तेनुं शुभाशुभ परिणाम आगळ उपर आवशे; ते मारां ए कर्मोनुंज फळ छे एम मानीने मारा आत्मानुं मारे आश्वासन करवुं जोइए.[१] (४१).(२१) में मैथुननो त्याग कर्योछे, अने इन्द्रिओने नियममां राखेली छे, छतां हुं शुभ अने अशुभ [धर्मनो स्वभाव अने मोक्ष नर्कनो हेतु] बराबर जाणी शक्यो नथी, तो पछी मारो त्याग अने संयम निरर्थक छे. [माटे ज्ञानने आवरण करनारां कर्मनो मारे क्षय करवो जोइए] [४२]. हुं तप करुं छुं, सिद्धांत भणुं छुं अने द्वादश विधिए साधु धर्म पाळुं छुं. छतां ज्ञानावरण कर्म टळतां नथी. [माटे ज्ञानने आवरण करनारां कर्म मारे खपाववां जोइए].[२] [४३]. (२२) 'परलोके छेज नहि. तप करवाथी लब्धिरूप रिद्धि पण मळवानी नथी; आ तो हुं ठगाउं छुं.' एवुं चिंतन साधुए कदि करवुं नहि. [४४]. 'पूर्वे सर्वज्ञ जिन थइ गया छे, वर्तमान काळे (महा विदेह क्षेत्रने विषे) सर्वज्ञ जिन [केवलि] छे, अने भविष्य काळमां पण सर्वज्ञ जिन थशे एम जिननी हस्ती कहेनार, माननार जूठाछे' एवुं चिन्तन साधुए करवुं नहि.[३](४५).

---

१. श्री शान्त्याचार्यनुं प्रज्ञा परिसहपर दृष्टांत समजवुं. २. अज्ञान परिसहपर अहिं पुनरुं दृष्टांत आपेल छे. ३. आषाढाचार्यनुं दृष्टांत टीकाकारे आपेलुं छे.

एए परिसहासव्वे कासवेण पवेइया । जेभिक्खु नोविहन्नेज्जा पुठ्ठो केणइ कण्हुइ त्तिबेमि ॥ ४६ ॥

॥ इति परिसह ज्झयण बिय सम्मत ॥ २ ॥

अध्ययन ३. *चार अंग (चत्तरंग–चोरंगी).

चत्तारि परमगाणि दुल्लहाणी हजतुणो । माणुसत्त सुइसद्धा सजमभियवीरिय ॥ १ ॥

उपर कह्या ते बावीसे परीसह काश्यप गोत्रमा उत्पन्न थयेला श्री महावीर भगवाने मरूप्या छे एमाना कोइक परीसहथी कोइक स्थानकने विषे पीडाया छता धीरजवान साधुए पोताना सयमनो भग करवो नहि.१[४६].

॥ बीजु अ ययन सपूर्ण. ॥

अध्ययन ३.

आ संसारमा मनुष्यने परम उत्कृष्ट, मोक्ष साधनना उपायरूप चार वस्तु प्राप्त थवी दुर्लभ छे :—(१) मनुष्य जन्म, [२] धर्मनु श्रवण [३] धर्म उपर श्रद्धा अने [४] चारित्र (सयम) ने विषे वीर्य–स्फोरण (उत्साह) [१].

१. मो. जेकोबी ए माट एवा शब्दो वापरे छे के—A monk should not be vanquished by them, when attacked by any anywhere

१ मनुष्य जन्म दश दृष्टाते दुर्लभ कहेल छे ते विषे एवी गाथा छे के ' चुल्लग, पासग, धन्ने, जूये, रयणेय, सुमिण, चक्केय, चम्म, जुगे, परिमाणु दसदि दंता मणुय भवे । ' आ उपर दश कथाओ विस्तारवाळी छे, अने विस्तारना भयथी पडती मूकी छे.

समावन्नाण संसारे नाणागोत्तासु जाइसु । कम्मा नाणाविहा कट्टु पुढोविस्सं भयावया ॥ २ ॥ एगया देवलोएसु नरए सुनिएगया । एगया आसुरं कायं आहाकम्मेहिं गच्छइ ॥ ३ ॥ एगया खत्तिओ होइ तओ चंडाल बुक्कसो । तओ कीड पयंगो य तओ कुंथु पिवीलिया ॥४॥ एव मावट्ट जोणीसु पाणिणो कम्म किव्विसा । ननिविज्जति संसारे सव्वट्ठेसु व खत्तिया ॥ ५ ॥ कम्म संगेहि संमूढा दुक्खिया बहु वेयणा । अमाणुसासु जोणीसु विणिहम्मति पाणिणो ॥ ६ ॥ कम्माण तु पहाणाए आणुपुव्वी कयाइओ । जीवा सोहिं मणुपत्ता आययति मणुस्सयं ॥ ७ ॥

[१] जगत अनेक जीवोथी भरपूर छे. तेमां जीव जुदा जुदा गोत्र अने जातिने विविध प्रकारना रूपे करीने उत्पन्न थाय छे. (२). जीव पोतानी करणीए करीने कोइ वार देवलोके जाय छे. कोइ वार नर्के जाय छे अने कोइवार असुर योनिमां उपजे छे. [अर्थात्–जेवां कर्म जीवे कर्यां होय तेवी गतिए जाय छे]. [३]. कोइवार जीव मरीने क्षत्री थाय छे, तेमज चांडाल अने बुक्कस पण थाय छे. अथवा तो कीडा, पतंगियां अथवा कुंथु[३] अने कीडी थाय छे. [४]. एवी रीते अधम प्राणी[४] जीव योनिने विषे परिभ्रमण करता छतां उद्विग्न थता नथी. जेम क्षत्री युद्धथी अने राज्य रिद्धिथी संतोष पामतो नथी, तेम ए जीव संसारमां फरतां संतोष पामतो नथी.(५). कर्मे करीने मूढ थइ गयेला जीव दुःखी थाय छे अने [संसारमां फरतां] घणी वेदना सहन करे छे, अने अमानुषिक [नारकी, तिर्यंच] गतिने विषे बहु दुःख वेठे छे. [६]. पण अशुभ कर्मनो नाश थवाथी, कदाचित अनुक्रमे फरतां फरतां, शुभ कर्मनो उदय थवाथी जीव निर्मळ थइने, मनुष्य गतिमां आवे. (७).

१. नर्क–अर्क–पूर्व. नर्कमां हमेशां अंधकार रहे छे. २. बाप शुद्र अने मा ब्राह्मणीथी उत्पन्न थयेल प्रजा बुक्कस कहेवाय छे. ३. Animalcules. ४ Living beings of sinful actions

माणुस्स विग्गह लध्धु सुइ धम्मस्सदुल्लहा। जसोच्चा पडि वज्जति तव खति महिंसया॥८॥ आहच्च सव्वण लध्धुं सद्धा परम दुल्लहा। सोच्चा नेयाउय मग्ग बहवे परिभस्सइ॥९॥ सुयच्च लध्धुं सद्धच्च विरिय पुण दुल्लह ।बहवे रोयमाणावि नोयण पडिवज्जए ॥१०॥ माणुसत्तमि आयाओ जोधम्म सोच्च सद्दहे । तवस्सी विरिय लध्धुं सवुडे निध्धूणेरय ॥११॥

(७)कदाच मनुष्य देह मळे तो पछी धर्मनु श्रवण दुर्लभ थइ पडे छे, जे धर्मनु श्रवण करवाथी जीव तप, १क्षमा, दया, आदि अंगीकार करी शके छे [८]. [३]कदाचित धर्मनु श्रवण कर्यु, तो पछी धर्म उपर श्रद्धा थवी परम दुर्लभ थइ पडेछे, अने घणा जीव शुद्ध मार्ग[जिन धर्म] सांभळीने अंगिकार कर्या पछी ते थकी भ्रष्ट थाय छे(जमालीनी पेठे). [९]. [४] जीवे कदाच धर्मनु श्रवण कर्यु, ते सांभळीने ते उपर तेनी श्रद्धा बेठी, तो पछी उत्साहथी चारित्र२ पाळवु दुर्लभ थइ पडे छे. [श्रेणीकनी पेठे] घणा जीव जाणे छे के धर्म छे तो सारो, पण पळातो नथी [१०]. मनुष्यपणु पामीने, धर्मनु श्रवण करीने, ते उपर श्रद्धा राखीने, तप जप (चारित्र)ने विषे वीर्य-बळ दाखवीने साधु पुरुष आश्रवद्वारने[३] रुंधवु जोइए अने कर्मरुपी[४] मेलने फेडवो जोइए. (११).

१ Combat then passions २. Do adopt religion—अहिं चारित्र एटले दिक्षा लइ लेवानो भावार्थ नथी. संसारमा रहेनारा जीवो धर्मना फरमान अनुसार वर्तन राखवाथी पण कर्म क्षय करी शके छे. ३. पाप लागवाना—कर्म बांधवाना साधनोने आश्रवद्वार नाम आपेलुं छे ते माटे नव तत्वमां कहेलु छे के :—"ज्यु ताल सदा भरे, ज्युं आवत जल ओर, एसे आश्रव द्वारसें, कर्म बंधको जोर." जेम जेम पाणी आवतु जाय छे तेम तळाव भरातु जाय छे एवी रीते आश्रवथी कर्म विशेष बंधाय छे. जेम टांकीनु पाणी खाली करवा प्रथम नळनु आवतु पाणी बंध करवु जोइए, तेम मात्र कर्मोना क्षय करवा, प्रथम नवां आवता कर्म रोकवा जोइए. ४. नव तत्वमा आ भावार्थनो बोध छे के:—" ज्यु आवत जल दुरीए, सुके सरोवर पान, त्यु आतम संवर कीए, कर्म निर्जरा ही जाण. " जल आवतु बंध थवाथी जेम सरोवर सुकाइ जाय छे. तेम संवर करवाथी—आवता कर्म रोकवाथी कर्मनी निर्जरा थाय छे. आ संबंधेनु विशेष विवेचन नव तत्वमा छे ते अवश्य मनन अने ग्रहण करवा लायक छे.

सोही उज्जुय भूयस्स धम्मो सुद्धस्स चिट्ठइ । निव्वाणं परमं जाइ घय सित्तेव्व पावए ॥१२॥ विगिंच कम्मुणो हेउ जस संचिणु खंतिए । पाढव सरीरं हिच्चा उड्ढं पक्कमई दिसं ॥१३॥ विसालिसेहिं सीलेहिं जक्खा उत्तर उत्तरा । महासुक्काव दिप्पंता मन्नंता अपुणच्चवं ॥१४॥ अप्पियादेव कामाणं कामरूवी विउव्विणो । उड्ढं कप्पेसु चिट्ठंति पुव्वा वाससया बहू ॥१५॥ तत्थठिच्चा जहाठाणं जक्खा आउक्खए चुया । उवेंति माणुसं जोणिं सेदसंगेभि जायइ ॥ १६ ॥

भाषा—सहितने [मिन्क्ष] प्राप्त थाय छे, अने निर्मळ [पुरुष] शुद्ध धर्मने विषे दृढ रहे छे; अने घीथी सींचायेलो अग्नि जेम निर्मळ देखाय छे, तेम जीव निर्मळ (कर्म-रहित) थइने परम उत्कृष्ट निर्वाणने[१] पामे छे. (१२) कर्मना हेतु [मिथ्यात्व आदि] दूर करीने क्षमाथी यश उपार्जन कर[२] (आ प्रमाणे वर्तनार पुरुष) पार्थिव [उदारिक] शरीर त्यागीने उर्द्धदिशामां [उंचा देव लोकमां] जाय छे. (१३) सद्गुणोथी शोभता यक्ष लोक [देवता] (तप, जप आदि क्रियावे करीने) एक एकथी चढीआता निर्माण थयेला विमान (देव लोक)ने विषे जाय छे, अने चंद्र, सूर्यनी पेठे तेजथी देदीप्यमान [दीपता] जणाय छे; अने तेओ पोताना मनथी एम नहीं मानता के अमारे अहिंथी चवीने कदी नीचे जवु पडशे (१४). देवताओ सुख भोगवतां अने पोतानी इच्छा प्रमाणे नवां नवां रूप धारण करतां, तेओ (यक्ष लोको) उंचा देव लोकने विषे असंख्य [३]पूर्वनुं आयुष्य भोगवे छे. [१५]. तेओ [यक्षो] ते स्थानक [देव लोक]ने विषे पोतानु आयुष्य पूरुं करीने, पोताना अवशेष पुण्य कर्म बाकी रह्यां होय ते भोगववा बनांग मनुष्य योनीमां जन्मे छे. [१६]

१. मुक्ति—कर्म बंधन—जन्म, जरा, मरणथी मुकावु. २. प्रो. जेकोबी आ माटे अमरसारक शब्दो वापरे छे Leave off the causes of sin, acquire fame through patience ३. सातमा अध्ययननी १३ मी गाथानी फुटनोटमां पूर्वनुं कोष्टक आपेल छे.

खेत्त वथ्थु हिरणच पसवो दास पोरुसं । चत्तारी काम खधाणि तथ्थ से उववज्जइ ॥ १७ ॥ मित्तव नायव होइ उच्चा गोएय वन्नव । अप्पायके महापन्ने अभिजाए जसो बले ॥१८॥ भोच्चा माणुस्सए भोए अप्पडिरूवे अहाउय । पुव्व विसुद्ध सधम्मे केवलबोहि बुझिया ॥ १९ ॥ चउरग दुछह नच्चा सजम पडिवज्जिया । तवसा धूय कम्मं सेसिद्धे हवई सासए तिबेमि ॥२०॥

⊛॥ इति चउरंगणीय झयण तइय सम्मत ॥ ३ ॥⊛

क्षेत्र अने गृह, सुवर्ण, पशु अने दास तथा सेवको ए चार काम स्कन्ध [चार प्रकारनी दोलत] ज्या होय एवा सकुळमां ए पुण्यात्मा जन्म ले छे. *[१७]. मित्र, स्वजन, उच्च गोत्र, सद्वर्ण [सुंदर शरीर], आरोग्य, बुद्धि, (प्रज्ञा), विनय, यश अने बळने ते पामे छे. (१८). मनुष्य भवनां एवां अनुपम सुख जाव जीव [जिंदगी पर्यंत] भोगवीने पूर्व जन्मना विशुद्ध सद् धर्म [चारित्र] ने अंगे यथाकाळे, ते पाछो शुद्ध समकित लइ प्रति बुझे. (१९). चार अग धर्म प्राप्त करवा दुर्लभ छे एम जाणीने ते सयमनुं प्रतिपादन करे छे [धारण करे छे]; अने बारे भेदे तपथी कर्म रजने दूर करीने ते शाश्वत सिद्ध थाय छे. [२०].

* ॥ त्रीजु अध्ययन सपूर्ण. ॥ *

---

* मनुष्यनां दश अंग पैकी एक अग आ गाथामा अने बाकीनां नव अग १८मी गाथामा वर्णव्यां छे.

सोही उज्जुय भूयस्स धम्मो सुद्धस्स चिट्ठइ । निव्वाणं परम जाइ घय सित्तेव्व पावए ॥१२॥ विगिंच कम्मुणो हेउ जस सचिणु खतिए । पाढव सरीर हिच्चा उड्ढ पक्कमई दिस ॥१३॥ विमालिसेहिं सीलेहिं जक्खा उत्तर उत्तरा । महासुक्काव दिप्पता मन्नता अपुणच्चय ॥१४॥ अप्पियादेव कामाण काम रुवी विउव्विणो । उड्ढ कप्पेसु चिट्ठति पुव्वा वासस्या वहु ॥१५॥ तथ्थठिच्चा जहाठाण जक्खा आउक्खए चुया । उवेंति माणुस जोणिं सेदसगेभि जायइ ॥ १६ ॥

माया–रहितने निर्मळना प्राप्त थाय छे, अने निर्मळ [पुरुष] शुद्ध धर्मने विषे दृढ रहे छे, अने घीथी सींचायेलो अग्नि जेम निर्मळ देखाय छे, तेम जीव निर्मळ (कर्म-रहित) थइने परम उत्कृष्ट निर्वाणने[1] पामेछे (१२) कर्मना हेतु [मिथ्यात्व आदि] दूर करीने क्षमाथी यश उपार्जन कर.[2] (आ प्रमाणे वर्तनार पुरुष) पार्थिव [उदारिक] शरीर त्यागीने उर्द्धदिशामा [उचा देव लोकमा] जाय छे. (१३) सद्गुणोथी शोभता यक्ष लोक [देवता] (तप, जप आदि क्रियाये करीने) एक एकथी चढीआता निर्माण थयेला विमान (देव लोक)ने विषे जाय छे, अने चद्र, सूर्यनी पेठे तेजथी देदीप्यमान [दीपता] जणाय छे; अने तेओ पोताना मनथी एम नथी मानता के अमारे अहिंथी चवीने कदी नीचे जवु पडशे. (१४). देवताइ सुख भोगवतां अने पोतानी इच्छा प्रमाणे नवां नवां रुप धारण करतां, तेओ (यक्ष लोको) उचा देव लोकने विषे असख्य [3]पूर्वनु आयुष्य भोगवे छे. [१५] तेओ [यक्षो] ते स्थानक [देव लोक]ने विषे पोतानु आयुष्य पूरु करीने, पोताना अवशेष पूण्य कर्म बाकी रह्यां होय ते भोगववा दशांग मनुष्य योनिमां जन्मे छे [१६]

१. मुक्ति–कर्म बधन–जन्म, जरा, मरणथी मुकावु. २. मो. जेकोबी आ माटे असरकारक शब्दो वापरे छे Leave off the causes of sin, acquire fame through patience ३. सातमा अध्ययननी १३ मी गाथानी फुटनोटमां पर्वोनु कोष्टक आपेल छे.

खेत्त वथ्थु हिरणंच पसवो दास पोरुस । चत्तारी काम खंधाणि तथ्थ से उववज्जइ ॥ १७ ॥ मित्तव नायव होइ उच्चा गोएय वन्नव । अप्पायके महापन्ने अभिजाए जसो बले ॥१८॥ भोच्चा माणुस्सए भोए अप्पडिरूवे अहाउय । पुव्व विसुद्द सधम्मे केवलबोहि बुझिया ॥ १९ ॥ चउरग दुल्लह नच्चा सजम पडिवज्जिया । तवसा धूय कम्मं सेसिद्धे हवई सासए त्तिबेमि ॥२०॥

⊛॥ इति चउरगणीय झयण तइयं सम्मत ॥ ३ ॥⊛

क्षेत्र अने गृह, सुवर्ण, पशु अने दास तथा सेवको ए चार काम स्कन्ध [चार प्रकारनी दोलत] ज्यां होय एवा सकुळमां ए पुण्यात्मा जन्म ले छे. *[१७]. मित्र, स्वजन, उच्च गोत्र, सद्वर्ण [सुंदर शरीर], आरोग्य, बुद्धि, (प्रज्ञा), विनय, यश अने बळने ते पामे छे. (१८). मनुष्य भवनां एवां अनुपम सुख जाव जीव [जिंदगी पर्यंत] भोगवीने पूर्व जन्मना विशुद्ध सद् धर्म [चारित्र] ने अंगे यथाकाळे, ते पाछो शुद्ध समकित लइ प्रति बुझे. (१९). चार अंग धर्म प्राप्त करवा दुर्लभ छे एम जाणीने ते संयमनु प्रतिपादन करे छे [धारण करे छे], अने बारे भेदे तपथी कर्म रजने दूर करीने ते शाश्वत सिध्ध थाय छे. [२०].

* ॥ त्रीजुं अध्ययन संपूर्ण. ॥ *

---

* मनुष्यना दश अंग पैकी एक अंग आ गाथामा अने बाकीना नव अंग १८मी गाथामा वर्णव्यां छे.

अध्ययन ४. * प्रमाद [असंस्कृत].

असंखय जीविय मा पमायए जरोवणियस्स हु नथ्थि ताण । एव वियाणाहि जणे पमत्ते किन्नुवि हिंसा अजया गहिंति ॥ १ ॥ जे पाव कम्मे हिंधण मणुस्सा समाययती अमय गहाय । पहायते पास पयट्ठिए नरे वेराणुबद्धा नरय उवेंति ॥ २ ॥ तेणे जहा सद्धि मुहे गहिए स कम्मुणा किच्चइ पावकारी । एव पया पेच्च इहच लोए कडाण कम्माण न मोक्ख अथ्थि ॥ ३ ॥

अध्ययन ४ ७

आयुष्य तूट्या पछी साधी शकातु नथी[1]; (जींदगी लंबावी शकाती नथी] माटे हे भव्य जीव ! प्रमाद न कर. जरा प्राप्त थया पछी कोइनुं शरण रहेशे नहि, तेनो विचार कर. जे प्रमादी मनुष्यो जीव हिंसा करे छे अने इन्द्रिओने वश राखी शकता नथी तेओ कोने शरणे जशे ? (१). जे मनुष्यो कुमति ग्रहण करीने पाप कर्मथी (दगा कपटथी) धन उपार्जन करे छे, ते धन छाडीने (स्त्री, पुत्र, कलत्रादि) पासमां फसाई घणा पाप करीने, अने घणा जीवथी वेर बांधीने नरके जाय छे. (२). जेम कोइ चोर खातर पाडता खातरने मोढेज पोते करेला पाप कर्मथीज (खोदेली भींत तूटी पडवाथी[2]) दबाइ मरे छे. तेम हे लोको ! आ लोक अने परलोके करेलां कर्मनां फळ भोगव्या विना छुटको नथी. (३)

१. श्री सुयगडांग सूत्रना प्रथम सूत स्कन्धना बीजा अध्ययनना त्रीजा उद्देशानी १९ मीं गाथामां आवोज पाठ छे. २. श्री देवेन्द्र टीकामां आ विषे बे दृष्टांत टांके छे. तेमां एक विषे तो पाठमां पण इशारो जणाइ आवे छे तेनो भावार्थ एवो छे, के, घरमां दाखल थवा चोरे दीवालमां बाकोरु पाडयु अंदर दाखल थवा पग नाख्या तो अंदर घरनो धणी हतो ते पग खेंचवा लाग्यो, ज्यारे चोरनो सोबती बहार हतो ते तेने बहार खेंचवा लाग्यो, ताणा ताणमां उपरनी दीवाल तुटी पडी अने चोर दबाइ गयो.

ससार मावन्न परस्स अठा साहारण जच करेइ कम्म । कम्मस्स ते तस्स उवेय काले न बध वावधवय उवेंति ॥४॥वित्तेणताण नलभे पमत्ते इमम्मिलोए अदुवापरथ्था । दिवप्पणठ्ठे व अणत मोहे नेयाउय दठुम सदठुमेव॥५॥
सुत्ते सुयावि पडिबुध्ध जीवी नवीससे पडिय आसु पन्ने। घोरा मुहुत्ता अबल सरिर भारड पखी वचरे प्पमत्तो ॥ ६ ॥

कोइ मनुष्य संसारने विषे पोताना (मित्र, पुत्र, कलत्र, बाधवादि) अर्थ अथवा पारकाने अर्थे काइ कृत्य करे छे ते कर्म फळना विपाक समये (फळ भोगववा टाणे] सगा सगापणु साचवता नथी[1] पण अळगा जइने उभा रहे छे. (अर्थात–पोतानी कमाइ जीवने पोतानेज भोगववी पडे छे. [४]. वित्त अथवा द्रव्यथी आ लोके के परलोके प्रमादी पुरुष पोतानुं रक्षण करी शकतो नथी.[2] जेम कोइ मनुष्य हाथमा दीवो लइने (रस कुपिका लेवा माटे) जाय, पण दीवो बुझाइ जवाथी जेम तेने मार्ग न सूझे, तेम जीवे मुक्ति मार्ग दीठेलो छे, पण मोहनी कर्मने लीधे ते दीठो अण दीठो थइ जाय छे (५). मूर्ख लोक [द्रव्ये अने भावे] निद्रामा सूता छे, पण पंडित एवी निद्रानो त्याग करे छे. प्रज्ञावत पारके विश्वासे रेहता नथी, [पारकी आशा पण राखता नथी] सदा जागृत रहे छे, कारण के काळ अघोर छे, अने शरीर दुर्बळ छे. भारंड पक्षीनी माफक ते सदा अप्रमत्त–जागृत रहे छे. (६)

---

१ मो. जेकोबी ते माटे नीचेना शब्दो आपे छे. At the time of reaping the fruit of his actions, his relations will not act as true relations i e will not come to his help) २. पैसाथी कर्म क्षय करी थइ शकता नथी कर्म उदय आवे त्यारे पैसानी लाचथी ते कदी शान्त थता नथी कुदरत निष्पक्षपात न्यायाधीशनी पेठे, एक श्रीमतनो भेद गण्या विनाज, करेला कर्म अनुसार, अदल इन्साफ आप्याज करे छे ते श्रीमतोना बाह्य कुत्रीम तेजथी कदी दबाती नथी अने श्रीमंतोए तेवा फाफामा कदी थाप पण खावी नहि. शुभ कर्मना सचयथी मळेली श्रीमंताइ साचववा, शुभ कर्मोनो संचय चालु राखवो जोइए.

चरे पयाइं परिसंकमाणो जंकिंचि पास इहमन्नमाणो । लाभंतरे जीविय बूहइत्ता पच्छा परिन्नाय मलावधंसी ॥७॥
छंद निरोहेण उवेइ मोक्ख आसेजहा सिक्खियवम्म धारी। पुव्वाइं वासाइं चरेप्पमत्तो तम्हा मुणिखिप्प मुवेइ मोक्ख ॥८॥
स पुव्वमेव नलभेज्जपच्छा एसोवमा सासयवा इयाण । विसीयइ सिटिले आउ यमि कालोवणीए सरीरस्स भेए ॥९॥

खिप्प नसक्के इ विवेगमेउ तम्हा समुट्ठाय पहाय कामे। समिच्च लोग समया महेसी अप्पाण रक्खीवचरप्पमत्तो॥१०॥

साधु पापथी संकोचाइने संयम मार्गे संभाळथी विचरे छे अने संसारनां कामकाज अने ग्रहस्थीना परिचयने पाशरुप माने छे. ज्यां सुधी ज्ञान, दर्शन, चारित्रादिनो लाभ प्राप्त थाय त्यांसुधी संभाळ पूर्वक जिवित धारण करवु. पछीथी प्रज्ञा वृद्धिए करीने सर्व वस्तुनो त्याग करी, अणसण लइ, पापरुप मळने फेडवो. (७). स्वच्छंदताना निरोध करवाथी साधु मोक्षे जाय छे. जेम सुशिक्षित कवचधारी अश्व [अश्वारनी सूचना मुजब चाले तो] युद्धमां शत्रुने जीती आवे छे (तेम साधु पण इच्छाने रुंधे तो मोक्ष पामे छे). जे साधु पूर्व काळमां [युवानीमां] अप्रमत्त रहीने विचरे ते साधु जल्दीथी मोक्षे जाय छे. (८). 'पूर्व काळमां अप्रमत्तत्व प्राप्त न थयुं तो ते पश्चात काळमां थशे.' [अर्थात–हमणां तो खाउ, पीउ, पछी मरण काळे धर्म करीश] एवो वाद शाश्वतवादी आयुष्यना धणीने शोभे[१] पण जेम जेम आयुष्य शिथिल थतुं जाय छे, अने मरणकाळ निकट आवतो जाय छे. तेम तेम तेवा मनुष्योने दुःख उपजे छे. [के में धर्म न कर्यो, हवे मारी शी गति थशे ?] (९). प्राणी मरण समये एकदम त्यागरुप विवेक पाळी शके नहि; तेटला माटे काम भोग छोडीने धर्मने विषे उद्यम करवो, आ लोकनुं स्वरुप ओळखवुं, ज्ञानी पुरुषनी माफक (शत्रु, मित्र तरफ) समभाव राखवो, आत्मानुं रक्षण करवुं अने कदि प्रमाद करवो नहि. [१०].

---

१. आयुष्यनो अंत नथी एवा अभिप्रायवाळा लोकोज आ भ्रम धरावे छे. प्रो. जेकोबी पण तेना शब्दार्थमां आ शब्दो वापरेछे. "This is the comparison of those who contend that life is eternal."

मुहु मुहु मोह गुणो जय त अणेगरुवा समण चरं त । फासा फुसति असम जसंचनतेसुभिख्खूमणसाप उस्से ॥ ११ ॥ मदाय फासा बहुलो हणिज्जा तहप्पगारेसु मण न कुज्जा । रख्खेज्ज कोह विणएज्जमाण माय नसेवेज्ज- पहेज्जालोह ॥ १२ ॥ जेसंखया तुच्छपरप्पवाइ तेपेज्ज दोसाणुगया परज्झा । एए अह म्मुत्ति दुगछमाणो कखेगुणे- जावसरिरभेउ त्तिबेमि ॥ १३ ॥

॥ इति असखयनाम झयणं चउथ्थ सम्मत्त ॥ ४ ॥

जे श्रमण (साधु) वारंवार मोहनी कर्मने जीते छे अने सयम मार्गे विचरे छे तेने नाना प्रकारना बाह्य स्पर्श दु:ख नडे छे, छता साधुए मनमां तेनो हर्ष शोक करवो नहि. (११). एवा प्रकारना स्पर्श बुद्धिने मूढ करी नाखे छे अने घणाने लोभावे छे, माटे ते (स्त्री-स्पर्श वगेरे) तरफ लक्ष लगाडवुं नहि. मायाथी दूर रहेवुं. क्रोध करवो नहि, मानने फेडवु अने लोभने टाळवो (१२). जे मिथ्यात्वी[1] (अन्य धर्मी) सदा राग द्वेषने लीधे परवश पडेला छे अने तेमा सदाकाळ मच्या रहे छे, एवाओने अपवित्र मानी तमनो अनादर करवो, अने शरीर पडता सुधी ज्ञान मेळववानी आकाक्षा राखवी. (अथवा-सयम-धर्मने विषे मरवुं). [१३].

॥ चोथु अध्ययन सपूर्ण ॥

१. Heretics—तुच्छ परवादी.

अध्ययन ५. अकाम, सकाम, मरण.

अन्नवसि महोहसि एगेतिन्ने दुरुत्तरे तत्थएगे महापन्ने इमपणह मुदाहरे ॥१॥ सतिमेय दुवेठाणा अक्खाया मारणतिया । अकाम मरणचेव सकाम मरण तहा ॥२॥ बालाण अकामतु मरण असइ भवे। पडियाणं सकामतु उक्कोसेण सइ भवे ॥३॥ तत्थिम पढम ठाण महावीरेण देसिय । काम गिद्धे जहा बालेभिस कूराइ कुव्वई ॥ ४ ॥ जे गिद्धे काम भोगेसुएगे कूडाय गच्छई । नमे दिठ्ठे परेलोए चक्खु दिठ्ठा इमा रइ ॥५॥

अध्ययन ५.

आ ससार समुद्र जेना महान प्रवाहथी (जन्म-मरणथी) पार उतरवानुं काम अति कठिन छे, तेना सामा तीरे मात्र एकज महा पुरुष [तीर्थंकर] पहोंच्या छे. [अर्थात–जन्म मरणथी मुक्त थया छे]. अने ते महा बुद्धिवंत पुरुषे नीचेना प्रश्नो उत्तर आप्यो छे. [१]. प्रत्यक्ष रीते बे प्रकारे जीव मरणावस्थाने प्राप्त थाय छे (१) अकाम मरण अने (२) सकाम मरण. [२]. मूर्ख अने विवेक रहित मनुष्यने अकाम मरण वारंवार प्राप्त थाय छे; पंडित अने धार्मिक पुरुषने सकाम मरण एकजवार प्राप्त थाय छे. [३] * अकाम अने सकाम मरणमां प्रथम अकाम मरण विषे श्री महावीर देव कहयु छे के काम भोगने विषे मच्यो रहीने मूर्ख माणस अति क्रूर हिंसादिक कर्म करे छे. (४), जे मनुष्य काम भोगने विषे आसक्ति राखे छे, ते कुटिलताना जाळमां फसाय छे. (जूठुं बोले छे अने क्रूर कर्म करे छे). ते एम माने छे के, ' परलोक तो में जोयुं नथी, पण काम भोगादि सुख तो प्रत्यक्ष देखाय छे., [५].

---

*केवळीने मात्र एकज जन्मे मुक्ति प्राप्त थाय छे अन्य अणगारोने मुक्ति मळनां पहेलां सात आठ भव करवा पडे छे.

हथ्था गया इमे कामा कालिया जे अणागया । को जाणइ परेलोए अथ्थिवा नथ्थिवा पुणो ॥ ६ ॥ जणेणसध्धि होख्खामि इइ बाले पगझइ । कामा भोगाणु राएण केससं पडिवज्जइ ॥ ७ ॥ तओ से दंड समारमइ तरसेसु थावरेसुय । अठाएय अणठाए भूय गाम विहिंसइ ॥ ८ ॥ हिंसे वाले मुसावाई माइल्ले पिसुणे सढे । भुज माणे सुर मस सेय मेयति मन्नई ॥ ९ ॥ कायासा वयसा मत्ते विते गिध्धेय इथ्थिसु । दुहओ मल सचिणइ सिसुनागोव्व मट्टिय ॥ १० ॥

'ए काम भोग अत्यारे मारा हाथमाज छे, पण भविष्यना सुख तो अनिश्चित१ छे. परलोक छे के नहि ए कोणे जाणे छे? [६]. एवो लपट बडाइ करे छे के, 'जेवी गति बीजानी थशे एवी मारी पण थशे.' पण एवा मूर्ख माणस काम भोगना रागे करीने अंते क्लेश [दुःख] पामे छे. [७]. आवी अज्ञानताथी ए मूर्ख माणस त्रस अने स्थावर जीवने दुःख देवानु आरभे छे अने निरर्थक कारणे अर्थे घणा जीवोनो निरर्थक वध करे छे [८]. एवो मूर्ख माणस हिंसा करे छे, मृषावाद [जूठु] बोले छे, कपट आदरे छे, पारकी निंदा करे छे, ठगबाजी रमे छे, मद्य मास सेवे छे, अने एम माने छे के आ बधु हुं बहु सारुं करुं छु. (९). जेम अळसीआं माटी खाय छे, माटीमा रहे छे अने अते माटीमाज सूकाइने मरे छे तेम कार्ये अने वचने करीने उन्मत्त तथा द्रव्य अने स्त्रीने विषे लुब्ध माणस, राग द्वेष करीने बन्ने प्रकारे [मनथी अने कायाथी] पाप बांधे छे.२ (१०).

१. 'आ भव मीठो तो पर भव कोणे दीठो'–एवो अज्ञानतानो भ्रम. २. मो. जेकोबी आ गाथानो अर्थ करता नीचेना शब्दो वापरे छेः–Over bearing in acts and words, desirous for wealth and women, he accumulates sins in two ways (by his acts and thoughts) just as a young snake gathers dust (both on and in its body)

तओ पुठो आयंकेणं गिलाणो परितप्पई । पभीओ पर लोगस्स कम्माणु प्पेहि अप्पणो ॥ ११ ॥ सुयामे नरए ठाणा असीलाणव जा गई । बालाण कूर कम्माणं पगाढा जथ्थ वेयणा ॥ १२ ॥ तथ्थो ववाइयठाणं जहामे तमणुस्सुय । अहाकम्मेहिं गच्छतो सो पच्छा परितप्पई ॥ १३ ॥ जहा सागडिउजाण सम्म हिच्चा महापहं । विसम मग्ग मोइन्नो अक्खे भग्गमि सोयइ ॥ १४ ॥ एव धम्म विउक्कम्म अहम्म पडिवज्जिया । बाले मच्चु-मुह पत्ते अक्खे भग्गेव सोयई ॥ १५ ॥ तओ से मरणं तमि बाले सतस्सइभया । अकाम मरण मरइ धुत्ते वाकलिणा जिए ॥ १६ ॥

पछी ते ग्लानि पामे छे अने रोगथी घेराय छे, अने पोताना दुष्ट कर्मनुं चिंतन करतो ते परलोकथी डरे छे. [११]. नरकना स्थान, अने पापी जीवनी गति [ए बन्ने] विषे में साभळ्युं छे; ज्यां क्रूर कर्म करनार मूर्ख माणसने दारुण दुःख वेठवा पडे छे. (१२). पछी ते पोते उपार्जेलां कर्म प्रमाणे जन्म धारण करवाने माटे (नरकना) उत्पत्तिस्थानमा जाय छे अने त्यां पश्चाताप करे छे (के अरेरे ! में बहु भूडुं कर्युं). एम में [श्री महावीर देव पासेथी] साभळ्युं छे. [१३]. जेम कोइ गाडीवान राज मार्ग [धोरी सडकनो रस्तो] जाणवा छतां ते छोडीने विषम मार्गे गाडु चलावे छे, अने पछी गाडानी धरी भागी जवाथी शोच करे छे, तेम जे मूर्ख माणस श्री तीर्थंकर देवनो भाखेलो धर्म छोडीने अधर्म मार्ग अंगीकार करे छे ते मरण काळे (धरी भागवाथी जेम गाडीवान शोच करतो हतो तेम) शोच करे छे. [१४–१५]. पछी ज्यारे मरणनो समय आखरे आवी पहोंचे छे त्यारे ते मरण भयथी कंपे छे, अने ते ' अकाम मरणे ' मरे छे अने दाव [द्युत दोष] थी जीतायेलो जुगारी जेम शोच करे छे तेम ते पापी जीव [तक गुमाववाथी] शोच करे छे. (१६).

एय अकाम मरण वालाण तु पवेइय । एत्तो सकाम मरण पडियाण सुणेहमे ॥ १७ ॥ मरणंपि सपुन्नाणं जहा मे तमणुस्सुयं । विप्पसन्न मणाघायं संजयाण वुसीमओ ॥ १८ ॥ न इमसव्वेसु भिक्खूसु न इमं सव्वेसु गारिसु नाणा सीला अगारत्था विसमसीला लाय भिक्खूणो ॥१९॥ सति एगेहिं भिक्खूहिं गारत्था सजमुत्तरा । गारत्थेहिय सव्वेहिं साहवो सजमुत्तरा ॥ २० ॥

मुर्खनुं [1]अकाम मरण (बाल मरण) आ प्रमाणे समजाव्या पछी हवे डाह्या पुरुषना सकाम[2] मरण [पंडित मरण] विषे कहु छु ते सांभळो. [१७]. पुण्यवंत मनुष्यो जे सयमथी पोताना आत्माने अने विकारोने वश राखी शके छे तेवा पंडितनुं सकाम मरण व्याकुळता अने विघ्न रहित होय छे, एम में गुरु मुखेथी सांभळ्युं छे. (१८). एवुं मरण सघळा साधुने तेमज सघळा ग्रहस्थने प्राप्त थतुं नथी. कारण के ग्रहस्थना आचार विविध प्रकारना होय छे अने साधुना आचार अति विषम छे. [१९]. कोइ कोइ संसारी केटलाक [नामधारी] साधु करता सयममा श्रेष्ट होय छे. पण [खरा] साधु सघळा ससारी करतां सयममां उत्कृष्ट होय छे.[3] [२०].

---

१. Death against one's will २. Death with one's will. ३. प्रो. जेकोबीना आ संबंधेना शब्दो स्मरणमां राखवा लायक छे:–Some householders are superior to some monks in self-control, but the saints are superior to all householders in self-control अहिं monk अने Saint वचेनो तफावत समजवो जोइए.

चीराजिणं न गिणिणं जडी संघाडी मुंडिण । एयाणिविन तायंति दुस्सील परियागयं ॥ २१ ॥ पिंडोलएव्व दुस्सीले नरगाओ न मुच्चइ । भिक्खाएवा गिहत्थेवा सुव्वए कम्मई दिव्व ॥ २२ ॥ आगारि सामा इयगाइ सड्ढिकाएण फासए । पोसह दुहओ पक्खं एगराइं न हावए ॥ २३ ॥

चीर, वल्कल, अजाचर्म धारण करवाथी, या तो नग्न रहेवाथी, जटा राखवाथी, कथा धारण करवाथी, माथु मुंडाववाथी अने एवा एवा साधु–आचार–चिह्नोने ग्रहण करवाथी कोइ दुराचारी कुमार्गी (साधु) पोताने दुर्गतिथी बचावी शकता नथी. (२१). दुःशील भिक्षा मागीने आजीविका करे पण अनाचार सेवे अने पाप कर्म वर्जे नहि तो ते नरकथी छूटे नहि, पण पवित्र वर्तन राखनार [पोतानां व्रत रुडी रीते पाळनार] साधु होय के संसारी होय तो पण स्वर्गे जाय छे.१(२२). श्रद्धावंत श्रावके सामायिकना अंग कायाए करीने पाळवा जोइए. शुक्ल अने कृष्ण पक्षमां [आठम, पाखी वगेरेना] शुद्ध भावे पोषा२ करवा जोइए. कोइ दिवस ते करवानु चूकवु न जोइए३ (२३)

---

१. संसारमां रहीने ऐहिक अने आमुष्मिक–आ भव परभवनु–श्रेय साधवानी इच्छावाळाए आ शब्दो सोनेरी अक्षरे लखी राखवा जोइए." A pious man, whether monk or householder, ascends to heaven "२. पोषह व्रत-आत्माने पोषनो संसारी खटपटथी अळगा रही, सर्व व्यापार, सर्व आहार [पाणी, मुखवास, मेवो वीगेरे] अब्रह्म, नोकर चाकर वीगेरेनी सेवा आ बधुं एक दीवस अने एक रात्रिने माटे त्यागी आश्रवनो रोध करी संवरमां प्रवर्तवुं. शान्त मने ज्ञान, ध्यानमा दीवस निर्गमन करवो. बुद्ध धर्मीओमां पण आवुं व्रत छे जे 'उपोसथ' (Up'osatha) कहेवाय छे. ३. मूळ पाठमा 'एगराइं' शब्द छे जेनो शब्दार्थ "एक रात्रीए पण पोसहनी हानी न करे" एम भाषाकार लखेछे जेनो भावार्थ ए होइ शके छे के अष्टमी, पाखीना पोषा कोइ दीवस चुकवा नहि. दीवस दरम्यान अवकाश न मळे तो देसावगासीक करवा.

एव सिक्खा समावन्ने गिहिवासेवि सुव्वए । मुच्चई छविपव्वाओ गच्छे जक्खस लोगयं ॥ २४ ॥ अह जे संवुडे भिक्खूदुन्ह मन्नयरे सिया । सव्व दुक्ख पहीणेवा देवेवावि महिड्ढिए ॥ २५ ॥ उत्तराइ विमोहाइ जुइमंताणु पुव्वसो । समाइन्नाइ जक्खेहि आवासाइ जस सिणो ॥ २६ ॥ दीहाउया इड्ढिमंता समिद्धा कामरूविणो । अहुणो ववन्न संकासा भुज्जो अच्चिमालिप्पभा ॥२७॥ ताणि ठाणाणि गच्छंति सिक्खित्ता संजमं तवं । भिक्खाएवा गिहत्थेवा जेसंति परिनिव्वुडा॥२८॥तेसिं सोच्चा सपुज्जाण संजयाण वुसीमओ। नसंतसंति मरणंते सीलवंता बहुस्सुया ॥२९॥

आ रीते शिक्षा ग्रहण करीने जे कोइ गृहवासमां [ग्रहस्थाश्रममां] रहीने पण सुव्रत पाळे छे ते [1]औदारिक शरीर छाडीने यक्ष लोकमां जाय छे (२४).पोताना आत्माने सवरे करीने वश राखनार साधु बेमांथी एक गतिने प्राप्त थाय छे;.का तो सर्व कर्मनो क्षय करीने ते सिद्ध थाय छे [मोक्षे जाय छे]; अथवा (जुज कर्म बाकी रह्यां होय तो) महा रिद्धिवान देवता थाय छे. (२५). अनुत्तर विमान ज्यां मोहनी कर्म रहेलां नथी, जे ज्योति (तेज)थी भरपूर छे, ज्यां यशस्वी देवताओनो वास छे, जेओ दीर्घायुषी, रिद्धिवंत, समृद्धिवान, अति तेजस्वी छे, जेओ नवा नवा रूप धारण करीने सुख भोगवे छे, तत्काळ उपज्या होय एवुं [तरतना जन्मेला बाळकना जेवुं] जेनुं स्वरूप छे, जेनी अनेक सूर्यना जेवी कान्ति छे, एवा देवलोकने विषे हरकोइ त्यागी अथवा ग्रहस्थ, जेणे वारे भेदे तप अने सत्तरे भेदे संयम पाळ्यो होय अन पोताना आत्माने वश राख्यो होय, ते जइ शके छे. (२६-२७-२८). जे पुज्य साधु पुरुषो पोताना आत्माने वश राखे छे अने दृढ संयम पाळनारा छे तेमनी पासेथी आ (बोध) साभळ्या पछी, बहु श्रुत अने शीलवंत पुरुषो मरण काळे भय पामता नथी [2] [२९].

१. जे शरीरमां हाड मांस होय ते. २. प्रो. जेकोबी आ माटे एवा शब्दो वापरेछे केः—The virtuous and the learned do not tremblo in the hour of death.

तुलिया विसेस मादाय वयाधम्मस्स खंतिए । विप्पसीइज्ज मेहावी तहाभूएण अप्पणो ॥३०॥ तओ काले अभिप्पेए सड्ढी तालिसमंतिए । विणएज्ज लोम हरिसं भेयदेहस्स कंखए ॥ ३१ ॥ अहकालंमि संपत्ते अघायायसमुस्सयं । सकाम मरणं मरइतिएहमन्नयरमुणी त्तिबेमि ॥ ३२ ॥

○ ॥ इति अकाम सकाम मरणं झयणं पचम सम्मत्तं ॥ ५ ॥ ○

बुद्धिवान पुरुष (बन्ने प्रकारना मरणनु) तोल [परीक्षा] करीने अने (सकाम अने अकाम मरण) ये मांथी ज्यारे सारुं होय ते पसंद करीने, दया, धर्म, क्षमादि आदरे तो ते [मरण काळे] पोताना आत्माने शान्त अने क्षमाशील राखी शके छे. [३०]. मरण काळ प्राप्त थाय त्यारे श्रद्धावत साधुए पोताना गुरुनी समीपे मरण-भयने त्यागीने (हर्ष,-शोक तजीने) शरीर त्याग (देह क्षय)ने इच्छवो. [३१]. देह त्याग करवानो समय आवी पहोंचे त्यारे प्रज्ञावान पुरुषने *त्रणमांथी एक प्रकारे सकाम मरण प्राप्त थाय छे. [३२].

॥ पांचमुं अध्ययन संपूर्ण. ॥

*भक्त परिज्ञा, इंगित मरण, पादपोपगमन. भक्त परिज्ञा=नीते लीधेली प्रतिज्ञाओ पाळीने अणसण करी शान्तीथी शरीर छोडवुं ते. इंगित एटले सांकेतिक, धारेला प्रदेशमाज हरवा फरवाना निर्णयवाळु अणसण करीने शरीर छाडवु ते इंगित मरण. पादप एटले वृक्ष तेने उपगमन सरखा थवुं एटले वृक्ष माफक स्थिर रहेवुं. कोइ पण अंगोपांग हलाववां नहि एवा अणसणने पादपोपगमन कहे छे. आ विषे विस्तार पूर्वक विवेचन श्री आचारांगजी सूत्रना प्रथम श्रुत स्कंधना आठमा अध्ययनना ५, ६, ७, ८ उद्देशामां छे.

अध्ययन ६. * लघु निग्रन्थ [क्षुल्लक साधु].

जावंति विज्जा पुरिसा सव्वेते दुक्खसंभवा । लुप्पंति बहुसो मूढा संसारंमि अणंतए[1] ॥ १ ॥ समिक्ख पंडिए तम्हा पास जाइपहे बहू । अप्पणा सच्च मेसिज्जा[1] मित्ति[1] भूएसु कप्पए ॥२॥ माया पियाएन्हुसा[1] भाया भज्जा पुत्ताय ओरसा । नालंते मम ताणाय लुप्पंतस्स स कम्मुणा ॥ ३ ॥ एयमट्ठं स पेहाए पासे समियदंसणे । छिंदे गहिं सिणेहंच न कंखे पुव्वसंथवं ॥ ४ ॥

१. पाठांतरे 'अनतगे', 'मेसेज्जा', 'मित्त', 'पियान्हुसा' वीगेरे तफावत छे.

❁ अध्ययन ६. ❁

जे मनुष्यो तत्वना अजाण छे ते सघळा दुःखना विभागी थाय छे. अनन्त संसारमां ते मूढ पुरुषो अनेक प्रकारनी पीडा पामे छे. (१). पुत्र कलत्रादि मोहपास[1] अने (एकेन्द्रियादि) योनिमां भ्रमणनुं स्वरुप समजीने, तत्वज्ञ पुरुष पोताना आत्माने सयमने विषे स्थापे छे, अने सर्व जीव तरफ मित्रभाव राखे छे. (२). [ते एम विचारे छे के]–'माता', पिता, पुत्रवधु, भ्राता, भार्या अने पुत्रादि ज्यारे हुं मारां पोतानां कर्मने लीधे दुःख भोगवीश त्यारे ते थकी, तेमांनुं कोइ मारुं रक्षण करवाने समर्थ थशे नहि. (३). आ सत्य तत्वरुपी अर्थ बुद्धिवान पुरुषे सम्यग दृष्टिथी विचारवो-स्मरवो, मिथ्यात्व अने स्नेहने छांडीने पूर्व परिचयनां (ग्रहस्थाश्रमनां) सुख याद न करवां. [४].

१. श्री देवेन्द्र अहिं एक संस्कृत श्लोक टांके छे. " कलत्रनिगडं दत्वा, न संतुष्टः प्रजापतिः । भुयोऽपि अपत्या रुपेन ददाति गलशृंखलम् ॥ " तेनो भावार्थ एवो छे के, सृष्टिमां पुरुषोने स्त्रीरुपी पास-बेडीमां नाखवामां आवे छे एटलुज नहि पण वधारामां बाळ बच्चां-संतानरुपी सांकळ तेमना गळानी आसपास वींटाळवामां आवे छे. २. आ ज पाठ श्री सुयगडांग सूत्रना प्रथम सूत स्कंधना नवमा अध्ययननी पांचमी गाथामां छे.

गवासं मणि कुंडलं पसवो दास पोरुसं । सव्व मेयं चइत्ताणं कामरूवी भविस्ससि ॥ ५ ॥ थावरं जंगमं चेव धणं धन्नं उवक्खरं । पच्चमाणस्स कम्मेहिं नालं दुक्खाउ मोयणे ॥ ६ ॥ अज्झत्थं सव्वओ सव्वं दिस्स पाणे पियायए । नहणे पाणिणो पाणे भय वेराउ उवरए ॥ ७ ॥ आयाणं नरयं दिस्स नायएज्ज तणामवि । दोगुंछी अप्पणो पाए दिन्नं भुंजिज्ज भोयणं ॥ ८ ॥ इहमेगेउ मन्नंति अप्पच्चक्खाय पावगं । आयरियं विदित्ताणं सव्व दुक्खा विमुच्चई ॥ ९ ॥

गाय, अश्व, मणि, कुंडल, पशु, दास, सेवक इत्यादि सर्व वस्तु छोडवाथी (हे शिष्य! अथवा हे जीव!) तु [1]स्वेच्छारूप धारी देवता थइश. (५). [2]स्थावर परिग्रह [घर, हाट वीगेरे] अने जंगम परिग्रह (धन, धान्य वगेरे) जीवने पोताना कर्मना दुःखथी मूकाववाने समर्थ नथी. (६). सर्व प्रकारना [3]सुख दुःख सौ सौना आत्मानेज लागु पडे छे. माटे प्राणी मात्रने पोत पोतानो जीव वहालो छे एम जाणीने कोइ जीवने हणवा नहि, अने तेमने भय उपजाववाथी तथा तेमना उपर वेर लेवाथी साधुए दूर रहेवुं [७]. अदत्तने नर्कना हेतु जाणीने साधुए अण दीधु तृण मात्र पण लेवुं नहि; शरीरना निभाव अर्थे काष्ठ-पात्रमा [पातरामां]ग्रहस्थनो दीधेलो शुद्ध आहार जमवो. (८). आ संसारमां केटलाक (कपिलादि ज्ञानवादीओ) एम माने छे के' हिंसादिरूप पाप कर्म तज्या विना पण पोताना मतना आचार पाळवाथीज सर्व दुःखथी मुक्त थवाय छे. (९).

१. देवताओ पोतानी मरजी मुजब रूप धारण करी शके छे, कारण तेमने वैक्रय शरीर होय छे. २.मो. जेकोबीना भाषान्तरमां आ गाथा नथी. टीकाकार [illegible] प्राचीन मनोमां पण आ गाथा नथी एम तेनु कहेवुं छे. ३. सुख दुःखनो ज्ञाता—जाणनार अने वेदनार आत्मा ज छे. सुख दुःख आत्मामांज रहेलु छे. शब्दार्थ एवो छे के, पोताने थतु सुख दुःख जेवी रीते सर्वने थाय छे. ए प्रमाणे [illegible] अर्थ पण छे के "आत्मवत् सर्वतः सर्व." ४. ज्ञान मार्ग उपर आ आक्षेप रूप छे.

भणंता अकरिंताय बंध मोक्ख पइण्णिणो । वाया वीरिय मत्तेण समासा सति अप्पग ॥१०॥ न चित्ता तायए भासा कओ विज्जाणु सासण (विसन्ना पावकम्मेहिं वाला पडिय माणिणो ॥ ११ ॥ जे केइ सरिरं सत्ता वन्ने रूवेय सव्वसो । मणसा काय वक्केणं सव्वेते दुक्ख संभवा ॥१२॥ आवन्ना दीह मद्धाण संसारंमि अण तए । तम्हा सव्व दिस परस अप्पमत्तो परिव्वए॥१३॥ बहिया उड्ढ मादाय नाव कंखे कयाइवि । पुव्व कम्म खय ठाए इम देह समुद्धरे ॥ १४ ॥

आ जगतमां केटलाक एम माने छे के ज्ञानथीज मुक्ति छे,[१] क्रियानी काइ जरुर नथी. एवा मनुष्यो बन्ध-मोक्षनां साधनने स्वीकार करता छतां ते प्रमाणे क्रिया करता नथी, अने मात्र वचनना आडम्बरथी पोताना आत्माने आश्वासन आपे छे. (१०). (पण ज्ञाननो अहकार राखनार एम नथी जाणता के) भाषा ज्ञान जीवने नरके जतो बचावी शकशे नहि.[२] विद्या-पठन [न्याय, मीमांसा वगेरे] मात्र जीवनुं पापथी रक्षण शी रीते करी शके? पाप कर्मने विषे मच्या रहेनार मूर्ख माणसो पापमां उंडाने उंडा डुबता जाय छे तो पण पोताने पंडित मानी बेसे छे. [११]. जे प्राणी मन, वचन अने कायाए करीने शरीर, वर्ण अने रूपने विषे आसक्त रहे छे ते दुःखी थाय छे.[३] (१२) तेओ आ अंतरहित संसारमा लाबे मार्गे भव भ्रमण करे छे; माटे साधुए गतागतनुं स्वरूप ओळखीने संसारमा पाप कर्मथी दूर रहीने विचरवु [१३] संसारथी अति उत्तम जे मोक्ष [मुक्ति] ते मेळववा मनोरथ करीने रिद्धि सिध्यादिकनी कदि वाच्छना करवी नहि; पण पूर्व कर्मना क्षयने अर्थे काया निभाववी (१४).

१. तेओ मात्र ज्ञानथीज मोक्ष माने छे, आपणे जैनो ज्ञान अने क्रियाथी मोक्ष मळवानु मानीए छीए. वातो मोटी करवी अने वर्तनमां काइ नहि एम न थवु जोइए. २ वातोथी वडा पाकी जतां नथी–Clever talking will not work salvation
३. प्रो. जेकोबी वे गाथा पछी आ गाथा राखे छे. अहिं मुळ प्रमाणे अनुक्रम राखेलो छे.

निग्गिंच कम्मुणोहेउं कालकंखी परिव्वए। मायं पिंडस्स पाणस्स कडं लद्धूण भक्खए ॥१५॥ सनिहिं च न कुव्वेज्जा लेवमायाए संजए। पक्खी पत्तं समादाय निरवेक्खो परिव्वए ॥१६॥ एसणा समिओ लज्जू गामे अणियओ चरे। अप्पमत्तो पमत्तेहिं पिंडवायं गवेसए ॥१७॥ एवं से उदाहु अणुत्तर नाणी अणुत्तर दंसी। अणुत्तर नाण दंसण धरे अरहा नायपुत्ते भयवन्ते। वेसालिए वियाहिए त्तिबेमि ॥१८॥

⊙ इति खुड्डागनियंठिय ज्झयणं छठं सम्मत्तं ६ ⊙

कर्म बन्धननां कारण दूर करवां[1] अने अवसरे (योग्य काळे) स्वक्रिया-अनुष्ठान करता विचरवुं[2] [अवसरज्ञ थवुं] आहार पाणीनी मात्रा [केटलुं जोइए ते] जाणीने, गृहस्थे पोताने माटे बनाव्यो होय तेवो सूझतो आहार लेवो. [१५]. साधुए अन्नादिकनो मुद्दल संग्रह करवो नहि; पात्रने लेप मात्र एटलुं पण घी वगेरे राखवुं नहि. पण पक्षी जेम पत्र [पांख] एकठी करीने उडे छे, तेम साधुए पात्र (पातरां) एकठां करीने कशी पण अपेक्षा राख्या सिवाय विचरवुं. [१६]. लज्जावान साधु निर्दोष आहार शोधतो संयम मार्गे विचरे छे, अने गाम या नगरमां नित्य (स्थिर) वास करतो नथी. अने प्रमादी गृहस्थना समुहमां अप्रमादी रहीने सूझतो आहार ग्रहण करे छे. [१७] सर्वोत्कृष्ट ज्ञानी, सर्वोत्कृष्टदर्शी अने अनुत्तर ज्ञान दर्शनना धारण करनार अरिहंत ज्ञातपुत्र वैशालिक[3] [सिद्धार्थ अने त्रिशलाना पुत्र] श्री महावीर भगवाने आ प्रमाणे कह्युं छे. (१८).

✲ ॥ छठ्ठुं अध्ययन संपूर्ण. ॥ ✲

१. मूळ पाठमां 'निग्गिंच' शब्द छे जेनो अर्थ टीकाकार-दूर करवुं-करे छे प्रो. जेकोबी Recognize शब्द वापरे छे २. प्रो. जेकोबी मरणनी राह जोतां विचरवुं एम अर्थ करे छे. ३. वैशालिकनो घणा अर्थ छे. विशाळ शिष्योवाळा, वैशालीना रहीश, त्रिशलाना पुत्र वगेरे.

अध्ययन ७. मेंढानुं आख्यान. (श्री एलक[1] अध्ययन).

जहाएसं समुद्दिस्स कोइ पोसेज्ज एलय । ओयण जन सदिज्जा पोसेज्जावि सय गणे ॥ १ ॥ तओ से पुट्ठे परिवूढे जायमेए महोदरे । पीणिए विउले देहे आएसं परिकंखए ॥ २ ॥ जाव नएइ आएसे ताव जीवइ से दुही । अह पत्तमि आएसे सीसं छित्तूण भुंजइ ॥ ३ ॥ जहा से खलु[2] उरब्भे आएसाए समीहिए । एव बाले अहम्मिट्ठे ईहई नरया उय ॥ ४ ॥ हिंसे बाले मुसा वाई अद्धाणंमि विलोवए । अण्ण दत्त हरेतेणे माई कन्नू हरे सढे ॥ ५ ॥

१. एलयं=एलक=A ram २. कोइ मतमां 'से' अक्षर 'खलु' पछी छे 'जहा खलु से' पण तेथी अर्थमां फारफेर थतो नथी.

अध्ययन ७.

परोणाने निमित्ते कोइ (मांसाहारी) माणस मेंढाने उछेरे, तेने जव, मग, मठ विगेरे खवडावे छे अने पोताना घरना आंगणे तेने पाळी पोषीने पुष्ट करे (१). पछी ज्यारे ते रातो मातो, मोटा पेटवाळो अने पुष्ट शरीरवाळो थाय त्यारे घरनो धणी एम इच्छे छे के हवे परोणो आवे तो सारु. [२]. ज्यां सुधी परोणो न आवे त्यां सुधी ते बिचारुं प्राणी [मांसाहारीने घेर] जीववा पामे छे. पण परोणो आव्यो के तरतज तेनुं माथु छेदाय छे अने ते खवाय छे. [३]. जेवी रीते परोणानी खातर मेंढानुं सारी रीते पालण पोषण थाय छे, तेवी रीते मूर्ख अने अज्ञानी मनुष्यो नरकनी जींदगी माटे पोतानु पोषण करे छे. (४). एवो प्राण घातक मूर्ख माणस जीव हिंसा करे छे, मृषावाद बोले छे, वाटपाडुनो धंधो करे छे, चोरी करे छे, अदत्तादान ले छे अने कोइनुं धन हरवानु चिन्तन मनमां कर्या करे छे. (५).

इत्थी विसय गिद्धेय महारंभ परिग्गहे । भुञ्जमाणे सुरं मंसं परिवूढे परं दमे ॥ ६ ॥ अयकक्कर भोइय तुंदिल्ले चियलोणिए[1] । आउय नरए कखे जहाए सव्वएलए ॥ ७ ॥ आसणं सयण जाण वित्त कामेय भुंजिया । दुस्साहड धण हिच्चा बहु संचिणिया रय ॥ ८ ॥ तओ कम्म गुरूजंतु पच्चुपन्न परायणे । अयव्व आगया एसे मरणं तंमि सोय ॥ ९ ॥ तओ आउ परिक्खीणे चुयादेह विहिंसगा । आसुरीय दिस बाला गच्छति अवसातमं ॥ १० ॥

---

१. कोई मतमां 'लोहिए' शब्द छे.

ते मूर्ख, स्त्री अने विषयमां लुब्ध रहे छे, महा आरम्भ अने परिग्रहमां मच्यो रहे छे, मद्य पीए छे, मांस खाय छे अने मस्त बनीने अन्यने दमे छे. (६). तेवा (विषयासक्त) भला मांस इति स्वादथी खाय छे, तेनुं उदर मोटु थाय छे, तेनी नाडीमां लोही उछाळा मारे छे, पण बकरो जेम अने परोणाने माटे हणाय छे तेम तेने अने नरकनुं आयुष्य प्राप्त थाय छे. [७] सुखासन, छप्पर पलंग, गाडी घोडा, द्रव्य, कामभोगादि भोगवीने, महा महेनते उपार्जन करेला धननो व्यय करीने, अनेक पापरूपी मळ भेगो करीने, आ जगतने ज सर्वस्व समजीने, भारे कर्मी जीव, जेम बकरो, परोणो आववाथी दुःख पामे छे तेम ते मरण काळ आवी पहोंचवाथी शोक करे छे.—दुःखी थाय छे (८-९) पछी प्राणी हिंसा करनार पापी मनुष्य पोताना आयुष्यना अंते मनुष्य देहथी भ्रष्ट (मानव भवथी विमुक्त) थाय छे, अने (पाप कर्मने लीधे) परवश पडेलो होवाथी अंधकारमय असुर लोक (नरक गति) मां जाय छे. [१०].

जहा कागणीएहेउ सहसंहारएनरो । अपथ्थं अंबगंभुच्चा रायारज्जं तु हारए ॥ ११ ॥ एवं माणुसगाकामा देव कामाण अतिए । सहस्स गुणीया भुज्जो आउंकामाय दिव्विया ॥ १२ ॥ अणेगवासाणउया जासा पन्नव उठिई । जाणि जीयति दुम्मेहा उणेवाससयाउए ॥ १३ ॥ जहायतिन्निवणिया मूलघितूणनिग्गया । एगोध्थलहए लाभं एगोमूलेण आगओ ॥ १४ ॥ एगो मूलपि हारित्ता आगओ तथ्थ वाणिओ ववहारे उवमा एसा एव धम्मे वियाणह ॥ १५ ॥

जेम कोइ माणस एक *कोडीने माटे हजार दीनार हारी जाय, जेम *पेलो राजा अहितकारी आम्रफल खावाथी पोतानुं आखुं राज्य हारी गयो हतो, तेम देवताना कामभोग आगळ मनुष्यना कामभोग कोडी समान छे, वळी देवताना कामभोग अने आयुष्य मनुष्यनां कामभोग अने आयुष्य करता सहस्र गणां अधिक छे. [११-१२]. उत्तम ज्ञानवाळा पुण्यशाळी देवता अनेक नियुतनुं [1] [असंख्य वर्षनुं] आयुष्य भोगवे छे; दुर्बुद्धिवाळो मनुष्य सो वर्षथी ओछा आयुष्यवाळी जींदगीमां देवताना लांबा आयुष्यनो लाभ गुमावे छे.(१३).त्रण वेपारी पुंजी लइने घेरथी वेपार करवाने नीकळे छे. तेमानो एक लाभ मेळवीने, बीजो मूळगी मूडी लइने अने त्रीजो पोतानी सघळी पुंजी गुमावीने पाछो आवे छे. आ व्यवहारिक दृष्टान्त जींदगीने लागु पाडतां शीखवुं जोइए. (१४-१५).

*आ बन्ने उदाहरणनुं स्पष्टिकरण करवा माटे टीकाकारे बे दृष्टांत आपेला छे, पण बगर दृष्टान्ते अर्थ स्पष्ट हे वाथी ते अहिं उतार्या नथी. कोडी भाँहे रुपियाना एसीमा भागना नांना पुराणा सिक्का माटे वापरी छे. मूळ पाठमां 'कागणी' शब्द छे. टीकाकार ते माटे 'काकिण्य' (Kakini) शब्द वापरे छे, १. नियुत एटले ४९,७८६,१३६,०००,०००,०००,०००,०००,०००,०००,०००, वर्ष तेनुं कोष्टक नीचे मुजब छे. ८४००००० वर्ष=एक पूर्वांग. ८४००००० पूर्वांग=एक पूर्व. ८४००००० पूर्व=एक नियुतांग. ८४००००० नियुतांग=एक नियुत.

माणु सर्त्त भवे मूलं लाभो देव गई भवे। मूल छेएण जीवाणं नरग तिरिखत्ताणं धुवं ॥१६॥ दुहओ गई बालस्स आवई वह मूलिया। देवत्तं माणुसत्तं च जं जिए लोलुया सढे॥१७॥तओ जिएसइ होइ दुविहं दुग्गइंगए। दुल्लहा तस्स उम्मग्गा अद्धाएसु चिरादवि॥ १८ ॥ एवं जिय सपेहाए तुलिया बालच पडियं। मूलियंते पवेसंति माणुस्स जोणि मतिजे॥१९॥ वेमायाहिं सिक्खाहिं जेनरा गिहि सुव्वया। उव्वेंति माणुस्सं जोणिं कम्म सच्चाहुपाणिणो॥२०॥

मनुष्य भव ए मूलिधन छे; देवगति लाभ रूप छे. ते मूडी गुमाववाथी माणसने नरक अथवा तिर्यंच योनिमां (पशु योनिमां) जन्मवुं पडे छे. [१६]. पापी मनुष्य माटे बे गति [नरक अने तिर्यंच] निर्माण छे; जे बन्ने गति दुःखदायक अने पीडाकारक छे. कारण के [स्त्रीने विषे] लुब्ध रहेवाथी ए शठ पुरुष मनुष्यपणुं अने देवपणुं हारी बेठो छे. [१७]. ए बन्ने (देवपणुं अने मनुष्यपणुं) हारी बेठेलो होवाथी तेने बन्ने दुर्गति [नरक अने तिर्यंच] वेठवी पडे छे, अने ए (बन्ने) गतिथी नीकळीने लांबे काळे पण उच्च [देव या मनुष्य] गति प्राप्त करवी दुर्लभ थइ पडे छे (१८). मूर्खने आ प्रमाणे हारेलो देखीने प्रत्येक मनुष्ये मूर्खपणाना अने पंडितपणाना सारासारनो विचार पूर्वक तुलना करवी जोइए जे मनुष्य धर्म अंगीकार करीने मनुष्य योनी पामे छे तेनी तुलना मूळ मूडी लइ पाछा आवनार वेपारी साथे थाय छे [१९]. जे गृहस्थो विनितपणानी विविध प्रकारनी शिक्षाए करीने सदाचार पाळे छे ते मनुष्य योनीने पामे छे, कारण के प्राणी मात्र पोत पोताना कर्मनुं फळ पामे छे. (२०).

१. मनुष्य गति चार कारणे मळे छे [१] 'पगई भद्दीयाए' स्वाभाविक स्वभाव-प्रकृतिनो भद्रीक (Kind disposition. (२) 'पगई विणयाए' विनय (Love of discipline). (३) 'साणु कोसीयाए' अनुकंपा (Compassion'). (४) 'अमच्छरीयाए' मत्सर रहित (Want of envy) आ सवर्नु विस्तार पूर्वक विवेचन श्री ठाणांगजी सूत्रमां छे.

जेसिं तु विउला सिक्खा मूलियंतेअइथिया । सीलवना सवीसेसा अदिणाजंति देवय ॥२१॥ एव मदीणवं भिक्खुं अगारिंच वियाणिया । कहन्नू जिच मेलिक्खव जिचमाणोनसंविदे ॥२२॥ जहा कुसग्गे उदय समुद्देण सममिणे । एव माणुस्सयाकामादेवकामाण अतिए ॥ २३ ॥ कुसग्गमित्ता इमेकामा संनिरुद्धमि आउए । कस्सहेउ पुरा काउं जोगखेम नसंविदे ॥२४॥ इह कामानियट्टस्स अत्तठे अवरझई । सोच्चानेयाउयंमग्गं जभुज्जो परिभस्सई ॥ २५ ॥ इह कामानियट्टस्स अत्तठेनाव रझई । पूइदेह निरोहेण भवेदेवेत्तिमे सुय ॥२६॥

पण जे मनुष्य विपुल अने विस्तीर्ण शिक्षा [पंच महाव्रतरूप] ग्रहण करीने ते पाळे छे तेनी तुलना पुंजी उपरांत लाभ मेळवनारनी साथे थइ शके छे, एवा सर्वोत्तम आचारवाळो सदाचारी पुरुष आनंदथी देवपणुं पामे छे. [२१]. एवी रीते सदाचारी साधु तथा गृहस्थ पोताना साधुपणाना अने ग्रहस्थपणाना लाभ समजे छे. तेथी पंडित पुरुषोए सावधान रहीने धर्म मार्गे प्रवर्त्तवुं जोइए. (२२). मनुष्यना कामभोगनी तुलना कुशाग्रे [दर्भनी अणी उपर] रहेला जळ बिन्दु साथे थइ शके छे, ज्यारे देवताना सुखनी सरखामणी समुद्रना (अगाध) जळनी साथे करी शकाय छे. [अर्थात देवताना प्रमाणमां मनुष्यना सुख नहि सरखा छे]. [२३]. मनुष्यना अति अल्प आयुष्यना कामभोग कुशाग्रे रहेला जळ बिन्दु समान छे तो पछी [देवताना अपार सुखनो] अलभ्य लाभ प्राप्त करीने ते साचवी राखवाने कयो मनुष्य न इच्छे ? (२४). जे जीव कामभोगथी निवृत्त थतो नथी ते आत्मानो खरो हेतु [मुक्ति] गुमावे छे. जो के मोक्षनो देनार शुद्ध मार्ग साभळीने ते तेणे अंगीकार करेलो छे, छतां ते थकी ते वारवार भ्रष्ट थाय छे. [२५]. जे जीव कामभोगथी निवृत्त थयेलो छे ते आत्मानो खरो हेतु (देवलोकादि) गुमावतो नथी. ते एम माने छे के आ अपवित्र शरीर त्यागीने हुं देवता अथवा सिद्ध थइश. (२६).

माणु सत्तं भवे मूलं लाभो देव गई भवे । मूल छेएण जीवाणं नरग तिरिखत्तणं धुवं ॥१६॥ दुहओ गई बालस्स आवई वह मूलिया । देवत्त माणुसत्तन्च जं जिए लोलुया सढे॥१७॥तओ जिएसइं होइ दुविहं दुग्गइंगए । दुल्लहा तस्स उम्मग्गा अद्धाएसु चिरादवि ॥ १८ ॥ एवं जिय सपेहाए तुलिया बालंच पंडिय । मूलियते पवेसति माणुस्सं जोणि मतिजे ॥१९॥ वेमायाहिं सिक्खाहिं जेनरा गिहि सुव्वया । उव्वेंति माणुस्सं जोणिं कम्म सच्चाहुपाणिणो॥ २०॥

मनुष्य भव ए पुंजीरुप छे; देवगति लाभ रुप छे ते पुंजी गुमाववाथी माणसने नरक अथवा तिर्यंच योनिमां (पशु योनिमा) जन्मवुं पडे छे. [१६]. पापी मनुष्य माटे बे गति [नरक अने तिर्यंच] निर्माण छे; जे बन्ने गति दुःखदायक अने पीडाकारक छे. कारण के [स्त्रीने विषे] लुब्ध रहेवाथी ए शठ पुरुष मनुष्यपणुं अने देवपणु हारी बेठो छे. [१७]. ए बन्ने (देवपणुं अने मनुष्यपणु) हारी बेठेलो होवाथी तेने बेवडी दुर्गति [नरक अने तिर्यंच] वेठवी पडे छे; अने ए (अधो) गतिथी नीकळीने लांबे काळे पण उच्च [देव या मनुष्य] गति प्राप्त करवी दुर्लभ थइ पडे छे (१८). मूर्खने आ प्रमाणे हारेलो देखीने प्रत्येक मनुष्ये मूर्खपणाना अने पंडितपणाना सारासारनी विचार पूर्वक तुलना करवी जोइए जे मनुष्य धर्म अंगीकार करीने मनुष्य योनी पामे छे तेनी तुलना मूळ मूडी लइ पाछा आवनार वेपारी साथे थाय छे.[१९]. जे ग्रहस्थो विनितपणानी विविध प्रकारनी शिक्षाए करीने सदाचार पाळे छे ते मनुष्य योनीने पामे छे; कारण के प्राणी मात्रने पोत पोतानां कर्मनु फळ मळे छे. (२०).

---

१. मनुष्य गति चार कारणे मळे छे. [१] 'पगाई भद्दीयाए' दयाळु स्वभाव-प्रकृतिनो भेदीक (Kind disposition (२) 'पगाई वीणयाए' विनय (Love of discipline). (३) 'शानु कोशीयाए' अनुकंपा (Compassion). (४) 'अमछरीयाए' गर्व रहीत (Want of envy) आ सघळे विस्तार-पूर्वक विवेचन श्री ठाणांगजी सूत्रमां छे.

जेसिं तु विउला सिक्खा मूलियंतेअइथ्थिया । सीलवना सवीसेसा अदिणाजंति देवयं ॥२१॥ एव मद्दीणवं भिक्खुं अगारिंच वियाणिया । कहन्नू जिच्च मेलिक्ख जिच्चमाणोनसंविदे ॥२२॥ जहा कुसग्गे उदय समुद्देण सममिणे । एव माणुस्सयाकामादेवकामाण अंतिए ॥ २३ ॥ कुसगामित्ता इमेकामा संनिरुद्धमि आउए । कस्सहेउ पुरा काउं जोगखेम नसंविदे ॥२४॥ इह कामानियट्टस्स अत्तट्ठे अवरज्झई । सोच्चानेयाउयमग्गं जंभुज्जो परिभस्सई ॥ २५ ॥ इह कामानियट्टस्स अत्तठेनाव रज्झई । पूइदेह निरोहेणं भवेदेवेत्तिमे सुय ॥२६॥

पण जे मनुष्य विपुल अने निर्मोण शिक्षा [पंच महाव्रतरूप] ग्रहण करीने ते पाळे छे तेनी तुलना पुंजी उपरांत लाभ मेळवनारनी साथे थइ शके छे, एवा सर्वोत्तम आचारवाळो सदाचारी पुरुष आनदथी देवपणुं पामे छे. [२१]. एवी रीते सदाचारी साधु तथा ग्रहस्थ पोताना साधुपणाना अने ग्रहस्थपणाना लाभ समजे छे. तेथी पडित पुरुषोए सावधान रहीने धर्म मार्गे प्रवर्त्तवु जोइए. (२२) मनुष्यना कामभोगनी तुलना कुशाग्रे [दर्भनी अणी उपर] रहेला जळ विन्दु साथे थइ शके छे, ज्यारे देवताना सुखनी सरखामणी समुद्रना (अगाध) जळनी साथे करी शकाय छे. [अर्थात देवताना प्रमाणमां मनुष्यना सुख नहि सरखा छे]. [२३]. मनुष्यना अति अल्प आयुष्यनां कामभोग कुशाग्रे रहेला जळ विन्दु समान छे तो पछी [देवताना अपार सुखनो] अलभ्य लाभ प्राप्त करीने ते साचवी राखवाने कयो मनुष्य न इच्छे ? (२४). जे जीव कामभोगथी निवृत थतो नथी ते आत्मानो खरो हेतु [मुक्ति] गुमावे छे. जो के मोक्षनो देनार शुद्ध मार्ग साभळीने ते तेणे अगीकार करेलो छे, छतां ते थकी ते वारंवार भ्रष्ट थाय छे. [२५]. जे जीव कामभोगथी निवृत्त थयेलोछे ते आत्मानो खरो हेतु (देवलोकादि) गुमावतो नथी. ते एम माने छे के आ अपवित्र शरीर त्यागीने हु देवता अथवा सिद्ध थइश. (२६).

इड्डीजुइ जसो वन्नो आउं सुह मणुत्तरं । भुज्जोउ ध्थमणुस्सेसु तथ्थसे उववज्जई ॥ २७ ॥ बालस्सपस्सबालत्तं अहम्म पडिवज्जिया । चिच्चाधम्मं अहम्मिठे नरएसु उववज्जई ॥ २८ ॥ धीरस्सपस्सधीरत्त सव्वधम्माणु वत्तिणो। चिच्चा अधम्म धम्मिठे देवेसु उववज्जई ॥ २९ ॥ तुलियाण बालभाव अबाल चेव पंडिए । चइऊण बालभावं अबाल मेवइ मुणी त्तिबेमि ॥ ३० ॥

॥ इति एलय नाम झयणं सत्तम सम्मत्त ॥ ७ ॥
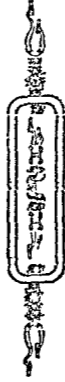
जे लोकमां रिद्धि, कान्ति, यश, कीर्ति, दीर्घायु अने सर्वोत्तम सुख रहेलां छे त्यां ते उत्पन्न थाय छे. (२७), अधर्म अंगीकार मूर्खनी मूर्खाइ तो तमे जुओ ! शुद्ध धर्मनो त्याग करवाथी ए जीव नरकमां उत्पन्न थाय छे. (२८). सत्य धर्मने अनुसरीने चालनार धीर पुरुषनुं धैर्य तमे जुओ। ते अधर्म मार्ग त्यागीने धर्म मार्गे चालवाथी देवलोकने विषे उत्पन्न थाय छे [२९]. डाह्यो पुरुष मूर्खनी मूर्खाइ अने पंडितना पंडितपणानी पोताना मनथी तुलना करे छे. साधु मूर्खपणु छाडीने पंडितपणु सेवे छे. [३०]

॥ सातमुं अध्ययन संपूर्ण. ॥

अध्ययन ८. *कपील मुनीनो बोध.

अधुवेअसासयमिससारमि दुख्खपउराए । किं नामहूज्जत्तकम्मय जेणाहं दुग्गइ नगछेज्जा ॥ १ ॥

❀ - अध्ययन ८ ❀

आ अधुव अने असाश्वत ससार जे अनेक दुःखोथी भरेलो छे, तेमा कया कर्तव्यथी—कया धर्मनो अंगीकार करवाथी हुं दुर्गतिने विषे न जाउं [१].

* कौसंबीना काश्यप ब्राह्मणना ते पुत्र हता तेना पिताना मृत्यु बाद अभ्यास माटे एक शेठने त्यां रहेल त्यां चाकरडी साथे प्रेममां पड्या. ते स्त्रीए वस्त्र भूषणनी मागणी करी परन्तु पैसा न होवाथी दीलगीर थता ते स्त्रीए युक्ति बतावी के राजाने प्रभातमां प्रथम आशीर्वाद आपनारने ते सोनानु दान करे छे ते माटे प्रयास करो. प्रेम पासमा सपडायेला कपिल प्रभातमां वहेला उठी गया पण बहुज वहेलु थवाथी पोलीसे पकडी राजा पासे रजु कर्या. राजा पासे सत्य हकीकत रजु थता ते एटला खुशी थया के सांज सुधीमा जेटलुं द्रव्य मागे तेटलु आपवा इच्छा दर्शावी. विचार करवा माटे सामेनी वाटिकामा गया पण तृष्णा वधती गइ अने लोभनो थोभ न थता सांज पडी गइ. प्रसनजीत राजाए आपेलुं वचन व्यर्थ गुमाव्युं. आ फटकाथी वैराग्यना फणगा कपिलना मनमा फुट्या. स्वयंबुद्ध थया अने तप वीगेरे करी ससारथी विरक्त थया अने परमार्थ खातर राजग्रही नगरीना वनमां बलभद्र पाचसो चोरना परिवार सहित रहेता हता तेने बोध आपवा गया, चोरोए पकडी तेने केद कर्या अने जाणे बंधनज न होय तेम कपिल मुनी नाचवा ने गावा लाग्या. आ अध्ययनना धर्मां पद गाया अने ध्रुव तरीके प्रथम पद बोलता गया. चोरो आ बोधथी प्रति बुझ्या—आ अध्ययननी १७मी गाथा पोताना अनुभवपरथी तेओए असरकारक भाषामां कही समजावी घणा जीवोने बोध आप्यो हतो.

७

विजहित्तुपुव्वसंजोग नसिणेह कहिंचिकुव्वेज्जा । असिणेह सिणेह करेहिं दोसपओसेहिं मुच्चएभिक्खू ॥२॥ तनोनाण दसणसमग्गेहियनिस्सेसायसव्वजीवाण। तेसिं विमोक्खणट्ठाए भासई मुणिवरोविगयमोहो ॥३॥ सव्व गथ कलहच्च विप्पजहे तहाविह भिक्खू । सव्वेसु काम जाएसु पासमाणो नलिप्पई ताई ॥ ४ ॥ भोगामिस दोस विसन्ने हिय निस्सेस बुद्धि वुच्चत्थे । बालेय मंदिए मूढे वज्झई मच्छिया व खेलमि ॥ ५ ॥ दुपरिच्चया इमे कामा नो सुजहा अधीर पुरिसेहिं । अहसंति सुव्वया साहू जे तरति अतरं वणियावा ॥ ६ ॥ समणा मु एगे वयमाणा पाणवहमिया अयाणता । मदा निरयगछति बालापावियाहिं दिठीहिं ॥ ७ ॥

पूर्व संबंध छाडीने कोइ वस्तु उपर मोह न कर, पोताना उपर मोह राखनार उपर पण जे साधु मोह न राखे, ते आ लोक अने परलोकना दुःखथी छूटे. [२] ते मुनिवर (कपिल केवळी) जे पोते मोह रहित छे अने ज्ञान दर्शने करी सहित छे, ते सर्व जीवोनुं हित अने मोक्ष इच्छी, कर्म वन्ध टाळवाने कहे छे. (३). [आत्माना] सर्व बंधन, क्रोधादिक प्रकारना कर्म बन्धना हेतुओ साधुए छोडी देवा जोइए विषय [शब्द, रुप, रस, गध अने स्पर्श] जाणवा छतां, तेमा तेण लुब्ध थवुं नहि. (४). जेनी बुद्धि मद, मूढ, निच कर्म करनारी अने आत्म हित करनार मोक्षथी विमुख छे, ते धर्मने विषे आळस करे छे, निच कर्म करे छे अने माखी जेम श्लेष्ममां वधाइ जाय छे तेम ससारमां बंधाइ रहे छे. (५). ए काम भोग छाडवानुं कार्य कठिन छे, कायर पुरुषो ए कामभोग सेहेलाइथी छांडी शकता नथी, पण व्यापारी (वाणीआ) जेम वहाणथी समुद्र तरे छे, तेम साधु पुरुष ससार समुद्र तरी जाय छे. (६). जो के पोते पशुनी माफक अज्ञानताथी जीव हत्या करता होय, तो पण केटलाक परतीर्थि एम कहे छे के अमे श्रमण-साधु छीए; आवा विवेकहीन पाप दृष्टिवाळा मनुष्य मिथ्यात्वे करी नर्के जाय छे. (७).

नहुपाणवहं अणुजाणे मुच्चेज्जकयाइ सव्वदुक्खाणं । एवा यरिएहिं अखायं जेहिं इमोसाहु धम्मोपन्नत्तो ॥ ८ ॥ पाणेयनाइ वाएज्जा सेसमीइत्ति वुच्चई ताई । तओसे पावय कम्म निज्जाइउदय व थलाओ ॥९॥ जग निस्सिएहि भूएहिं तससनामेहिं थावरेहिंच । नोतेसिं मारभे दड मणसा वयसा कायसा चेव ॥१०॥ सुद्धे सणाओ नच्चाणं तत्थ ठवेज्जा भिक्खू अप्पाण । जायए वासमेसेज्जा रस गिद्धेणसिया भिक्खाए ॥११॥ पताणि चेव सेविज्जा सीयं पिंड पुराण कुम्मास । अदुबुक्कस पुलागवा जवणट्ठाए निसेवए मथू ॥१२॥

कोइए प्राणी वधना कोइपण कार्यमां अनुमोदन आपवु न जोइए: आथी वहुधा बीजा दुःखो—पाप कर्ममांथी मुक्त थइ शकाय रे,—एम तिर्थंकर गणधरोए साधु धर्म प्ररुप्यो [कह्यो] छे. [८]. जे पुरुष प्राणी—जीवने मारे नहि ते समित* (सावध) कहेवाय छे, जेवी रीते पाणी उच्च प्रदेशपरथी ढळी जाय छे तेवी रीते ते पुरुषने पाप कर्म लागतु नथी. (९). जे जे त्रस अने स्थावर जीवो पृथ्विपर वसेला छे, तेने मन, वचन, कर्म करीने पिडा उपजाववी न जोइए [१०]. साधुए शुद्ध निर्दोष आहारने जाणवो केवो आहार कल्पे तेनुं ज्ञान मेळववुं अने तेना नियम बराबर पाळवा. शरीर निर्वाहने अर्थेज आहार लेवो अने [१]स्निग्ध आहारमां लोलुपता न राखवी. (११). ठरेलो आहार, जीर्ण[२] दाळ [मग, अडद, चणानी], वक्कस,[३] पुलाक,[४] जे निरस होय ते खावु अने शरीर निर्वाह अर्थे मंथु[५] (बदर चूर्ण) खावु. (१२).

---

* Circumspect आगळ पाछळनो विचार करनार. १. चीकणा—मसालेदार मीठा भोजन विशेष घी वाळा. जे खावाथी शियेळनी नव वाड जळवाती नथी २. Old beans. ३-४. आने मळता गुजराती शब्दो मळी शकता नथी. ५ ठळीआ सहित बोरनो भूको—[Founded jujube].

जेलक्खणञ्च सुविणञ्च अंग विज्जञ्च जेपउंजति । नहुतेसमणा वुच्चति एव आयरिएहिं अक्खाय ॥१३॥ इहजीवियं अणियमित्ता पब्भट्ठासमाहिजो गेहिं । तेकामभोगरसगिद्धा उववज्जातिआसुरेकाए ॥१४॥ तत्तोविय उवट्टित्ता ससार- बहु अणुपरियट्ठति । बहुकम्म लेवलित्ताण बोही होइसुदुल्लहातेसि ॥१५॥ कसिणपि जो इमं लोग पडिपुन्न दलेज्ज एक्कस्स । तेणाविसेन तुसेज्जा इइ दुप्पूरए ईमेआया ॥१६॥

पुरुष लक्षण,[१] स्वप्नना खुलासा, अने शरीर फरके तेना खुलासा–एटला वाना जे कोइ कहे तेने साधु न कहेवा एम तीर्थंकर भगवाननी आज्ञा छे. [१३]. जेओ पोताना आत्माने अनियंत्रित राखे, तप विधान आदिमा अनियमित रहे, समाधी योगथी भ्रष्ट थाय, काम रस भोग अने भोजनमां लुब्ध रहे, ए असुर योनिमा जन्मे छे.[२] [१४]. ज्यारे ते असुर योनिमांथी नीकळे छे, त्यारे तेने संसारमां घणो वखत सुधी परिभ्रमण करवुं पडे छे.जेना आत्माने कर्ममळनो लेप लागेलोछे, तेवा पुरुषोने [३]जैन धर्म अने सम्यकत्वनी प्राप्ति दुर्लभ छे, (१५). आ आखी पृथ्वि द्रव्य वगेरेथी भरी, कोइने आपीए तोपण जेवी रीते तृष्णानो अंत आवतो नथी संतोष थतो नथी, एवी रीते कोइ जीवने संतोषवो महा मुश्केल छे. [१६].

---

१. निमित्तिआ–नजुमी जेवा कार्योथी संसारी साथे घाटा परिचयमां आववाथी राग बंधन थाय अने प्रसंगे महाव्रतोमां दोष लागे. २. प्रो. जेकोबीना आ गाथा माटेना शब्दो असरकारक छे–Those who do not take their life under discipline, who cease from meditation and ascetic practices, and, who are desirous of pleasures, amusement and good fare, will be born again as Asuras ३. प्रो. जेकोबी 'बोधि' Bodhi शब्द वापरे छे. ते शब्द बुध जाणवुं ज्ञान थवुं ए क्रियापद उपरथी थयेल छे पूर्ण शुद्ध ज्ञान विना शुद्ध सम्यकत्वनी प्राप्ति महा मुश्केल छे

जहा लाभोतहा लोभोलाभालोभो पवड्ढई । दोमासकय कज्ज कोडीएवि नानिठ्ठियं ॥१७॥ नोरक्खसीसुगिझेज्जा गंडवच्छासु णेगचित्तासु । जाउपुरिसपिलोभित्ता खेलति जहावदासेहिं ॥१८॥ नारीसु नोपगिझेज्जा इथ्थीविप्पजहे अणगारे । धम्मंचपेसल नच्चा तथ्थठवेज्ज भिक्खू अप्पाण ॥१९॥ इइ एसधम्मे अक्खाए कविलेणच विसुद्ध पन्नेण । तरिहिंतिजेउ काहिंति तेहि आराहिया दुवे लोग त्तिबेमि ॥२०॥

॥ कावलीय नाम झयण अठमा समत्त ॥८॥

यथा लाभ स्तथा लोभः जेम लाभ थाय तेम लोभ वधतो जाय छे [1] बे मासाथी[2] जरुरीआत पूरी पडती होय, छतां कोटि धनथी पण संतोष थतो नथी [१७]. स्त्री राक्षसीने विषे लुब्ध थवु नहि तेना हृदय उपर कुच रूपी गांठो वे लोचा छे, तेनु चित्त अनेक स्थळे भटके छे, ते पुरुषने लळचावे छे, लोभावे छे अने तेने [पासमा लइ] दास बनावी रमाडे छे. [१८]. साधुए स्त्रीने इच्छवी नहि. तेणे स्त्रीनो परित्याग करवो. साधु धर्म बराबर जाणीने पोताना कर्तव्यमा आत्माने दृढ करवो. (१९). विशुद्ध ज्ञानी कपिल केवळीए आ धर्म (पाचमो चोर पामे) कह्यो छे. जे ते धर्म करशे ते तरशे अने, बन्ने लोक आराधाशे. आ लोक अने परलोक बन्नेनुं सार्थक करशे. (२०)

॥ आठमुं अध्ययन संपूर्ण. ॥

१. Desires increase with your means "हती दीनताइ त्यारे ताकी पटेलाइ अने, भळी पटलाइ त्यारे ताकी छे शेठाइने; सांपडी शेठाइ त्यारे ताकी मंत्रिताइ अने, आवी मंत्रिताइ त्यारे ताकी नृपताइने "-मोक्ष माळा. २. एक तोलाना बार मासा लेखाय छे. आपणी आठ रतीनो एक मासो गणाय छे.

अध्ययन ९. नमि प्रव्रज्या. (नमि राजानी दिक्षा).

चइऊण देवलोगाओ उववन्नो माणुसम्मि लोगम्मि । उवसन्त मोहणिज्जो सरइ पोराणि यजाइ ॥१॥ जाई सरित्तु भ ... अणुत्तरे धम्मे । पुत्तठ्ठवित्तुरज्जे अभिनिक्खमई नमीराया ॥२॥ सोदेवलोग सरिसे अंतेउरवर गउ- नमीराया बुद्धोभोगे परिच्चयइ ॥३॥

अध्ययन ९

मनुष्य लोकने विषे जन्म लीधा पछी [1]नमि राजा [2]मोहनी कर्मथी मुक्त थया अने तेमने पोताना ... [1]). [3]जाति स्मरण ज्ञान उपजवाथी नमि राजा सर्वोत्कृष्ट जिन धर्मने विषे [4]स्वयंसम्बुद्ध थया. [1], तेथी पोताना पुत्रने राज्य सोंपीने पोते दिक्षा ग्रहण करी. [2] पोताना अंतःपुरनी ... व लोक सरखा भोग भोगव्या पछी, पोताने ज्ञान उपजवाथी नमि राजाए भोग छोडी दीधा. (३)

... न टीकामा आपेलु छे श्रीमती मयणरेहानु भक्तिथी उभरातुं चरित्र पण टीकामा आपेलुं छे. २. ... कर्ममां, मोहनी कर्म विशेष प्रबळ छे मोहनी कर्म संसारमां रखडावे छे. छेठ अगीआरमा ... क्षय थाय छे. ३.पोताना पूर्व भवनु स्मरण आ ज्ञानथी थाय छे, मती ज्ञाननो ते भेद छे. अवग्रह, ... ए अनुक्रमे वृद्धि थतां केटलाक सरल सुलभ बोधि जीवने जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न थायछे. ४ समकालिक ... तेओ एक हता जाति स्मरणादिक ज्ञानथी पोतानी मेळे बुझनार स्वयबुद्ध कहेवाय छे. काइ देखीने वैराग्य बुद्ध कहेवाय छे. गौत्तम बुद्ध गणतो बळद अने मदद देखीने बुझ्या तेम.

मिहीलसपुर जणवय वलमरोहच परियणं सव्व । चिचा अभिनिख्खंतो एगतमहिट्ठिओ भगवं ॥ ४ ॥ कोलाहलगभुय आसिमिहिलाए पव्वय तमि । तइया रायरिसिमि नमिमि अभिनिख्खमंतमि ॥५॥ अभूठिय रायरिसिं पव्वज्जाठाण मुत्तम । सक्कोमाहण रूवेण इम वयणमव्ववी॥६॥ किंतुभो अज्जमिहिलाए कोलाहलग सकुला । सुव्वति दारुणा सद्दा पासाएसु गिहेसुय ॥७॥ एयमठ्ठ निसामित्ता हेऊकारण चोईओ । तओ नमिरायरिसी देविंद इणमव्ववी ॥८॥ मिहिलाए चेइएवच्छे सीयछाए मणोरमे । पत्तपुफ्फफलोवेए वहुणवहूगुणेसया ॥९॥ वाएणहिर माणमि चेइयमि मणोरमे । दुहियाअसरणाअत्ता एएकदंतिभोखगा ॥१०॥

मिथिला नगरी तथा देश, चतुरंग सेना, अंतःपुर तथा पोतानो सघळो परीवार छोडीने महात्मा नमि राजा दिक्षा लइने एकांतवासमां जइ रह्या. [४]. ज्यारे नमि राजर्षि प्रव्रज्यार्थे [दिक्षार्थे] नगर थकी बहार नीकळ्या ते वखते मिथिला नगरीमां सर्व स्थाने कोलाहल मची रह्यो. (५). सर्वोत्तम प्रव्रज्या स्थानने विषे पहोंचेला नमि राजर्षि पासे शक्र (इन्द्र) देव ब्राह्मणनुं रुप धारण करीने आव्या अने तेमने नीचे प्रमाणे प्रश्न कर्याः-[६]. 'हे राजर्षि! मिथिला नगरीमां आ कोलाहल शानो मची रह्यो छे? अने महेल तथा मंदिरोमां आ हृदयभेदक आक्रन्द शानुं संभळाय छे ?' (७). ए सांभळीने देवेन्द्रना प्रश्ननो हेतु अने कारण समजी लइने नमि राजर्षिए नीचे प्रमाणे उत्तर आप्यो. *[८] 'हे ब्राह्मण! मिथिला नगरीना उद्यानमां पत्र, फळ, फूले करी सहित शितळ छायावाळु मनोरमा नामे एक पवित्र वृक्ष छे, अने ते घणा पक्षीओनुं आश्रय स्थान छे; वायराथी ए पवित्र वृक्ष मनोरमा चलायमान थवाथी दुःखी पिडाता अने शरण रहित पक्षीओ आक्रन्द करे छे.' (९-१०).

---

* कार्य-कारण हेतुना पांच अवयव छे:- [१] प्रतिज्ञा. [२] हेतु. [३] उदाहरण. [४] उपनय अने [५] निगमन.

एयमठ्ठ निसामित्ता हेऊकारण चोईओ । तओ नमिरायरिसिं देविंदोइण मव्ववी ॥११॥ एस अगीय वाउय एयं डझइ मंदिरं । भयव अंतेउर तेण कीसण नाव पेख्खह ॥१२॥ एयमठ्ठ निसामित्ता हेउ कारण चोईओ । तओ नमीराय रिसी देविंद इणमब्बवी ॥१३॥ सुह वसामो जीवामो जेसिं मोनथ्थि किंचण । मिहिलाए डझमाणीए नमे डझइ किंचण ॥१४ । चत्त पुत्त कलत्तरस निव्वावाररस भिख्खूणो । पिय नविज्जए किंचि अप्पियपि नविज्जए ॥१५॥ बहु खुमुणिणो भद्द अणगारस्स भिख्खूणो । सव्वओ विप्पमुक्करस एगत मणुपस्सओ ॥१६॥ एयमठ्ठ निसामित्ता हेउकारण चोईओ । तओ नमि रायरिसिं देविंदो इण मव्ववी ॥ १७ ॥ पागार काराइत्ताण गोपुरट्टालगाणिय । उसूलग सयग्धीओ तओ गछसि खत्तिया ॥१८॥

ए साभळीने राजर्षि नमिनो हेतु अने कारणे प्रेरित एवा देवेन्द्रे नीचे प्रमाणे प्रश्न कर्यो. (११). 'हे भगवान' आ अग्नि अने वायु प्रत्यक्ष देखाय छे तमारो महेल बळे छे छता तमे तमारा अंतःपुर सामु केम जोता नथी?' (१२). ए साभळीने नमि राजर्षि [गाथा ८मी प्रमाणे] बोल्या. (१३). 'हे ब्राह्मण' एमा मारुं कोइ नथी एम समजीने हुं सुखी छु अने सुखे रहुछु, मिथिला नगरी बळी जवाथी मारु काइ बळतु नथी. [१४] 'जेणे पुत्र कलत्रादिनो त्याग करेलो छे, ग्रहस्थना व्यापारथी जे रहित छे, तेवा साधुने कोइ वस्तु प्रिय नथी तेम अप्रिय पण नथी. (१५) 'जे मुनि अथवा घर रहित भिक्षुक ग्रहस्थना व्यापारथी अने सघळा आरम्भथी मुक्त छे, अने जे एकान्तमा रहीने मोक्ष मार्गनु चिंतवन करे छे तेनु कल्याण थाय छे.' [१६]. - ए सांभळीने देवेन्द्र बोल्या (गाथा ११मी प्रमाणे) [१७] 'हे क्षत्रिय' प्रथम नगरना रक्षणार्थे कोट बधाव, तेने दरवाजा मूकाव, तेना उपर बुरजो बनाव, तेना फरती खाइ खोदाव, युद्ध स्थान उपर शतघ्नयत्र(सो सुभटने एकी साथे मारी शके एवा यत्र) गोठव, *त्यार पछी [दिक्षार्थे] जाजे.' [१८].

---

*टीकाकार आ प्रमाणे अर्थ करे छे पण प्रो. जेकोबी नमी गाथामा एवो अर्थ करे छे के, 'तो लुं स्वरो क्षत्री कहेवाय'

एयमट्ठं निसामित्ता हेउकारण चोईओ । तओ नमीरायरिसी देविंद इणमब्बवी ॥ १९ ॥ सद्धं नगरं किच्चा तव-संवर मग्गलं । खंतिनिउणपागार त्तिगुत्त दुप्पहंसग ॥२०॥ धणुपरक्कम किच्चा जीवंच इरियं सया । धियचकेयणं, किच्चा सच्चेण पलिमथए ॥२१॥ तवनाराय जुत्तेण भित्तुण[1] कम्म कचुय । मुणी विगय सगामो भवाओ परिमुच्चई ॥२२॥ एयमट्ठ निसामित्ता हेउकारण चोईओ । तओ नमी रायरिसीं देविंदो इण मब्बवी ॥२३॥

---

१. कोइ प्रतमां ' भेतूणं ' छे.

ए सांभळीने नमि राजर्षि बोल्या (गाथा ८मी प्रमाणे). [१९]. १धर्म तत्त्व उपर श्रद्धारूपी नगर वसावी, तेना फरतो क्षमा-रूपी कोट बांधी, तप संयमरूपी भूंगळवाळा दरवाजा मूकी, ए प्रमाणे ३ प्रकारे किल्लान अभेद्य बनावो पछी पराक्रमरूपी धनुष्य धारण करीने, इरिया २गुप्तिरूपी तेनी मत्यचा [तात] करीने, संतोषरूपी तेनी मूठ बनावीने, सत्यरूपी बधनथी तेनी मूठ लपेटीने तपरूपी लोहबाण चढावीने, कर्मरूपी कवचने भेदावी, बुद्धिमान साधु विजय मेळवीने ससारथी मुक्त थाय छे. (२०-२२). ए सांभळीने देवेन्द्र बोल्या (गाथा १२मी प्रमाणे) [२३].

---

१. आ गाथा मुख पाठ करी राखवा योग्य छे प्रो जेकोबीना शब्दोमां आपणे तन पुनः स्मरीए " Making Faith his fortress, Penance and Self-control the bolt of its gate Patience its strong wall, so that guarded in three ways it is impregnable, making Zeal his bow, its String Carefulness in walking, and its top (where the string is fastened) Content he should bend (this bow) with Truth, piercing with the arrow, Penance, (the foe's) mail, Karman— in this way) a sage will be the victor in battle and gate rid of the Samsara " २. त्रण गुप्तिना आशय अत्र दर्शावेल छे. ३. पाच सुमति मांहेनी, हालवा चालवामा सावचती राखवानी प्रथम इरिया सुमति छे.

पासाए कारइत्ताण वद्धमाण गिहाणिय । वालग्गपोइयाओय तओ गच्छसि खत्तिया ॥२४॥ एयमट्ठ निसामित्ता हेउ कारण चोईओ । तओ नमीराय रिसी देविंद इणमब्बवी ॥ २५ ॥ ससय खलुसो कुणइ जो मग्गेकुणइ घर । जथ्थेव [1]गतुमिच्छिज्जा तथ्थ [2]कुव्विज्ज सासय ॥२६॥ एयमट्ठ निमामित्ता हेऊकारण चोईओ। तओ नमी रायरिसिं देविंदो इण मब्बवी॥२७॥आमोसे लोमहारेय गठिभेएय तक्करे। नगररस खेमं काऊण तओ गच्छसि खत्तिया ॥२८॥ एयमट्ठ निसामित्ता हेऊ कारण चोइओ । तओ नमी रायरिसी देविंद इण मब्बवी ॥ २९ ॥ असइंतु मणुस्सेहिं मिच्छादंडो पजुजई । अकारिणोथ्थ वझंति मुचई कारगो जणो ॥ ३० ॥ एयमठ निसामित्ता हेऊ कारण चोइओ । तओ नमि रायरिसीं देविंदो इण मब्बवी ॥३१॥

१. पाठांतरे ' मिछिज्जा ' ' कुवेज्ज ' छे.

'हे क्षत्रिय! प्रथम महेल, वर्द्धमान गृह (भव्य मकानो) - अने क्रीडा स्थान बंधाव; त्यार पछी तुं [दिक्षार्थे] जाजे.' (२४). ए सांभळीने नमि राजर्षि बोल्या. [गाथा ८मी प्रमाणे]. (२५). 'हे ब्राह्मण! जे मार्गने विषे घर करे छे, तेने भय उपजे छे. जे नगरने विषे जवुं छे त्यांज शाश्वतु घर [मुक्तिरूप] करवुं. [वच्च घर कोण करे?]' [२६]. ए साभळीने देवेन्द्र बोल्या, (गाथा ११मी प्रमाणे). (२७). 'चोर, लूटारा, तस्कर, वाटपाडु वगेरेने शिक्षा करीने, नगरने तेमना भयथी मुक्त कर, त्यार पछी हे क्षत्रिय! (दि र्थे) जाजे.' [२८]. ए सांभळीने नमि राजर्षि (गाथा ८मी प्रमाणे) बोल्या. [२९]. 'हे ब्राह्मण! मनुष्यो वारंवार खोटी शिक्षा करे छे निरपराधी विना कारण मार्या जाय छे अने चोरी करनारा छूटी जाय छे.' (३०). ए सांभळीने देवेन्द्र बोल्या (गाथा ११मी प्रमाणे). [३१].

जे केइपथ्थिवातुझ ना नमंति नराहिवा । वसे ते ठावइत्ताण तओ गछसि खत्तिया ॥ ३२ ॥ एयमठ्ठ निसामित्ता, हेऊ कारण चोईओ । तओ नमी रायरिसीं देविंद इण मव्ववी ॥३३॥ जो सहस्स सहस्साण संगामेदुज्जएजिणे । एग जिणिज्जअप्पाण एससेपरमोजओ ॥३४॥ अप्पाणमेवजुझाहि किंतेजुझेणबझओ । 'अप्पाणमेव अप्पाण जइत्ता सुहमेहए ॥३५॥ पचिंदियाण कोहं माण मायतहेवलोभच्च । दुज्जयच्चेव अप्पाण सव्वमप्पे जिएजिय ‡ ॥३६॥

‡ आ गाथानी पेहेली लींटी आर्या छंदमां ने बीजी अनुष्टुप छंदमां छे. छंदनो आवो तफावत घणे स्थळे जोवामां आवे छे.

'हे राजन! तने जे राजाओ नमता नथी तेमने वश कर, त्यार पछी हे क्षत्रिय' (तु दिग्विजयार्थे जाजे). ' [३२]. ए साभळीने नमि राजर्षि [गाथा ८मी प्रमाणे] बोल्या. (३३). 'कोइ सुभट रणसंग्राममां विषे हजारो योद्धाने जीते, तेना करतां कोइ पुरुष पोताना आत्माने जीते ते सौथी म्होटो सुभट कहेवाय.'१ (३४) 'पोताना आत्मा साथे युद्ध कर. बाह्य युद्ध करवानी शी जरुरछे?- आत्मा पोते पोतानेज जीते तेथी ते सुख पामे छे.२' ३५] 'पांच इन्द्रिओ अने क्रोध, मान, माया, लोभथी आत्माने जीतवो (मूकावो) ए अति दुर्लभ छे, जेणे पोताना आत्माने जीत्यो छे, तेणे सर्व जीत्युं छे एम समजवु.३'(३६)

१-२ ३=गूढ शृंगार माटे वपरातां विषय वर्धक चित्रोने बदले आवां वाक्यो मोटे अक्षरे लखी टांगवामां आवे तो पळे पळे तेना स्मरणथी केटलो बधो लाभ थाय? मो. जेकोबी ते माटे नीचे मुजब शब्दो वापरे छे. "Though a man should conquer thousands and thousands of valiant foes), greater will be his victory if he conquers nobody but himself. Fight with your self, why fight with external foes? He who conquers himself through himself, will obtain happiness. The five senses, anger, pride, delusion and greed-difficult to conquer is one's self, but when that is conquered everything is conquered."

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊ कारण चोईओ। तओ नमी रायरिसीं देविंदो इण मब्बवी ॥ ३७ ॥ जइत्ताविउले जन्ने भोइत्ता समणमाहणे। दच्चा भोच्चा य जिट्ठ य तओ गच्छसि खत्तिया॥३८॥ एयमट्ठं निसामित्ता हेऊ कारण चोईओ। तओ नमी रायरिसी देविंद इण मब्बवी ॥ ३९ ॥ जो सहस्सं सहस्साण मासे मासे गवंदए। तस्सावि सजमोसेओ अदितस्सवि किंचण ॥ ४० ॥ एयमट्ठं निसामित्ता हेऊ कारण चोईओ। तओ नमी रायरिसी देविंदो इण मब्बवी ॥४१॥ घोरासमचइत्ताण अन्नपत्थेसिआसम। इहेवपोसहरओ भवाहिमणुयाहिवा ॥४२॥ एयमठं निसामित्ता हेऊ कारण चोईओ। तओ नमी रायरिसीं देविंद इण मब्बवी ॥४३॥ मासेमासेउ जो बाले कुसग्गेणतु भुजए। नसो-सुयक्खाय धम्मस्स कल अग्घइ सोलसिं ॥४४॥

ए साभळीने देवेन्द्र वोल्या [गाथा ११मी प्रमाणे] (३७). 'हे क्षत्रिय! महा यज्ञो कर; श्रमण-ब्राह्मणने जमाड, सुवर्णादिना दान दे, तुं पोते भोग भोगव, अने होम हवन कर. त्यार पछी दिक्षा लेजे. (३८). ए साभळीने नामे राजर्षि वोल्या (गाथा ८मी प्रमाणे]. [३९]. 'कोइ माणस प्रति मासे दश लाख गायोना दान दे, तथापि साधु पुरुषो जेओ कांइ दान देता नथी तेमनो संयम ए दान करतां पण श्रेष्ठ छे. [४०]. ए सांभळीने देवेन्द्र वोल्या. [गाथा ११मी प्रमाणे] [४१]. 'हे राजन! *घोर आश्रम (ग्रहस्थाश्रम) छोडीने तुं अन्य आश्रममा दाखल थवा इच्छे छे; पण घरमा रहीनेज पोषध व्रत करीने संतोष मान.' [४२]. ए सांभळीने नमि राजर्षि वोल्या (गाथा ८मी प्रमाणे) [४३]. कोइ अज्ञान माणस मासखमणने पारणे मात्र कुशाग्र (दर्भनी अणी उपर रहे एटलो) आहार लइने संतोष माने, तोपण तेना तपनु फळ श्री भगवते भाखेला चारित्ररुप धर्मना सोळमा भागना फळने पण पहोंचे नहि' [४४].

---

* गृहस्थाश्रमने अंगे घणा मुश्केलीओ होवाथी तेने घोर-भयंकर कहेल छे, पण टीकाकारोना अभिप्राय मुजब आ शब्द नमि राजाना मुखमा विशेष शोभत

एयमठ निसामित्ता हेऊ कारण चोईओ । तओ नमिं रायरिसिं देविंदो इण मब्बवी ॥४५॥ हिरन्नं सुवन्नं मणिमुत्तं कस दूमच वाहणं । [1]कोस वड्ढावइत्ताण तओ गच्छसि खत्तिया ॥४६॥ एयमठ निसामित्ता हेऊ कारण चोईओ । तओ नमिं रायरिसिं देविंद इण मब्बवी ॥४७॥ सुवन्न रुप्पस्सओ पव्वयाभवे सियाहु केलास समाअसखया॥ नरस्स लुद्धस्स न तेहि किंचि इछाहु आगाससमा अणतिया ॥४८॥ पुढवी साली जवा चेव हिरन्नं पसुभिस्सह । पडिपुन्ननालमेगस्स इइ विज्जा तवच्चरे ॥४९॥ एयमठ निसामित्ता हेऊ कारण चोईओ । तओ नमि रायरिसिं देविंदो इण मब्बवी ॥५०॥ अछेरगमब्भुदए [2]भोएचयसि पथ्थिवा । असते कामिपथ्थेसि सकप्पेण विहन्नसि ॥ ५१ ॥ एयमठ निसामित्ता हेऊ कारण चोईओ । तओ नमी रायरिंसी देविंद इण मब्बवी ॥५२॥

---

१. कोइ मतांमां ' कोसच वड्ढइत्ताण ' एवी रचना छे २ आने बदले कोइ मतमां ' जहसि ' शब्द छे.

ए सांभळीन देवेन्द्र बोल्या. [गाथा ८ मी प्रमाणे] [४५]. ' रुपु, सोनुं, मणि, मोती, त्रांबुं, सुदर वस्त्रो, इत्यादिक वाहन अने भंडार वधार, त्यार पछी हे क्षत्रिय! तुं (दिक्षार्थे) जाजे. ' (४६) ए सांभळीने नमि राजर्षि बोल्या. [गाथा ८मी प्रमाणे] [४७]. ' सोना रुपाना कैलास पर्वत जेवडा असंख्य ढगला होय, तोपण लोभी माणसने तेथी संतोष थतो नथी. कारण के तेनी तृष्णा आकाशनी पेठे अनंत छे ' (४८) ' चोखा अने जवना पाकथी, सोना, रुपा अने पशुथी भरपूर करीने सघळी पृथ्वी एकज माणसने आपी दइए तोपण तेनी तृष्णा तृप्त थती नथी. ए जाणीने तप करवुं. ' (४९). ए सांभळीने देवेन्द्र बोल्या. [गाथा ११मी प्रमाणे] [५०]. ' हे पार्थिव! आश्चर्यनो वात छे के भोगना अत्यंत भाग छोडीने तु कल्पनिक [अदृश्य] भोगनी इच्छा करे छे. स्वर्गादि अदृष्ट सुखना लाभथी तु प्रत्यक्ष सुख तजी दे छे तेथी तने पश्चाताप थशे. ' (५१). ए सांभळीने नमि राजर्षि बोल्या. (गाथा ८मी प्रमाणे) [५२].

सल्लं कामा विसंकामा कामा आसी विसोवमा। कामेभोए[1] पत्थे माणा अकामा जंति दुग्गइं॥५३॥ अहेवयइ कोहेणं माणेणंअहमा गइ। माया गई पडिग्घाओ लोभाओ दुहओ भयं ॥ ५४ ॥ अवउज्झि ऊणमाहण रूव विउव्विऊणं इदगं। वदइ अभित्थुणंतो इमाहि महुराहिं वग्गूहि ॥ ५५ ॥ अहो तेनिज्जिओ कोहो अहोते माणो पराजिओ। अहो ते निराकिया माया अहोते लोभोवसीकओ ॥ ५६ ॥ अहोत अज्जव साहू अहोते साहू मद्दव। अहोते उत्तमाखती अहोते मुनि उत्तमा ॥ ५७ ॥

---

१. 'भोए' शब्द केटलीक प्रतोमां नथी पण मात्र मेळववाने मात्रा मेळ करवा ते शब्दनी जरुर जणाय छे.

'हे ब्राह्मण !* ए काम भोग क्षणे क्षण पीडा उत्पन्न करे एवा शल्य (कंटक) समान छे, ए काम भोग (धर्म जीवित विनाशक) विषम विष समान छे, ए काम भोग झेरी नाग समान छे, माणसो काम भोगनी अभिलाषा करे छे पण तेमना मनोरथ पूरा थता नथी अने आखरे कामीनी दुर्गति थाय छे'[५३]. क्रोधे करीने ते अधोगतिने विषे जाय छे, माने करीने अधम गतिने पामे छे, माया सद्गतिनो नाश करे छे अने लोभे करीने आ लोके अने परलोके भय उपजे छे'[५४] ब्राह्मणनु रूप छोडीने, पोतानु स्वरूप प्रकट करीने, इन्द्र आदर पूर्वक राजर्षिने नमन करुं अने मधुर वचने करीने तेमनी स्तुति करवा लाग्यो. (५५). 'अहो महानुभाव! आपे क्रोधने जीत्यो छे अहो पुण्यात्मा! आपे मानने पराभव कर्यो छे. अहो नमि राजर्षि! आपे मायाने जीती छे. अहो साधु पुरुष! आपे लोभने वश कर्यो छे'[५६] 'अहो साधु पुरुष! आपनी सरलता विस्मय पमाडे एवी छे! आपनो मृदुभाव [कोमळता] आश्चर्यकारक छे! धन्य छे आपनी उत्तरोत्तर क्षमाने! धन्य छे आपनी श्रेष्ठ निर्लोभताने'[५७]

---

* मो जकोबी पण आ माटे एवाज असरकारक शब्दो वापरे छे "Pleasures are the thorn that rankles, pleasures are poison, pleasures are like a venomous snakes, he who is desirous of pleasures will not get them, and will come to a bad end at last."

इहसि उत्तमो भते पेच्चा होहिसि उत्तमो । लोगुत्त मुत्तमं ठाणं सिद्धि गच्छसि नीरओ ॥ ५८ ॥ एवं अभिथूणंतो रायरिसिं उत्तमाण सद्धाए । पयाहिण करतो पुणोपुणो वदइ सक्को ॥ ५९ ॥ ता वदिऊण पाए चक्कं कुसलक्खणे मुणिवरस्स । आगासेणुप्पईओ ललियचवलकुडल तिरिडी ॥ ६० ॥ नमी नमेइ अप्पाण सक्ख सक्केण चोईओ । चइऊण गेह वइदेही सामन्ने पज्जुवठिओ ॥ ६१ ॥ एव करति सबुद्धा पडिया पवियक्खणा । विणियट्ठति भोगेसु जहासे नमी रायरिसिं त्तिबेमि ॥६२॥

॥ इति नमी पवज्जा झयण नवम सम्मत्त ॥ ९ ॥

'हे पुज्य ! आ भवने विषे आप उत्तम पुरुष छो. हवे पछीना भवमां [परलोके] पण आप उत्तम थशो. अने सर्व लोकमां सर्वोत्तम स्थान जे मोक्ष तेने विषे कर्म रहित थइने आप सिधे जशो (५८).आ प्रमाणे स्तुति करीने शक्र (इन्द्र) पूर्ण श्रद्धाना *प्रदक्षिणा देतो नमि राजर्षिने वंदवा लाग्यो.[५९] मुनिवरना (नमि राजाना) चक्र १ अंकुशे करी सहित [शास्त्रोक्त शुभ लक्षण युक्त] पगने वंदन करीने, जेणे मनोहर चपल कुंडल किरीट धारण करेलां छे एवा इन्द्र आकाश मार्गे उडया.(६०). नमि राजर्षिए पोताना आत्माने विनय धर्मने विषे स्थाप्यो. इन्द्रे जेनी प्रत्यक्ष परीक्षा करी एवा नमि विदेह देशाधिपे घरबार छोडीने चारित्र [श्रमणत्व] धारण कर्युं. [६१] स्वयसम्बुद्ध, पंडित अने विचक्षण पुरुषो आ प्रमाणे वर्ते छे. अने जेवी रीते नमि राजर्षिए काम भोगने छांड्या तेवी रीते तेओ काम भोगथी निवर्त्ते छे. (६२).

* नवमु अध्ययन संपूर्ण. *

---

* मुळ पाठमां 'पायाहिण' शब्द छे छतां प्रो. जेकोबी "Kept his right side towards him" एम लखे छे.
१. प्रवीण लक्षणा पुरुषोने शस्त्र, चक्र, अंकुश वीगेरे चिन्हो हाथ पगमां होय छे.

अध्ययन १०. द्रुम पत्र.

दुमपत्तए पडूयए जहा निवडइ राइ गणाण अच्चए' एव मणुयाण जीविय समय गोय'मापमायए ॥१। कु गे जह ओस निंदुए योव चिठइ लंबमाणए । एव मणुयाण जीविय समय गोयममापमायए ॥ २ ॥ इइ इत्तरियंमिआउए जीवियए बहु पच्चवायए । विहुणाहि रय पुरे कड समय गोयममापमायए ॥३॥ दुल्लहे खलु माणुसे भवे चिरकालेण निसव्वपाणिण । गाढाय विवाग कम्मणो समय गोयममापमायए ॥ ४ ॥

अध्ययन १०.

जेम वृक्षनुं पाकुं पान घणां रात्रि दिवस थवाथी आखरे धरती उपर खरी पडे छे, तेम मनुष्यनुं जीवित पण अशाश्वतु छे, माटे हे गौतम ! कदि प्रमाद करवो नहि. (१). जेम कुशाग्रे रहेलुं जळ बिन्दु क्षण मात्र रहीने खरी पडे छे, तेम मनुष्य आयुष्य पण अस्थिर छे, माटे हे गौतम! कदि प्रमाद करवो नहि. (२). आयुष्य आवुं त्वरित छे, जीवित अशाश्वतु अने अनेक विघ्नो वाळु छे, माटे हे गौतम! पूर्वे करेला कर्मनो क्षय करवो अने कदि प्रमाद करवो नहि [३] लांबे काळे पण सर्व प्राणीने मनुष्यनो भव मळवो अति दुर्लभ छे, कारण के गाढ तीव्र कर्मना फळ जीवने सदा काळ लागेला ज छे एम समजीने हे गौतम ! कदि प्रमाद करवो नहि. [४].

* आ आखुं व्याख्यान श्री महावीर देवे गौतम गोत्रना पोताना शिष्य इन्द्रभूतिने कही समजाव्युं हतुं. इन्द्रभूतिने ए बोध आपवानी शा माटे जरूर पडी तेने लगती कथा टीकामां लखाणथी आपेली छे, पण ते अहिं उतारवानी जरूर विचारी नथी. १.प्रो. जेकोबीना आ माटेना शब्दो—"As lifeis so fleet and exhistence so precarious, wipe off all the sins you ever-committed "

पुढविकाय मइगउ उक्कोसंजीवो उसवसे । काल सखाइय समयं गोय ममापमायए ॥ ५ ॥ आउक्काय मइगओ उक्कोसजीवो उसवसे । काल सखाइय समय गोय ममापमायए ॥ ६ ॥ तेउकाय मइगओ उक्कोसजीवो उसवसे काल सखाइय समय गोयममापमायए ॥ ७ ॥ वाउकाय मइगओ । उक्कोसजीवो उसवसे काल सखाइय समय गोयममापमायए ॥८॥ वणस्सईकाय मइगओ उक्कोसजीवो उसवस । कालमणन दुरत समय गोयममापमायए ॥९॥ बे इंदियकाय मइगओ उक्कोसजीवो उसवसे । कालसखेज्जसन्निय समय गोयममापमायए ॥ १० ॥

* पृथ्वीकायमां एक वखत उत्पन्न थवाथी जीवने एनी एज गतिमा असंख्यातो काळ रहेवु पडे छे, माटे हे गौतम! कदि प्रमाद करवो नहि. [५]. अपकायमा [पाणी] एक वखत उत्पन्न थवाथी जीवने एनी एज गतिमा असंख्यातो काळ रहेवु पडे छे, माटे हे गौतम! कदि प्रमाद करवो नहि. [६]. अग्निकायमा एक वखत उत्पन्न थवाथी जीवने एनी एज गतिमा असंख्यातो काळ रहेवु पडे छे, माटे हे गौतम! कदि प्रमाद करवो नहि. [७]. वायुकायमा एक वखत उत्पन्न थवाथी जीवने एनी एज गतिमा असंख्यातो काळ रहेवु पडे छे, माटे हे गौतम! कदि प्रमाद करवो नहि. (८) वनस्पतिकायमा एक वखत उत्पन्न थवाथी जीवने एनी एज गतिमां अनन्तो काळ रहेवुं पडे छे अने त्यार पछी पण तेनी स्थिति सुधरती नथी (मनुष्य भव प्राप्त थतो नथी) माटे हे गौतम! कदि प्रमाद करवो नहि. [९]. द्वीन्द्रिय (काया अने जीभ) कायमा एक वखत उत्पन्न थवाथी जीवने एनी एज गतिमां संख्यातो काळ (हजारो वर्ष) रहेवु पडे छे, माटे हे गौतम! कदि प्रमाद करवो नहि. [१०].

* गाथा ५ थी ९ सुधीमां एकेन्द्रिय काय जेने मात्र स्पर्श-ज्ञानज छे तेनुं वर्णन करेलु छे.

तेइंदियकाय मइगओ उक्कोसजीवो उसंवसे। कालंसखेज्जसन्निय समय गोयममापमायए ॥११॥ चउरिंदियकाय मइगओ उक्कोसजीवो उसवसे। कालसखेज्जसन्निय समयं गोयममापमायए ॥ १२ ॥ पर्चिदियकाय मइगओ उक्कोसजीवो उसवसे। सत्तठ्ठभवग्गहणे समय गोयममापमायए ॥ १३ ॥ देवेनेरइय मइगओ उक्कोसजिवो उ- सवसे। एक्केक्क भवगहणे समय गोयममापमायए ॥१४॥ एवभवससारेससरइ सुहासुहेहिंकम्मेहिं। जीवोपमाय वहुलो समय गोयममापमायए ॥१५॥

त्रीन्द्रिय (काया, जीभ अने नासिका) कायमां एक वखत उत्पन्न थवाथी जीवने एनी एज गतिमां संख्यातो काळ रहेवुं पडे छे, माटे हे गौतम! कदि प्रमाद करवो नहि. (११). चउरिन्द्रिय (काया, जीभ, नासिका अने चक्षु) कायमां एक वखत उत्पन्न थवाथी जीवने एनी एज गतिमा संख्यातो काळ रहेवु पडे छे, माटे हे गौतम! कदि प्रमाद करवो नहि. [१२]. पंचेन्द्रिय (काया, जीभ नासिका, चक्षु अने कान) कायमां एक वखत उत्पन्न थवाथी जीवने एनी एज गतिमा सात आठ भव सुधी रहेवुं पडे छे, माटे हे गौतम! कदि प्रमाद करवो नहि (१३). देवता अथवा नारकी कायमा उत्पन्न थवाथी जीवने एनी एज गतिमां एक भव रहेवुं पडे छे. माटे हे गौतम! कदि प्रमाद करवो नहि (१४). * आ प्रमाणे प्रमाद वश जीव पोताना शुभाशुभ कर्म करीने संसारमां नवा नवा भव करतो परिभ्रमण करे छे, माटे हे गौतम! कदि प्रमाद करवो नहि. [१५].

---

* संसारमां परिभ्रमण करावनार प्रमादज छे. जन्म मरणना फेरा करावनार प्रमाद छे. प्रो. जेकोबी ते माटे एवा शब्दो वापरे छे के :—"Thus the soul which suffers for its carelessness, is driven about in the samsara by its good & bad Karman

लध्धूणवि माणसत्तण आयरियत्तं पुणरावि दुल्लहं बहवेदसुयामिलखूया समयं गोयममापमायए ॥ १६ ॥ लध्धूणवि आयारियत्तण अहीण पचिंदिययाहु दुल्लहा । विगलिंदिय याहुदीसइ समय गोयममापमायए ॥ १७ ॥ अहिणपचिंदिय तविरे लहे उत्तमधम्मसुइहुदुल्लहा । कुतित्थि निसेवए जणे समय गोयममापमायए ॥ १८ ॥ लध्धूणवि उतमसुइ सद्दहणा पुणरावि दुल्लहा । मिछत्तनिसेवएजणे समय गोयममापमायए ॥१९॥ धम्मपिहु सद्दहतया दुल्लहयाकाएण- फासया । इहकामगुणेहिं मुच्छिया समय गोयममापमायए ॥२०॥ परिजूरइते सरिय केसापडुरया हवतिते । सेसोय- बलेयहायइ समय गोयममापमायए ॥ २१ ॥

कदाच मनुष्य भव प्राप्त थयो, तोपण आर्य देशमां जन्म मळवो दुर्लभ छे, कारण के (यवनदेशमां) घणा जीव दस्यु (शुद्र, चोर) अने म्लेच्छ जन्मे छे, माटे हे गौतम! कदि प्रमाद करवो नहि. [१६]. कदाच आर्य देशे जन्म मळ्यो तोपण संपूर्ण पचेंद्रियपणु प्राप्त थवु दुर्लभ छे, कारण के घणा मनुष्योने एकाद बे इन्द्रियनी खोड आपणे जोइए छीए, माटे हे गौतम! कदि प्रमाद करवो नहि. [१७]. कदाच पांचे इन्द्रियो पामे, तोपण शुद्ध धर्म श्रवण दुर्लभ थइ पडे छे, कारण के घणा लोक कुतीर्थनी [1] (अन्य धर्मनी) सेवा करता जणाय छे; माटे हे गौतम! कदि प्रमाद करवो नहि. [१८]. कदाच शुद्ध धर्मनुं श्रवण कर्युं, तो पछी ते उपर श्रद्धा चोंटवी दुर्लभ थइ पडे छे, कारण के घणा लोक मिथ्यात्वने [2] सेवे छे, माटे हे गौतम! कदि प्रमाद करवो नहि. [१९]. कदाच धर्म उपर श्रद्धा बेठी, तो पछी मन, वचन, कायाये करीने ते प्रमाणे वर्तवानु दुर्लभ थइ पडे छे, कारण के घणा लोक संसारना भोगमां लुब्ध [3] थइ जाय छे, माटे हे गौतम! कदि प्रमाद करवो नहि. [२०]. ज्यारे तारुं शरीर जराए करीने जीर्ण थशे, अने बाळ श्वेत थशे, त्यारे तारु श्रोत्र बळ (सांभळवानी शक्ति) ओछु थइ जशे; माटे हे गौतम! कदि प्रमाद करवो नहि. [२१]

---

१. People follow heretical teachers २ Many people are heretics ३ People are engrossed by pleasures

उ.अ
१०.
३८.

परिजूरइते सरीरय केसा पडुरया हवतिते । सेचखूबलेय हायइ समय गोयममापमायए ॥२२॥ परिजूरइते सरीरयं केसापडुरया हवतिते । सेघाणबलेय हायइ समय गोयममापमायए ॥२३॥ परिजूरइते सरीरय केसापडुरया हवतिते। सेजिब्भबलेय हायइ समय गोयममापमायए ॥ २४॥ परिजूरइते सरीरय केसापडुरया हवंतिते । सेफासबलेय हायइ समय गोयममापमायए ॥२५॥ परिजूरइते सरीरय केसापडुरया हवंतिते । सेसव्वबलेय हायइ समय गोयममापमायए ॥२६॥ अरइगडविसूइया आयका विविहा फुसति ते । विवडइ विद्धसइ तेसरीरय समय गोयममापमायए ॥२७॥

ज्यारे तारु शरीर जराए करीने जीर्ण थशे अने वाळ श्वेत थशे, त्यारे तारु चक्षु-बळ क्षीण थइ जशे; माटे हे गौतम! कदि प्रमाद करवो नहि. [२२]. ज्यारे तारु शरीर जराए करीने जीर्ण थशे, अने वाळ श्वेत थशे त्यारे तारु घ्राण-बल [सुंघवानी शक्ति] ओछु थइ जशे, माटे हे गौतम! कदि प्रमाद करवो नहि [२३]. ज्यारे तारुं शरीर जराए करीने जीर्ण थशे, अने वाळ श्वेत थशे त्यारे तारुं जिह्वा-बळ क्षीण थइ जशे, माटे हे गौतम! कदि प्रमाद करवो नहि. [२४]. ज्यारे तारुं शरीर जराए करीने जीर्ण थशे, अने वाळ श्वेत थशे, त्यारे तारुं स्पर्श बळ क्षीण थइ जशे; माटे हे गौतम! कदि प्रमाद करवो नहि. [२५]. ज्यारे तारुं शरीर जराए करीने जीर्ण थशे, अने वाळ श्वेत थशे त्यारे तारुं सर्व बळ ओछु थइ जशे; माटे हे गौतम! कदि प्रमाद करवो नहि. (२६). *अरति, वात प्रकोपथी उत्पन्न थतो चित्तोद्वेग १, रुधिर प्रकोपथी उत्पन्न थता वमन, विरेचादि, [गंड विसूचिका, कॉलेरा] नाना प्रकारना आतंक [प्राण घातक] रोग आवी पडे छे अने शरीरने बळहीन करीने तेनो विनाश करे छे, माटे हे गौतम! कदि प्रमाद करवो नहि. [२७]

---

*. Despondency—आशा भंग. १. प्रो. जेकोबी तेनो Kings evil-कंठमाळ अर्थ करे छे. टीकाकार 'चित्तोद्वेग' लखे छे.

वोछिंदसिणेह मप्पणो कुमुय सारइयवपाणिय। सेसव्वसिणेह वज्जिए समयं गोयममापमायए ॥ २८ ॥ चिच्चाणंधणंन्व भारिय पव्वईओ हिसि अणगारिय। मावतपुणो विआइए समय गोयममापमायए ॥ २९ ॥ अवऊज्जियमित्तबंधवं विउलचेव धणोहसचय। मातविइयगवेसए समय गोयममापमायए ॥३०॥ नहु जिणे अज्जदिस्सई बहु मएदिस्स-ईमग्गदेसिए। संपईनेयाउएपहे समय गोयममापमायए ॥३१॥

हे गौतम! जेम कमल पत्र २शरद रुतुना जळ बिन्दुनो पण स्पर्श करतु नथी तेम तु स्नेह बन्धनने तजी दे; सर्व स्नेह [राग] त्यागरो अने कदि प्रमाद करशो नहि. (२८). हे गौतम! धन अने भार्यानो त्याग करीने तें साधुत्व ग्रहण कर्युं छे, तो पछी जे काम भोगनुं तें वमन कर्युं छे, तेनो फरीथी अंगीकार करीश नहि अने कदि प्रमाद करीश नहि. [२९]. हे गौतम! तें मित्र, बांधवादि तज्या छे, अने संचेला द्रव्यनो पण त्याग करेलो छे, तो हवे फरीथी तेनी इच्छा करीश नहि अने कदि प्रमाद करीश नहि.]३०]. वर्त्तमानकाळे कोइ ३केवळ ज्ञानी [जिन] नजरे आवता नथी, तो पण मुक्ति-मार्ग देखाडनार (ज्ञान, दर्शन, चारित्रादि साधु धर्म) छे; तुं हमणा मोक्ष मार्गने विषे विचरे छे, एम जाणीने हे गौतम! कदि प्रमाद करीश नहि. [३१].

---

२. शरद रुतुनु जळ निर्मळ अने मनोहर होवा छतां ते कमळ पत्रने लोभावी शकतु नथी, तेम संसारनो स्नेह जीवने मनोहर लागे छे, छता तेमां लुब्ध थवु न जोइए एवो भावार्थ छे. ३. श्री महावीर भगवान पोते केवळ ज्ञानी होवा छता 'वर्त्तमान काळे कोइ केवळ ज्ञानी नथी' एम तेओ पोतेज बोले ए समजी शकातु नथी. आ उपरथी टीकाकार तेमज प्रो. जेकोबी शंका करे छे केतो आ गाथा पाछळथी- के जे वखते केवळ ज्ञानी नहि होय त्यारे उमराइ हशे अथवा नवमा अध्ययननी ४२ मी गाथा मुजब भूल थती हशे.

अवसोहिय कंटयापहं उत्तिन्नोसिपहं महालय । गच्छसि मग्गंविसोहिया समयं गोयममापमायए ॥ ३२ ॥ अबले जहभारवाहए मामग्गेविसमे वगाहिया। पच्छापच्छाणु तावए समय गोयममापमायए॥३३॥ तिन्नोहिसि अन्नवमहं किंपुण चिट्ठसितीरमागओ । अभितुरपारगमित्तए समय गोयममापमायए ॥३४॥ अकलेवर सेणिमुस्सिया सिद्धिं गोयमलोयं गच्छसि । खेमन्चसिवअणुत्तरं समय गोयममापमायए ॥३५॥

जे मार्गमांथी [पाखंड रुपी] कंटक दूर करेला छे एवो (सम्यक्रुपी) महा मार्ग तने प्राप्त थयेलो छे, माटे हे गौतम! मुक्ति मार्गने विषे तुं चाल्यो जा अने कदि प्रमाद करीश नहि. (३२). * निर्बळ भार वाहकनी माफक तुं विषम [1] मार्गे चढीश नहि; नहि तो तने पाछळथी पश्चाताप थशे. माटे हे गौतम! कदि प्रमाद करीश नहि. (३३). हे गौतम ! तु संसार [2] समुद्र तरी गयो छे, हवे कांठे आवीने शा माटे अटकी बेसेछे? त्वराथी भव पार उतरी जा अने कदि प्रमाद करीश नहि (३४). क्षपक[3] श्रेणीने विषे संयमथी उत्तरोत्तर चढीने अंते तु सिद्ध लोकने विषे पहोंचीश[4]. ए सर्वोत्तम मुक्ति क्षेम कल्याणनी करणहार अने उपद्रव रहित छे, माटे हे गौतम! कदि प्रमाद करीश नहि. [३५].

---

* जेम कोइ भार वाहक सुवर्णादि धननो बोजो माथे लइने विषम मार्गे जतो होय अने घर नजीकमां होता छतां ते बोजो कंटाळीने फेंकी दे, अने पछीथी जेम तेने पश्चाताप थाय, तेम पच महाव्रतनो भार युवावस्थारुपी विषम मार्गमां वहन कर्या छतां, पाछळथी ते फेंकी देवाथी (भंग करवाथी) तने पेला भार वाहकनी माफक पश्चाताप थशे एवो भावार्थ छे. २. Uneven road ३. अकलेवर श्रेणि. ४. मो. जेकोबी आ माटे नीचेना शब्दो वापरे छे :—“ You have crossed the great ocean, why do you halt so near the shore ? make haste to get on the other side ’

वुद्धेपरिनि-व्वुडे चरे गामगएनगरेव्व सजए । संतिमग्ग चवूहए समय गोयममापमायए ॥३६॥ बुद्धस्सनिसम्म भासियं सुकहियमठ्ठपउवसोहिय । रागदोसचछिंडिया सिद्धिगइगएगोयम त्तिबेमि ॥३७॥

इति दुम पत्तय झयण दसम सम्मत्त ॥ १० ॥

बुद्ध अने निवृत्त साधु संयम तत्वने बराबर जाणतो थको गाम अने नगरने विषे विचरे छे अने भव्य जनोने शान्ति मार्गनो उपदेश करे छे, माटे हे गौतम! कादि प्रमाद करवो नहि. [३६]. बुद्ध श्री महावीर देवनी सुभाषित अने उपमा दृष्टान्ते करी अलंकृत वाणी सांभळवाथी गौतम राग द्वेषने छेदीने सिद्धिने पाम्या. [३७].

* ॥ दशमुं अध्ययन संपूर्ण ॥ *

अध्ययन ११. बहुश्रुत वर्णन.

संजोगाविप्पमुक्कस्स अणगारस्सभिक्खूणो । आयारपाउकरिस्सामि आणुपुव्विंसुणेहमे ॥१॥ जेयाविहोइ निविज्जेथद्धे लुद्धेअणिग्गहे अभिक्खण उल्लवइ अविणीएअबहुस्सुए ॥२॥ अहपचहिंठाणेहिं जेहिंसिखान-लभइ । थमाकोहापमाएण रोगेणालस्सएणय ॥३॥ अहअट्ठहिंठाणेहिं सिखासीलेत्तिवुच्चइ । अहस्सिरेसयादंते नयमम्ममुदाहरे ॥४॥नासीले नविसीले नसिया अइलोलुए । अक्कोहणेसच्चरए सिखासीलेत्ति वुच्चई ॥५॥

○ अध्ययन ११. ○

जेणे बाह्य अने अंतर सर्व संयोगो * छोड्या छे एवा घर रहित साधुनो आचार अनुक्रमे प्रकट करु छु ते सांभळो. [१]. जे साधु विद्या रहित छे, [1]अहंकार करे छे, रसादिमां लुब्ध रहे छे, इन्द्रियोने अंकुशमां राखी शकतो नथी अने अति वाचाळ छे, एवो साधु अविनित कहेवाय, ते बहुश्रुत गणाय नहि. [२]. पांच प्रकारे शिक्षा[2] ग्रहण थइ शकती नथी, ते पांच स्थानना नाम:—(१) गर्व, [२] क्रोध, (३) प्रमाद, (४) रोग अने [५] आळस. [३]. आठ प्रकारे साधु शिक्षा शील गणाय छे:—(१) हास्य तजवाथी, [२] इन्द्रिय निग्रहथी, [३] पारकी निंदा न करवाथी, (४) अशील वर्जवाथी [शील रहित न थवाथी], (५) विशील वर्जवाथी (शील-आचार विरुद्ध न वर्तवाथी) [६] अति लोभ न करवाथी, (७) क्रोध[3] न करवाथी, अने (८) सत्य उपर प्रेम राखवाथी. ए आठ प्रकारे बहुश्रुतपणु प्राप्त थाय छे [४-५]

---

* प्रथम अध्ययननी प्रथम गाथामां "संयोग"नी समजण आपी गइ छे.   1 Egoistical 2 Discipline 3 Choleric

अह च उदसहिं ठाणेहिं वट्टमाणे उ संजए। अविणीए वुच्चइ सो उ निव्वाणं च न गच्छइ॥६॥ अभिक्खणं कोही हवइ पबंधं च पकुव्वई। मित्तिज्जमाणो वमई सुयं लद्धूण मज्जई ॥७॥ अवि पावपरिक्खेवी अवि मित्तेसु कुप्पई। सुप्पियस्सावि मित्तस्स रहे भासइ पावगं ॥८॥ पइण्णवाई दुहिले थद्धे लुद्धे अणिग्गहे। असंविभागी अवियत्ते अविणीए त्ति वुच्चइ ॥९॥ अह पन्नरसहिं ठाणेहिं सुविणीए त्ति वुच्चई। नीयावित्ती अचवले अमाई अकुतूहले॥१०॥ अप्पं चाहिक्खिवइ पबंधं च न कुव्वई

नीचना चौद प्रकारे वर्तनार साधु अविनीत कहेवाय छे अने ते निर्वाणने विषे पहोंची शकतो नथी.–(१) वारंवार क्रोध करे. (२) दीर्घकाळ क्रोध राखे (३) मित्रनी शीखामण माने नहि (४) शास्त्र भणीने (ज्ञाननो) मद करे, (५) पारकाना छिद्र खोळे. (६) पोताना मीत्र उपर पण कोप करे. (७) पोताना गाढ मित्रनु पछवाडेथी वुरु बोले. (८) [1]अनिश्चयात्मक भाषा बोले (९) मित्रादिकनो द्रोह करे. (१०) अहंकार करे. (११) रसादिमां लुब्ध रहे [१२] इन्द्रिय निग्रह न करे. [१३] बीजा साधुओने (आहार वगेरेनो) सरखो भाग न आपे, अने [१४] अप्रीति करे, एवो साधु अविनीत कहेवाय. [७–९]. पण नीचेना पंदर गुणेयुक्त साधु सुविनीत कहेवाय–[१] नम्र [२] चपळता[2]रहित. [३] माया[3]रहित. [४] कुतूहल[3]रहित. [५] कोइने कठोर वचन न कहे. [६] दीर्घरोषी न थाय [७] मित्रनी शिखामण माने. [८] शास्त्र भणीने (ज्ञाननो) मद करे नहि, [९] पारकी निंदा करे नहि. [१०]

---

१. Positive in this assertion पूर्ण विचार विना वातने वळगी रहेवानो भावार्थ छे ए चौद स्थानक माटे टीकाकार नीचेना शब्दो वापरे छे. १ क्रोधः २ क्रोध स्थिरी करण ३ मित्रस्य वचन त्यजन ४ विद्यामदः ५ परछिद्रान्वेषण ६ मित्राय कोपस्योत्पादन ७ प्रिय मित्रस्यैकान्ते दुष्ट भाषण पुरो मिष्ट भाषण ८ अविचार्य भाषण ९ द्रोह कारित्वं १० अहं कारित्व ११ लोभित्वं १२ अजितेन्द्रियत्व १३ असंविभागित्व १४ अप्रीतिकरत्व. २ Steady ३–४ Free from deceit & curiosity.

जहासे उडुवइ चंदे नक्खत्ते परिवारिए । पडिपुन्ने पुन्नमासिए एवं हवइ बहुस्सुए ॥२५॥ जहासे सामाइयाण कोट्ठागारेसु रक्खिए । नाणाधन्न पडिपुन्ने एवं हवइ बहुस्सुए ॥ २६ ॥ जहासा दुमाण पवरा जंबूनाम सुदंसणा । अणाढियस्स देवस्स एवं हवइ बहुस्सुए ॥२७॥ जहा सा नईण पवरा सलिला सागर गमा । सीयानीलवंत पवहा एवं हवइ बहुस्सुए ॥ २८ ॥ जहासे नगाण पवरे सुमहं मंदरो गिरी । नाणो सहि पज्जलिए एवं हवइ बहुस्सुए ॥ २९ ॥

जेम उडुपति [1] चंद्र नक्षत्रना परिवार सहित पूर्णमासी रात्रे (सोळ कळाथी) शोभे छे, तेम बहु श्रुत साधु पण (साधुओना परिवारमां सर्व अर्थ कळाथी) शोभे छे [२५] जेम [चोर, मुषकादिना उपद्रव सामे] सुरक्षित अने नाना प्रकारनां धान्यथी भरेला गृहस्थोना कोठार शोभे छे, तेम बहु श्रुत साधु पण शोभे छे. [२६]. जम्बूद्वीपना अधिष्ठाता देव ज्यां वास करी रहेला छे, अने जे सर्व वृक्षोमां श्रेष्ठ गणाय छे, एवा जंबु [2] अथवा सुदर्शन वृक्षनी माफक बहु श्रुत साधु शोभे छे. [२७]. जेम [3] नील पर्वतमांथी उत्पन्न थयी अने समुद्रमा वहेती [4] सीता नदी सर्व नदीओमां श्रेष्ठ गणाय छे, तेम बहु श्रुत साधु पण अन्य साधुओमा श्रेष्ठ गणाय छे. [२८]. जेम सर्व पर्वतोमां श्रेष्ठ एवो मन्दरो मेरु पर्वत नाना प्रकारनी औषधीना प्रभावथी शोभे छे, तेम बहु श्रुत साधु पण जिनशासनना प्रभावना प्रकाशरूप शोभे छे [२९]

[1] The queen of the stars [2]. Eugenic Jambu टीकाकार कहे छे के आ वृक्ष उपरथी जंबुद्वीप नाम पडेल छे. [3], अने वळी श्री. जेकोबी लखे छे के- 'पोताना नील जळ सहित'. [4]. जैन सृष्टि विद्या वर्णन प्रमाणे हिमालय पर्वतनी दक्षिण तरफनी बाजुना नील पर्वतमांथी नीकळी सीता नदी पूर्व महासागरमां मळे छे.

जहासे मयभू रमणे उदही अक्खओदए। नाणा रयण पडिपुन्ने एव्व हवइ बहुस्सुए ॥३०॥ समुद्द गभिरसमा दुरासया अचक्किया केणइ दुप्पहंसया । सुयस्स पुन्ना विउलस्स ताइणो खवित्तु कम्म गइमुत्तमगया ॥ ३१ ॥ तम्हासुय महिट्ठेज्जा उत्तमट्ठ गवेसए । जेणप्पाण परंचेव सिद्धिसपाउणिज्जासि त्तिबेमि ॥ ३२ ॥

॥ इति बहुस्सुय पुज्ज झयण एकारसम समत्त ॥ ११ ॥

अक्षय जळथी भरेलो अने स्वयभुनु[1]रमणस्थान जे समुद्र ते जेम नाना प्रकारना रत्नोथी भरेलो छे, तेम बहु श्रुत साधु पण अक्षय-ज्ञानरूपी रत्नोथी भरेलो छे. [३०]. जे साधु समुद्रनी पेठे गभीर छे, जे (अन्य मार्गीना) कपट कृत्योथी ठगाता नथी, परिसहो जेने त्रास उपजावी शकता नथी, जेओ सिद्धान्तना ज्ञानमां पूरा छे, अने जेओ जीवना रक्षक छे, एवा बहुश्रुत साधु सर्व कर्मनो क्षय करीने उत्तम गति [मोक्ष]ने विषे जाय छे. [३१]. तेटला माटे हे उत्तमार्थ गवेषको! [मोक्षना अभिलाषी पुरुषो] सिद्धान्त भणो अने ते वडे तमारा पोताना आत्माने अने अन्य जीवोने सिद्धि प्राप्त करावो.[2] [३२].

अग्यारमुं अध्ययन सपूर्ण

---

१. 'The Delight of Svayambhu' ए नामनो भावार्थ Vishnu's sleeping on ocean' ने काइक मळतो आवे छे. २. प्रो. जेकोबीना शब्दो-"Therefore, seeker after the highest truth, study the sacred lore, in order to cause yourself and others to attain perfection "

अध्ययन १२. हरिकेशीवलनुं आख्यान.

सोवागकुलसंभूओ गुणुत्तरधरो मुणी । हरिएसबलो नाम आसि भिक्खू जिइंदिओ ॥ १ ॥

१. हरीकेश [The yellow haired] चाडालनी एक जाति छे. गंगा नदीना कांठा परना प्रदेशमां चांडाल जातिना एक राजानो मन्; पुत्र हतो जेथी ते हरीकेशबळ कहेवायो, तेनु आगळु जीवन जाणवाथी आ अध्ययन समजवुं सुगम थशे. हरीकेशबळ जैन मुनी थया पछी विहार करतां एक वखते बनारस नजीकनी तीनदुग गुफामां जइ पहोंच्या. ज्यां रहेतो यक्ष तेनो अनुयायी थयो. एक दीवसे कौसलीक राजानी कुंवरी भद्रा आ यक्षनां दर्शनार्थे त्यां आवी. यक्षने वंदन कर्युं पण आ मेला वस्त्रवाळा मुनीने जोइ तेने तिरस्कार उपज्यो. यक्ष आथी गुस्से थयो अने कुवरीना शरीरमां पेठो. पवित्र मुनीनुं मान न जाळववानी शिक्षा खातर कुंवरीने अनेक कष्टो सहन करवां पड्यां अने कोइ औषधीथी तेने आराम थयो नहि ज्यारे कोइ उपायथी आ यक्षे तेनुं शरीर छोड्युं नहि त्यारे कुंवरीनी आजीजीथी यक्षे छेवटनो उपाय बताव्यो के हरीकेशबळने परणवुं, राजाना घणा आग्रह छतां मुनी श्रीए परणवानी ना पाडतां छेवटे राजाना पुरोहित रुद्रदेवने ते परणाववामां आवी. आ पुरोहितनी यज्ञशाळामां जे वार्तालाप थयो छे तेनो आ अध्ययनमां समावेश छे.

○ अध्ययन १२. ○

हरिकेशबळ चांडाल (श्वपाक) कुळने विषे जन्म्यो हतो. ते सर्वोत्तम गुणने धारण करनार, जिनाज्ञापालक जितेन्द्रिय मुनी थयो. (१)

इरिएसणभासाए उच्चारे समिईसुय । जओ आयाण निक्खेवे सजुओ सुसमाहिओ ॥ २ ॥ मणगुत्तो वयगुत्तो कायगुत्तो जिइंदिओ । भिक्खट्ठावभइज्जमि जणवाड मुवट्ठिओ ॥ ३ ॥ त पासिउणमेज्जात तवेण परिसोसिय । पतोवहि उवग्गरण उवहसति अणारिया ॥४॥ जाइमय पडिवद्धा हिसगा अजिइदिया । अबंभचारिणो वाला इम वयणमब्बवी ॥ ५ ॥ कयरे आगछइ दित्तरूवे काले विकराले पोक्कनासे । उमचेलए पसु पिसायभूए संकरदूस परिहरिय कठे ॥ ६ ॥

गमनागमन व्यवहारमा, [1]आहार व्होरवामां, बोलवा चालवामां, मळमूत्रादि क्रियामा, वस्त्रपात्रादि लेवा राखवामां सयमना नियम प्रमाणे वर्त्ततो, समाधिग्रस्त रहेतो अने सत्तर भेदे सयम पाळतो [२] मन, वचन, कायाए करीने गुप्त[2] (त्रणे प्रकारे पापथी सुरक्षित) एवो ते जितेन्द्रिय पुरुष, एक अवसर, ब्राह्मणो ज्या यज्ञ करता हता त्यां जइ पहोंच्यो. [३]. तपे करीने जेनो देह सूकाइ गयेलो छे, जेणे जीर्ण, मलीन वस्त्रो धारण करेलां छे, एवा हरिकेशने आवतो जोइने अनार्य [दुष्ट] ब्राह्मणो हसवा लाग्या. [४]. जाति मदथी उन्मत्त थयेला, जीव हिंसा करनारा, अजितेंद्रिय, अब्रह्मचारी, विषयासक्त, मूर्ख ब्राह्मणो साधुने जोइने नीचे प्रमाणे बोलवा लाग्या :–(५). अरे विकराल [मूळमां मशकरी रूप 'दीप्तरूप' शब्द वापर्यो छे] आदमी तु कोण छे? अने अहिं शा माटे आव्यो छे? काळा वर्णवाळो, दैत्य जेवो विकराल, मोटा दात वाळो, चपटा नाकवाळो, मलीन वस्त्रवाळो, धूळथी भरेलो, उकरडे पडेलां जीर्ण वस्त्र पहेरीने कोइ पिशाच अहिं आवेलो जणाय छे. [६]

१. पांच सुमति. २. त्रण गुप्ती.

कयरे तुमं इय अदं सणिज्जे काए व आसाएइह मागओसी। उमचेलगा पंसुपिसायभूया गछ खलाहि किमिहंठिओसि॥७॥
जक्खो तहिं तिंदुयरुक्खवासी अणुकंपओ तस्स महामुणिस्स। पच्छायइत्ता नियगंसरीर इमाइ वयणाइ मुदाहरित्था॥८॥
समणो अहं संजओ बंभयारी विरओ धणपयण परिग्गहाओ। परप्पवित्तस्सओ भिक्खकाले अणस्स अट्ठा इहमाग ओमि।९।
वियरिज्जइ खज्जइ भुज्जइ य अणं पभूयं भवयाणमेयं । जाणाहिमेजायण जीवणोत्ति सेसावसेसं लहओ तवस्सी ॥१०॥
उवक्खडभोयण माहणाण अत्तट्ठिय सिद्धमिहेगपक्खं । नउ वयएरिसमणपाण दाहामुतुम्भ किमिहंठिओसि ॥११॥

अरे पिशाच! तु कोण छे? अने आ यज्ञशाळामां शी इच्छाथी आव्यो छे? मेलथी भरेला वस्त्र अने धूळथी भरेला शरीरवाळा भूत! अहिंथी चाल्यो जा! तेम कहेवा लाग्या [७]. ए वखते ते यज्ञवाडामां एक तिंदुक नामनुं वृक्ष हतुं अने तेमां एक यक्ष वसतो हतो; तेने ते साधु उपर दया उपजी, तेथी पोतानुं शरीर अदृश्य करीने, अने साधुना शरीरमां प्रवेश करीने,* ते नीचे प्रमाणे बोल्योः - [८].
"हुं शुद्ध श्रमण छुं; ब्रह्मचारी छुं; धन, परिवारना परिग्रहथी मुक्त छुं, मारा पोताने माटे खोराक रांधतो नथी; अन्यने माटे निपजावेल आहार, पाणी भिक्षा काळे खोळुं छुं, ते ते कामने माटे अत्यारे अहिं आव्यो छुं. [९]. तमे न्हाना प्रकारना भोजन जमो छो अने अन्यने आपो छो, तमारे त्या भोजननी न्युनता जोवामां आवती नथी; हुं भिक्षाथीज म्हारो निर्वाह चलावुं छुं. शुद्ध आहारनो अवशेष भाग बाकी रह्यो होय तो ते आ तपस्वीने आपशो?" (१०) ए सांभळीने ब्राह्मणो बोल्या, 'ए भोजन ब्राह्मणोने माटे रांध्युं छे. बधी ते सामग्री अमारा माटेज तैयार करेलुं होवाथी बीजाने [तारा जेवा शुद्रने] अपाय नहि. माटे ए आहार, पाणी अमे तने आपवाना नथी. तारारो त्यां शा माटे उभो रहे छे?" (११).

* मो जेटलोक आवलो भाग मूकी दीधो छे पण यक्ष माहेनु विश्र शरीर दखाओ मने नारकीना जीवोने होय छे तेथी तेओ शरीर नानां मोटां करी शके छे.

थलेसुवीयाइंववतिकासगा तहेवनिन्नेसुयआससाए । एयाएसध्धाएदलाहिमम्भ आराहएपुणमिणंखुखेत्तं ॥१२॥ खेत्ता-
णिअम्हविदियाणिलोए जहिंपकिन्नाविरुहतिपुणा । जेमाहणाजाइविज्जोववेया ताइतुख्खेत्ताइ सुपेसलाइं ॥ १३ ॥
कोहोयमाणोयवहोयजेसिं मोसअदत्तचपरिग्गहच । तेमाहणाजाइ विज्जाविहूणा ताइतुख्खेत्ताइ सुपावयाइ ॥ १४ ॥
तुम्मेथ्थभोमारहरागिगण अट्ठं नजाणाह अहिज्जवेए । उच्चावयाइ मुणिणोचरति ताइतुख्खेत्ताइ सुपेसलाइ ॥ १५ ॥
अज्झावयाण पडिकूलभासिपभाससे किंतुसगासिअम्ह । अविएयविणस्सओ अन्नपाण नयण दाहामुतमनियठा ॥१६॥

ए सांभळीने यक्ष [साधु शरीरे] बोल्यो, "जेम कोइ खेडुत धान्य मेळववानी आशाथी उन्च भूमिमां तेमज नीच भूमिमा पण बी वावेछे ए दृष्टांत लक्षमां लइने तमे मने पण आपो. हुं पण कदाच पवित्र क्षत्र होइश तो [तमारा पुण्यनु] तमने फळ मळशे." [१२]. ए साभळीने ब्राह्मणो बोल्या, 'अमे [ब्राह्मणोज] उन्च क्षेत्र छीए एम सहु कोइ जाणे छे, जे क्षेत्रने विषे वाववाथी पुण्य उगी नीकळे छे, उत्तम जातिना अने विद्वान (वेद पारंगत) ब्राह्मणोज मनोहर क्षेत्र छे.'(१३). ए सांभळीने यक्ष बोल्यो, "जेओ क्रोध अने मानथी भरेला छे, जेओ प्राणी वध करे छे, जेओ मृषावाद बोले छे, अदत्तादान ले छे, परिग्रह सेवे छे, एवा ब्राह्मणो जाति अने विद्याए हीन छे, एवां ब्राह्मण क्षेत्र अति पापरूप छे. [१४]. "तमे ब्राह्मणो तो केवळ शास्त्र अने ब्राह्मण नामनो भार वहेनाराज छो. तमे वेद भण्या छो पण तेनो अर्थ समजता नथी. साधु पुरुषो उच्च अने नीचने घेर भिक्षार्थे जाय छे. तेज खरां पुण्य क्षेत्रो छे.". (१५). ए सांभळीने ब्राह्मणो बोल्या, 'अरे दरिद्री! अमारी-उपाध्यायनी सन्मुख आवां निंदा अने क्रोधना वचन उच्चारनार तुं कोण? आ अन्न, पाणी सडी जाय ते भले, पण हे *निग्रंथ! अमे तने आपवाना नथी.' [१६].

* 'निग्रंथ' शब्द आंह बेवडा अर्थमां वपरायेलो छे:—(अ) त्यागी. (ब) शरम रहित. नि=विना ग्रंथ=गांठ Without restraint-Shameless

समिईहिंमझं सुसमाहिनम्म गुत्तिहिंगुत्तस्सजिइंदियस्स । जइमेनदाहिथ्थ अहेसणिज्ज किमज्ज जन्नाणलभिथ्थ लाभं ॥१७॥ केइथ्यन्तत्ताउवजोइयावा अझावयावामहखंडिएहिं। एयतुदंडेणफलेणहंता कंठंमिघित्तूण खलेज्जजोणिं ॥१८॥ अज्झावयाणं वयणं सुणित्ता उद्धाइयातथ्थबहूकुमारा । दंडेहिंवित्तेहिंकसेहिंचेव समागयातंइसिताल्यंति ॥ १९ ॥ रन्नोतहिंकोसलियस्सधुया भद्दत्ति नामेणअणिंदियंगी । तंपासियासंजय हम्ममाण कुद्धेकुमारेपरिनिव्ववेइ ॥ २० ॥ देवाभिओगेणनिओइएणंदिन्नामुरन्नामणसाणझाया नरिंददेविंदभिवंदिएणजेणामिवंताइसिणासएसो ॥ २१ ॥

ए सांभळीने यक्ष[1] बोल्यो, "हुं त्रण गुप्तिए गुप्त [मन, वचन, कायाथे] अने पांच समितिए समित छुं अने पांच इन्द्रिओने वश करूं छुं[2], एवा साधुने तमे सूझतो आहार नहि व्होरावो तो आ यज्ञनु फळ तमने शी रीते मळशे?" [१७]. ए सांभळीने ब्राह्मणो बोल्या उठ्या 'अहिं कोइ क्षत्री, अग्निरक्षक, अध्यापक, अथवा तो पोताना शिष्यो सहित कोइ उपाध्याय नथी के जेओ आ निर्ग्रंथने दंड अने विट्टी फळथी मारीने, गरदन पकडीने बहार काढी मूके?' [१८] अध्यापकोनां आवां वचन सांभळीने केटलाक युवान ब्राह्मणो धसी आव्या, अने लाकडी, नेतर अने चाबुक वति ते मुनिने मारवा लाग्या. [१९]. ए वखते कौशलिक राजानी दोष रहित अंगवाळी पुत्री भद्राए मुनिने मार खातो जोयो, तेथी ते क्रोधे भरायेला तरुण ब्राह्मणोने[3] मारता वार्या. [२०]. 'हे ब्रह्म कुमारो! जे यक्षे मारा शरीरमां प्रवेश कर्यो हतो अने तेनी प्रेरणाथी मारा पिताए मने जे राजाने अर्पण करी हती तेज आ यति छे; पण तेणे पोताना मनथी पण मारी इच्छा करी नहोती. मारो त्याग करनार ए महर्षि नरेन्द्र अने देवेन्द्रने पण वांदवा योग्य छे. [२१].

१ मुनी शरीरमां प्रवेशी यक्ष वात चीत करेलो छे. २. Subdue my senses ३. Appeased the angry youngsters.

एसोहुसोउग्गतवो महप्पाजिइंदिओ संजओबंभयारि । जोमेतयानेछइ दिज्जमाणिंपिउणा सयंकोसलिएणरन्ना ॥२२॥
महाजसो एसमहाणुभागो घोरव्वओ घोरपरक्कमोय । माएयंहीलह अहीलणिज्जं मासव्वेतेएण भिनिद्दहेज्जा ॥ २३ ॥
एयाइतीसे वयणाइ सोच्चापत्तिएभद्दाइ सुभासियाइ । इसिस्सवेयावडियठयाए जक्खा कुमारेविणिवारयति ॥ २४ ॥
तेघो रख्वाठियअंतलिख्खे असुरातहिं तजणंतालयति । ते भिणदेहे रुहिरवमति पासितु भद्दाइणमाहुभुज्जो ॥२५॥
गिरिंनहेहिंखणह अयं दतेहिंखायह । जायतेयं पाएहिंहणह जे भिख्खू अवमणह ॥ २६ ॥

'ए उग्र तप करनार महात्मा छे; ते, जितेन्द्रिय अने सप्तदश विधे सयमधारी पुरुष छे, मारा पिताए पोताना हाथे करीने मने अर्पण करी, छतां ए ब्रह्मचारी पुरुषे मारो स्वीकार कर्यो नहोतो [२२].' ए मुनि महानुभाव अने घोर पराक्रमी छे. ते पाच महाव्रतनो पाळणहार अने अति सामर्थ्यवान पुरुष छे; माटे एवा अनिदनीक पुरुषनी अवगणना करोमां; नहि तो तमे सौ तेना तपना तेजथी[1] बळीने भस्म थइ जशो.' [२३]. [पुरोहितनी स्त्री] भद्रानां आवां सुभाषित वचनो ज्यारे यक्ष देवताओए शांभळ्या त्यारे तेओ साधुनी सहायता करवाने आव्या अने पेला तरुण ब्राह्मणोने वारवा लाग्या. [२४]. विक्राळ स्वरूप धारण करीने अने अंतरिक्षे रहीने असुरो ब्राह्मणोने मारवा लाग्या; ब्राह्मणोने भग्न शरीर अने मोढेथी लोही नाखता जोइने भद्रा आ प्रमाणे बोली :-[२५]. 'हे ब्राह्मणो! आवा साधु पुरुषनुं अपमान करवुं ए [2] नखवति पर्वत खोदवो, दांतवति लोढु करडवु अने पगवति अग्नि मसळवो, तेना जेवुं छे. [अर्थात् सर्व अनर्थनां मूळ छे]. (२६).

[1]. Fire (of his virtue) [2]. मो. जेकोनी आ माटे नीचे नां वाक्यो वापरे छे. Dig rocks with your nails, or eat iron with your teeth or kick fire with your feet

आसीविसोउग्गतवोमहेसी घोरव्वओ घोरपरक्कमोय । अगणिंच पक्खंदपयंगसेणा जे भिक्खुयं भत्तकाले वहेह ॥२७॥

सीसेणएयंसरणं उवेह समागयासव्वजणेणतुम्हे । जइ इच्छहजीवियंवाधणंवा लोगंपि एसोकुविओडहेज्जा ॥२८॥

अवहेडियपिट्ठि स उत्तमंगे पसारियाबाहु अकम्मचिट्ठे । निब्भेरियच्छेरुहिरं वमंते उड्ढं मुहेनिग्गयजीहनेत्ते ॥२९॥

तेपासिया खंडियकट्ठभूए विमणोविसन्नो अहमाहणोसो । इसिंपसाएइ सभारियाओ हीलंच निंदंचखमेहभंते ॥३०॥

बालेहिं मूढेहिं अयाणएहिं जंहीलियातस्स खमाहभंते । महप्पसाया इसिणोहवंति नहुमुणी कोवपराभवंति ॥३१॥

'उग्र तप करनार, घोर पराक्रमी अने घोर व्रत पाळनार आ महर्षि झेरी नाग समान छे, भिक्षार्थे नीकळेला साधुने पीडा उपजावनारा तमे पतंगियाना [1]टोळानी माफक बळीने भस्म थइ जशो. [२७]. माटे जो तमारे जीवित अने धन बचाववुं होय तो तमे सौ एकठा थइ, मस्तक नमावीने ए मुनिने पगे पडो, अने तेनुं शरणुं मागो; नहि तो ए साधु कोपशे तो आखा नगरने बाळीने भस्म करी नाखशे.'[२८].पोताना शिष्योने मस्तक अने पीठ नमावीने, पोताने सोंपायेलुं काम छोडी हाथ जोडीने, सजळ नेत्रे ओशियाळा थइ उभेला, नेत्रो फाडीने, अने जीभ बहार काढीने, काष्ठवत् जड जेवा जोइने, ते यज्ञ करावनार पुरोहित विषाद पाम्यो, निराश थइ गयो, अने पोतानी भार्या [भद्रा] सहित ते मुनिने प्रसन्न करवाने बोल्यो, 'हे पुज्य! अमे आपनी निंदा तथा अवगणना करी छे, ते क्षमा करो. (२९-३०). 'हे पुज्य! आ मूढ, अज्ञान बाळकोए आपने पीडा उपजावी छे तेनी क्षमा आपो. ऋषिओ अति उदार मनना [2] होय छे, तेओ क्रोधने वश थता नथी.' [३१].

---

1. A swarm of moths. 2. मुनिराजोए आ शब्दो खास स्मरणमां राखवा लायक छे. "Sages are exceedingly gracious nor are the saints inclined to wrath "

पुव्विंच इण्हिंच अणागयंच मणप्पओसोनमे अत्थिकोइ। जक्खाहुवेयावडिय करेंति तम्हाहु एएनिहया कुमारा ॥३२॥ अत्थंच धम्मच वियाणमाणा तुझेणविकुप्पहभूइपन्ना । तुझतुपाएसरण उवेमो समागया सव्वजणेण अम्हे ॥३३॥ अच्चेमुतेमहाभागा नतेकिंचनअच्चिमो । भुजाहिसालिमंकूर नाणावंजणसजुय ॥३४॥ इमचमे अत्थिपभूयमन्न तभूज्जासू अम्ह अणुग्गहट्ठा । वाढति पडिच्छइभत्तपाण मासरसओपारणए महप्पा ॥३५॥ तहियं गधोदए पुप्फवासं दिव्वातहिं वसु हाराय वुट्ठा । पहयाओ दुदुभीओ सुरेहि आगासे अहो दाणघुट्ठ ॥३६॥

ए सांभळीने मुनि [हरिकेश] बोल्या, "हे ब्राह्मणो! मारा मनमां भूतकाळे कदि द्वेष उपज्यो नथी, वर्त्तमानकाळे उपजतो नथी, अने भविष्यकाळे उपजवानो नथी. यक्षो मारी भक्ति करेछे, तेमणे तमारा कुमारोने मार्या छे."[३२]. ए सांभळीने ब्राह्मणो बोल्या, 'हे स्वामि! आप सर्व शास्त्रनुं तत्व अने धर्म वस्तुनो स्वभाव जाणो छो. हे सर्व जीव रक्षक तत्व ज्ञानी पुरुष! कोप करशो नहि. सर्व परिवार सहित अमे सौ आपने शरणे छीए. [३३]. 'हे महानुभाग! अमे आपने वांदीये छीए. आप सर्व रीते पूजवा योग्य छो. नाना प्रकारना मसाला सहित पकावेलो आ शुद्ध भात आप जमो. (३४). 'अमारी पासे अन्न, पक्वान्न पुष्कळ छे. अमारा उपर कृपा करीने आप ते जमो.' "भले[१]" एम कहीने ते महात्मा मुनिए आहार पाणी व्होरीने मासखमणनुं पारणुं कर्युं. (३५). ए प्रसंगे देवताओए सुगंधी जळ अने पुष्पनो वरसाद वरसाव्यो अने दिव्य द्रव्यनी वृष्टि करी; दुंदभिना नाद कर्या अने आकाशमां 'अहो दान! अहो दान!' एवी गर्जना थइ रही. (३६).

१ सरल स्वभावी साधुओनी सहन शीलतानो आ प्रत्यक्ष पुरावो छे. असत्य शब्दो अने मार पड्या छतां, तेमनी आजीजी ध्यानमां लइ तत्क्षण आहार लीधो. शब्दे शब्दे ने डगले डगले मोढुं मरडता आजना लोकोए आवां दृष्टांतो परथी घणो धडो लेवानो छे. आवी शान्त वृत्तिनी कदर कुदरत अने देवताओ पण करे छे ते ३६मी गाथामां जणाइ आवे छे.

सक्खं खु दीसइ तवोविसेसो न दीसई जाइ विसेस कोइ। सोवागपुत्तं हरिएस साहुं जस्सेरिसा इड्ढिमहाणुभागा ॥३७॥ किं माहणा जोइ समारभंता उदएण सोहिं बहिया विमग्गहा। जं मग्गहा बाहिरियं विसोहिं न तं सुदिट्ठं कुसला वयंति ॥३८॥ कुसं च जूवं तणकट्ठमग्गिं सायं च पायं उदगं फुसंता। पाणाइ भूयाइ विहेडयंता भुज्जोवि मंदा पकरेह पावं ॥ ३९ ॥ कहं चरे भिक्खु वयं जयामो पावाइ कम्माइ पणोल्लयामो। अक्खाहि णो संजय जक्खपूइया कहं सुजट्ठं कुसला वयंति ॥४०॥

ए जोईने ब्राह्मणो विस्मय पाम्या (अने बोली उठ्या) के 'तपनो महिमा प्रत्यक्ष देखायछे! जातिनो[1] महिमातो (तेनी आगळ) कांइज जणातो नथी! चांडाळ पुत्र हरिकेश साधुनो अद्भुत प्रभाव तो जुओ!' [३७]. ए सांभळीने मुनि ब्राह्मणोने उपदेश देवा लाग्या, "हे ब्राह्मणो! तमे अग्निनुं संरक्षण करोछो अने जळ स्नानथी बाह्य शुद्धिने इच्छो छो. पण तत्त्वज्ञ पुरुषो ए बाह्य शुद्धिने खरी शुद्धि [जे मेळववानो मुमुक्षोनो प्रयास छे ते] तरीके स्वीकारता नथी. (३८). "तमे दर्भ, यज्ञ स्तंभ, तृण, काष्ठनो उपयोग करो छो, तमे संध्याकाळे अने प्रभाते (अणगळ) पाणीनो उपयोग करोछो तेथी जीव हिंसा थाय छे, अने तमे मतिमंद लोको समजता नथी के एवां पापे करीने [उलटो] आत्मा मलीन थाय छे." (३९). ए सांभळीने ब्राह्मणो बोल्या, 'हे साधु! अमारे केवी रीते वर्तवुं? केवी क्रिया करवी? अने पाप कर्मथी केवी रीते दूर रहेवुं? हे यक्ष पूजित, जितेन्द्रिय साधु! केवे प्रकारे करेल्या यज्ञने पंडित पुरुषो उत्तम कहे छे? [४०]

---

[1]. ब्राह्मणना अभिमानवाळा अंध पर्यन्तभोने आ उपरथी घणुंज शीखवानुं छे.

छज्जीवकाए असमारभंता मोस अदत्तं च असेवमाणा । परिग्गहं इत्थिओ माणमायं एयं परिन्नाय चरंतिदंता ॥४१॥ सुसंवुडा पचहिं संवरेहिं इह जीवियं अणवकंखमाणा । वोसट्ठकायासुइचत्तदेहा महाजयं जयइ जन्नसिट्ठं[1] ॥ ४२ ॥ केतेजोई केवते जोइठाणं कातेसुया किंचते कारिसंग । एहायते कयरासंति भिक्खू कयरेण होमेण हुणासि जोइं ॥ ४३ ॥

१. कोइ प्रतोमां "जन्नसेठ्ठ" छे.

ए सांभळीने मुनि बोल्या, " छकाय जीवनी रक्षा करवी, मृषावाद बोलवो नहि, अदत्ता दान लेवुं नहि; स्त्री, मान, मायानो परिग्रह सेववो नहि अने इन्द्रियोने वश राखीने वर्तवुं. (४१). " पांचे आश्रव[1] जेणे रुध्याछे, आ संसारमां जीवितनी वान्छना पण करतो नथी, जेणे पोताना देहनो [ममत्वनो] त्याग[2] करेलो छे, जे निर्मळ वृत्तिथी रहेछे, अने देहने कोइ अतिचारनो दोष लागवा देतो नथी, एवो मुनि [कर्मरुपी] महायज्ञमां विजय मेळवेछे." (४२). ए सांभळीने ब्राह्मणो बोल्या, ' हे साधु ! तमारो अग्नि केवोछे? तमारो अग्निकुंड केवोछे? अग्निमां घी होमवानो तमारो चाटवो केवोछे? तमारां इन्धन (छाणां) केवाछे ? आ सर्व वस्तुओ विना यज्ञ शी रीते थइ शके ? तमे अग्निमां होम हवन शानो करोछो ?' [४३].

१. पवित्र आत्माने मलीन करनाराना कर्मोना चाल्या आवता प्रवाहने आश्रव कहे छे. सुमति अने गुप्तिथी ते प्रवाहने रोकवानी क्रियाने संवर कहे छे. आश्रवमां नवा कर्मोनो संग्रह थाय छे, संवरथी नवा कर्मो आवतां रोकी शकाय छे. बधाइ चुकेला कर्मोनो तप वीगेरेथी क्षय करवो ते निर्जरा कहेवाय छे. २. अहिं काउसग्ग-कायोत्सर्ग करवानो पण भावार्थ छे मो. जेकोबी ते माटे "Who abandons his body" शब्दो वापरे छे.

तवो जोइ जीवो जोइ ठाणं जोगासुया सरीरं कारिसंगं। कम्मंएहासंजमजोगसंती होमं हुणामिइसिण पसत्थं ॥४४॥
केतेहरए केयतेसंतितित्थे कहमिण्हाओ वरयजहामि। आइक्खणं सजयजक्खपूइया इच्छामोनाओ भवओसगासे॥४५॥
धम्मेहरए बंभे संतितित्थे अणाविले अत्तपसन्नलेसे। जहिंसिण्हाओ विमलो विसुद्धो सुसीइ भूओ पजहामिदोसं॥४६॥

ए सांभळीने साधु बोल्या, "तप मारो अग्नि छे; जीव अग्नि कुंड छे; मन वचनना शुभ व्यापार[शुद्ध आचरण] ए मारो घी होमवानो चाटवो छे; शरीर इन्धन रूपे अने कर्म तेमां बळे छे. सत्तरह रिते संयम योग अने शान्ति जेनी पंडित पुरुषो स्तुति करी गया छे, तेनो हुं होम हवन करुं छुं." [४४]. ए सांभळीने ब्राह्मणो बोल्या, 'हे यक्षपूजित ऋषि! आपनुं तीर्थ क्युं? स्नान करवा योग्य जळाशय कयुं? केम टाळ्याने आप केवी रीते स्नान करोछो? ए सर्व आपनी पासेथी जाणवाने अमे इच्छिये छीए.' (४५). ए सांभळीने मुनि बोल्या, "धर्म मारुं तीर्थ छे; ब्रह्मचर्य मारो जळाशय छे; जे जळाशय सदा शान्त अने आत्माने निर्मळ करनार [तेज, पद्म, शुक्ल] लेश्याए करीने सहित छे; तेमां हुं स्नान करुं छुं अने मळरहित, विशुद्ध अने शीतळ थइने सर्व दोषने टाळुं छुं.२ [४६].

१."ध्यान धूपं, मनोपुष्पं, पंचेन्द्रिय हुताशनं: क्षमा जाप, संतोष पूजा, पूजो देव निरंजनं," तेने मळतुं आ गाथानुं रहस्य छे. मो. जेकोबीना आ गाथाना शब्दो पर्यांय अतर कारक छे—"Penance is my fire, Life my fireplace, right exertion is my sacrificial ladle, the body the dried cowdung, Karman is my fuel, self-control, right exertion and tranquillity are the oblations, praised by the sages, which I offer"

२. आ शब्दो सुवर्ण अक्षरे भोंयरी हृदयमां स्मरण करवा लायक छे. मो. जेकोबीना शब्दोमां आपणे ते पुन: स्मरिए. "The Law is my pond, celibacy my holy bathing-place, which is not turbid and throughout clear for the soul, there I make ablutions, pure, clean, and thoroughly cooled I get rid of hatred (or impurity)"

एयं सिणाणं कुसलेहि दिठ्ठ महासिणाण इसिण पसथ्थ । जह सिएनहाया विमला विसुद्धा महारिसी उत्तमंठाणं पत्तेत्तिबेमि ॥४७॥

❁ ॥ इति हरिए सिज्झ झयण वारसम सम्मत्त ॥ १२ ॥ ❁

अध्ययन १३. चित्र अने सम्भूत.

जाइपराजिओग्वलु कासिनियाणंतु हथ्थिणपुरमि । चुलणीए बंभदत्तो उववन्नो पओमगुम्माओ ॥१॥ कंपिल्ले सभूओ चित्तो पुणजाओपुरिमतालमि । सेठ्ठिकुलमि विसाले धम्म सोऊणपव्वइओ ॥२॥

" कुशळ पडितोए एवा प्रकारनुं स्नान शोधी काढयुं छे, ए उत्तम स्नाननी ऋषि मुनिओए प्रशसा करीछे, महा मुनिओ तेमां स्नान करीने निर्मळ अने विशुद्ध थयाछे अने उत्तम स्थान (मुक्ति) ने विषे गयाछे. " (४७)

※ ॥ बारमुं अध्ययन सपूर्ण. ॥ ※

अध्ययन १३.

चांडाल जातिमा उत्पन्न थयाथी कटाळीने [चित्रना न्हाना भाइ] सम्भूते (पुनर्जन्ममां) हस्तिनापुरमां चक्रवर्त्ति राजा थवानो दृढ सकल्प कर्यो, अने तेथी पद्मगुल्म [अने नलिनगुल्म] विमानेथी चवीने कम्पिलपुर नगरमा ब्रह्म राजानी भार्या चुलणीना उदरे ब्रह्मदत्त नामथी जन्म धारण कर्यो [१]. चित्रनो जीव पुरिमताल नगरने विषे एक शेठना श्रेष्ठ विस्तीर्ण कुळमां उपज्यो. त्यां अनुक्रमे धर्म श्रवण करीने तेणे दीक्षा ग्रहण करी. (२).

तवो जोइ जीवो जोइ ठाणं जोगासूया सरिरं कारिसंगं। कम्मंपहासंजमजोगसंती होमं हुणामिइसिणं पसथ्थं ॥४४॥
केतेहरए केयतेसतितिथ्थे कहंसिएहाओ वरयंजहासि। आइख्खणं संजयजख्खपूइया इछामोनाओ भवओ सगासे॥४५॥
धम्मेहरए बभे संति तिथ्थे अणाविले अत्तपसन्नलेसे। जहिंसिएहाओ विमलो विसुध्धो सुसीइ भूओ पजहामिदोस ॥४६॥

ए सांभळीने साधु बोल्या, "तप[1]मारो अग्निछे, जीव अग्निकुड छे, मन वचननो शुभ व्यापार[शुद्ध आचरण] ए मारो घी होमवानो चाटवो छे, शरीर इन्धन रुपछे अने कर्म तेमां बळेछे. सप्तदश विधि संयम योग अने शान्ति जेनी पडित पुरुषो स्तुति करी गया छे, तेनो हुं होम हवन करुंछुं." [४४]. ए सांभळीने ब्राह्मणो बोल्या, 'हे यक्षपूजित ऋषि! आपनु तीर्थ कयुं? स्नान करवा योग्य जळाधारी कइ? मेल टाळवाने आप केवी रीते स्नान करोछो? ए सर्वे आपनी पासेथी जाणवाने अमे इच्छिये छीए.' (४५). ए सांभळीने मुनि बोल्या, "धर्म मारु तीर्थ छे; ब्रह्मचर्य मारी जळाधारी छे; जे जळाधारी सदा शान्त अने आत्माने निर्मळ करनार [तेज, पद्म, शुक्ल] लेश्याए करीने सहित छे; तेमां हुं स्नान करुछु अने मळरहित, विशुद्ध अने शीतळ थइने सर्वे दोषने छांडुं छुं.[2] [४६]

१."ध्यान धूप, मनोपुष्प, पचेन्द्रिय हुताशन, क्षमा जाप, संतोष पूजा, पूजो देव निरजन," तेने मळतु आ गाथानु रहस्य छे. मि. जेकोबीना आ गाथाना शब्दो घणांज असर कारक छे.—"Penance is my fire, Life my fireplace, right exertion is my sacrificial ladle, the body the dried cowdung, Karman is my fuel, self-control, right exertion and tranquillity are the oblations, praised by the sages, which I offer"

२. आ शब्दो सुवर्ण अक्षरे आलेखी हमेशां स्मरण करवा लायक छे. मि. जेकोबीना शब्दोमां आपणे ते पुनः स्मरीए. "The Law is my pond, celibacy my holy bathing-place, which is not turbid and thoroughout clear for the soul, there I make ablutions, pure, clean, and thoroughly cooled I get rid of hatred (or impurity)"

एयं सिणाणं कुसलेहिं दिट्ठ महासिणाण इसिण पसत्थ । जह सिएनहाया विमला विसुद्धा महारिसी उत्तमंठाणं पत्तेत्तिबेमि ||४७||

○ || इति हरिए सिज्झ झयण बारसम सम्मत्त || १२ || ❁

अध्ययन १३. चित्र अने सम्भूत.

जाइपराजिओरवलु कासिनियाणतु हत्थिणपुरमि । चुलणीए बमदत्तो उववन्नो पओमगुम्माओ ||१|| कपिल्ले सभूओ चित्तो पुणजाओपुरिमतालमि । सेट्ठिकुलमि विमाले धम्म सोऊणपव्वइओ ||२||

" कुशळ पंडितोए एवा प्रकारनु स्नान शोधी काढयु छे, ए उत्तम स्नाननी ऋषि मुनिओए प्रशंसा करीछे; महा मुनिओ तेमां स्नान करीने निर्मळ अने विशुद्ध थयाछे अने उत्तम स्थान (मुक्ति) ने विषे गयाछे " (४७).

* || बारमुं अध्ययन संपूर्ण. || *

अध्ययन १३

चांडाळ जातिमां उत्पन्न थवाथी कंगळीने [चित्रना न्हाना भाइ] सम्भूते (पुनर्जन्ममां) हस्तिनापुरमां चक्रवर्ति राजा थवानो पो संकल्प कर्यो, अने तेथी पद्मगुल्म [अने नलिनगुल्म] विमानेथी चवीने कम्पिलपुर नगरमां ब्रह्म राजानी भार्या चुलणीना उदरे ब्रह्मदत्त नामथी जन्म धारण कर्यो [१]. चित्रनो जीव पुरिमताल नगरने विषे एक शेठना श्रेष्ठ विस्तीर्ण कुळमां उपज्यो. त्यां अनुक्रमे धर्म श्रवण करीने तेणे दीक्षा ग्रहण करी. (२).

कपिल्लमियनयरे समागया दोविचित्त मभूया । सुहदुक्ख फलविवाग कहीते इक्क मेगस्स ॥३॥ चक्कवट्टी महिड्ढीओ बमदत्तो महायसो । भायर बहुमाणेण इम वयण मब्बवी ॥४॥ आसिमो भायरादोवि अण्णमण्ण वसाणुगा । अण्णमण्ण मणुरत्ता अण्णमण्ण हिएसिणो ॥ ५ ॥ दासा दसन्ने आसी मियाकालिजरे नगे । हसा मयगतीराए सोवागा कासि भूमीए ॥६॥ देवाय देवलोगमि आसि अम्हे महड्ढिया । इमाणो छट्ठियाजाई अण्णमण्णेण जाविणा॥७॥ कम्मानियाण पगडा तुमेरायविचितिया । तेसिं फल विवागेण विप्पओग मुवागया ॥८॥

एक वखत काम्पिल्य नगरमा चित्र अने सम्भूत [जे नामे तेओ पूर्व जन्ममां ओळखाता हता ते] एक बीजाने मल्या. त्यां तेओ पोताना शुभाशुभ कर्मनां जे फळ तेमणे भोगव्या हता ते विषे परस्पर वात करवा लाग्या. [३]. महा रिद्धिवान अने यशस्वी चक्रवर्त्ति ब्रह्मदत्त राजा भवान्तरे जे पोतानो सहोदर हतो तेने बहु मानथी निचे प्रमाणे कहेवा लाग्यो–[४] 'पूर्व भवमां आपणे बन्ने भाइओ हता, एक बीजापर माया राखता, परस्पर स्नेह भावथी वर्तता अने एक बीजानु हित वाच्छता (५). 'प्रथम आपणे दशार्ण देशमां दास [गुलाम रुपे] जन्म्या हता, पछी कालजर पर्वतने विषे मृग थया हता; पछी मृत गगा नदीने तीरे हस जातिमा उत्पन्न थया हता, त्यार पछी काशीपुरीमां चाडाळ जातिमां जन्म्या हता [६]. 'अने त्यार पछी आपणे सौधर्म देवलोकने विषे महा रिद्धिवान देवता थया हता, आ आपणो छट्ठो भव छे जेमा आपणे एक बीजाथी जुदा पडेला छीए.' [७]. ए सांभळीने मुनि [चित्र] बोल्या, "हे राजा! भोगनी पापी इच्छा करवाथी कर्म बधाय छे[1]; अने तें एवु चिंतन कर्यु हतु. ए कर्मनो उदय थवाथी आपणो परस्पर वियोग थयो छे." [८]

१. मनमा माठा विचार करवाथी पण कर्म बधाय छे. पाप पुज बधे छे अने मनुष्योनो मोटो भाग माठा विचारने परिणामेज पाप बांधे छे. Karman is produced by sinful thoughts

सच्च सोयप्पगडा कम्मामए पुरा कडा । ते अज्ज परिभुञ्जामो कि न्नु चित्ते विसे तहा ॥९॥ सव्वं सुचिन्नं सफल
नराण कडाण कम्माण नमोक्खु अत्थि । अत्थेहि कामेहिय उत्तमेहि आया मम पुन्नफलो ववेए ॥ १० ॥
जाणाहि सभूय महाणुभाग महिड्ढिय पुण्ण फलो ववेय। चित्तपि जाणाहि तहेव राय इड्ढीजुई तस्सवियप्पभूया ॥११॥
महत्थ रूवावयणप्पभूया गाहाणु गीयाणरसघमझे । जभिक्खुणो सीलगुणो ववेया इहजयतेसमणोमिजाओ ॥१२॥
उच्चोदएमहुककेय्यवभे पवेइया आ वसहायरम्मा । इमगिह चित्तधणप्पभूय पसाहि पचालगुणो ववेय ॥ १३ ॥

ए साभळीने ब्रह्मदत्त बोल्यो, 'हे साधु' हे भाइ! पूर्व जन्ममा में सत्य अने आत्मशुद्धिकारक सुकर्मो कर्या हता; ते [जप तप । शुभ कर्मनां फळ [सुख] आजे हुं भोगवु छु. हे चित्र' तारा शुभ कर्मोना फळ क्या [गुम थइ] गया? [९]. ए साभळीने मुनि बोल्या, "हे राजन' सौ कोइने पोताना पुण्य कर्मनु फळ मळे छे. करेला कर्मनां फळथी कोइ जीव छूटी शकतो नथी.[१] अर्थ-द्रव्ये अने कामे करीने मारा आत्माने पोताना पुण्यनु फळ मळी चूक्यु छे [१०] "हे सम्भूत! तने तारा पुण्यनु फळ महारीद्धि अने महान भाग्य रूपे मळ्यु छे, चित्रनी (मारी) बाबतमा पण तेमज थयु छे एम समज. महान रिद्धि अने द्युति (कान्ति) चित्रने पण हती [११]. "जन समुदायमां गवाती महा अर्थ अने अल्प अक्षरवाळी गाथा साभळीने शील गुणे करीने युक्त एवा साधु पुरुषो जिन प्रवचनने (धर्म) विषे उद्यम करे छे. अने ए गाथा साभळीने हु पण श्रमण (साधु) थयो छुं"[१२] ए सांभळीने ब्रह्मदत्त बोल्यो, 'उच्च, उदय, मधु, कर्क अने ब्रह्म नामे पाच महारम्य अने मनोहर आवास मारे छे हे चित्र! चित्र विचित्र धनथी भरेला अने पाचाळ देशनी लक्ष्मीथी भरपुर ए घरनो तु अंगिकार कर. (१३).

---

[१] कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि—करेला कर्म भोगव्यां विना छुटकोज नथी. There is no escape from the effect of one's actions आ सिद्धात स्मरणमा राखी वर्तनार मनुष्य कदी पण पापमां प्रवृत्त थतो नथी.

नट्टेहिंगीगहियनाइ एहिं नारीजणाइ परिवारयंतो । भुजाहि भोगाइ इमाइ भिक्खू ममरोयई पव्वज्जाहु दुक्खं ॥१४॥ त पुव्वनेहेण कयाणुराग नराहिवं कामगुणसुगिद्ध । धम्मस्सिओतस्सहियाणुपेही चित्तो इम वयण मुदाहरित्था ॥१५॥ सव्व विलवियगीय सव्व नट्ट विडम्बिय । सव्वे आभरणाभारा सव्वे कामा दुहावहा ॥१६॥ बालाभिरामेसु दुहावहेसु न तसुहकामगुणेसु राय । विरत्तकामाण तवोधणाण जभिक्खूणो सील गुणे रयाण ॥१७॥ नरिंदजाई अहमानराण सोवागजाइ दुहओ गयाण । जहिं वय सव्व जणस्सवेस्सा वसीय सोवागनि वेसणेसु ॥१८॥

'हे साधु' मुग्धाओना गीत, नाट्य, वादित्रना भोग तु भोगव, मारा धारवा प्रमाणे प्रवज्या (साध्वाचार) तने बहु दुःखरूप थइ पडशे. [१४]. धर्माश्रित चित्र पूर्व स्नेहने लीधे ब्रह्मदत्तनु हित इच्छतो हतो, तेथी विषय सुखमा लुब्ध थयेला राजाने ते नीचे प्रमाणे कहेवा लाग्यो. [१५]. "हे राजन' सर्व गीत मात्र लवारा–विलाप तुल्य छे. सर्व नाट्य नाम मात्र मश्करी–विडबना रूप छे,सर्व आभरण भाररूप छे, अने सर्व कामभोग परिणामे दुःखज उत्पन्न करे छे.[१६]."हे राजन' जे काम भोग बालक अने मूर्खने हर्ष उत्पन्न करे छे ते खरु जोता दुःखनां मूळ छे, विरक्त अने तपस्वी साधु पुरुषो ए काम भोगमा सुख मानता नथी; पण तेओ तो शीलगुणने विषे आसक्त रहे छे. [१७]. "हे नरेंद्र' मनुष्यमां अधम जाति जे चांडाळ तेमां आपणे बन्ने जन्म्या हता; चाडाळ हाराथी सौ आपणने धिक्कारता अने आपणे चाडाळना झुपडामां वसता. [१८].

१. मोन शोखमां मशगुल थयेलाओ आटलु समजे तो पृथ्विपरथी केटला बधो अनर्थ दूर थाय? प्रो. जेकोबी ते माटे आ मुजब शब्दो वापरे छे:– All singing is but prattle, all dancing is but mocking, all ornaments are but a burden, all pleasures produce but pains " २. Virtues of right conduct

उ.अ.
१३.

०३

तीसेउ जाईइउपातियाए वुच्छामुसो चागनि वेसणेसु । सव्वस्स लोगस्सदुग छणिज्जा इह तु कम्माइ पुरेकडाइ ॥१९॥
सो दाणिसि राय महाणुभागो महड्ढिओ पुन्न फलो ववेओ । च इत्तु भोगाइ असासयाइ आयाणहेऊ अभिनिखमाहि ॥२०॥
इह जीविए राय असासयमि धणिय तु पुणाइं अकुव्वमाणो । से सोयई मच्चुमुहो वणीए धम्मअकाऊण परमिले ए ॥२१॥
जहेह सीहोवमिय गहाय मच्चूनरनेइहु अतकाले । नतस्समायावापि यावभाया कालमि तस्स सहरा भवति ॥२२॥
नतस्सदुक्ख विभय तिनाइओ न मित्तवग्गान सुयान बधवा । एगोसय पच्चणुहोइ दुक्ख कत्तारमेव अणुजा इकम्म ॥२३॥

"चाडाळनी अधम जातिमा उत्पन्न थयाथी आपण चाडाळना झुपडामा रहेता सौ लोकनो द्वेष सहन करता. आ जन्मने विषे तारां पूर्व भवे करेला शुभ कर्मनो उदय थयो छे. (१९). "हे राजन[1] आ काळने विषे तु महा रिद्धिवान अने महानुभाग राजा थयो छे ते तारां (पूर्वनां) पुण्यनुं फळ भोगवे छे [1]अशाश्वत भोग छाडीने मोक्षदाता [2] चारित्र धर्म अंगिकार कर. [दिक्षा ग्रहण कर]. (२०). "हे राजन! आ अशाश्वत मनुष्य जीवितमा जेणे सुकृत्यो अने धर्म कर्या नथी तेने मृत्यु समये पश्चाताप थाय छे. [२१]. जेम सिंह मृगने पकडी जाय छे तेम मरण काळे काळ मनुष्यने लइ जाय छे. ते वखते माता, पिता, बाधव कोइ तेना जीवितने जरा पण बचावी शकतु नथी [२२] "स्वजन, मित्रवर्ग, पुत्र, बाधव कोइ तेना दुःखमा भाग लइ शकतु नथी, जीवने एकलानेज सर्व दुःख सहन करवा पडे छे; कारण के कर्मना फळ ते करनारनेज भोगववा पडे छे. (कर्म करनारनी पाछळज कर्म जाय छे अथवा ते कर्मनो कर्त्ता एज कर्मनो भोक्ता[3] छे) [२३]

---

१. Transitory २ The highest good ३. खावावाळा खाइ जाय छे पण पापी कर्मनुं फळ पाप करनारने शिर रहे छे, माटे नीतिमय जीवनथी–पापथी बची कुटुंबनु भरणपोषण करवानो आशय आ गाथापरथी नीकळी शके छे.

चिच्चा दुपयं च चउप्पयं च खेत्तं गिहं धण धण्णं च सव्वं । सकम्मबीओ अवसो पयाइ परं भवं सुंदरं पावगं वा ॥२४॥
तमेकगं तुच्छ सरीरगं से चिईगयं दहिय उपावगेण । भज्जा य पुत्तोवि य नायओ य दायारमन्नं अणुसंकमंति ॥२५॥
उवणिज्जइ जीवियमप्पमायं वणं जरा हरइ नरस्स राय । पंचालराया वयणं सुणाहि माकासि कम्माइं महालयाइं ॥२६॥
अहंपि जाणामि जहेह साहू जं मे तुमं साहसि वक्कमेयं । भोगा इमे संगकरा हवंति जे दुज्जया अज्जो अम्हारिसेहिं ॥२७॥
हत्थिणपुरम्मि चित्ता दट्ठूण नरवइं महिड्ढियं । कामभोगेसु गिद्धेणं नियाणमसुहं कडं ॥ २८ ॥

"द्विपद (भार्यादि), चतुष्पद (अश्वादि), छाडीने, क्षेत्र, गृह, धन, धान्यादि सर्व वस्तु तजीने, परवश थयेलो जीव पोताना शुभाशुभ कर्म साथे लइने परलोके जाय छे अने तेना प्रमाणमां सारी माठी गतिने पामे छे [२४]. "रोगथी भरेलो असार देह चितामां बाळी दीधा पछी तेनी भार्या, पुत्रो अने सगा वहाला बीजाने आश्रये जाय छे अने तेनी सेवा चाकरी करे छे. [२५] "आयुष्य निरंतर क्षय थतुं जाय छे जरा मनुष्यनी शक्तिने (रूप, वर्ण) हरे छे. माटे हे पंचाल राजा! मारा वचन श्रवण करीने महा रौद्र (भूंडां) कर्म करीश नहि"[२६] ए सांभळीने ब्रह्मदत्त बोल्यो, 'हे साधु' आपे जे उपदेश मने दीधो छे ते हुं सारी पेठे समजुं छुं. भोग विषय धर्ममां अन्तराय करनारा छे पण अमारा जेवा अज्ञानीथी ते छोड्या छोडी शकाता नथी [२७]. 'हे चित्र! हस्तिनापुरमां सनत्कुमार चक्रवर्तिनी रिद्धि देखीने, काम भोगनी इच्छाथी लपटाइने तें वखते में अशुभ (दुष्ट) संकल्प कीधो हतो. [२८].

१. आ अध्ययनी प्रथम गाथा वांचवाथी आ वखत समजाशे. आगला भवमां ब्रह्मदत्त राजा संभूत नामे मुनिश्वर हता. सनत्कुमारनी राणी सुनंदा ज्यारे आ मुनिने वांदवा आवी नमन करती हती त्यारे तेना सुवाळा वाळनो, मुनिना पगने अकस्मात स्पर्श थइ गयो. आ अकस्माते मुनिश्रीना मनमां अनेक इच्छाओ उत्पन्न थई, अने पोताना तपना फळ रूपे चक्रवर्ति राजा थवानुं नियाणुं कर्युं.

तरसमे अप्पडिक तरस इम एयारिस फल । जाणमाणाविजधम्म कामभोगेसु मुच्छिओ ॥ २९ ॥ नागोजहापकज
लावसन्नो दठुथलनाभि समेइ तीर । एव वय कामगुणेसुगिद्धा नभिख्खुणोमग्गमणुव्वयामो ॥ ३० ॥ अच्चेइकालो
तुरियन्तिराइओ नयाविभोगा पुरिसाणनिच्चा । उविच्चभोगा पुरिसचयति दुम्म जहाखीणफल वपख्खी ॥ ३१ ॥
जइतसिभोगे चइउ असत्तो अज्जाइ कम्माइ करेहि राय । धम्मेठिओ सव्वपयाणु कपी तोहोहिसि देवोइउ विउव्वी ॥३२॥
नतुझ भोगे च इऊण बुद्धी गिद्धोसि आरभ परिग्गहेसु । मोह कउएतिओविप्पलावो गच्छामि राय आमतिओसि ॥३३॥

'ए निदान मे आ'रोच्यु नहि. (एवा दुष्ट सकल्पने माटे में पाछळथी पश्चाताप कर्यो नहि) तेथी तेनु एवु फळ आव्यु छे के धर्मनो मार्ग हुं जाणुं छु छता काम भोगने विषे आसक्त रहु छु. [२९] 'जेम पकजळ (कादववाळी जग्या)मा निमग्न थइने खुचतो हाथी, काठो नजरे देखवा छता कादवमाथी बहार नीकळतो नथी, तेम काम भोगमा लुब्ध थयेला अमे साधु धर्म आचरी शकता नथी.' [३०]. ए साभळीने मुनि बोल्या, "हे राजन! काल त्वराथी वहे छे अने रात्रि दिवस झडपथी पसार थइ जाय छे; मनुष्यना काम भोग पण अनित्य[१] छे. जेम पक्षी फळ रहित वृक्षने तजी जाय छे, तेम काम भोग मनुष्यनी पासे आवीने न्हासी जाय छे. [३१]. "हे राजन! काम भोग छाडवाने तु असमर्थ होय तो उत्तम कार्यो कर; धर्मने विषे दृढ रहीने सर्व जीव उपर अनुकम्पा राख; तेम करवाथी आ मनुष्य देहथी छूट्या पछी तु शक्तिवान देवता थइश.[२] [३२]. "आटलु छतां पण काम भोग छाडवानी तारी इच्छा न थती होय, अने हजी पण तु आरम्भ, परिग्रहमा ग्रस्त रहेवा इच्छतो होय तो में जे वचनालाप कर्या ते सर्व व्यर्थ गयो छे. तो हवे तारी आज्ञा मागीने हु अहिथी जाउ छु." [३३]

१. The pleasures of men are not permanent. २. ससारमा रहीने पण जीवन सार्थक करवानी आ कूंचीछे.

पञ्चालरायावियबम्भदत्तो साहुस्सतस्सवयणं अकाउं। अणुत्तरेभुञ्जिय काम भोगे अणुत्तरेसोनरएपविट्ठो ॥ ३४ ॥

चित्तोविकामेहिं विरत्तकामो उदग्गचारित्ततवोमहेसी। अणुत्तर संजमपालइत्ता अणुत्तर सिध्धिगइ गओ।त्तिबेमि ॥३५॥

॥ इति चित्त सम्भूइज्जा अयण तेरसमं सम्मत्त ॥ १३ ॥

पंचाल देशनो राजा ब्रम्हदत्त चक्रवर्ति ते साधुना उपदेश प्रमाणे वर्त्यो नहि, तेणे सर्वोत्कृष्ट काम भोग भोगव्या अने ते अंते अनुत्तर नरकने विषे उत्पन्न थयो [१] [३४]. पण सर्वोत्कृष्ट चारित्र धर्म पाळनार अने उग्र तप करनार महर्षि चित्र (नो जीव) काम भोगनी इच्छाथी विरक्त थयो ते सत्तर भेदे संयम पाळीने अनुत्तर (सर्वोत्तम) सिद्ध गतिने प्राप्त थयो. [३५].

✲ तेरमु अध्ययन संपूर्ण. ✲

[1]. Sank into the deepest hell

उ.अ. १४. ९७

अध्ययन १४. इपुकार.

देवा भवित्ताण पुरे भवम्मि केइ चुया एगविमाणवासी । पुरे पुराणे उसुयारनामे खाए समिध्धे सुरलोयरम्मे ॥ १ ॥
स कम्म सेसेण पुराकएण कुलेसुदग्गेसुयतेपसूया । निविण संसार भया जहाय जिणिदमग्ग सरण पवन्ना ॥ २ ॥
पुमत्तमागम्म कुमार दोवि पुरोहिओ तस्स जसायपत्ती । विसाल कित्तिय तहो सुयारो रायथ्थदेवि कमलावइय ॥३॥
जाईजरा मच्चु भयाभि भूया बहिविहाराभिणिविठ्ठचित्ता । संसार चक्कस्स विमोख्खणठ्ठा दठूणते काम गुणेविरत्ता ॥४॥

अध्ययन १४

पूर्व भवे देवतानु पद पामीने, पद्मगुल्म विमानथी चवीने केटलाक जीव (आ लोकने विषे) पुरातन, समृद्धिवान, सुप्रसिद्ध अने देवलोक समान मनोहर इपुकार[१] नगरमां उत्पन्न थया. [१] पूर्व जन्मनां उपार्जित करेला अवशेष पुण्य कर्मने लीधे तेओ (देव लोकथी चवीने छए जीव) उत्तम कुळने विषे (उत्कृष्ट द्विज, क्षत्रिय जाति रुपे) उत्पन्न थया. संसारना त्रासथी भय पामीने तेओए सर्व भोग छांडी दीक्षा अने जिनेंद्रमार्गनु शरण ग्रहण कर्यु. [२]. बे अविवाहित द्विज पुत्रो, त्रीजो भृगु नामे पुरोहित, चोथी तेनी यशा नामे पत्नि, पांचमो विस्तीर्ण कीर्तिवाळो इपुकार नामे राजा ने छठी तेनी राणी कमळावती. (ए रीते छ जीव उत्पन्न थया हता). [३] पेला बे द्विज पुत्रो जन्म, जरा अने मरणथी त्रास पामीने मोक्षने विषे चित्त परोवीने[२], संसार चक्रथी पोताना आत्माने मुक्त करावाने अने काम भोगने मोक्ष प्राप्तिमां विघ्नरुप मानीने, तेओ तेथी विरक्त थया. [४]

१. टीकाकारना कहेवा प्रमाणे आ शेहेर कुरुदेशमां हतु २. मूळपाठ अने टीकाकारने आधारे आ अर्थ करेलो छे, पण प्रो. जेकोबी एवो अर्थ करे छे केः—"There mind intent on pilgrimage"

पिय पुत्तगा दोन्नि विमाहणस्स स कम्मसीलस्स पुरोहियस्स। सरित्तुपोराणिय तत्थ जाइ तहा सुचिन्न तवसंजमञ्च ॥ ५ ॥
ते काम भोगेसु असज्जमाणा माणुस्सएसु जेयाविदिव्वा । मोक्खाभिकखी अभिजाय सड्ढा ताय उवागम्म इम उदाहु ॥६॥
असासय दट्ठु इम विहार बहु अतराय नय दीह माउ। तम्हा गिहंसि नरइ लभामो आमतया माचरिस्सामोमोण ॥ ७ ॥
अह तायगो तत्थमुणीएतेसि तवस्सवाघाय कर वयासी। इम वय वेय विदा वयति जहान होइ असुयाण लोगो॥ ८ ॥
अहिज्ज वेए परिविस्स विप्पे पुत्ते परिट्ठप्प गिहसि जाया। भोच्चाण भोगे सह इत्थियाहिं आरणगा होह मुणी पसत्था ॥ ९ ॥

पोताना सत्कर्मने विषे जे सावधान छे एवा भृगु पुरोहितना बन्ने प्रिय पुत्रोने जातिस्मरण उपज्युं, (पोताना पूर्व भवनुं भान थयुं) अने पोते पाछला भवमां जे जप तप कीधा हता ते सर्वेनुं तेमने स्मरण थयुं. [५] मनुष्य अने देवताना कामभोगथी विरक्त थयेला, मोक्षना अभिलाषी, तत्त्वने विषे रुचीवाळा, एवा बन्ने कुमारो पोताना पिता पासे आवीने कहेवा लाग्या [६]. "मनुष्यनी अवस्था अशाश्वत अने अनित्य[1] छे, तेमां अंतराय घणा अने आयुष्य टुंकु छे, तेथी हे तात! गृह सुखथी अमने संतोष थतो नथी, माटे दिक्षा ग्रहण करवाने वास्ते अमे आपनी आज्ञा मागवा आव्या छीए [७]. तेओना चारित्र–भाव (तप- वृत्ति)मां विघ्न नाखवाने (अंतराय करवाने) माटे तेमनो पिता (भृगु पुरोहित) हवे पछी थनारा मुनिओने (पोताना पुत्रोने) कहेवा लाग्यो, "हे पुत्रो! वेदने जाणनारा पंडितो एम कहे छे के 'अपुत्रने परलोकनी प्राप्ति थती नथी. [८] "पुत्रो! वेदनुं अध्ययन कर्या पछी, ब्राह्मणोने भोजन वृप्त कर्या पछी, तमारा पुत्रो उपर घरनो भार मूक्या पछी, अने तमारी स्त्रीओ संगाथे भोग भोगव्या पछी तमे अरण्यमां जइने त्युंथी प्रशस्त मुनिओ थजो" [९].

---

1. Lot of man is transitory and precarious

सोयग्गिणा आय गुणिं धणेण मोहा निलापज्जलणा हिएण । सतत्त भाव परितप्पमाण लोलप्प माण बहुहा बहुच ॥ १० ॥ पुरोहिय त कमसोणुणत निम तय तच सुए धणेण । जहक्कम कामगुणेहिं चेव कुमारगाते पसमिक्ख वक्क॥११॥ वेया अहीयानभवतिताण भुत्तादियानिंति तमत मेण । जायाय पुत्तानभवतिताण कोनामते अणुमन्नेज्ज एय॥१२॥खणमित्त सुक्खा बहुकाल दुक्खा पगाम दुक्खा अणिकामसुक्खा । ससारमोक्खस्स विप्पक्खभूया खाणी अणथ्थाणओ कामभोगा ॥१३॥

आत्मा गुणरागादिक इन्धनथी सींचायेलो अने मोहादि १पवनथी अधिक प्रज्वलित थता अग्निमा पुरोहितने बळतो जोइने, तेने अतःकरणने विषे दाझतो अने मोहनी कर्मने लीधे विलाप अने टळवळाट करतो जोइने, अने अनुक्रमे ते तेमने समजावी लेवानो प्रयास करे छे ते जोइने, तथा धन अने कामभोग तरफ ललचावे छे ते जोइने कुमारो पोताना पिताने कहेवा लाग्या. [१०-११]. "वेद पठनथी तरी शकातु नथी, ब्राह्मणोने जमाडवाथी अधकारमा ने अधकारमाज (नरकगतिमा) गोथां खावा पडे छे; पुत्र जन्म नरकथी बचावी शकतो नथी , माटे हे तात' तमारु कहेवु अमाराथी केवी रीते मान्य राखी शकाय? [१२]. "कामभोग३ मात्र क्षणिक सुखने आपनारा छे, पण ते लावा काळ सुधी दुःख देनारा छे. ते अल्प सुख अने अतिशय दुःखकर छे ते मुक्ति मार्गमां विघ्न [शत्रु] रूप छे अने अनर्थनी खाण रूप छे. (१३).

१. Wind of delusion २ सतान माटे अनेक उपायो भोगवता मनुष्यो आ समजी सन्मार्गे द्रव्य व्यय करे तो घणु सारु ३. जाणी जोइने ससारमां सपडाता अने अनर्थनी उडी खाइमा गोथां खाता जीवो, आ शब्दो स्मरणमां राखे तो घणे दरज्जे जीवन सुधारी शके. प्रो. जेकोबी पण आ माटे असरकारक शब्दोनो उपयोग करे छे " Pleasures being only a moment's happiness, but suffering for a very long time, intense suffering, but slight happiness, They are an obstackle to the liberation from existence,and are a very mine of evils"

परिव्वयन्ते अनियत्त कामे अहो यराओ परितप्पमाणे । अन्नप्पमत्ते धणमेसमाणे पप्पोत्ति मच्चु पुरिसोजरंच ॥ १४ ॥
इमचमे अत्थि इमचणत्थी इमचमेकिच्च इमअकिच्च । तएवमेन लालप्पमाण हराहरतित्तिकह पमाओ ॥ १५ ॥
धण पभूयसह इत्थियाहिं सयगा तहाकामगुणापकाम । तपकए तप्पइ जस्सलोगो त मव्वगाहीणमिहेवतुझ ॥ १६ ॥
धणेणकिंधम्म धुराहिगारे सयणेणवा कामगुणेहिचेव । समणा भविस्सामो गुणोहधारी बहिं विहारा अभिगम्मभिक्खं॥१७॥
जहाय अग्गी अरणी असतो खीरेघयतिल्ल महातिलेसु । एमेवजाया सरीरसिसत्ता समुच्छइना सइनावचिट्ठे ॥ १८ ॥

काम भोग उपर आसक्त थइने माणस परिभ्रमण करे छे अने (अपूर्ण रहेली अभिलाषाओने माटे) रात्रि दिवस (आर्त, रुद्र ध्याने) परिताप कर्या करे छे, प्रमादथी (पारका) धननी तपासमा फर्या करे छे अने अंते जरा अने मृत्युने प्राप्त थाय छे [१४]. "अमारी पासे आ वस्तु छे; अमारी पासे पेली वस्तु नथी; अमारे आ कृत्य करवु छे, अमारे पेलु कृत्य नथी करवुं, ते आ प्र- माणे वात करतो होय छे एटलामां काळ आवीने तेने पकडी जाय छे. आवे केवो प्रमाद करवाय? [१५]. ए सांभळीने पिता कहे छे. "हे पुत्रो! आपणी पासे धन घणु छे, स्त्रीओ पण घणी छे, विशाळ कुटुंब अने प्रचुर कामभोग पण छे; के जे वस्तुओ मेळववा माटे लोको तप जप करे छे सघळा ए सर्व सुख तमने अहीं मळी शके तेम छे" [१६]. ए सांभळीने पुत्रो कहे छे, "ध- र्मना अधिकारमां धन, स्वजन अने कामभोग शु कामना छे? अमे गुणसमूहने धारण करनार श्रमण थइशु अने गामोगाम विहार करीने भिक्षा मागीशुं." [१७] ए सांभळीने पिता कहे छे, "जेम अरणीना काष्टमां अग्नि, दूधमां घी, अने तलमां तेल, रहेलु छे तेम हे पुत्रो! शरीरने विषे आत्मा (समुत्पन्न) रहेलो छे, सदा शरीरना नाशनी साथे तेनो पण नाश थाय छे अने ते सर्व वस्तुओ अनित्य छे." [१८].

नोइदियगिज्झ अमुत्तभावा अमुत्तभावाविय होइनिच्चो । अज्झत्थहेऊनियउस्सबंधो ससारहेऊच्चवयति बध ॥ १९ ॥ जहावय धम्ममजाणमाणा पावपुराकम्म मकासि मोहा। उरुज्झमाणा परिरक्खियता तन्नेव भुज्जोविसमायरामो ॥ २० ॥ अब्भाहयमि लोगमि सव्वओ परिवारिए । अमोहाहि पडतीहि गिहसि नरइलभे ॥ २१ ॥ केण अब्भाहओ लोगो केणवा परिवारिओ । कावाअमोहा वुत्ता जाग चितावरोहुमे ॥ २२ ॥ मच्चुणाअब्भाहओ लोगो जराए परिवारिओ अमोहारयणी वुत्ता एवताय वियाणह ॥ २३ ॥

? कोइ प्रतमा याहओ छे

ए साभळीने पुत्रो कहे छे, "आत्मा इन्द्रिओथी अग्राह्य छे, कारण के ते अमूर्त्त (अरूपी) छे; अने ते अरूपी तथा अग्राह्य छे छतां ते नित्य अने शाश्वता छे. मिथ्यात्वादि दुर्गुणो कर्मबंधनना हेतु छे, अने ए बंधन, ससार परिभ्रमणनुं कारण कहेवाय छे.[1] [१९]."धर्मना खरा स्वरूपना अजाणपणाने लीधे अमे पूर्वे पापकर्म कीधा हता, अमारा अज्ञाने[2] अमने रुधी राख्या हता अने दिक्षा लेतां अटकावी राख्या हता. माटे हवे अमे एवा पापकर्म नहि करीए [२०]. "हे तात! एक मनुष्यने पिडा उपजावे छे, बीजुं तेने वींटळाइ रहे छे, अने त्रीजु अमोघ (निरतर) व्याज करे छे, तेथी गृहस्थाश्रम उपर अमने रुची थती नथी." [२१]. ए साभळीने पिता कहे छे, "हे पुत्रो! मनुष्यने पिडा कोण उपजावे छे? तेने कोण वींटळाइ वळेलु छे? अने अमोघ कोण व्याज करे छे? ते जाणवाने हु आतुर छु." [२२] ए साभळीने पुत्रो कहे छे, "मृत्यु मनुष्यने पिडा उपजावे छे, जरा तेमने वींटळाइ वळेली छे, अने [3]रात्रि दिवस अमोघ व्याज करे छे. हे तात! ते तमे जाणोजो (के जे रात्रि दिवस व्याज करे छे ते आयुष्यने घटाडे छे) [२३].

१. This fetter is called the cause of worldly existence २. Wrong minded ness ३. मूळ पाठमां 'रयणी' रात्रि छे. मो. जेकावी Days दिवस लखे छे पण भावार्थ रात्रि दिवसनो छे.

जाजावच्चइ रयणी न सापडि नियत्तइ । अधम्मं कुणमाणस्स अफलाजंति राइओ ॥ २४ ॥ जाजावच्चइ रयणी न सापडि नियत्तइ । धम्मंच कुणमाणस्स सफला जंतिराईओ ॥२५॥ एगओ सवसित्ताणं दुहओ सम्मत्त सजुया । पच्छा जाया गमिस्सामो भिक्खमाणा कुले कुले ॥ २६ ॥ जस्सथ्थि मच्चुणासख्खं जस्सवथ्थि पलायणं । जोजाणे न मरिस्सामि सोहुकंखे सुएसिया ॥ २७ ॥ अज्जेवधम्म पडिवज्जयामा जहिंपवन्ना न पुणभवामो । अणागयं नेवय अथ्थिकिंचि सद्धाखमणेविणयत्तुराग ॥२८॥

"जे रात्रि दिवस व्यतित थाय छे ते पाछा मळता नथी; अधर्म आचरण करनार जीवनां रात्रि दिवस निष्फळ जाय छे. [२४]. "जे रात्रि दिवस व्यतित थाय छे ते पाछां मळतां नथी. धर्माचरण करनार मनुष्यनां रात्रि दिवस सफळ थाय छे." [२५]. ए सांभळीने बाप कहे छे, "आपणे बन्ने (पिता अने पुत्रो) गृहवासमां (अमुक काळ) साथे साथे रहीने अने सम्यक्त्वादि व्रत पाळीने पछीथी साधु थइने घेरघेर भिक्षार्थे विचरीशुं" [२६]. ए सांभळीने पुत्रो कहे छे, "जे पुरुषने मरणनी साथे मित्राइ होय, अथवा तो जेने मरणथी न्हासी छुटवानी शक्ति होय, अथवा तो हुं नहिज मरुं एम जेओ जाणता होय. तेज मनुष्य एवा निश्चय उपर आवी शके के अमुक कार्य हुं काले करीश"[२७]."हे तात! अमे तो आजेज धर्म अंगीकार करीशुं, जेम करवाथी अमारे फरीथी संसारमां जन्म लेवो न पडे, विषय सुखनी अप्राप्ति ए काइज नथी. (आ जीवे संसारमां रहीने अनेक विषय सुख भोगव्यां छे); श्रद्धा[२] अमने रागथी मुक्त करी शकशे" [२८]

---

१. भविष्य उपर के वृद्धावस्था माटे सुखनी राखनार मनुष्य परिणामे बहु हेरान थाय छे ए जग जाहेर छे. प्रसिद्ध अंग्रेजी कहेवत छे के :—Work as if you were to live for ever, but live as if you were to die to morrow २. Faith will enable us to put aside attachment

पहीण पुत्तस्सहु नत्थिवासो वासिट्ठि भिक्खाय रियाएकालो। साहाहिं रुक्खोलभए समाहिं छिन्नाहि साहाहि तमेवखाणु २९
पक्खा विहूणोवजहेह पक्खी भिच्च विहूणोवरणे नरिंदो। विवणसारो वणिओव्वपोएपहीण पुत्तो मितहा अहंपि ॥ ३० ॥
सुसंभिया कामगुणा इमेते संपिडिया अग्ग रसप्पभूया। भुञ्जा मुता कामगुणापगाभ पच्छा गमिस्सामोपहाण मग्ग ॥ ३१ ॥
भुत्तारसा भोइ जहाइणेवउ न जीवियट्ठा पजहामि भोए। लाभ अलाभच सुहच दुक्ख सचिक्खमाणो चरिस्सामि
मोण ॥ ३२ ॥

(ए साभळीने भृगु पुरोहित पोतानी स्त्री प्रति कहे छे)–हे वाशिष्टि! पुत्रो विना गृहवास शुन्यवत् भासे छे, माटे हे प्रिये! मारे भिक्षुकधर्म अंगीकार करवानो अवसर आवी पहोंच्यो छे वृक्ष शाखा वडेज शोभे छे, शाखाओ छेदाइ गया पछी ते वृक्ष ठुंठुं (खीलारूप) थइ रहे छे. (तेम पुत्र वियोगथी मारु चित्त गृहवासमा स्थिर रहेवानु नथी.)" [२९] 'हे प्रिये! जेम पांख विनानुं पक्षी शोभतु नथी, जेम संग्राममा सेवक विनानो राजा शोभतो नथी, वहाण भांगी जवाथी *द्रव्यहीन थइ गयेलो वेपारी जेम शोच करे छे, तेवी पुत्र रहित थवाथी मारी दशा थशे.' [३०] ए साभळीने वाशिष्टि कहे छे, "हे स्वामिन्! आपे सुखना सर्व पदार्थो एकठा कर्या छे अने शृंगार तथा रसोत्पादक सुंदर वस्तुओनो संग्रह कर्यो छे, ते वडे आपणे(हमणा तो)कामभोग भोगवीए अने पछीथी आपणे मुक्तिमार्गने विषे विचरीशु" [३१]. ए साभळीने भृगु कहे छे, "हे भद्रे! आपणे भोग भोगवी चुक्या छीए आयुष्यनो अंत नजीक आवतो जाय छे, भव भोगनी इच्छाथी (आ लोकार्थे) हु काइ कामभोग छाडतो नथी. परंतु लाभ अलाभ अने सुख दुःख तरफ समान वृत्ति राखीने हु साधु धर्म पाळीश."[३२].

* मो. जेकोबी लखे छे के 'वहाणमा माल विनानो वाणियो' A merchant on a boat without his goods.

वतासी पुरिमोराय नमोहोइप ससिओ । माहणेण परिचत्त धण आयाओ मिछसि ॥३८॥ सव्वजग जइतुह सव्व वावित्रण भवे । सव्वपिते अपज्जत्त नेवताणायततन ॥ ३९ ॥ मरिहिमिराय जगतयात्रा मणोरमे कामगुणे पहाय । एकोहु धम्मो नरदेवताण नविज्जइ अणमिहेह किंचि ॥४०॥ नाह रमेपक्खिणि पजरेवा सताणछिन्ना चरिस्सामिमोण अकिंचणाउज्जु कडा निरामिसा परिग्गहारंभ नियत्तदोसा ॥ ४१ ॥

"हे राजन! जेम कोई पुरुष वमन करेलो आहार फरीथी खाय ते प्रशसाने पात्र गणातो नथी, तेम तमे पण ब्राह्मणे त्याग करेलु धन ग्रहण करवानी इच्छा राखो छो ते प्रशसा पात्र नथी।[३८] "हे राजन! कोइ तमने आखुं जगत् अने ते उपरतु सर्व धन अर्पण करे तोपण तेनाथी तमारी तृष्णा तृप्त थवानी नथी, तेमन वळी ते सघळु तमारु रक्षण करवाने असमर्थ छे.[२] (३९) "हे नरेन्द्र! जे काळे आप मनोहर काम भोग छोडीने मरण पामशो त्यारे धर्म सिवाय आ जगतनी बीजी कोइ वस्तु तमने [जीवने] दुर्गतिमा पडता बचावी शकशे नहि.[३] [४०] "जेम पक्षी पांजरामा पूराइ रहेवाथी सतोष पामतु नथी, तेम भवपिंजरमा पडी रहेवाथी मने सतोष थतो नथी. सनति, द्रव्य, कषाय विषय, अने परिग्रह तथा आरम्भना दोषरहित थइने हु मुनिव्रत धारण करीश. [४१].

---

१. जिन वाणी मिथ्या ए काळमा पण राज्यने जती एम आ उपरथी जणाय छे २. श्रीमतोए आ उपरथी घणु शीखवानुं छे. एक हजारना रोजगारो डोकटर के मोहोरोनी थेलीओ आयुष्यमां एक क्षणनो पण वधारो करी शकती नथी माटे हमेशा शक्ति अनुसार सन्मार्गे पुन्य करवानु छे. ३. महमद गीझनीए लूटमा मेळवेली दोलतनो ढगलो करावी, मृत्यु समये तेपर वीछानु कराव्युं अने पोक पोक मूकीने रोयो पण ते हीरा, पाना के सोनु रुपु तलभार पण तेनी साथे गयुं नहि.

दवग्गिणा जहारण्णे डज्झमाणेसु जंतुसु । अन्ने सत्ता पमोयंति रागद्दोसवसं गया ॥४२॥ एवमेव वयं मूढा कामभोगेसु मुच्छिया । डज्झमाणं न बुज्झामो रागद्दोसग्गिणा जगं ॥ ४३ ॥ भोगे भोच्चा वमित्ता य लहुभूयविहारिणो । आमोयमाणा गच्छंति दिया कामकमा इव ॥४४॥ इमे य बद्धा फंदंति मम हत्थऽज्जमागया । वयं च सत्ता कामेसु भविस्सामो जहा इमे ॥४५॥ सामिसं कुललं दिस्स बज्झमाणं निरामिसं आमिसं सव्वमुज्झित्ता विहरिस्सामो निरामिसा ॥४६॥ गिद्धोवमे उ नच्चाणं कामे संसारवड्ढणे । उरगो सुवन्नपासे व संकमाणो तणुं चरे ॥४७॥

" अरण्यमां दावानळ लागवाथी अन्य जीवोने तेमां बळतां जोइने, रागद्वेषने वश थयेलां बीजां पशुओ जेम परम आनंद पामे छे, तेवीज रीते काम भोगमां लुब्ध थयेला आपणे मूढ लोको जोइ शकता नथी के जगत रागद्वेषना दावानळथी सळगतुं जाय छे.१ [४२–४३]. " जेणे प्रथम भोग भोगव्या छ अने पछीथी तेने छोडी दीधा छे, तेओ वायुनी पेठे कशापण प्रतिबंध विना विहार करे छे अने जेम पक्षीओ स्वेच्छाचारथी उडतां फरे छे तेम तेओ पण पोतानी मरजी पडे त्यां फरता फरे छे. [४४]. " हे आर्य! ए २ काम भोग जे मारा हाथमां सुरक्षित राख्या छतां ते स्थिर रहेता नथी ते काम भोगने विषे आसक्त रहेवाथी पुरोहितादि कहे छे तेवी स्थिति आपणी थशे (४५) " (मांसना टुकडाथी ललचाइने) जाळमां फसायेला पक्षीने, तेवी लालचथी न ललचायेल पक्षीओ जेम जोइ रहे छे, तेम आपणे पण प्रत्येक लालचथी दूर रहीने विचरवुं जोइए अने कोइपण लालचथी ललचावुं न जोइए. [४६]. "मनुष्योने जाळमां फसायेला पक्षीओ जेवां मानीने, तथा कामभोग संसार (भव फेरा)ने वधारनारा छे एम समजीने, जेम सर्प गरुडने (सुवर्ण) ने देखीने सावचेती अने संकोचथी चाले छे तेम प्रत्येक मनुष्ये वर्तवुं जोइए. [४७].

---

१. The world is consumed by the fire of love and hatred. २ प्रो. जेकोबीए आ आखी गाथा 'पक्षीओने' लागु पाडेली छे. 'टीका' अने 'भाषा'मां ते काम भोगने लागु पाडेली छे; काम भोगनी अस्थिरता बतावबानो उद्देश छे. मूळ पाठमां 'फंदति=स्थिरा न भवन्ति' छे.

नागोव बंधणं छित्ता अप्पणो वसहिंवए । एय पथ्थ महाराय उसुयारेत्तिमेसुय ॥ ४८ ॥ चइत्ता विउलं रज्जं कामभोगेय दुज्जए । निव्विसया निरामिसा निन्नेहानिपरिग्गहा ॥४९॥ सम्मं धम्मं वियाणित्ता चिच्चाकामगुणे वरे । तवपगिज्झ हख्खाय घोरं घोर परक्कमा ॥ ५० ॥ एवंते कम्मसो बुद्धा सव्वेधम्म परायणा । जम्ममच्चुभओ व्विग्गा दुख्खस्संत गवेसिणो ॥५१॥

"जेम हाथी बंधन ताडीने पोताना स्थानके जाय छे, तेम आपे पण आपना पथे (मोक्ष तरफ) पडवुं जोइए हे इषुकार महाराजा! आ परम हितकारक सत्य मे साधु मुखेथी सांभळ्युं छे." [४८]. आ उपरथी राजाराणीए पोतानुं विस्तीर्ण राज्य छोड्युं, तथा जे तजवा मोहिला छे एवा कामभोग तज्या, तेओ तृष्णा अने विषय रहित थया, तेमणे स्नेह तथा परिग्रह छोड्या, अने कामभोग तजीने सम्यक धर्म ग्रहण कर्यो अने पराक्रम वडे द्वादश विधिए घोर तप आदर्युं [४९–५०] * आ प्रमाणे जन्म मरणना भयथी उद्वेग पामेला अने दुःखनो अंत आणवाने उत्सुक बनेला एवा छए धर्म परायण जीव (ब्राह्मण, ब्राह्मणी, तेमना बे पुत्रो, राजा अने राणी) प्रति बोध पाम्या [५१]

---

* आ बन्ने गाथाओनुं भाषान्तर राणी, राजाने बोध रूपे कहेती होय एवी रीते प्रो. जेकोबीए आशयमां लीधेलुं छे. अत्रे टीकाकारो अने मूळपाठनी पद्धति प्रमाणे भाषान्तर करेलुं छे.

अध्ययन १५. साचो साधु+ (सभिक्षुक).

मोण चरिस्सामि समेचधम्म सहिएउज्जु कडेनियाण छिन्ने । सथव जहेज्जा अकामकामे अणायएसी परिव्वए जे स भिक्खू ॥१॥ राओवरयचरेज्जलाढे विरए वेय वियाय रक्खिए । पन्ने अभिभूय सव्वदसी जेकिम्हिविनमुछ्छिए स भिक्खू ॥२॥

मनथी मौन (मुनि धर्म) धारण करीने साधु धर्म पाळवाना इच्छावाळो बीजा साधुओना समा सरळ स्वभाव अने इच्छा रहित थइने विचरे, (संसारी) स्वजनोनो परिचय मवे नहि, अने कामाभिलाष रहित थइने अज्ञातपणे अनित्य विहार करे ते साचो साधु कहेवाय. [१]. राग रहित थइने विचरे, संयम मार्गने विषे दृढ रही विचरे, पापथी दूर रहे, सर्वदर्शी (सर्व प्राणीने आत्मवत् जोनार) थाय, दुर्गतिथी पोताना आत्मानु रक्षण करे, बुद्धिमान, शक्तिमान (परिसह जीतनार), अने सर्व वस्तुनो जाण थाय अने कोइ पण सचेत अचेत वस्तु उपर प्रीति करे नहि, ते साचो साधु कहेवाय [२].

+ दरेक गाथामा साचा साधुना धर्मो बताव्या होवाथी, आवा अध्ययनने तेज नाम आपवामा आव्यु छे दरेक गाथानी अंते पण सभिक्षु शब्द छे १ अजाण्या-संबंध विनाना गृहस्थीओने त्याथी आहारनी गवेषणा करी विहार कर्या करे एवो भावार्थ छे प्रो. जेकोबी 'Wander about is an unknown beggar' ए शब्दो वापरे छे, जेनो अर्थ 'अजाण्या भिक्षुक तरीके विहार कर्या करवो' एवो थाय छे २. मूळपाठमा लाढे शब्द छे संस्कृत लाट शब्द छे तेना बे अर्थ छे, देश अने डाह्यो पुरुष. गुजरातमा जगो जातोथी वसायेलो लाट नामनो देश हतो ज्यां श्री महावीर प्रभुए विहार करवानी हकीकत सूत्रोमाथी मळी शके छे. आवा परिसहवाळा देशोमा विचरवाथी कसोटी थाय छे जो लाट शब्दनो अर्थ देश लइए तो ते तरफ विचरवानो भावार्थ नीकळी शके छे. प्रो. जेकोबीए 'A model of rightousness' एवो अर्थ करेलो छे. मुळ भाषानो भावार्थ तथा टीकाकारनी टीका उपर आधार राखी शब्दार्थ नहि पण भावार्थ अने आशय उपरथी अने उपर मुजब शब्दो वापर्या छे.

अक्कोसवहविदितु धीरे मुणीचरे लाढे निच्चमाय गुत्ते । अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे जे कसिणं अहियासए स भिक्खू ॥३॥
पंतं सयणासणं भइत्ता सीउण्हं विविहं च दंसमसगं । अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे जे कसिणं अहियासए स भिक्खू ॥४॥
नो सक्कियमिच्छइ न पूयं नोवि य वंदणगं कुओ पसंसं । से संजए सुव्वए तवस्सी सहिए आयगवेसए स भिक्खू ॥५॥
जेण पुणो जहाइ जीवियं मोहं वा कसिणं नियच्छई । नरनारिं पजहे सया तवस्सी न य कोउहल्लं उवेइ स भिक्खू ॥६॥
छिन्नं सरं भोम मंतलिक्खं सुविणं लक्खणदंडवत्थुविज्जं । अंगवियारं सरस्स विजयं जो विज्जाहिं न जीवइ स भिक्खू ॥७॥

दूषण, ताडनादि सर्व सहन करे, स्थिर मनथी संयमने विषे दृढ रही विचरे, संसारनी चिन्तामां पडे नहि, (पण आत्माने गोपवे), शयनने तथा आसनना अनुकूल मानीने धैर्यथी ते त्यागे अने (आकुळ व्याकुळ थया विना) सघळुं सहे ते साचो साधु कहेवाय. [३]. सादां भोजन अने आसनथी संतोष माने, शीतोष्ण सहन करे, डांस मच्छरादिनो उपद्रव सहे, हर्ष शोच करे नहि अने (आकुळ व्याकुळ थया विना) सघळुं सहन करे ते साचो साधु कहेवाय. [४]. आदर सत्कार, पूजा, वंदन अने प्रशंसानी इच्छा करे नहि; संयम, व्रत अने तप करे. तथा आत्मानो गवेषक होय ते खरो साधु कहेवाय.[५]. पोतानुं संयम जीवित नष्ट थाय एवी वात पण न करे, मोहनी कदि इच्छा पण न करे, नर नारीनो संग छोडे, तप आदरे अने कदि कुतूहल करे नहि ते खरो साधु कहेवाय. [६]. नख, वस्त्र, दांत आदि छेदवानां लक्षण, भूमिकंप अने आकाशनी वातो, स्वप्न, दंड अने वास्तुविद्याना लक्षण, अंग स्फुरणना विचार, मृगादिना शब्दाभ्यास आदि विद्यानुं जाणपणुं दर्शावे नहि अने ते उपर पोतानी आजीविका चलावे नहि ते खरो साधु कहेवाय. [७]

१. Betray any curiosity. २ सामुद्रिक अने ज्योतिषना जोरा तथा बीजा भविष्य भाखवानी साधुओने मनाई छे.

मत मूल विविह विज्जचित्त वमण विरेयण धूमनेत्त सिणाण । आउरे सरणतिगिछियच त परिणायपरिव्वए स भिक्खू ॥८॥ खत्तिय गणउग्गरायपुत्ता माहण भोइय विविहाय सिप्पिणो । नोतेसि वयइसिलोग पूय त परिणाय परिव्वए स भिक्खू ॥ ९॥ गिहिणोजे पव्वइएण दिठ्ठा अपव्वइ एणवसंथुया हवेज्जा । तेसिइहलोइय फलठ्ठयाए जे संथव न करे इ स भिक्खू ॥ १० ॥ सयणा सणपाण भोयण विविह खाइमसाइम परेसि । अदए पडिसेहिए नियंठे जेतथ्थनपओ सई स भिक्खू ॥ ११ ॥

मत्र, जडी बुटी, विविध वैद्यक, वमन, विरेचन अने धूम्र प्रयोग, आंखनो अंजन, विलाप अने शान्त्वन, एटला वानां पोताने रोग थवाथी करे नहि अने अन्यने माटे करावे नहि ते खरो साधु कहेवाय [१] [८] क्षत्रिओ, [२] उग्रलोको अने राज पुत्रोनी, तेमज राजा,[२] भोगलोको अने प्रधानादि के कारीगरो कोइनी प्रशसा अथवा परवा करे नहि ते साचो साधु कहेवाय. [९] जे कोइ पुरुष दिक्षा लीधा पछी बीजा ग्रहस्थोना सम्पर्गमा आवया छता, अने तेमनी साथे साधु थया पहेलां सारो सबध होवा छतां, आ लोकना लाभ अर्थे तेमनो परिचय सेवे नहि ते खरो साधु कहेवाय. (१०). कोइ ग्रहस्थ पोतानी इच्छा पूर्वक शयनाशन [पाट, बाजोठादि], आहार पाणी अथवा विविध प्रकारनां स्वादिष्ट भोजन आपे नहि तो ते लेवानो निग्रथने प्रतिबध छे, एवे प्रसंगे जे निग्रंथ कोप न करे ते खरो साधु कहेवाय. (११).

---

[१] तेमां हिंसानो संभव होवाथी साधुने मना करी छे [२]. 'उग्र' अने 'भोग' बन्ने क्षत्रि कुळ हता. उग्र जातिना वडवाओ श्री ऋषभदेव भगवानना समयमां कोटवाळ हता अने भोग जातिना तेमना बाप दादाना राज्यमां माननंता होइ भोगवता हता.

उ.अ
१५.

वायं विविह समेच्चलोए सहिएखेयाणु गए कोवियप्पा । पन्ने अभिभूय सव्वदसी उवसतेअ विहेडए स, भिक्खू ॥१५॥
अभिप्पजीवीअ गिहेअमित्ते जिइदिए सव्वओविप्पमुक्के । अणुक्कसाइलहु अप्पभक्खी चिच्चागिह एगचरे स भिक्खू
त्तिबेमि ॥ १६ ॥

११३

॥ इति भिक्खू झयण पन्नरसम सम्मत्त ॥ १५ ॥

विविध प्रकारना धर्मवादने [१] जे जाणे छे, सप्त दश विधे दृढ सयम [२] पाळे छे, पोताना आत्माना उद्धारनु [३] चिंतवन करे छे, बुद्धिमान छे, जेणे सर्व परिसहने जीत्या छे, जे सर्वदर्शी छे, अने जे शान्त अने हिंसा रहित छे ते खरो साधु कहेवाय [४]. [१५].
जे चित्रादि विद्याथी पोतानी आजीविका करतो नथी, जेणे घरबार अने सगा वहालानो त्याग करेलो छे, जेणे इन्द्रिओने जीती छे, जे बाह्य अने अभ्यंतर गांठथी मूकाणो छे, जे रागद्वेष रहित अने अल्पाहारी छे अने जे घरबार त्यागीने एकलो विचरे छे ते खरो साधु कहेवाय. [१६].

॥ पदरमु अ यन सपूर्ण ॥

---

१. Religions disputations २ मुळ पाठमा 'खेदाणुगये' छे. 'खेदानुगतः=सयम स्तेन अनुगत.' खेदनो अर्थ अहि संयम तरीके लेवानो छे. ३. आवा खरा साधुओनी सख्या वधवामाज शासननी उन्नति छे. श्री सत्र ज्ञान वृद्धिना साधनो साधुओने करी आपता जशो तो अने त्यारेज आवा खरा साधुओनी सख्या वधती जशे ४. 'जे बीजा साधुओ साथे रहे छे'—Who lives together with fellow monks आटला शब्दो कोइ प्रतमा पदरमी गाथामा विशेष दोवानु मो. जेकोबी जणावे छे. पण ते पाछळथी उमेराया लागे छे.

अध्ययन १६. ब्रह्मचर्यनां दश समाधि स्थान[1].

सुयमेआउसतेण भगनया एवमक्खाय इहखलुथेरेहिं भगवतेहिंदसबभचेर समाहिठाणापन्नत्ता ॥ जेभिक्खू सोचा निसम्म सजम बहुले सवरबहुले समाहिबहुले गुत्तेगुत्तिंदिए गुत्तबभयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा ॥ कयरे खलुतेथेरेहिंभगवतेहिं दसबभचेरसमाहिठाणापन्नत्ता, जेभिक्खूसोचानिसम्मसजमबहुलेसवरबहुलेसमाहिबहुले गुत्तेगुत्तिंदिए गुत्तबभयारिसयाअप्पमत्तेविहरेज्जा, इमेखलुतेथेरेहिंभगवतेहिंदसबभचेरसमाहिठाणापन्नत्ता, जे भिक्खू सोचा-निसम्म सजमबहुले सवरबहुले समाहिबहुले गुत्तेगुत्तिंदिए गुत्तबंभयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा ॥

हे आयुष्मन (जंबु)! नीचेनुं व्याख्यान में (सुधर्मा ए) श्री महावीर भगवान पासेथी सांभळ्युं छे :– जिनशासनने विषे श्री स्थविर भगवाने ब्रह्मचर्यनां दश समाधिस्थान प्ररूप्यां छे, जेनुं श्रवण करवाथी अने समजवाथी साधु सयम अने संवरने विषे सुदृढ रही शके छे. पोतानु चित्त स्थिर राखी शके छे, त्रण गुप्तिए सुरक्षित रही शके छे, पांचे इन्द्रिओने काबुमां राखी शके छे, ब्रह्मचर्य पाळी शके छे अने सदासर्वदा अप्रमत्त[2] विचरी शके छे. ए सांभळीने शिष्य पूछे छे "हे पुज्य! श्री स्थविर भगवाने कहेलां ए दश समाधिस्थान कयां कयां छे के जे सांभळवाथी अने समजवाथी साधु सयम अने सवरने विषे सुदृढ रही शके छे वगेरे उपर प्रमाणे–

---

१. The ten conditions of perfect chastity २. प्रमाद रहित Never be remiss (in the attendance in their religious duties) पोतानां नित्य कर्तव्योमां प्रमाद न करतां साधु जीवन गाळवानो बोध छे.

तजहा विवित्ताई सयणासणाइ सेविज्जा सेनिग्गथेनोइथ्थिपसुपडग ससत्ताइ सयणासणाइंसेवित्ता हवइ सेनिग्गथे त कहमितिचेआयरियाह ॥ निग्गंथस्सखलु इथ्थि पसुपडग ससत्ताइ सयणा सणाइसेवमाणस्सबभयारिस्स बभचेरेसकावा कखावा वितिगिछ्रावा समुप्पज्जेज्जा, भेयवालभेज्जा उम्मायवा पाउणिज्जा दीहकालियंवारोगायक हविज्जा केवलिपन्नत्ताओ धम्माओभसिज्जा तम्हाखलुनो [१]इथ्थिपसुपडग ससत्ताइसयणासणाइ [१]सेवित्ता हवइ सेनिग्गथे ॥१॥ नोनिग्गथेइथ्थीण कहकहित्ता हवइसेनिग्गथेतकहमितिचे आयरियाह निग्गथस्स खलुइथ्थीण कहकहेमाणस्स बभयारिस्स बमचेरे सकावा कखावा वितिगिछ्रावा समुप्पज्जेज्जा, भेयवालभेज्जा उम्मायवापाउणेज्जा

१. केटलीक प्रतोमां आ पेहेलो 'निगथे' शब्दछे अने छेडे 'सेवेज्जा' शब्दथी वाक्य पुरु करेलछे.

उपर प्रमाणे थवाने माटे ब्रह्मचर्यना दश समाधिस्थान श्री स्थविर भगवाने नीचे प्रमाणे प्ररुप्या छेः— १. निग्रथे पोतानां शयनआसनादिने माटे गमे तेवां स्थाननो उपयोग करवो, पण स्त्री, पशु अने नपुसकथी व्याप्त होय एवा स्थाननो उपयोग करवो नहि. श्री आचार्ये तेम न करवानु कारण समजाव्यु छे के जो कोइ निग्रथ पोतानां शयनासनादिने माटे स्त्री, पशु अने नपुसकथी व्याप्त होय एवा स्थाननो उपयोग करे तो ते पोते ब्रह्मचारी होय छतां तेना ब्रह्मचर्यने माटे शका उपजे छे, अथवा तो तेने स्त्रीयादि साथे भोग भोगववानी इच्छा थाय छे, तेने सदेह उपजे छे, चारित्रनो भंग थाय छे, उन्माद उपजे छे, लांबा काळ सुधी दाघ ज्वरादिक रोग थाय छे, अथवा तो श्री केवलीना भाखेला धर्मथी ते भ्रष्ट थाय छे ; तेटला माटे निग्रथे स्त्री, पशु अने नपुसक जे स्थाने वसता होय तेवां स्थान पोतानां शयनासनादिने माटे सेववां नहि. २ निग्रंथे स्त्री[२] कथा–शृगारी वात चित करवी नहि, श्री आचार्य तेम न

१. Become slave to passion २. प्रो. जेकोबी "स्त्रीनी साथे वात करवी नहि" एवुं भाषान्तर करे छे पण ते असंभवीत छे, कारण गोचरी वीगेरे घणे प्रसंगे स्त्रीनी साथे वात चीत करवानो तेमने प्रसंग पड्या विना रहेतो नथी.

दीहकालियंवा रोगायंकं हवेज्जा केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा तम्हा खलु नो निग्गंथे इत्थीणं कहं कहेज्जा ॥ २ ॥
नो निग्गंथे इत्थीहिं सद्धिं सन्निसेज्जागए विहरेत्ता, हवइ से निग्गंथे तं कहमिति चे आयरियाह निग्गंथस्स खलु इत्थीहिं सद्धिं सन्निसेज्जागयस्स विहरमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा वितिगिच्छा वा समुप्पज्जेज्जा भेयं वा लभेज्जा उम्मायं वा पाउणिज्जा दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा तम्हा खलु नो निग्गंथे इत्थीहिं सद्धिं सन्निसेज्जागए विहरिज्जा ॥ ३ ॥ नो निग्गंथे इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता, निज्झाइत्ता भवइ से निग्गंथे ॥ तं कहमिति चे आयरियाह निग्गंथस्स खलु इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं मणोरमाइं, आलोएमाणस्स निज्झाएमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा वितिगिच्छा वा समुप्पज्जेज्जा भेयं वा लभेज्जा उम्मायं वा पाउणिज्जा ॥ दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा तम्हा खलु नो निग्गंथे इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता निज्झाइत्ता ॥ ४ ॥

१ केटलीक प्रतोमां ' आलोइत्ता निज्झाइ माणस्स ' छे, अने केटलीकमां ' आलोए निज्झाए माणस्स ' एम भेगु लीधेलु छे.

करवानुं कारण समजाव्यु छे के जो निग्रंथ स्त्री कथा करे तो ते पोते ब्रह्मचारी होय छता (उपर प्रमाणे)

३. निग्रंथे स्त्रीनी सगाथे एकज आसने बेसवु नहि.' श्री आचार्ये तेम न करवानु कारण समजाव्यु छे के जो निग्रंथ स्त्रीनी सगाथे एकज आसने बेसे तो (उपर प्रमाणे) ४. निग्रंथे स्त्रीना सौंदर्य तथा मनोहरता तरफ नजर करवी नहि, तेमज तेनु चिंतन करवु नहि. श्री आचार्ये (उपर प्रमाणे).

१. शिवसनी नर साद.

नोनिग्गन्थे इथ्थीण कुडतरासिवा,दूसतरसिवा, भित्तिअतरसिवा,कुइयंसद्दवा,रुइयसद्दवा,गीयसद्दवा,हासियसद्दवा,थणियसद्दवा, कदियसद्दवा,विलवियसद्दंवा,सुणित्ता हवइसेन्निग्गथे॥त कहमितिचे आयरियाह निग्गथस्सखलुइथ्थीणंकुडतरासिवा *दूसतरसिवा॥ भित्तित्तरसिवा कुइयसद्दवा रुइयसद्दवा गियसद्दवा हसियसद्दवा थणियसद्दवा कदियसद्दवा *विलवियसद्दवा सुणमाणस्स बंभयारिस्सबंभचेरे,सकावा कखावा वितिगिछावा समुप्पज्जेज्जा भेयवालभेज्जा ॥ उमायवा पाउणिज्जा-दीहकालियवा रोगायकहवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्जा, तम्हा खलु नोनिग्गथे इथ्थिण कुडतरासिवा, [1]दूसतरसिवा भित्तितरसिवा कुइयसद्दवा रुइयसद्दवा गीयसद्दवा हासियसद्दवा थणियसद्दवा कदियसद्दवा विलवियसद्दवा [1]सुणेमाणे विहरेज्जा ॥५॥ नोनिग्गथे इथ्थीण पुव्वरय पुव्वकीलिय अणुसरित्ता भवइसेनिग्गथेतकहमितिचेआयरियाह निग्गथस्स खलुइथ्थिण पुव्वरय पुव्वकीलिय अणुसरमाणस्सबंभयारिस्स बंभचेरेसंकावा कखावा वितिगिछावा समुप्पज्जेज्जा,भेयवालभेज्जा॥उमायवा पाउणिज्जा दिहकालियंवा रोगायंकहवेज्जा॥केवलीपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्जा. तम्हा खलुनोनिग्गथे इथ्थीणपुव्वरयपुव्वकीलियअणुसरेज्जा ॥ ६ ॥

* केटलीक मतोमां आ शब्दो फरीथी न मुकतां 'जाव विलवियसद्दवा' एम चलावी लीधुं छे १. केटलीक मतोमां आ शब्दो न मुकतां 'जाव सुणेमाणे विहरेज्जा' एम चलावी लीधुं छे.

५ निग्रंथे पडदान अथवा दिवालने आंतरे रहीने स्त्रीना कलह, (कोप), रुदन, गीत, हास्य, विलाप (आक्रन्द) आदि शब्द सांभळवा नहि (उपर प्रमाणे). ६. निग्रंथे पोताना ग्रहस्थाश्रममां पूर्वे स्त्री संगाथे जे भोग भोगव्या होय ते संभाळवा नहि ... .(उपर प्रमाणे).

१२७

उ.भ
१६.

११८

नोनिग्गंथे[1]पणीयंआहारं आहारित्ता हवइ सेनिग्गंथेतं कहमितिचे आयरियाह निग्गंथस्सखलु[2]पणीयंआहारं आहारेमाणस्स वभयारिस्स वभचेरे संकावाकखावा वितिगिछावा समुप्पज्जेज्जा ॥ भेयवालभेज्जा उम्मायंवापाउणिज्जा दीह कालियवा रोगायंकहवेज्जा, केवलि पन्नताओ धम्माओ भसेज्जातम्हा खलु नोनिग्गथे पणीयं आहारं आहारिज्जा ॥७॥ नोनिग्गंथे अइमायाए पाण भोयण आहारित्ता हवइ से निग्गंथे तं कहमिति चे ॥ आयरियाह निग्गंथस्स खलु अइमायाए पाण भोयणं आहारेमाणस्स वंभयारिस्स वंभचेरे सकावा कखावा विनिगिछावा समुप्पज्जेज्जा॥भेयवालभेज्जा उम्मायंवा पाउ-णेज्जा दिहकालियं वा रोगायकंहवेज्जा केवलीपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्जा तम्हा खलुनोनिग्गथे अइमायाए पाणभोयण भुज्जिज्जा॥८॥नो निग्गंथे विभू साणूवाई हवई सेनिग्गंथे॥ तं कहमितिचे आयरियाहनिग्गंथस्स खलु विभू सावत्तिए विभूसिय सरीरे इत्थीजणस्स अहिलसणिज्जेगवईतओणं तस्स इथियजणेण॥आहिलसणज्जमाणस्स वंभयारिस्स वभचेरे संकावा कंखावा वितिगिछावा समुप्पजेज्जा भेयंवालभेज्जा उम्मायं वा पाउणेज्जा दिह कालियं वा रोगायक हवेज्जा केवलिप-न्नताओ धम्माओ भसेज्जा, तम्हा खलुनोनिग्गथे विभूसाणुवाइसिया ॥ ९ ॥

---

१. केटलीक मतोमां 'निग्गथे' शब्द नथी. २. केटलीक मतोमां अहिं 'अतिमायाए' शब्द वधारे छे.

---

७. निर्ग्रंथे घीथी लचपचतो आहार (विगयवाळो माल मलीदो) खावो नहि . (उपर प्रमाणे). ८. निग्रंथे अति खानपान सेववुं नहि (उपर प्रमाणे) ९. निग्रंथे पोताना शरीरने (सुशोभित वस्त्रालंकारथी) विभुषित करवुं नहि. श्री आचार्ये तेम न करवानु समजाव्युं छे के जो साधु पोताना शरीरने अलंकारोथी विभुषित करे तो स्त्री जातिने तेनामां (तेने भोगववानी) अभिलाषा उत्पन्न थाय अने तेम थवाथी . (उपर प्रमाणे).

नोनिग्गंथे सदरूवरसगंधफासाणु वाइहवइ सेनिग्गंथे तं कहमितिचेआयरियाह निग्गंथस्स खलुसदरूव रसगंधफासाणु वाइयस्सबंभयारिस्स बभचेरे सक.वा कंखावा वितिगिछा वा समुप्पज्जेज्जा॥भेयंवालभेज्जा उम्मायंवा पाउणिज्जा दीहकालियं वा रोगायकं वाकहंवेज्जा ॥ केवलि पन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा ॥ तम्हा खलु नोनिग्गंथे सदरूवरसगंधफासाणु वाइ, सेनिग्गंथेहवेज्जा दसमे बंभचेर समाहिठाणे भवइ ॥ १० ॥

भवइ इथ्थसिलोगो तंजहा जविवित्तमणाइन्नं रहियं इथ्थीजणेणय बंभचेररसरख्खठ्ठा आलयंतुनिसेवए ॥ १ ॥ मण पल्हायजणणीं कामराग विवढ्ढणी । बंभचेर रओ भिल्खूथी कहंतु विवज्जए ॥ २ ॥ संमचं संथवंथीहिं संकहंच अभिख्खणं । बंभचेर रओभिख्खू निच्चसो परिवज्जए॥३॥ अंगपच्चग संठाण चारुल्लाविंयपेहीयं। बंभचेर रओथीणं चख्खुगिझ विवज्जए ॥ ४ ॥

*१०. निग्रंथे शब्द, रुप, रस, गंध अने स्पर्शनी दरकार करवी नहि . . (उपर प्रमाणे).

आ प्रमाणे ब्रह्मचर्यनां दश समाधिस्थान वर्णव्यां छे, हवे ए वर्णन श्लोक [पद्य]मां करवामां आवे छेः—

साधुए पोताना ब्रह्मचर्यना रक्षणार्थे स्त्री रहित एकांतवासमां [उपाश्रयमां] रहेवुं. [१]. शीलव्रत पाळनार साधुए स्त्री कथा—स्त्री संबंधी वात करवी नहि, कारण के ते मनने उश्केरनारी अने काम तथा रागने वधारनारी छे. [२]. शीलव्रत पाळनार साधुए स्त्रीनो परिचय सेववो नहि अने तेनी साथे वारंवार वातचित करवी नहि [३]. ब्रह्मचर्यने विषे दृढ साधुए स्त्रीनां अंग प्रत्यंग (कुच कटाक्षादि अवयवो) निहाळीने जोवां नहि, अने स्त्रीनां मनोहर मीठां वचन अने आंखोना अणसारा तरफ नजर करवी नहि. [४].

* आ अध्ययननो आगलो भाग गद्यमां छे; त्यार पछीनो भाग पद्यमां छे. बन्नेनुं तात्पर्य एक सरखुं छे.

कुइयंरुइयंगीयं हसियंथणियंकंदियं । बंभचेर रओथीणं सोयगिझं विवज्जए ॥ ५ ॥ हासं किड्डरइंदप्पं सहसाभुत्ता-सिणाणिय । बंभचेर रओथीण नाणुचिंते कयाइवि ॥६॥ पणीयभत्तपाणतु खिप्पमय विवड्डणं । बंभचेर रओभिक्खू निच्चसो परिवज्जए ॥ ७ ॥ धम्मलद्धं मियकाले जत्तत्थं पणिहाणव । नाइमत्ततुभुंजेज्जा बंभचेर रओ सया ॥ ८ ॥ विभूसं परिवज्जेज्जा सरीर परिमंडण । बंभचेर रओ भिक्खू सिंगारत्थं न धारए ॥ ९ ॥ सद्दे रूवेय गंधेय रसेफासे तहेवय । पंचविहे कामगुणे निच्चसो परिवज्जए ॥ १० ॥

ब्रह्मचर्यमां सुदृढ साधुए स्त्रीनां कलह, [कोप], रुदन, गीत, हास्य, विलाप [आक्रन्द], आदि शब्द साभळवा नहि [५]. विशुद्ध ब्रह्मचर्यना पाळनार साधुए स्त्री सगाथे पूर्वे [गृहवासमां] करेला हास्य, क्रीडा, मैथुन वगेरे संभाळवा नहि, अने स्त्रीनुं मान मूकाववाने तथा तेने वश उपजाववाने पोते केवी केवी युक्तिओ रची हती तेनुं चिंतवन करवुं नहि [६]. शीलव्रत पाळनार साधुए मदने तत्काळ उत्पन्न करे एवा स्वादिष्ट खानपाननो त्याग करवो [७] ब्रह्मचर्यने विषे सदा रक्त साधुए गोचरी वेळाए धर्मना नियम अनुसार मेळवेलो आहार, संयमना निर्वाह अर्थज [बळ, वीर्यनी वृद्धि अर्थ नहि) जोइए तेटला प्रमाणमां योग्य काळे खावो; जिह्वानी स्थिरता खातरीने तेणे अति आहार करवो नहि [८] ब्रह्मचारी साधुए शरीरनी शोभानो (नख, केश, मूछ वगेरे) त्याग करवो. * शृंगार अर्थे तेणे पोताना शरीर उपर आभूषण धारण करवा नहि [९]. शीलव्रत पाळनार साधुए पांच प्रकारना काम गुण एटले शब्द, रूप, गंध, रस अने स्पर्शनो सदा परित्याग करवो. (१०)

---

* प्रो. जेकोबी कहे छे के ' शृंगारी लोकोनी माफक '

उ.अ
१६.

१२१

आलउथी जणाइन्नोथी कहाय मणोरमा । सथवो चेवनारीणं तासिइंदिय दरिमण ॥ ११ ॥ कुइयं रुइयगीय हासिय भुत्ता सियाणिय । पणीयभत्त पाणच अइमाय पाणभोयण ॥१२॥ गत्तभूसणमिठ्ठ च कामभोगाय दुज्जया । नरस्सत्त गवेसिरस विस तालउडजहा ॥१३॥ दुज्जए कामभोगेय निच्चसो परिवज्जए । सकुठाणाणि सव्वाणि वज्जेज्जा पणिहाणव ॥१४॥ धम्मारामे चरेभिख्खू धिइमधम्मसारही । धम्मारामे रएदंते बम्भचेर समाहिए ॥ १५ ॥ देवदाणव गंधवा जख्खरख्खस किन्नरा । बम्भयारिं नम स्मति दुक्करजे करातित ॥१६॥ एसधम्मे धुवेनियए सासए जिणदेसिए सिद्धासिझ्झतिचाणेण सिझिरसतितहावरे त्तिबेमि ॥१७॥ ॥ इति बम्भचेर समाहि झयण सोलसम सम्मत्त ॥१६॥

स्त्रीओनी ज्या वहु आवजा होय तेनु स्थान, स्त्रीओनी मनोहर वाणी, स्त्रीनो परिचय अने तेना इन्द्रिय दर्शन (कुच–कटाक्षादि) स्त्रीनां कोप, रुदन, गीत, हास्य वगेरे, अने तेनी साथे काम भोग, वळी स्वादिष्ट खानपान अने मात्राथी अधिक आहार पाणी, अने अलंकार तथा आभुषण, काम भोगनी आ सर्व वस्तुओ जे त्यागवी दुर्लभ छे, ते आत्माना गवेषीने *तालपुट विष समानछे. [११–१२–१३]. काम भोगनी ए सर्व वस्तुओ जे दुर्जय (जीतवी मुश्केल) छे तेनो तेणे हमेशने माटे त्याग करवो जोइए; अने एकाग्र चित्तथी, पोताना ब्रह्मचर्य उपर जेथी शंका उपजे ते सर्व तेणे वर्जवां जोइए. (१४) खरो साधु धर्म रुपी उपवनने विषे धर्म सारथी रुपे दृढताथी विचरेछे, अने धर्माराम, सन्तोष अने संयममां रहीने शुद्ध ब्रह्मचारी साधुना धर्म पाळेछे. [१५] देव, दानव, गंधर्व, यक्ष, राक्षस अने किन्नर ए सर्वे ब्रह्मचारी साधु जे पोताना दुष्कर धर्म पाळेछे तेने नमस्कार करेछे. (१६). आ नित्य, शाश्वतो अने त्रिकाळे फळ दायक धर्म श्री तीर्थंकर देवे भाख्योछे, पूर्वे अनेक जीव ए धर्म [ब्रह्मचर्य] पाळवाथी सिद्धिने पाम्या छे अने हवे पछी पण पामशे. [१७] ॥ सोळमु अध्ययन संपूर्ण. ॥

* तालपुट विष—ताळवु फाडी नाखे एवु झेर.

अध्ययन १७. पाप श्रमण. (पापिष्ठ साधु).

जेकेइउपव्वइए नियंठे धम्मं सुणित्ता विणओववन्ने । सुदुल्लहं लहिओ बोहिलाभं विहरेज्ज पच्छाय जहासुहंतु ॥१॥ सेज्जादढा पाउरणम्मिअत्थि उप्पज्जई भोत्तु तहेवपाउं । जाणामिजंवट्टइ आउसोत्ति किंनामकाहामिसुएणभंते ॥ २ ॥ जेकेई पव्वइए निद्दासिलेपगामसो भोच्चा ! पिच्चासुहंसुवइ पावसमणेत्ति वुच्चई ॥ ३ ॥ आयरिय उवज्झाएहिं सुयं विणयंच गाहिय । तेचेवखिंसई बाले पाव समणेत्ति वुच्चई ॥ ४ ॥

कोइ निर्ग्रंथे शिक्षा लीधी होय, धर्मनु श्रवण कर्यु होय, विनय धर्म अंगीकार करीने ते पाळतो होय, अने बोधि-लाभ [सम्यक्त्व लाभ] जे प्राप्त थवो दुर्लभ छे ते पाम्यो होय अने पछीथी ते यथेच्छ वर्ते, (१) पछीथी ते एम कहे के 'हे गुरु' मारे सारी शय्या छे, [भयवाळ्याद, ताप अने वर्षादथी मारु रक्षण करवाने मजबूत उपाश्रय छे], शरीर ढांकवाने मारा वस्त्रो छे, मने सारा खानपान मळे छे. जीवादि वस्तुओ केम वर्ते छे ते सर्व हु जाणु छु, तो पछी हे आयुष्मन्' सिद्धांत भणीने मारे शु काम छे? [२]. जे साधु दिक्षा लइने सदा निद्रामां ग्रस्त रहे अने मरजी मुजब खुब खाइ पीइने सुखे सूइ रहे ते पाप श्रमण [दुष्ट साधु] कहेवाय.१[३] पोताना आचार्य अने उपाध्याय पासे सिद्धांत भणीने तथा विनय शीखीने पछीथी जे मूर्ख तेमने निंदे ते पाप श्रमण कहेवाय [४].

---

१. दरेक समुदायना पुज्य श्री अने आचार्य श्रीओए आवा कुटेवावाळा साधुओपर पुरतो अंकुश राखवो, तेमने अभ्यासमां मोकवा जोइए जेथी पोताने अने पारकाने लाभ करी शके.

आयरिय उवज्झायाण सम्मनो पडितप्पई । अप्पडिपूयएथद्धे पावसमणेत्ति वुच्चई ॥ ५ ॥ समद्द माणेपाणाणि बीयाणि हरियाणिय । असजएसजयमन्नमाणे पावसमणेत्ति वुच्चई ॥ ६ ॥ सथार फलगपीढ निसिज्ज पायकबल । अप्पमज्जियमारुहई पावसमणेत्ति वुच्चई ॥ ७ ॥ दवदवस्स चरई पमत्तेय अभिक्खण । उल्लघणेयचडेय पावसमणेत्ति वुच्चई ॥८॥ पडिलेहेइ पमत्ते अवउज्झइ पायकबल । पडिलेहणा अणाउत्ते पावसमणेत्ति वुच्चई ॥९॥ पडिलेहेइ पमत्ते सेकिंचिहु निसामिया । गुरु परिभवेइ' निच्च पावसमणेत्ति वुच्चई ॥१०॥

१ केटलीक प्रतोमां 'परिभावइ' परिभासए' एम जुदा जुदा शब्दो छे

पोताना आचार्य, उपाध्यायनी करवी जोइए तेम सम्यक प्रकारे सुश्रुषा न करे (प्रीति न मेळवे), अने अहकारने लीधे गुरुथी विमुख रहे, (अथवा-पोताना उपर उपकार करनार तरफ प्रत्युपकार न करे), ते पाप श्रमण कहेवाय [५]. जे साधु प्राणीओने, बीजने (सचेत धान्यादिने) अने फळ, पुष्पादिने पीडा उपजावे, अने पोते आत्म सयममा दृढ न होय छता पोताने दृढ माने ते पाप श्रमण कहेवाय. [६]. जे साधु पाट, पथारी, बाजोठ, आसन अथवा रजोहरणादि १ वस्तुओ सारी पेठे पुज्या (जीवनी जतना कर्या) सिवाय वापरे ते पाप श्रमण कहेवाय. [७]. जे साधु भिक्षादि अर्थे उतावळो उतावळो अने प्रमाद सहित चाले, अने विनय रहित तथा क्रोध, उन्माद सहित विचरे ते पाप श्रमण कहेवाय. [८]. जे साधु वस्त्र, पात्रादिक वस्तुओनु पडिलेहण करवामां आळस करे, रजोहरण, कांबळ १ इत्यादि गमे त्या फेकी दे, अने सावधान मनथी पडिलेहण करे नहि ते पाप श्रमण कहेवाय [९].जे साधु, काइ कथा वार्ता थती होय तेमां ध्यान खेंचावाथी पडिलेहणमां प्रमाद करे, अने पोताना गुरुने सदा सताप उपजावे ते पाप श्रमण कहेवाय [१०]

१. मुळ पाठमां 'पाय कबल' शब्द छे टीकाकार तेनो अर्थ 'पाद पुन्छन' एटले पग पुजवानु वस्त्र एम करे छे, एक टीकाकार 'पाय कबल' शब्दने बदले ते जगाए बताबी'भातराने ढाकवानु वस्त्र'एवो अर्थ करे छे.

अध्ययन १८. संजय [राजर्षि संभृत].

कंपिल्लनयरे राया उदिन्न बलवाहणे । नामेण संजएनाम मिगव्वं उवनिग्गए ॥ १ ॥ हयाणीएगयाणीए रहाणीए तहेवय । पायत्ताणीए महया सव्वओ परिवारिए ॥ २ ॥ मिए छुभित्ता हयगओ कंपिल्लुज्जाणकेसरे । भीएसंतेमिए तत्थ वहेइरसमुच्छिए ॥३॥ अह केसर मि उज्जाणे अणगारे तवोधणे । सज्झायज्झाणसंजुत्ते धम्मज्झाणंझियायई ॥ ४ ॥ अप्फोव मंडवंमिझायईक्खवियासवे । तस्सागएमिए पास वहेइसे नराहिवे ॥५॥

अध्ययन १८

काम्पिल्य नगरमां चतुरंग सेना अने युद्धवाहननो धणी संजय नामे राजा राज्य करतो हतो. एक दिवस ते मृगया रमवाने नीकल्यो. [१]. हय, हाथी, रथ अने पायदळना सघळो परिवार तेना सगमा हतो (२) काम्पिल्य नगरनी पडोशना केशरीनामे उद्यानमां ते अश्वारूढ थईने मृगोने क्षोभ उपजावतो हतो, अने मृगयारसना मूर्छित थईने त्रास पामेला मृगोने मारतो हतो. (३) ए केशरी उद्यानमां एक तपोधन अणगार (साधु) स्वाध्याय अने धर्म- ध्यानमां लीन थईने बेठो हतो. (४). जेणे सर्व आश्रव दूर पाड्या एवा मुनि लतामंडपमां धर्म ध्यानमां बेठा छे, त्यां नजीकमां मृग न्हासी आव्यो, पण राजाए तेने मारी नाख्यो. [५].

१. War Chariots २ अश्व ३. Annihilating sinful inclinations ४. नागरवेल, द्राक्ष वगेरेना वेला झाडोथी बनेलो मांडवा जेवो.

अह आसगओ राया खिप्प मागम्मसो तहिं । हए मिएओपासित्ता अणगारं तथ्थपासई ॥६॥ अहराया तथ्थसंभतो अणगारो मणाहओ मएउमदपुन्नेण रसगिद्धेणघेतुणा । ७॥ आस विसज्जइत्ताण अणगारस्स सोनित्रो । विणएण वंदए पाए भगव इथ्यमेरामे ॥८॥ अहमोणेणसोभगव अणगारेझाणमासिए । रायाण नपडिमतेइ तओराया भयद्दुओ ॥९॥ सजओ अहमस्सीति भयव वाहराहिमे । कुध्धेतेएण अणगारे डहेज्ज नरकोडीओ ॥१०॥ अभओ पथ्थिवा तुझ अभयदाया भवाहिय । अणिच्चेजीवलोगमि किंहिसाए पसज्जासी ॥ ११ ॥

अश्वारूढ थयेलो राजा मंडप समीपे उतावळो उतावळो आवीने जूए छे तो त्यां मुएलो मृग तथा मुनिश्री तेनी नजरे पड्या. (६). ए जोइने राजा गभराटमां पडी गयो अने विचारवा लाग्यो के 'आ मुनिराजनो में घात करी नाख्यो होत ! हुं केवो मंदभागी अने घातकी छुं के मृगीया [शिकारमां] मदांध' बनी गयो छुं. !' [७] घोडेथी उतरीने राजा ते अणगार पासे आव्यो अने विनय पूर्वक तेमना पगने वंदन करीने कहेवा लाग्यो के "हे भगवान ! मारो अपराध क्षमा करो." (८). ते साधु मुनिराज धर्म-ध्यानमां मौन धारण करीने बेठा हता, तेथी तेमणे राजाने उत्तर आप्यो नहि, ते जोइने राजा भय-भ्रान्त थइ गयो [९]. राजा बोल्यो "हे भगवान ! हुं संजय छुं मारी साथे आप बोलो अणगार पोताना कोपाग्निथी करोडो मनुष्यने बाळीने भस्म करी शके छे." [१०]. ए सांभळीने मुनि बोल्या, "हे राजा ! अभय रहे तु पण अन्यने अभयदान देता शीख ! आ अनित्य जीव लोकमां तुं हिंसामां आसक्त शामाटे रहे छे ? [११].

---

१. Mad for the sport रसगृद्धी.

जयासव्वं परिच्चज्ज गतव्व मवसस्सते । अणिच्चेजीवलोगंमि किंरज्जंमि पसज्जसी ॥१२॥ जीवियंचेवरूवंच विज्जु-संपायचंचलं । जत्थत मुज्झसीराय पेच्चत्थं नावबुज्झसी ॥१३॥ दाराणिय सूयाचेव मित्ताय तह बंधवा । जीवंत मणु जीवंति मयनाणु वयंतिय ॥१४॥ नीहरंति मयपुत्ता पियरं परमदुक्खिया । पियरोवि तहा पुत्ते बंधुराय तवंचरे॥१५॥ तओतेणज्जिएदव्वे दारेय परिरक्खिए । कीलंतन्ने नराराय हट्ठतुट्ठ मलंकिया ॥ १६ ॥ तेणा विज कयकम्म सुहंवा जइवादुहं । कम्मुणातेण संजुत्तो गच्छइओ परभवं ॥१७॥

"हे राजन ! आ अनित्य जेवा लोकमांथी सर्व त्यागीने एक दिवस अवश्य चालवा जवुं छे, तो पछी राज्य मदमां आसक्त शामाटे रहेछे ? [१२]. "हे राजा ! आयुष्य अने रूप जेमां तुं मोह पामी रह्योछे ते वीजळीना चमकारा जेवा चपळछे, परलोकना लाभ अर्थे तारे शुं करवुं जोइये ते तुं समजतो नथी (१३). "स्त्री, पुत्र, मित्र अने सगासंबंधी ए सर्वे माणस जीवतो होय त्यां सुधी सेवा करेछे, पण ते मरी जाय त्यारे तेनी साथे कोइ जतुं नथी. [१४]. "पिता मरण पामे त्यारे पुत्रो परम दुःख सहित तेना शवने दूर करेछे, अने तेवीज रीते बापाए पोताना पुत्रो अने भाइभाडुना शवने वेगळां करेछे; माटे हे राजन ! तप कर. (१५). "हे राजन ! मरी गयेला माणसे संग्रह करेलुं द्रव्य अने सुरक्षित राखेली स्त्रीओने अन्य पुरुषो हर्ष अने आनंदथी भोगवेछे, अने तेनां घरेणांगांठां पहेरीने मोज माणेछे (१६) "अने मरनार माणसे जे शुभाशुभ कर्म कर्यां होय ते साथे लइने तेनो जीव परभवने विषे जायछे." [१७].

---

¹ मरणनी अस्थिरता दृढ करवा आ दृष्टांत नातरीया वर्गनुं दाखलु छे. अथवा केटलीक स्त्रीओ अनीतिने रस्ते चडेछे ए समजवावालो पण भावार्थ छे.

सोऊण तस्ससोधम्म अणगारस्स अतिए ।, महया सवेग निव्वेय समावन्नो नराहिवो ॥ १८ ॥ सजओ चईओरज्जं निख्खतो ।जिणसासणे । गद्दमालिस्स भगवओ अणगारस्स अतिए ॥१९॥ चिचारठ्ठपव्वइए खत्तिए परिभासई । जहाते दीसईरूवं पसन्नते तहामणो ॥२०॥ किंनामे किंगोत्ते कस्सठ्ठाएवमाहणे । कहपडिय रसीबुध्धे कह विणीएत्ति वुच्चई ॥२१॥ सजओ नामनामेण तहा गोत्तेण गोयमो । गद्दभाली ममायरिया विज्जा चारण पारगा ॥ २२ ॥ किरियं अकिरियं विणय अन्नाणच्च महामुणी । एएहिं चउहिठाणेहिं मेयन्ने किंपभासइ ॥ २३ ॥

त्यार पछी राजाए ते अणगार पासेथी धर्मनु श्रवण कर्यु अने तेथी तेने मोक्षनी तिव्र इच्छा उत्पन्न थइ अने ससार उपर वैराग्य उपज्यो. (१८) सजय राजाए पोतानु राज्य तजी दीधु अने गर्दभालि अणगारनी समक्ष जिनशासन अनुसार चारित्र धारण कर्यु. [१०]. कोइ एक क्षत्रि जेणे पोतानुं राज्यपाट तजीने प्रव्रज्या ग्रहण करी हती तेणे तेने (सजय राजर्षिने) पुछ्यु, आपनी बाह्याकृति विकार रहित दीसे छे ते उपरथी धारी शकाय छे के आपनु मन पण विकार रहित होवु जोइये. [२०]. " आपनु नाम शु ? आपनु गोत्र कयु ? आपने साधु शा माटे थवुं पड्यु ? आचार्यादिकनी सेवा शी रीते करोछो ? अने आप विनीत [साधु] शी रीते कहेवाणा " ? (२१). ए साभळीने सजय राजर्षि बोल्या, " सजय मारु नामछे, गौतम मारु गोत्रछे, गर्दभाल्लि मारा आचार्यछे अने तेओ विद्या-चारित्रमा पारगत छे. " (२२) " हे महामुनि ! तत्वथी अज्ञान मनुष्यो नीचेना चार स्थानक [बाबत]ना सबधमा मिथ्या भाषण करेछे:- १.[१]क्रियावाद, २ [२]अक्रियावाद, ३ [३]विनयवाद अने ४.[४]अज्ञानवाद "(२३).

(१) क्रियावादी-आत्मानु अस्तित्व माननारा (२) अक्रियावादी-आत्मानु नास्तित्व माननारा. (३) विनयवादी-भक्ति मार्ग अथवा मूर्त्ति पुजाने माननारा. (४) अज्ञानवादी-मात्र तपनेज प्राधान्य आपनारा, ज्ञान-मुक्तिने माटे उपयोगी नथी एम माननारा. श्री सूत्र कृताग सूत्रना प्रथम श्रुत स्कधना बारमा अध्ययननी प्रथम गाथामां पण आ चार बाबतनु विवेचन छे.

इइपाउकरे बुद्धेनायए परिनिव्वुए । विज्जाचरण संपन्ने सच्चेसच्च परक्कमे॥२४॥ पडति नरएघोरे जेनरा पावकारिणो। दिव्वन गइं गच्छंति चरित्ता धम्ममारियं ॥ २५ ॥ माया वुइय मेयतु मुसा भासा निरत्थिया । सजममाणोवि अहं वसामि इरियामिय ॥ २६ ॥ सव्वेते वेइया मज्झ मिच्छदिट्ठी अणारिया । विज्जमाणे परेल्लोए सम्म जाणामि अप्पय ॥ २७ ॥ अह मासी महापाणे जुइम वरिस सओवमे । जा सा पाली महापाली दिव्वा वरिस सओवमे ॥ २८ ॥

"तत्त्वना जाण, महाबुद्धिमान, मोक्षने पामेला, विद्या चरण संपन्न, सत्यवचन वादी अने सत्य पराक्रमी श्री महावीर भगवाने आ प्रमाणे भाख्यु छे:—[२४]. "जे मनुष्यो पाप करे छे ते घोर नरकमा पडे छे, पण जेओ पवित्र धर्म मार्गने विषे विचरे छे तेओ उत्तम दिव्य गतिने पामे छे. [२५]. "क्रिया, अक्रिया, विनय अने अज्ञान वादीओना ए कपट-वचन असत्य अने निरर्थक छे; तेटला माटे तेवाओनी असत्य प्ररूपणाथी निवर्तीने हु संयम मार्ग वर्तु छु [२६]. "ए सर्ववाद मिथ्या छे ए हुं जाणु छु, परलोक (पुनर्जन्म) विषमा पण हुं जाणु छु अने मारा आत्माने हुं ओळखु छु. [२७). "पांचमा ब्रह्मलोकने विषे महाप्राण विमाने हुं महा द्युतिवान (तेजस्वी) देवता हतो, अने आ लोकने वर्षनो मनुष्य जेने कहेवाय छे तेवी उच्चासस्थाने हुं प्राप्त थयो हतो. पण देवता संबंधीना वर्ष सो पाली अने महापाली जेटला बहुज लांबा होय छे. [२८].

१. Conversant with the sacred lore and good conduct २ पल्योपम-चार गाउ लांबा पहोळा कुवामा वाळना बारीक टुकडाओ भरी, अमुक मुदते एक एक टुकडो काढवाना अति लांबा वखतने पल्योपम कहेवामां आवे छे. अर्थात असंख्याता वर्ष आपणे कहीशु तो चाले. संस्कृतमा पाली शब्दनो अर्थ 'हद-सीमा' थइ शके छे. ३. सागरोपम—दश कोडा कोडी पल्योपमे एक सागरोपम थाय जैन सूत्रोमा कहेलु काळनु कोष्टक जाणवा जेवु छे. आ सूत्रना ७मा अध्ययनमा 'पूर्व' ने लगतु कोष्टक आपेल छे अहि एक बीजु कोष्टक आपीशु. अति सूक्ष्म काळने एक समय कहे छे. असंख्याता समये एक आवलिका थाय. १६७७७२१६ आवलिकानु एक मुहूर्त. त्रीस मुहूर्तनो एक दिवस-अहोरात्रि ७०५६०००००००००० वर्षे एक पूर्व थाय. एवी असंख्याता पूर्वे एक पल्योपम थाय. दश कोडा कोडी पल्योपमे एक सागरोपम दश कोडा कोडी सागरोपमे एक अवसर्पिणी अने उत्सर्पिणी थाय. ए अवसर्पिणी उत्सर्पिणी मळी एक काळ चक्र थाय. अनंता काळ चक्रे एक पुद्गल परावर्त थाय. आ काळनु=

३.अ
१८.
१३१

सेचुए बभलोयाओ मणुस्स भव मागओ। अप्पणोय परेसिंच आउ जाणे जहा तहा॥ २९॥नाणारुइच छदच परिवज्जेज्ज सजए । अणथ्था जेय सव्वथ्था इइविज्जा मणुसचरे ॥ ३० ॥ पडिक्कमामि पसिणाण परमतेहि वा पुणो । अहो उट्ठिए अहोराय इइ विज्जा तव चरे ॥ ३१ ॥ जच मे पुच्छसी काले सम्म सुद्धेण चेयसा । ताइ पाओ करे बुद्धे त नाणं जिणसासणे ॥ ३२ ॥ किरियच रोयए धीरे अकिरिय परिवज्जाए । दिठ्ठीए दिठ्ठी सपन्ने धम्म चरेसुदुच्चर ॥३३॥ एय पुन्न पय सोच्चा अथ्थ धम्मो वसोहिय । भरहोवि भारह वास चिच्चा कामाइ पव्वइए ॥३४॥

" ब्रह्मलोकथी चवीने हु मनुष्य भवमा आव्यो. मारु तेमज अन्य मनुष्योनु आयुष्य केटलु छे ते हु बराबर जाणुछु. [२९]. "साधुए क्रियावादि (परतीर्थी) नां नाना प्रकारना मतनो परित्याग करवो जोइए अने स्वेच्छा तथा हिंसादि अनर्थना मूळ रूप कृत्योनो त्याग करवो जोइए. आ ज्ञान अंगीकार करीने साधुए सयम मार्ग ते प्रमाणे विचरवुं. [३०]. "ग्रहस्थोना शुभाशुभ (व्हेमी) प्रश्नना उत्तर आपवाथी अने मत्रादिथी हु निवर्त्यो छु (पराङमुख रहुछु) अने रात्रि दिवस धर्ममा सावधान रहीने तपश्चर्या करु छुं. [३१]. "अने जे (आयुष्यना ज्ञान) विषे तमे हमणा मने शुद्ध मनथी पुछ्युं छे तेनु ज्ञान श्री तीर्थकरे (बुद्धे) प्रकट करेलुं छे, अने ते ज्ञान जीन शासनने विषेज रहेलुछे [३२] "धीर्या पुरुष आत्मान। अस्तित्वने मानछे अने आत्माना अविद्यमानपणाना मिथ्यात्वने मानतो नथी. सम्यकदर्शन सहित साधु दुष्कर चारित्र धर्म पाळे छे [३३]. "परमपवित्र (दूषण रहित) जिनमार्गना सिद्धान्त जे सत्य अने विशुद्धताथी सुशोभितछे तेनु श्रवण करीने भरत [पहेला] चक्रवर्त्ती ए भारत वर्षनो अने सकळ काम भोगनो त्याग करीने दीक्षा ग्रहण करी हती (३४).

=अरजो वर्षथी पण माप थइ शकतु नथी आ विषय विशेष पारिभाषिक छे. माटे गुरु गमथी अथवा लोक प्रकाश, प्रथम सर्ग, चतुर्थ कर्म ग्रन्थ वीगेरे पुस्तकोथी वाकेफ थवु.

* अर्थात्–पंडित पुरुष ज्ञान सहित क्रियानो स्वीकार करेछे अने अज्ञान क्रियानो परित्याग करेछे; जिनमत आत्माना अस्तित्वनो अस्विकार करतो नथी पण आत्माना अविकार्य लक्षणनो अस्विकार करेछे. १. प्रथम तीर्थकर श्रीरिषभदेव भगवानना ते पुत्र हता अने अयोध्यामां रहेता हता. चक्रवर्ती–Universal monarch

सगरोवि सागरं तं भरह वासं नराहिवो । इस्सरियं केवलं हिच्चा दयाए परिनिव्वुओ॥३५॥चइत्ता भारहं वासं चक्कवट्टी महिड्ढिओ । पव्वज्जमब्भुवगओ मघवनाम महायसो ॥ ३६ ॥ सणंकुमारो मणुस्सिंदो चक्कवट्टी महिड्ढिओ । पुत्तं रज्जे ठवेऊण सोवि राया तवं चरे ॥ ३७ ॥ चइत्ता भारहं वासं चक्कवट्टी महिड्ढिओ । संतीसंती करेलोए पत्तो गइ मणुत्तरं ॥३८॥ इक्खागरायवसहो कुंथूनाम नराहिवो । विक्खाय कित्तिभयवं पत्तोगइ मणुत्तरं ॥३९॥

[1]सगर नामे बीजा चक्रवर्तीए पण पोतानुं समुद्र पर्यंत पथरायेलुं भरतक्षेत्रनुं विस्तीर्ण राज्य तजी दीधुं हतुं अने पोतानी सर्व रिद्धि अने ऐश्वर्यनो त्याग करीने संयम (दया)थी मुक्तिने प्राप्त करी हती. (३५) भारत वर्षनो त्याग करीने महारिद्धिवान अने महायशस्वी [2]मघवा नामे त्रीजा चक्रवर्ती राजाए दीक्षा ग्रहण करी हती [३६] महारिद्धिवंत मनुष्येंद्र [3]सनत कुमार नामे चोथा चक्रवर्तीए पोताना पुत्रने राज्य सोंपीने तपश्चर्या आदरी हती [३७]." महा ऐश्वर्यना धणी शान्ति चक्रवर्ती [सोळमा तीर्थंकर] जे जगतने शान्तिना आपनार हता ते भारत वर्षनो त्याग करीने अनुत्तर मुक्तिने प्राप्त थया हता [३८]." इक्ष्वाकु कुळने विषे उत्पन्न थयेला वृषभ समान कुंथु नामे विख्यात कीर्तिवान राजा (सत्तरमा तीर्थंकर) उत्तम गतिने पाम्या हता. [३९].

---

१. बीजा तीर्थंकर श्री अजितनाथ भगवानना ते नाना भाई हता तेणे अयोध्यामां राज्य कर्युं हतुं. श्री अजितनाथ भगवाने तेने दिक्षा आपी हती. २. सावथी नगरीना राजा समुद्रविजयना ते पुत्र हता जेणे पोतानी पत्नि भद्रा साथे दिक्षा ग्रहण करी हती. ३. हस्तिनापुरना राजा अश्वसेनना ते पुत्र हता तेणे पोतानी पत्नि सहदेवी साथे दिक्षा ग्रहण करी हती, आ बधा जीवन चरित्रो टीकामां आपेलां छे अहिं विस्तारना भयथी आप्यां नथी.

सागरतचइत्ताण भरह नरवरीसरो । अरोय अरयपत्तो पत्तोगइ मणुत्तर॥४०॥ चइत्ता भारह्वास चक्कवट्टी महिड्ढिओ। चइत्ताउत्तमेभोए महापउमे तवचरे ॥ ४१ ॥ एगच्छत्त पसाहित्ता महिमाणनिसुरिणो । हरिसेणो मणुस्सिदो पत्तोगइ मणुत्तर ॥४२॥ अन्निओरायसहस्सेहि सुपरिच्चाई दमचरे । जयनामोजिणक्खाय पत्तोगई मणुत्तर ॥४३॥ दसन्नरज्ज मुइयचइत्ताण मुणीचरे। दसन्नभद्दो निक्खतो सक्क सक्केण चोइओ ॥ ४४ ॥ नमिनमेइ अप्पाण सक्क सक्केण चोइओ । चइऊण गेहनइदेही सामन्ने पज्जुवट्ठिओ ॥४५॥

" भारत नरेश्वर अर [अढारमा तीर्थंकर] सागरात पृथ्वी छाडीने अने अरजपणुं [शुद्धि] प्राप्त करीने मुक्तिए पहोंच्या हता. [४०] " भरतक्षेत्र छोडीने अने पोतानी सेना, रथ अने उत्तम काम भोगनो त्याग करीने *नवमा चक्रवर्ती महापद्म राजाए तप आदर्युं हतु. (४१) " आखा जगतने एक छत्र तळे लाव्यापछी अने पोताना वेरीयोनु मान खडन कर्या पछी *दशमा चक्रवर्ती हरिषेण राजा सिद्ध गतने प्राप्त थया हता. [४२]. " जय[1] नामे अग्यारमा चक्रवर्तीए बीजा सहस्र नृपना समुदाय साथे राज्य छाडीने संयम लीधो अने जिनोक्त धर्म आचारीने मोक्ष गतिने पाम्यो. [४३] "दशार्ण देशनुं समृद्धिवान राज्य तजीने [2]दशार्णभद्र राजाए साधु धर्म अंगीकार कर्यो हतो, अन साक्षात शक्र (इन्द्र) नी प्रेरणाथी तेणे दीक्षा लीधी हती [४४]. " विदेह देशना नमि राजा साक्षात शक्रनी प्रेरणाथी क्रोधादिक छाडीने अने गृहवास तजीने श्रमण थया हता [४५].[3]

---

* संस्कृत टीकामा महापद्म अने हरिषेण राजाने अनुक्रमे आठमा अने नवमा चक्रवर्ती गण्याछे. महापद्म विष्णुकुमारना मोटा भाइ हता हरिषेण, कापिल्य नगरीना राजा महाहरीना पुत्र हता. १. राजग्रही नगरीना राजा समुद्रविजयना ते पुत्र हता. २. दशार्णभद्र राजा श्री महावीर भगवानना समकालीन हता. ३मूळमां अनुरुप आ प्रमाणेछे. पण प्रो. जेकोबीए ४५ मी गाथाने ४६ मी अने ४६ मीने ४५ मी एम उलटा सूलटी मूकेली छे.

करकंडूकलिंगेसु पंचालेसु य दुम्मुहे । नमीराया विदेहेसु गंधारेसु य नग्गई ॥ ४६ ॥ एते नरिंद वसभा निक्खंता जिणसासणे । पुत्ते रज्जे ठवेऊण सामन्ने पज्जुवट्ठिया ॥ ४७ ॥ सोवीर राय वसभो चइत्ताण मुणीचरे । उद्दायणो पव्वइओ पत्तो गइ मणुत्तरं ॥४८ ॥ तहेव कासी राया सेओ सच्च परक्कमे । कामभोगे परिच्चज्ज पहणे कम्म महावणं ॥ ४९ ॥ तहेव विजओ राया अणट्ठा कित्ति पव्वए । रज्जं तु गुण समिद्धं पयहित्तु महायसो ॥ ५० ॥ तहेवुग्गं तवं किच्चा अव्वक्खित्तेण चेयसा । महब्बलो रायरिसी आदाय सिरसा सिरिं ॥५१॥

"[1]करकंडू राजाए कलिंग देश, [1]द्विमुख राजाए पांचाळ देश, [1]नमि राजाए विदेह देश अने [1]नग्गति (निर्गति) राजाए गंधार देश छोड्या हता. [४६]. "ए चारे [2]वृषभ समान राजाओए जिनशासनने विषे दीक्षा लीधी, अने पोताना पुत्रोने राज्य सोंपीने पोते श्रमण धर्मने विषे उपस्थित थया [४७]. "सोवीर देशना वृषभ समान [3]उदायन राजाए राज्य छोडीने दीक्षा लीधी; अने प्रव्रज्या ग्रहण करीने उत्तम गतिने प्राप्त थयो [४८]. "तेवी जेनुं सत्य पराक्रम प्रशंसनीय छे एवा [4]काशीना राजा (नंदनजी) ए काम भोग छोडीने कर्म रूपी महावनने कापी नाख्युं. (अर्थात्–अष्ट कर्म दूर कर्या)[४९] " वळी विजय नामे [बीजो बळदेव] राजा [5]जेनी कीर्ति सर्वथा नाश पामी छे, ते महायशस्वी राजाए पोतानुं समृद्धिवान राज्य तजीने दीक्षा लीधी. (५०). " वळी [6]महाबल राजर्षि सावधान (स्थिर) चित्तथी उग्र तप करी अने पोताना शिरपर मस्तक रूपी लक्ष्मीने धारण करी. [५१].

१.ए चारे राजा प्रत्येक बुद्ध कहेवाय छे २. शहा चारना बीजेरे गुणोमां वृषभनी उपमा आपी छे ३.उदायन राजा पण श्री महावीर भगवानना समकालीन हता. ४ ते राजा अग्नि शिखाना पुत्र अने सातमा बळदेव हता. ५ मो.'जेरोवी' आने स्थळे कहे छे के 'जेनां सर्व पाप क्षय थया नथी.' पण टीका बीजेरे तेनां ने समज फेर थयेली जणावे छे. ६ महाबल राजा तेरमा तीर्थंकर श्री विमलनाथना समकालीन हता ते हस्तीनापुरना राजा बळराजाना पुत्र हता.

कह धीरे अहेऊहिं उम्मुत्तव्व महिंचरे । एए विसेस मादाय सूरा दढ परक्कमा ॥५२॥ अच्चत नियाण खमा सच्चामे भासिया वई । अतरिंसु तरि तेगे तरिस्सति अणागया ॥५३॥ कह धीरे अहेऊहि अत्ताणं परियावसे । सव्वसग विणिमुक्के सिद्धे हवइ निरए त्तिबेमि ॥ ५४ ॥

⊛ ॥ इति श्री सजयनाम झयण अठारस सम्मत्तं ॥ १८ ॥ ⊛

"ज्यारे उपर कहेला [¹भरतादी] पुरुषो दढ पराक्रमे करीने उत्तम गतिने पाम्याछे, तो पछी धीर, पडित पुरुषोए भूडी क्रियाए [मिथ्यात्वे] करीने पृथ्वी उपर उन्मतनी पेठे शा माटे रखडवुं जोइए ? (५२). "कर्म रुपी मळने शुद्ध करनार सत्य वचन में कह्यांछे, ते वचननुं मनन करवाथी अनेक जीव [संसार समुद्रथी] तर्याछे, अनेक तरेछे, अने अनेक तरशे. (५३). " धीर पडित पुरुषोए कल्पित कारणोने लीधे (अर्थात-क्रियावाद आदि मिथ्यात्वनी असत्य प्ररुपणाने लीधे) शा माटे पोताना आत्माने दुःखमां नांखवो जोइए ? जे पुरुष सर्व संगथ अने पापोथी मुक्त थायछे ²ते सिद्धगतिने पामेछे." [५४].

* अढारमु अध्ययन संपूर्ण. *

---

१. ३४ मी गाथाथी ५१ मी गाथा सुधीमां जेटला राजाओना नाम आवे छे ते तमामनी कथा संस्कृत टीकामां आपेली छे. पण ते अहिं उतारी नथी. २. Free from all ties and sins.

अध्ययन १९. मृगा पुत्रनुं दृष्टान्त.

सुग्गीवे नयरे रम्मे काणणुजाण सोहिए । राया बलभद्देत्ति मिया तस्सगमाहिसी ॥ १ ॥ तेसिं पुत्ते बलसिरी मिया पुत्तेत्ति विस्सूए । अम्मापिऊणदईए जुवरायादमीसरे ॥ २॥ नदणे सोउपासाए कीलए सहइत्थीहि देवोदोगुदगोचेव निच्चमुइय माणसो ॥३॥ मणिरयण कुट्टिमतले पासाया लोयणेठिओ । आलोएइ नगररस चउक्क तियचच्चरे ॥ ४ ॥ अहतत्थ अइच्छंतं पासइ समण सजय । तवनियम सजम धर सीलड्ढ गुण आगार ॥ ५ ॥

❀ अध्ययन १९. ❀

सुग्रीव नामे मनोहर नगर जे वन उपवन अने बाग बगीचाथी शोभी रह्युं छे, त्यां बलभद्र नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने मृगावति नामे पटराणी हती. [१] तेमने बल श्री नामे पुत्र हतो; लोको तेने मृगापुत्रना नामथी ओळखता. ते युवराज तेना मातापिताने अति प्रिय हतो, अने ते (भविष्यमां) इन्द्रियोने दमनार यति पुरुषोनो स्वामी (शिरोमणी) थयो. [२]. ते मृगापुत्र पोताना नन्दन महेलमां पोतानी स्त्रीओ संगाथे [1]दोगुन्दक देवतानी माफक क्रीडा करतो हतो, अने सदा हर्षित मनथी भोग भोगवतो हतो. [३]. जेनु [2]आंगणु (फरस) मणि रत्नथी जडेलु छे तेवा महेलना झरुखामां बेठो बेठो मृगापुत्र, शहेरना चोक, हाट अने रस्तानुं अवलोकन करतो हतो. [४]. एक दिवस चोकने विषे मृगापुत्रे एक संयम धारी श्रमणने जतो जोयो, ते साधु तपनो करणहार, संयमनो पाळणहार अने इन्द्रिओनो निग्रह करनार हतो, वळी ते सद्गुणथी भरेलो अने शीलादि गुणोना भंडार रुप हतो [५]

---

१. त्रायत्रिंशक. २. भोंयतळीउ Floor

उ.अ १९.

तदेहईमियापुत्ते दिट्ठीए अणमिमाइए । कहिमन्नेरिसरूव दिट्ठ पुव्व मएपुरा ॥६॥ साहुस्सदरिसणेतस्स अज्झवसाण मिमोहणे । मोहगयस्स सतस्स जाई सरण समुप्पन्न ॥ ७ ॥ देवलोग चुओसतो माणुसभव मागओ । सन्निनाण समुप्पन्ने जाइसरण पुराणय ॥ ८ ॥ जाईसरणे समुप्पन्ने मियापुत्ते महिड्ढीए । सरईपोराणिय जाइ सामणच पुराकय ॥ ९ ॥ विसएहिंअरज्जतो रज्जतोसजममिय । अम्मापियरउवागम्म इमवयणमव्ववी ॥ १० ॥ सूयाणिमेपच्चमहव्व-याणी नरएसुदुख च तिरिख्खजोणिसु निव्विन्नकामोमि महन्नवाओ अणुजाणहपव्वइस्सामि अम्मो ॥ ११ ॥

मृगापुत्र ते मुनिनी सामे स्थिर दृष्टिथी जोइ रह्यो अने एवु स्वरूप (ए पुरुषने) पोते पूर्वे भवे क्यां दीठु हतु ते याद करवा लाग्यो(६) साधुना दर्शने करीने तेनु मन पवित्र थयु; शुभ ध्यानथी तेनो मोह उपशम्यो[१] अने तेमा तेने पोताना पूर्व भवनु जाति स्मरण थयु. [७] तेने [२]जातिस्मरण थवाथी *पोते देवलोकथी चवीने मनुष्यभवमां आव्यो हतो अने तेमा सम्यक ज्ञान उपजवाथी *पोते पूर्वभवे जे चारित्र पाळ्यु हतु ते तेने सांभरी आव्युं. [८–९] विषय उपरथी तेनु मन उतरी गयु अने तेने सयमने विषे रुचि उत्पन्न थइ, तेथी ते पोताना मातापिता पासे आवीने नीचे प्रमाणे कहेवा लाग्यो :– [१०]. "पच महाव्रत मने सांभरी आव्या छे, वळी नरक अने तिर्यंच योनिनां दुःखनु पण मने भान थयु छे; मने आ ससारसागरमा काम भोगनी लेश मात्र अपेक्षा नथी, माटे हे मातापिता! मने दिक्षा लेवानी आज्ञा आपो [११].

१. मोह उपशमवाथी ते मूर्छा पाम्यो एवो भावार्थ छे. मो. जेकोबी ते माटे He was plunged in doubt ए शब्दो वापरे छे. २ पूर्व भवोनी वातो याद आवे ते–सज्ञी पचेंद्रियमांथी जे जीव आव्या होय तेनेज आ ज्ञान उत्पन्न थाय छे. * आटलो भाग मो. जेकोबीए पोताना भाषान्तरमां छोडी दीधो छे. आ अध्ययननी ९९ गाथा छे तेणे ९८ लीधी छे. सुगमता खातर अहिं तेने साथे मेळवी लीधी छे.

अम्मतायमएभोगा भुत्ता विसफलोवमा । पच्छाकडुयविवागा अणुबंध दुहावहा ॥ १२ ॥ इमं सरिर अणिच्चं असुई असुईसभव । असासया वासमिण दुक्खकेसाणभायण ॥ १३ ॥ असासएसरीरमि रइनोवलभामिह । पच्छापुरावच-इयव्वे फेणवुब्बुय सनिभे ॥ १४ ॥ माणुस्सत्ते असारमि वाहि रोगाण आलए । जरामरणघत्थमि खणपि नरमामिह ॥ १५ ॥ जम्मदुक्ख जरादुक्ख रोगाय मरणाणिय । अहो दुक्खोहु ससारो जथ्थकिसति जंतुणो ॥ १६ ॥ खित्त वथ्थु हिरणच पुत्तदारच बधवा । चइत्ताण इम देह गतव्व मव्वसस्समे ॥ १७ ॥

"हे माता! हे तात! विष-फळ सरखा भोग में भोगव्या छे; तेनां परिणाम अति कडवा छे, कारण के ते निरतर दुःखनां देनार छे.१ [१२] "आ देह अनित्य छे, ते अपवित्र छे कारण के ते २शुक्रशोणितनु बनेलुछे, वळी तेमा आत्मानो अशाश्वत ३वास छे, अने ते दुःख अने क्लेशनु भाजन छे. [१३]. "आ अशाश्वत शरीरमा मारुं मन संतोष पामतु नथी; कारण के वहेलुं या मोडुं ए शरीर नक्की छोडवु छे अने वळी ते पाणीना फीण अने परपोटा सरखु छे ४ [१४] "वळी आं असार मनुष्यपणु, व्याधि अने रोगनु घर, जे जरा अने मरणे करीने ग्रस्त छे; तेने लीधे मारु मन एक क्षण मात्र पण सुख पामतु नथी.५ [१५]. "जन्म दुःख रुप छे, जरा दुःख रुप छे, रोग अने मरण पण दुःख रुप छे; आहा! आ ससार सर्व दुःखनु मूळ छे अने तेमा सर्व जीव क्लेश पामेछे [१६] "क्षेत्र, ग्रह, सुवर्ण, पुत्र, स्त्री, भाइभांड, सर्वेने तजीने, आ देह छोडीने मारे एक दिवस अवश्य चाली नीकळवुपडशे [१७]

१. They entail continuous suffering २. मांस रुधीर वीगेरे अशुचीमय पदार्थो. ३. Transitory residence [of the soul] ४. "जेवो पाणीनो परपोटो, तेवो देह भरुसो खोटो." "आयुष्य ते तो जळना तरंग." ५ मो.जेकोबी आ माटे नीचे मुजर शब्दो वापरे छे." And this vain human life, an abode of illness and disease which is swallowed up by old age and death, does not please me even for a moment,"

जहा किंपागफलाण परिणामो न सुदरो । एवंभुत्ताण भोगाणं परिणामो न सुंदरो ॥ १८ ॥ अद्धाणंजो महंतंतु अप्पाहिजो पवज्जइ । गछ्तोसेदुहीहोइ छुहातएहाहि पीडिओ ॥ १९ ॥ एव धम्म अकाऊण जो गच्छइ परभव । गच्छतोसे दुहीहोइ वाहीरोगेहिं पीडिओ ॥ २० ॥ अद्धाणजो महततु सपाहेज्जो पवज्जइ । गच्छतोसे सुही होइ छुहातएहावि वज्जिओ ॥२१॥ एव धम्मंपिकाऊण जोगच्छई परभव । गच्छतोसे सुहीहोइ अप्पकम्मे अवेयणे ॥२२॥ जहागेहे पलित्तमि तस्सगेहस्स जोपहु । सारभडाइ नीणेइ असार अवउझइ ॥ २३ ॥ एवलोए पलित्तमि जराए मरणेणव । अप्पाण तारइस्सामि तुझेहि अणुमन्निओ ॥ २४ ॥

"जेम किम्पाक फळनु परिणाम सारु नथी, तेवीज रीते भोगवेला भागनु परिणाम पण सारू आवतु नथी. (१८). "जे मनुष्य साथे भाथुं लीधा सिवाय (सवल रहित) लांबी मुसाफरीए नीकळे छे, ते मार्गमां क्षुधा अने तृषाथी पिडाय छे अने दुःखी थाय छे (१९). "तेवीज रीते जे मनुष्य धर्म कर्या सिवाय परभवने विषे जाय छे ते मार्गमां व्याधि अने रोगथी पिडाय छे अने दुःखी थाय छे.(२०)."पण जे मनुष्य भाथुं साथे लइने (सवल सहित) लांबी मुसाफरीए नीकळेछे, ते मार्गमां क्षुधा अने तृषाथी पिडातो नथी अने सुखी थाय छे. [२१]. "तेवीज रीते जे मनुष्य धर्म करीने परलोकने विषे जाय छे, ते जीव मार्गमां पापकर्म अने वेदनाथी पिडातो नथी अने सुखी थाय छे (२२). "कोइ घरमां आग लागी होय त्यारे जेम घरधणी सार (कीमती) वस्तुओ बहार काढी ले छे, अने असार वस्तुओने त्यांनी त्यां पडी रहेवा दे छे, तेम आ संसारने जरा अने मरणरूपी अग्नि लागेलो छे तो आपनो आदेश (आज्ञा) लइने हु मारा आत्माने तेमांथी तारवा इच्छुछु. [२३–२४].

१. देखावमां सुंदर अने आकर्षक खाता मीठु लागे पण परिणामे झेर रुप थतु एक जातनु झेरी फळ. Cucumis Colocynthis

त वितम्मापियरो सामन्नं पुत्तदुच्चरं । गुणाणतु सहस्साइ धारेयव्वाइ भिक्खूणो ॥ २५ ॥ समया सव्वभूएसु सतुमित्ते सुवाजगे । पाणाइवाय विरइ जावजिव्वाए दुक्कर ॥ २६ ॥ निच्चकालप्पमत्तेण मुसावायविवज्जण । भासियव्व हिय सच्च निच्चाओतेण दुक्कर ॥ २७ ॥ दतसोहणमाइस्स अदत्तस्स विवज्जण । अणवज्जे सणिज्जस्स गिन्हणा अविदुक्कर ॥२८॥ विरई अबभचेरस्स कामभोग रसन्नुणा । उग्गं महव्वय बभ धारेयव्व सुदुक्कर ॥२९॥ धणधन्नपेसवग्गेसु परिग्गह विवज्जणा । सव्वारभ परिच्चाओ निम्ममत्त सुदुक्कर ॥ ३० ॥

ए साभळीने तेना मातापिता कहे छे, "हे पुत्र! चारित्र (साधु–धर्म) पाळवु दोहिलु छे; साधुमा हजारो सद्गुणो होवा जोइए[1] [२५]. "सर्व जीव, पछी ते शत्रु होय के मित्र तेना उपर समता भाव राखवो, अने जिंदगी पर्यंत प्राणी मात्रने अशाता उपजाववाथी दूर रहेवु, ए दुष्कर धर्म छे. [२६]. "कदि प्रमाद पणे मृषावाद बोलवुं नहि, अने सदा सावधान रहीने सर्व जीवने हितकर सत्य बोलवु ए दुष्कर धर्म छे. [२७]. "दात साफ करवानी सळी सुद्धांतु पण अदत्ता दान कदि लेवु नहि, अने मात्र सूझता [2]आहार पाणीज व्होरवां ए दुष्कर धर्म छे. [२८]. "काम भोगनो रस जाण्या पछी भोग विलासथी दूर रहेवु, अने ब्रह्मचर्यनु उग्र महाव्रत पाळवु ए दुष्कर धर्म छे. (२९). "धन, धान्य अने दास दासिनो परिग्रह वर्जवो, सर्व आरम्भ छोडी देवो, अने ममत्वनो त्याग करवो, ए दुष्कर धर्म छे (३०).

---

१. A monk must possess thousands of virtues २. Free from faults

चउव्विहेवि आहारे राइ भोयण वज्जणा । सनिहीसचओचेव वज्जेयव्वो सुदुक्करं॥३१॥ छुहातण्हायसीउण्ह दसमसग वेयणा । अक्कोसा दुक्खसेज्जाय तणफासा जल्लमेवय ॥ ३२ ॥ तालणा तज्जणा चेव वहबंध परिसहा । दुक्ख भिक्खायरिया जायणाय अलाभया ॥ ३३ ॥ कावोया जाइमावित्तिं केसलोओयदारुणो । दुक्खं बभव्वयघोरं धारेओ अमहप्पणो ॥३४॥ सुहोइओ तुमपुत्ता सुकुमालो सुमुज्जिओ । नहुसी पभूतुमपुत्ता सामन्न मणुपालिया ॥ ३५ ॥ जावज्जीव मविस्सामो गुणाणतु महब्भरो । गुरुओ लोहभारुव्व जोपुत्तोहोइ दुव्वहो ॥ ३६ ॥

" चारमांथी एके प्रकारनो आहार रात्रिए करवो नहि, अने आगळ उपर जरूर पडशे एम धारीने (घृतादि) वस्तुओनो संग्रह करी राखवो नहि, ए दुष्कर धर्म छे'.[३१]. " क्षुधा, तृषा, टाढ, तडको, डास मच्छरादिनी वेदना, दुर्वचन, दुःखमय रहेठाण तण स्पर्श, शरीर-मल, चपेटादिकनो प्रहार, भय, मार वधबंधन भिक्षाचर्या, अलाभ-याचना आदि परिसह वेठवां ए अति दुष्कर छे. [३२-३३]. " हे पुत्र ! साधु-धर्म कपोत[३] पक्षीनी पेठे सूझतो आहार व्होरवानो छे; केशनो लोच करवो ए पण अति दुःख दायक छे; अने घोर ब्रह्मचर्य व्रत पाळवु ए महात्मा पुरुषोने पण दोहिलुं लागे छे. [३४]. " हे पुत्र ! तुं सुखमां उछर्योछे, सुकुमार छे, तने [न्हाइ धोइने] स्वच्छ रहेवानी टेव छे; बेटा ! ताराथी साधु धर्म पाळी शकाशे नहि, [३५]. " हे पुत्र ! जिंदगी पर्यंत विश्राम विना लोहनी पेठे चारित्रनो महाभार वहेवो ए अति कठिन छे,[४] [३६].

१. अन्न, पाणी, मेवो अने मुखवास. २. गाथाओ २६, २७, २८, २९, ३०, ३१ मा पच महाव्रत अने छठामा रात्रि भोजन त्यागनुं विवेचन छे. ३. कबुतर Pigeons, आ पक्षीओ भयथी हमेशा सावचेत रहेछे अने खाधा पछी पासे काइ राखता नथी. अर्थ आहार वहोरतां दोषोथी डरवानो भावार्थ छे. ४. चारित्र कठिन छे अने चारित्र लीधा बाद जिंदगी सुधीज ते निभावनुं पडेछे माटे विशेष कठिन छे.

आगासे गंगसोउव्व पडिसो ओव्वदुत्तरो । बाहाहिं सागरोचेव तरियव्वो गुणोदही ॥ ३७ ॥ वालुया कवलेचेव निरस्साए उसंजमे । असिधारागमण चेव दुक्कर चरिओतवो ॥ ३८ ॥ अहीवेग तदिट्ठीए चरित्ते पुत्तदुच्चरे । जवालोहमयाचेव चावेयव्वा सुदुक्कर ॥ ३९ ॥ जहा अग्गिसिहादित्ता पाउहोइ सुदुक्कर । तहा दुक्कर करेउजे तारुणे समणत्तण ॥४०॥ जहादुक्खभरेउजे होइवायरस कोथ्थलो । तहादुक्खकरेउजे कीवेण समणत्तण ॥४१॥ जहा तुलाएतोलेउ दुक्करं मदरोगिरी । तहानिहुयं निस्सक दुक्कर समणत्तण ॥ ४२ ॥

"आकाश–गंगा[१] पार उतरवी, सामा प्रवाहे तरवुं अथवा तो भुजाना बळथी समुद्र तरी जवो ए जेटलु दोहिलुं छे, तेटलुज गुणोना समुहरूप चारित्र समुद्र तरी जवानुं काम दोहिलु छे. [३७]. "सयम वेळुना कोळिया जेवो निस्वाद छे, अने तप करवु ए खांडानी धार उपर चालवा जेवु दुष्कर[२] छे. [३८]. "हे पुत्र! [३]सर्पनी माफक एकाग्र दृष्टियी, सदा साधुमार्गे (मोक्ष-मार्गे) विचरवुं अति दुष्कर छे, अने ते काम लोढाना चणा चाववा जेवु कठिन छे (३९). "हे पुत्र! जेम अग्निनी बळती शिखानु पान करवुं दुष्कर छे, तेम तरुणावस्थामा साधु-धर्म पाळवो दुष्कर छे [४०]. "जेम वायरावति (हवाथी) कोथळो भरवो दोहिलो छे, तेम कायर पुरुषने साधु धर्म पाळवो दोहिलो छे. (४१) "जेम मेरु पर्वतने त्राजवामा तोळवो मुश्केल छे, तेम निश्चळ अने निशंक मनथी साधु धर्म पाळवो मुश्केल छे. [४२]

१. श्री चुल हेमवंत पर्वत उपरथी पडती गंगा नदीने आकाश गंगा कहे छे २. आ माटे प्रो. जेकोबी नीचेना शब्दो वापरे छे. Self control is untasteful like a mouthful of sand, and to practise penance is as difficult as to walk on the edge of a sword ३. बीजा जानवरोनी पेठे सर्प पोतानी आखो बंध करता नथी. तेनी एकाग्र दृष्टिनी अहिं उपमां आपी छे.

जहाभुयाहि तरिउजे दुक्कर रयणायरो । तहा अणुवसंतेणं दुक्करं दमसायरो ॥ ४३ ॥ भुज्जमाणुरसएभोए पचलख्ख-णएतुम । भुतभोगी तओ जाया पछाधम्मचरिस्ससि॥४४॥ सोवितम्मापियरो एवमेयजहाफुड । इहलोए निप्पिवासस्स नथ्थि किंचिविदुक्कर ॥ ४५ ॥ सारीर माणसाचेव वेयणाओ अणतसो । मएसोढाओ भीमाओ असइ दुख्ख भयाणिय ॥४६॥ जरामरणकतारे चाउरते भयागरे । मएसोढाणि भिमाणि जम्माणि मरणाणिय ॥४७॥ जहाइहं अगणीउणहो इत्तोणत गुणोतहिं । नरएसुवेयणाउणहा असाया वेइयामए ॥ ४८ ॥

"जेम भुजाए करीने रत्नाकर तरवो दोहिलो छे, तेम जेनु चित्त विषयथी शान्त थयु नथी, तेने (इन्द्रीय दमवा रुप) चारित्र[1] सागर तरवो दोहिलो छे. [४०]. "हे पुत्र! मनुष्यना पंचलक्षणा (शब्द, रुप, रस, गंध, स्पर्श) भोग भोगव; अने ए भोग भोगव्या पछी धर्म आदरजे." [४४]. ए सांभळीने कुमार कहे छे, "हे मातापिता! आप कहोछो ते वधु खरुं छे, पण जे मनुष्यने आ लोकनी स्पृहा नथी तेने काइ पण दोहिलुं नथी. [४५]. "शरीर अने मन संबधीनी महावेदनाओ में अनत प्रकारे भोगवी छे, अने महारौद्र दुःख अने भय वारंवार सह्या छे. (४६). "जरा-मरणना भयना [2]आगर रुपी अटवीने विषे *चतुर्गति (देव, मनुष्य, तिर्यंच अने नारकी) रुप* संसारमा जन्म-मरणना महा भयानक दुःख में सह्या छे. [४७]. "आ मनुष्य लोकने विषे अग्नि जेटलो उष्ण छे, तेना करतां नरकनो अग्नि अनंतगणो वधारे उष्ण छे; अने ए उष्णतानी वेदना पण में सहन करेली (अनुभवेली) छे. [४८].

---

१. The ocean of restraint २, मूळपाठमा भयागरे शब्द छे. A mine of dangers. * प्रो. जेकोबीए पोताना भाषान्तरमां आटलुं मूकी दीधुं छे, पण मूळपाठमां चाउरंते शब्द छे.

जहाइहं इमंसीयं इत्तोणतगुणोतहिं । नरएसु वेयणासीया अस्साया वेइयामए ॥ ४९ ॥ कंदंतोकंदुकुंभीसु उड्ढपाओ अहोसिरो । हुयासणे जलतमि पक्को पुव्वोअणंतसो ॥ ५० ॥ महादवग्गिसकासे मरुमिवइ रवालुए । कलंब वालुयाएय दड्ढपुव्वो अणतसो ॥ ५१ ॥ रसतोकदुकुंभीसु उड्ढबधो अबधवो । करवत्तकरकयाईहि छिन्नपुव्वो अणतसो ॥ ५२ ॥ अइतिक्ख कटकाइन्ने तुगेसिंबलिपायवे । खेवियं पासबद्धेण कट्टोकट्टाहिं दुक्करं ॥ ५३ ॥ महाजतेसु उच्छुवा आरसतो सुभेरवं । पीलिओमि सकम्मेहिं पावकम्मो अणंतसो ॥ ५४ ॥

" आ मनुष्य लोकने विषे जेटली टाढ छे, तेना करता नरकने विषे अनतगणी वधारे टाढ छे, अने ए टाढनी 'अशाता में भोगवेली छे. (४९). " उर्ध्वपाद अने अधोशिरे (उचा पग अने नीचा मस्तके) प्रज्वलित अग्नि उपर आक्रंद करतो अनतवार हु कडामां शुंजायो छु.[1] [५०] " वज्रवालुका[2] अने कदम्बवालुका[3] नदीओनी महा दवाग्नि सरखी गरम रेतीमा हु अनतवार दग्ध थयो छु. [५१]. " उकळता चरु उपर उधे मस्तके लटकीने हाय पोकार करतो अने भाइ भाडुनी सहायता रहित, नाना मोटा करवतो वती हु अनतीवार छिन्न भिन्न थयो छु. (५२) " अति तिक्ष्ण कांटावाळा शाल्मली नामे उचा वृक्षनी डाळे पाश-बद्ध थइने अने आम तेम झोलां खाइने में महा वेदनाओ भोगवेली छे. (५३). " हु घोर पापी, पोताना पाप कर्मने लीधे, शेरडीनी पेठे महा यंत्रमा भयानक आक्रन्द करतो अनतीवार पीलायो छु [५४].

1. Roasted. २-३. नरकनी बे नदीओनां नाम छे.

कुव्वंतोकोलसुणएहिं सामेहिं सबलेहिय । पाडिओ फालिओछिन्नो विफुरंतो अणेगसो ॥५५॥ असीहिं अयसिवन्नाहिं भल्लेहिं पट्टिसेहिय । छिन्नोभिन्नो विभिन्नोय उइन्नो पावकम्मुणा ॥ ५६ ॥ अवसो लोहरहेजुत्तो जलते समिलाजुए चोइओतोत्तजोत्तेहिं रोज्झोवा जहपाडिओ ॥ ५७ ॥ हुयासणे जलतमि चियासु महिसोविव । दड्ढोपक्कोयअवसो पावकम्मेहि पाविओ ॥ ५८ ॥

"श्याम अने संवल नामे परमाधार्मिक (अति अधम) देवताओए सुअर अने कुतरा जेवा (विक्राळ) म्होडाथी मने अनेकवार पुकार करतो धरती उपर पछाड्यो छे, फाड्यो छे, छेद्यो छे, (श्वान अने सूकरने खवडाव्यो छे) अने छिन्न भिन्न करी नाख्यो छे. [५५].* "मारां पाप कर्मने लीधे ज्यारे हु नरकमां उत्पन्न थयो हतो त्यारे खड्ग, खजर, बरछी अने भालाथी हु छेदायो हतो, भेदायो हतो अने छिन्न भिन्न थयो हतो. [५६]. "लालचोळ तपावेला अने बळतणथी भरेला लोहरथे मने बळात्कारथी अनेकवार जोडवामां आव्योछे, अने चर्म बध(जोतर)थी बांधीने परोणावति हाकवामा आव्योछे अने रोझ पशुनी माफक मने मार मारीनीचो पाडवामां आव्यो छे. [५७]. देवता (परमाधामी)ए उत्पन्न करेली अग्निनी जाजल्यमान (सळगती) चितामा (होमना) पाडानी पेठे मने पराणे नाखवामां अने बाळवामां—सेकवामा आव्यो छे, मारां पाप कर्मोने लइने आवी वेदना में सहन करी छे १ [५८].

---

* आ गाथानु भाषान्तर प्रो. जेकोबी नीचे प्रमाणे करे छे :—"काळा अने काबरा जगली कूतराओए मने अनेकवार पछाड्यो छे, छिन्न भिन्न कर्या छे अने हाय पुकार करतो फाडी तोडी नाख्यो छे." १. प्रो. जेकोबी आ भागनो In atonement for my sins 'मारा पाप कर्मना निवारण अर्थे' एवो अर्थ करे छे. पण मूळपाठमा "पावकम्मेहिं पाविओ" शब्दो छे, जेनो अर्थ "ए वेदना पाप कर्मे करी पाम्यो" एम थाय छे.

बलासडास तुडेहिं लोहतुडेहिं पक्खिहिं । विलुत्तो विलवंताहं ढंकगिद्धेहिणंतसो ॥ ५९ ॥ तण्हा किलंतो धावंतो पत्तोवेयरणीनइं । जलपाहिंति चिंततो खुरधाराहि विवाईओ ॥ ६० ॥ उण्हाभितत्तो संपत्तो असिपत्त महावणं । असिपत्तेहिं पडंतेहिं छिन्नपुव्वो अणंतसो ॥ ६१ ॥ मुग्गरेहि मुसंढीहि सूलेहिं मूसलेहिय । गया संभग्गगत्तेहि पत्तदुक्ख अणंतसो ॥ ६२ ॥ खुरेहिं तिक्खधारेहि छुरियाहिं कप्पणीहिय । कप्पिओ फालिओछिन्नो उक्कत्तोय अणेगसो ॥६३॥ पासेहि कूडजालेहिं मिओवा अवसो अहं । वाहिउ बद्धरुद्धोय बहुसोचेव विवाइओ ॥ ६४ ॥

साडसी (चीमटा) जेवी जेनी चांच छे एवा पक्षीओए अने ढंक-गृद्ध (पिशाच जेवा गीध) पक्षीए मने बळात्कारथी अनंतीवार फाड्यो छे.[1] [५९]. "तृषाथी व्याकुळ थइने, पाणी पीवाना इरादाथी हुं वैतरणी नदी तरफ दोडी जतो, पण त्यां छरी सरखी पाणीनी [2]धाराथी हुं अनेकवार भेदाइ पड्यो छुं. [६०]. "तापनी पिडाथी (विश्रांति लेवाने) हुं वनमां जतो, पण त्यां वृक्षनां पादडा खड्ग सरखा हतां, ए खड्ग जेवां पातरांना पडवाथी हुं अनंतीवार छेदायो भेदायो छुं. [६१]. "मुग्दल, छरा, त्रिशुळ अने गदाना प्रहारथी मारां अंग-उपांग भांग्या छे अने अनंतीवार में तेनी अनहद वेदना भोगवी छे. [६२] "तिक्ष्ण धारवाळां अस्त्र, छरी अने कातर वति हुं अनेकवार चीरायो छुं, कपायो छुं, कोतरायो छुं अने मारा शरीर उपरनी चामडी कापवामां आवी छे. [६३]. "मृगला तरीके (पशु-योनिमां) हुं बळात्कारथी पाश अने जाळमां वारंवार पकडायो छुं, बंधायो छुं, पिडायो छुं अने मरायो छुं. [६४].

---

१. नरकमां कोइ जातनां पक्षीओ के जानवरो होतां नथी परन्तु परमाधामीओ विक्रय शरीरथी जुदा जुदा रुप लइ, नारकीना जीवोने तेना पापनी शिक्षा करे छे. २. ए नदीनां पाणीमां Caustic Acid मिश्र होय छे जे मांसने बाळी नांखे छे.

गलेहिं मगरजालेहिं मच्छोवा अवसोअह । उल्लिओ फालिओ गहिओ मारिओय अणतसो ॥६५॥ विदसएहिं जालेहिं लिप्पाहिंसउणोविव । गहिओलग्गोयबध्योय मारिओयअणतसो ॥ ६६ ॥ कुहाड फरुसमाइहिं वड्ढईहिं दुमोइव । कुट्टिओ फालिओ छिन्नो तच्छिओय अणतसो ॥ ६७ ॥ चवेड मुट्ठिमाईहिं कुमारेहिं अयपिव । ताडिओ कुट्टिओ भिन्नो चुन्निओय अणंतसो ॥६८॥ तत्ताइतवलोहाइ तओयाइ सीसगाणिय । पाइउ कलकलताइ आरसतोसुभेरव ॥६९॥ तुहपियाइ मंसाइ खडाइ मोल्लगाणिय । खाविउमि समसाइ अग्गिवन्नाइणेगसो ॥ ७० ॥

"मच्छ तरीके हु अनेकवार गलथी पकडायो छु, जाळमा सपडायो छु, मारी चामडी उतारवामा आवी छे अने मारा टुकडे टुकडा करवामां आव्या छे. [६५]. "पक्षी तरीके हुं अनतीवार सींचाणा (वाज) पक्षीथी पकडायो छु, जाळमां फसायो छुं अने [1]वज्रलेपमां सपडायो छु अने मरायो छुं. [६६]. "वृक्ष तरीके (वनस्पति-कायम) कुहाडा अने फरसी आदि हथियारथी सूतारने हाथे हुं अनेकवार छेदायो छुं, करवत वति व्हेरायो छु अने मारी त्वचा (छाल) उतारवामा आवी छे. [६७]. " लोह तरीके हु अनंतीवार [2]लुहारने हाथे कुटायो छु, कपायो छु, चीरायो छुं अने चूर्ण थयो छु [६८] "त्राम्बु, लोढु, [3]कथीर अने सीसाना धगधगता अने उकळता रस अति आक्रन्द साथे मने अनतीवार पराणे पावामां आव्या छे [६९]. " तने खीमो करेलु अने भूजेलु मांस (पूर्व भवे) प्रिय हतु केम? एम कही कहीने *मने मारु पोतानु ज मास* तोडा तोडीने अन लालचोळ करीने अनेकवार खवडाववामां आव्युं छे. [७०].

१. Bird lime पक्षीओ पकडवानो चीकणो पदार्थ. २ लुहारने प्राचिन समयमा 'कुमार' कहेता. मूळपाठमा 'कुमारेहि अय पिव'छे, जेना शब्दार्थथी संस्कृत टीकाकार एवो अर्थ करे छे के, जेम क्षत्री पुत्र-कुमार, अज-बकरां वकराने मारे तेम. ३ कलइ-तरुआ Tin. *आने बदले मो जेकोबी 'बेरी मांस' लखेछे. पण मूळपाठमा 'समसाई' शब्द छे, तेमां 'बेरी' भावार्थ नीकळतो नथी.

तुहपिया सुरासीहू मेरओय महूणिय । पाइओमिजलंतीओ वसाओ रुहिराणिय ॥७१॥ निच्चभीएण तत्थेण दुहिएण वहिएणय । परमादुहसंबद्धा वेयणावेइयामए ॥ ७२ ॥ तिव्वचडप्पगाढाओ घोराओ अइ दुस्सहा । महब्भयाओ भीमाओ नरएसुवेइयामए ॥७३॥ जारिसा माणुसेलोए तायादीसंति वेयणा । इत्तोअणंत गुणिया नरएसु दुक्खवेयणा ॥ ७४ ॥ सव्वभवेसु असाया वेयणा वेइयामए । निमिसंतरमित्तंपि जसाया नत्थिवेयणा ॥७५॥ तंबितम्मापियरो छंदेण पुत्त पव्वया । नवर पुणसामन्ने दुक्ख निप्पडिकम्मया ॥ ७६ ॥

"तने सुरा, मद्य, मदिरा अने मधु प्रिय हतां केम ? एम कही कहीने मने उकळती चरबी अने रुधिर पाराता आव्या छे. [७१]. "सदा बीता, त्रास पामता, धुजतो, दुःखी थता अने पिडाता में परमोत्कृष्ट रोग अने व्याधि सह्या छे [७२]. "नरक लोकने विषे में तीव्र, उत्कट, सखत, घोर, असह्य, भयानक अने रौद्र वेदनाओ भोगवीछे. (७३). "हे तात! मनुष्य लोकने विषे जे वेदनाओ जणायछे तेना करतां नरक लोकमां अनंत गणां वधारे दुःख अने वेदनाओछे. (७४)* "हे पिता ! सर्व भवने विषे में जे जे वेदनाओ भोगवीछे, तेमां निमेष मात्रपण सुख अथवा साताचु तो नामज नथी." [७५] ए सांभळीने माता पिता कहे छे, "हे पुत्र! तारी इच्छा होय तो सुखेथी दीक्षा ले; पण साधुने काइ रोग थाय त्यारे तेनाथी तेनी चिकित्सा अथवा उपचार थइ शकतां नथी ए अति दोहिलु छे." [७६].

*-गाथा-४७थी ७३ सुधीमां नरकनी विविध वेदनाओनुं वर्णन करेलु छे; ते पैकी गाथा ६३थी ६७ सुधीमां मृगापुत्रे धारण करेला त्रस अने स्थावर भवनां दुःख वर्णव्यां छे, जोके टीकाकारे तो ए गाथाओने पण नरकनां दुःख रूपे वर्णवेली छे।

सोविंतम्मापियरो एवमेय जहा फुट । परिकम्मकोकुणई अरणेमियपक्खिण ॥ ७७ ॥ एगभूओ अरणेवा जहाओ चरइमिगो । एवधम्म चरिस्सामि सजमेण तवेणय ॥ ७८ ॥ जयामियस्स आयको महारन्न मिजायई । अछत रुक्खमूलमि कोणताहे तिगिछ्छई॥७९॥ कोवासे उसहदेइ कोवासे पुछ्छइ सुह । कोवासेभत्तचपाणंवा आहारित्तुपणामए ॥८०॥ जयायसेसुहीहोइ तयागछ्छइ गोयर । भत्तपाणस्स अठ्ठाए वल्लराणि सराणिय ॥ ८१ ॥ खाइत्तापाणियपाउ वल्लरेहिं सरेहिंवा । मिगचारिय चरित्ताण गछ्छइ मिगचारियं ॥ ८२ ॥ एव समुठ्ठिओ एभिक्खू एवमेव अणेगगो । मिगचारिय चरित्ताण उढ्ढपक्कमइदिस ॥ ८३ ॥

ए सांभळीने मृगापुत्र कहे छे, "हे मात! हे तात! आप कहोछो ते तदन साचुं छे. पण अरण्यमा पशु पक्षीओनी सभाळ कोण लेछे? (७७). "जेम मृग एकलो अरण्यमा भटके छे तेम हु पण संयम अने तपथी धर्मना मार्गमां विचरीश. [७८]. "ज्यारे महा अरण्यने विषे मृगने राग उपजे छे अने ते वृक्षना थड पासे पडी रहे छे, ते वखत तेनी चिकित्सा कोण करे छे ? [७९]. "ते मृगने औषध कोण आपे छे? तेने शाता कोण पूछे छे? तेने तृण पाणी कोण आणी आपे छे? अने कोण तेने खवडावेछे ?(८०). "जे वारे ते मृग व्याधि-मुक्त थाय छे त्यारे ते वनमां फरीने लीलु घास चरे छे अने सरोवर तीरे जइने पाणी पीए छे. [८१]. "वनमां चरीने अने सरोवर तीरे पाणी पीइने ते पोतानी मरजी मुजब फरतु फरछे अने अन्य पशुओनी माफक विश्राम लेछे (८२). "ए मृगनी पठे साधु-पुरुष पण (सुख दुःख सहेतो) कोइ स्थळे स्थिरवास करतो नथी अने मृगनी पेठे पोतानी इच्छानुसार भटक्यां करे छे अने आखरे ते ऊर्ध्व दिशा (मुक्ति-मार्ग) तरफ प्रयाण करे छे. [८३].

जहामिए एगअणेगचारि अणेगवासे धुवगोयरेय । एवं मुणीगोयरियं पविट्ठो नोहीलए नोविय खिंसएज्जा ॥ ८४ ॥ मिगचारियं चरिस्सामि एवंपुत्ता जहासुह । अम्मापिओहि अणुन्नाओ जहाइ उवहिंतओ ॥ ८५ ॥ मिगचारिय चरिस्सामि सव्व दुक्ख विमोक्खण । तुझेहिं समणुन्नाओ गच्छपुत्त जहासुह ॥ ८६ ॥ एवंसो अम्मापियरो अणुमाणित्ताण बहुविह । ममत्त छिंदइताहे महानागोव्वकन्चुयं ॥ ८७ ॥ इड्ढीवित्तचमित्तेय पुत्तदारचनायओ । रेणुयंवपडेलग्ग निध्धुणीत्ताण निग्गओ ॥ ८८ ॥ पंचमहव्वयजुत्तो पंचसमिओ तिगुत्तिगुत्तोय । सब्भिंतर बाहिरए तवोकम्मंमि उज्जुओ ॥ ८९ ॥

"जेम मृग पोतानो मेळे पण ठेकाणे फरतु फरे छे अने अनेक स्थाने वास करे छे अने नित्य पोतानो खोराक मेळवे छे, तेम साधुने भिक्षाचर्याने विषे गये तेवो आहार मळे तो पण तेणे तेनो दोष काढवो नहिं अने तेनी निंदा करवी नहि. (८४) "हुं ए मृगनी माफक विचरीश" ए सांभळीने मातापिता कहेछे, "हे पुत्र! तमने जेम ठीक लागे तेम करो." आ प्रमाणे पोताना मातापितानी आज्ञाथी तेणे सघळो परिग्रह छोडी दीधो.(८५]. पुत्र कहेछे, "जो आपनी आज्ञा होय तो हुं ए मृगनी पेठे विचरीश, जेम करवाथी सर्व दुःखथी मुक्त थवाय छे." ए सांभळीने मातापिता कहेछे, "हे पुत्र! तमारी एवी इच्छा छे, तो सुखेथी जाओ."(८६).आ प्रमाणे पोताना मातापितानी फरीथी आज्ञा लइने, सर्प जेम कांचळी मूकीने न्हासे तेम, मृगापुत्रे सर्व ममत्वनो त्याग कर्यो. [८७]. जेम * वस्त्रने लागेली रज खखेरी नांखवामां आवे छे तेम रिद्धि, धन, मित्र, स्त्री, पुत्र अने ज्ञाति-गोत्रादिनो त्याग करीने मृगापुत्र चाली नीकळ्यो. (दीक्षा लीधी) [८८] तेणे पंच महाव्रत धारण कर्यां अने पंच समितिए समित अने त्रण गुप्तिए गुप्त रहीने बाह्य[1] अने अभ्यंतर[2] तप करवामां ते सावधान थयो. [८९].

* मो जेकोबी 'वस्त्र' ने बदले 'पग' लखे छे. मूळपाठमां पडेलग्ग छे=पटेलग्नं=वस्त्रने लागेलु-अर्थ थइ शके छे. १. Bodily
२. Mental

निमम्मो निरहकारो निस्सगो च्चत्तगारवो। समोय सव्वभूएसु तसेसु थावरेसुय ॥ ९० ॥ लाभालाभे सुहेदुक्खे जीविए मरणेतहा। समोनिंदा पससासु तहामाणावमाणओ ॥ ९१ ॥ गारवेसु कसाएसु दडसल्लभएसुय। निय्त्तो हाससोगाओ अनियाणो अवधणो ॥९२॥ अणिस्सिओ इहलोए परलोए अणिस्सिओ। वासीचदण कप्पोय असणे अणसणेतहा ॥९३॥ अप्पसथ्येहि दारेहिं सव्वओ पिहियासवो। अज्झप्पज्झाणजोगेहिं पसथ्थ दमसासणे ॥ ९४ ॥

मृगापुत्र, ममत्वभाव, अहंकार[1], अनुराग[2] अने गर्व[3] रहित थयो अने त्रस या स्थावर, सर्व जीव तरफ समता भावथी वर्तवा लाग्यो. [९०] (भिक्षामां) लाभ अने अलाभ, सुख अने दुःख, जीवित अने मरण, निंदा अने प्रशंसा तथा मान अने अपमान तरफ तेनी समान वृत्ति हती (९१). ते [4]त्रण गर्वथी, [5]चार कषायथी, [6]त्रण दंडथी, [7]त्रण शल्यथी, [8]सप्त भयथी, हर्ष शोकथी, नियाणाथी अने राग द्वेषथी बंधन रहित थयो. [९२]. तेने आ लोक या परलोकनी वांछना हतीज नहि; तेना मनथी तो * वांसलावती शरीर छेदाय यातो तेनापर चंदननो लेप थाय ते सरखुज हतु * अने आहार करवो या उपवास करवो ते पण तेना मनथी तो एक सरखुंज हतुं. [९३]. हिंसादिना अप्रशस्त द्वार तेणे बंध कर्या, सर्व आश्रवने रुंध्या, अने अध्यात्म ध्यानना योगे करीने तेणे प्रशंसनीय विशुद्धता अने जिनशासनना पवित्र सिद्धान्त प्राप्त कर्या—शुभ उपशमवाळा थया. [९४].

---

१. Egoism २. Attachment ३. Conceit ४. त्रण गर्व :—रीद्धि, रस अने साता गर्व. ५. चार कषाय :—क्रोध, मान, माया, लोभ. ६ त्रण दंड :—मन, वचन अने कायाना असद्व्यापार. ७. त्रण शल्या :—माया निदान अने मिथ्या दर्शन. ८. सप्त भय :—आलोक, परलोक, आदान, अकस्मात, मरण, अपयश अने आजिविका भय. * प्रो. जेकोबी आने बदले लखे छे के "मेना मनथी सारी नरसी वस्तुओ समान छे." पण मुळ पाठमां 'वासी चंदन' शब्द छे.

एवं नाणेणचरणेण दंसणेण तवेणय । भावणाहिय विसुद्धाहिं सम्मंभावित्तु अप्पयं ॥ ९५ ॥ बहुयाणियवासाणि सामन्नमणुपालिया मासिएणउभत्तेणं सिद्धिपत्तो अणुत्तरं ॥९६॥ एवं करंतिसंबुध्धा पंडियापवियक्खणा । विणियट्टंति भोगेसु मियापुत्तेजहामिसी ॥ ९७ ॥ महापभावस्स महाजसस्स मियापुत्तस्सनिसम्मभासियं । तवप्पहाण चरियंच उत्तम गइप्पहाणच्चतिलोयविस्सुय ॥९८॥ वियाणिया दुक्ख विवद्धणधणममत्त बंधच्च महाभयावह । सुहावह धम्म धुर अणुत्तर धारेह निव्वाणगुणावह महं त्तिबेमि ॥ ९९ ॥

❀ ॥ इति श्री मियापुत्तियंनाम ज्झयणं ओगणीस संम्मत्त ॥ १९ ॥ ❀

आ प्रमाणे ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप अने निर्मळ भावनाए करीने ते पोते विशुद्ध थया अने घणां वर्ष सुधी चारित्र पाळीने अने एक मासनु अणसण करीने अनुक्रमे सर्वोत्तम सिद्धिने प्राप्त थया (९५-९६). तत्वना जाण पंडित अने विचक्षण पुरुषो आ प्रमाणे वर्ते छे अने मृगापुत्रनी पेठे तेओ संसारना भोगथी निवर्ते छे [९७]. हे भव्य जीव! महा प्रतापी अने यशस्वी मृगापुत्रनो उपदेश साभळीने, अने तेणे उत्तम तपना प्रभावे त्रिलोक विख्यात मुक्ति प्राप्त करी ते चारित्र श्रवण करीने आदरे ते मोक्षना सुख पामे [९८] दुःखने वधारनार, ममत्वने *बंधावनार, अने महा भयने उपजावनार, जे माया तेने तमे धिक्कारो अने धर्मनी सर्वोत्तम अने सुखावह धूरा जे मुक्तिना सुखने देनारी छे ते धारण करो. [९९].

* ओगणीसमुं अध्ययन सपूर्ण *

---

* Fetter of egoism

अध्ययन २०. * निग्रंथोनो महान् धर्म अथवा श्रेणिक राजा अने अनाथि मुनि.

सिद्धाण नमोकिच्चासजयाणंच भावओ । अथ्थधम्मगइतच्चं अणुसट्ठिंसुणेहमे ॥ १ ॥ पभूय रयणोराया सेणिओ मगहाहिवो । विहारजत्त निज्जाओ मडिकुच्छिसिचेइए ॥२॥ नाणादुमलया इन्न नाणापक्खि निसेविय । नाणाकुसुम सञ्छन्न उज्जाण नदणोवण ॥ ३ ॥

हे शिष्य! सिद्ध अने सयत पुरुषोने (आचार्य, उपाध्याय अने सर्व साधुओने) भावथी नमस्कार करीन मारी सत्यशील शिक्षा श्रवण करो. जेम करवाथी अर्थ, धर्म अने ज्ञान प्राप्त थाय छे [१] अनेक रत्नो (गज, अश्व, मणि आदि) ने धारण करनार मगध देशनो अधिपति श्रेणिक राजा एक वखत मडिकुक्षि उद्यानन (चैत्य)२ विषे क्रीडा अर्थे गयो हतो. [२]. नाना प्रकारना वृक्ष वेलाओथी सुशोभीत, विविध प्रकारना पक्षीओनां आश्रमरुप, अने भातभातनां फुलोथी छवायेलुं ते उद्यान नंदनवन३ सरखु शोभी रह्युं हतु. [३].

१ मूळपाठमां 'गइ' शब्द छे. प्रो. जेकोबी ते माटे Liberation शब्द वापरे छे धर्म, अर्थ अने मोक्षनो भावार्थ छे मोक्ष प्राप्त करवानु परम साधन 'ज्ञान' होवाथी, टीकाकारोए ते माटे ज्ञान शब्दनो उपयोग कर्यो छे. २. आगळनी गाथाओनो भावार्थ जोतां चैत्य अहिं उद्याननां अर्थमा वपरायेल छे, नवमा अध्ययननी नवमी गाथामा पण ते आवाज भावार्थमा वपरायेल छे. ३. इन्द्रना बगीचाने नदनवन कहे छे.

तथ्थसो पासईराहं संजयं सुसमाहियं । निसन्न रुक्खमूलम्मि सुकुमाल सुहोइयं ॥ ४ ॥ तस्सरूवंतु पासित्ता राइणोत मिसंजए । अच्चंत परमोआसी अतुलो रूव विम्हओ ॥ ५ ॥ अहोवन्नो अहोरूवं अहोअज्जस्स सोमया । अहोखंती अहोमुत्ती अहोभोगे असंगया ॥ ६ ॥ तस्सपाए उवंदित्ता काऊणय पयाहिणं नाइदूरमणासन्ने पंजली पडिपुच्छई ॥ ७ ॥ तरुणोसि अज्जोपव्वइओ भोगकालम्मि संजया । उवट्ठिओसि सामन्ने एयमट्ठं सुणामिता ॥ ८ ॥ अणाहोमि महारायनाहोमज्झ नविज्जई । अणुकंपगंसुहिं वाविकिंची नाभिसमेमहं ॥ ९ ॥

ते उपवनने विषे श्रेणिक राजाए एक सयमधारी अने समाधिग्रस्त[१] साधुने एक वृक्षनी नीचे बेठेला जोया, जे शरीर सुकुमार अने सुख भोगववाने[२] योग्य जणाता हता. [४]. श्रेणिक राजा ते साधुनु परमोत्कृष्ट अने अनुपम रूप जोइने अत्यन्त आश्चर्य पाम्यो. [५]. ते राजा मनथी विचारवा लाग्यो के, 'अहा! शु तेना शरीरनो वर्ण! शु तेनु रूप! शु लावण्य! अहा! शीए आर्य पुरुषनी सौम्यता! अहा! शी एनी शान्ति अने क्षमा! शी एनी निर्लोभता! अने शी एनी विषयने विषे निस्पृहता.[३] [६] ते साधुना पगने वांदीने अने * तेनी प्रदक्षिणा करीने* श्रेणिक राजा नहि तेनाथी अति दूर के नहि ठेक नजिक एवी रीते बेठो अने हाथ जोडीने प्रश्न करवा लाग्यो. (७). "हे आर्य! आपे तरुणावस्थामा दीक्षा ग्रहण करीछे, हे सयत! युवावस्थाए भोग भोगववा योग्य काळछे, तेमा आप श्रवण-धर्म उपस्थित थयाछो, तेम करवानु कारण आपना मुखेथी साभळवाने हु उत्सुक छु." [८]. मुनि कहेछे, "हे महाराज! हु अनाथ छु. मारे नाथ कोइ नाथ नथी. मारा उपर अनुकम्पा लावे एवो मित्र पण मारे नथी. तेम लगार मात्र अनुकम्पा लावी सुख देनार कांइ नथी (९).

१. Restrained and concentrated २. Accustomed to comfort ३ Disregard for pleasures

*आने बदले मो. जेकोबी लखेछेके' तेने पोतानी जमणी बाजुए राखीने' मुळ पाठमां 'पयाहिण' शब्दछे, जेनो अर्थ प्रदक्षिणा थायछे

तओशेप हसिओराया सेणिओ मगहाहिवो । एवतेइड्ढिमतरस कहनाहो नविज्जई॥१०॥होमि नाहो भयताण भोगेभुजा हिसजया । मित्तनाई परिवुड्ढो माणुस्सखलुदुलह ॥ ११ ॥ अप्पणा विअणाहोसि सेणिया मगहाहिवा अप्पणाअणा होसतोकस्सनाहो भविस्ससि ॥१२॥ एलवुत्तो नरिंदोसो सुसभतो सुविम्हिओ वयण असुयपुव्व साहुणा विम्हयनिओ ॥१३॥ अस्साहत्थी मणुस्सामे पुरअतेउरचमे । भुजामि माणुसेभोए आणाइस्सरियचमे ॥ १४ ॥ एरिसेसपयग्गामि सव्वकाम समप्पिए । कह अणाहो भवईमाहुभते मुसवए ॥ १५ ॥

ए सांभळीने मगधाधिप श्रेणिक राजा हसी पडयो अने बोल्यो के "आप जेवा ऋद्धिना धणीने (सकळ गुण सपन्न पुरुषने) कोइ नाथ न होय ए केम सभवे? (१०)."हे पुज्य! आप जेवा साधु पुरुषोनो हु नाथ [रक्षक] थइश, माटे आप मित्र ज्ञाति सहित भोग भोगवो, कारणके मनुष्यभव (वारवार) प्राप्त थवो दुर्लभछे." [माटे भोग भागवी ल्यो]. (११) साधु कहे छे, "हे मगधाधिप श्रेणिक! तु पोतेज अनाथ छे; अने तुं पोते अनाथ होवा छता बीजानो नाथ शी रीते थइ शकीश?" (१२). पूर्वे कदि नहि सांभळेला एवां मुनिनां वचन सांभळीने राजा अति व्याकुळ थयो अने विस्मय पाम्यो [१३]. राजा कहे छे, "मारे अश्व, हस्ति, मनुष्य, नगर, अत:पुर वगेरे छे * हु मनुष्यने लगता (सर्व) भोग भोगवु छु * अने आज्ञा तथा ऐश्वर्यनो धणी छु. (१४). "सर्व काम अने सर्व अभिलाषाने तृप्त करे एवी महान सपत्तिनो धणी अनाथ केम कहेवाय? हे भगवत! एवो मृषावाद (असत्य) बोलोमां." [१५].

---

* आ वाक्य प्रो. जेकोबीए गाथाने छेडे मूक्यु छे अने तेने आग्रार्थमां लइने एवो अर्थ कर्यो छे के, 'तु मनुष्यने लगता भोग भोगव' जे शब्दार्थ उचित जणातो नथी, कारण मूळपाठमा 'भुजामि माणुसे भोए' शब्दो छे.

नतुमं जाणे अणाहस्सअत्थं पोत्थंच पत्थिवा जहा अणाहो हवई सणाहोवानराहिवा ॥ १६ ॥ सुणेहमे महाराय अव्वक्खित्तेण चेयसा । जहा अणाहो भवई जहामेय पवत्तिय ॥ १७ ॥ कोसम्बीनामनयरी पुराण पुरभेयणी तत्थ आसीपियामज्झ पभूयधणसचओ ॥१८॥ पढमेवए महाराय अतुलामे अच्छिवेयणा । अहोत्था विउलोदाहो सव्वगत्तेसु पत्थिवा ॥ १९ ॥ सत्थजहा परम तिख सरीर विवरतरे आवीलिज्ज अरीकुद्धो एवमे अच्छिवेयणा ॥ २० ॥ तियमे अतरिच्छत्रउत्तमंगंचपीडई । इदासणिसमा घोरा वेयणा परमदारुणा ॥ २१ ॥

मुनि कहे छे, "हे रा ॥! तुं 'अनाथ' शब्दनो अर्थ या उत्पत्ति (मूळ) जाणतो नथी, तेमज हे राजन' सनाथ अने अनाथ केम थवाय छे (अथवा कोने कहेवाय छे) ते पण तु जाणतो नथी. [१६]. "हे महाराज!' कोइ मनुष्य 'अनाथ' केवी रीते कहेवाय छे अने में शा हेतुथी कहेलुछे, ते हु तने कही समळावु छु ते तु एकाग्र चित्तथी श्रवण कर. [१७]. "आ भरतक्षेत्रने विषे कौशाम्बी नामे *(पुराण पुर भेदनी) पुराणी इन्द्रपुरी सरखी शोभायमान नगरी हती. त्या मारा पिता जेणे धननो म्होटो सचय कर्यो हतो ते रहेतो हतो. [१८]. "हे महाराजा! हे पार्थिव! प्रथमावस्था ने विषे मने आखनी अतुल पिडा उपजी, अने मारा सर्व गात्र सखत ज्वरथी बळवा लाग्यां. [१९]. "कोपायमान थयेलो शत्रु घणा जोरथी अति तिक्ष्ण शस्त्र शरीरना विवर (आख, कान, नाक)मां घोंचतो होय, एवी असह्य वेदना मने थवा लागी [२०]. "मारी पीठमा, हृदयमा अने मस्तकमा इन्द्रना वज्र समान अति दारुण अने तिक्ष्ण वेदना थती हती. [२१].

---

* 'पुराण पुर भेदनी' नो शब्दार्थ स्पष्ट समजातो नथी त्था, आसपासनो सबध विचारीने 'इन्द्रपुरी सरखी शोभायमान' एवो अर्थ कर्योछे. पुराणी=घणा काळनी जुनी-पुर भेदनो अर्थ कील्लानो नाश एवो थइ शके छे पण ते घणु खरु इन्द्रने लागु पडाय छे. १. आने बदले मो. जेकोबी लखे छे के 'विज॰ ना आघात समान' मूळपाठमां 'इदासणी समा घोरा' शब्द छे.

उवट्ठियामे आयरिया विज्जामत तिगिच्छगा । अधीया सत्थकुसला मंतमूल विसारया ॥ २२ ॥ तेमेतिगिच्छ कुव्वति चाउप्पाय जहाहिय । नयदुक्खा विमोयाति एसामज्झ अणाहया ॥ २३ ॥ पियामे सव्वसारपि देज्जाहि ममकारणा । नयदुक्खा विमोयति एसामज्झ अणाहया ॥२४॥ मायामे महाराय पुत्त सोग दुहट्ठिया । नयदुक्खा विमोयति एसामज्झ अणाहया ॥ २५ ॥ भायरामे महाराय सग्गाजिट्ठ कणिट्ठगा । नय दुक्खा विमोयति एसामज्झ अणाहया ॥ २६ ॥ भइणीओमे महाराय सग्गाजिट्ठ कणिट्ठगा । नयदुक्खाविमोयति एसमज्झ अणाहया ॥ २७ ॥

"हे राजन ! त्यार पछी मारा निमित्ते विद्वान वैद्योने बोलाववामा आव्या, जेओ चिकित्सा अने मंत्र विद्याना जाण हता, वैद्यक शास्त्रमां कुशळ हता अने मंत्र तथा जडीबुटीना गुणने जाणनारा हता. [२२] "ते वैद्योए मारा रोगनी चिकित्सा करीने, मने आराम थाय एवा उपचार चारे प्रकारे[1] करवा मांडया, पण तेओ मने व्याधि मुक्त करी शक्या नहि; अने तेथी हुं कहुंछुं के हुं अनाथ छुं. (२३). "हे राजा ! मारा पिताए मारा निमित्ते पोतानी सर्वसार वस्तुओ [सघळु धन] आपी दीधी होत, छता ते मने दुःखथी मुकावी शक्यो नहि, तेथी हुं कहुंछुं के हुं अनाथ छुं. [२४]. "हे महाराजा! मारी माता पोताना पुत्रनी पीडा जोइने अति दुःखी थती हती, छतां ते मने दुःखथी छोडावी शकी नहि, तेथी हु कहुछुं के हु अनाथ छुं. [२५]. "हे महाराजा ! मारा ज्येष्ठ अने कनिष्ठ बन्धुओ मने दुःखथी छोडावी शक्या नहि, तेथी हु कहुछु के हु अनाथ छु [२६]. "हे महाराजा ! मारी ज्येष्ठ अने कनिष्ठ भगिनिओ मने दुःखथी मुकावी शकी नहि, तेथी हु कहुछु के हु अनाथ छु. [२७].

१ वमन, विरेचन, मर्दन अने स्वेदन, बीजा चार प्रकार, अंजन, बंधन, लेपन अने मर्दन, आ सिवाय चार अनुकूळता संबंधे पण टीकाकार विवेचन करेछे, १. वैद्यनी अनुकुळता. २. औषधिनी अनुकूळता. ३. दर्दी दवा करावना उत्सुक अने ४. प्रतिचारक प्रेमथी सारवार करवा वाळा पण तैयार.

भारियामे महारायं अणुरत्त मणुव्वया । असुपुन्नेहिं नयणेहिं उरंमे परिसिंचई ॥२८॥ अन्नपाणंचण्हाणंच गधमल्ल विलेवणं । मएनायमनायरा सात्रालानोवभुजई ॥२९॥ खणंपिमे महारायं पासाओ विन फिट्टई । नयदुक्खाविमोयति एसामझ अणाहया ॥ ३० ॥ तओह एवमाहसु दुक्ख माहुपुणो । वेयणा अणुभविउजे समारंमि अणतए ॥ ३१ ॥ सइच्च जइमुच्चेज्जा वेयणा विउलाइओ । खतोदतो निरारभो पव्वइए अणगारियं ॥ ३२ ॥ एवच्च चिंतइत्ताण पसुत्तोमि नराहिवा । परियत्ततीइ राइए वेयणा मेखयगया ।। ३३ ॥ तओकल्ले पभायम्मि आपुछित्ताण बधवे । खतोदतो निरारभो पव्वइओ अणगारियं ॥ ३४ ॥

" हे महाराजा ! मारी स्नेहाळ अने पतिव्रता स्त्री पोताना नेत्रना अश्रुए करीने मारा हृदयने सींचती हती. (२८). " ते सुज्ञ बाळाए खान, पान, स्नान, सुगध, पुष्पमाळ अने अर्चनादिनो उपयोग मारा जाणता या अजाणता कदि कर्यो नहि [२९]. " हे महाराजा ! ते बाळा मारी पासेथी एक क्षण मात्र पण उठीने जती नहि, छता ते मने मारा दुःखथी मुकावी शकी नहि, तेथी हुं कहुछुं के हु अनाथ छु. [३०]. " ते वारे हु एम कहेवा लाग्यो के आ अनत हित समारमां [भव-चक्रमा] फरी फरीने वेदना भोगववी ए अति दोहिलु छे. [३१] " जो एकवार हु आ असह्य वेदनाथी मुक्त थाउं, तो हु क्षमावत, जितेंद्रिय अने निरारम्भी[1] [आरभरहित] अणगार थाउं. (३२). " हे नराधिप ! आ प्रमाणे चिन्तन करतो करतो हु निद्रामा पड्यो तेज रात्रिने विषे मारी सर्व वेदना समी गइ. [३३]. " बीजे दिवसे प्रभातमा, सगासबधीनी आज्ञा लइने, क्षमावत, जितेन्द्रिय अने निरारम्भी[1] साधु पणुं में आदर्युं. (३४).

---

1. Ceasing to act

तओह नाहोजाओ अप्पणोय परस्सय । सव्वेसिंचेव भूयाण तसाण थावराणय ॥ ३५ ॥ अप्पानई वेयरणी अप्पामे कुडसामली । अप्पाकाम दुघाधेणू अप्पामेनंदणवण ॥३६॥ अप्पाकत्ता विकत्ताय दुहाणय सुहाणय । अप्पामित्त मभितच दुपट्ठिय सुपट्ठिओ ॥३७॥ इमाहु अन्नोविअणाहया निवा तमेक चित्तोनिहुओ सुणेहिं नियट्ठधम्म लभियाण वीजहा सीदतिएगे वहुकायरानरा ॥ ३८ ॥ जोपव्वइत्ताण महव्वयाइ सम्मनोफासईपमाया । अणिग्गहप्पाय रसेसुगिद्धे नमूलओ छिंदइ बंधणमे ॥ ३९ ॥

" आ प्रमाण दीक्षा ग्रहण कर्या पछी हु मारो पोतानो तेमज अन्यनो (शुद्ध मरणपणाने लीधे) नाथ [रक्षक] थयो, अने त्रस तथा स्थावरादि सर्व जीवनो नाथ थयो [३५]. "मारो आत्मा एज वैतरणी नदी समान छे, एज शालमली वृक्ष छे, एज आत्मा कामदुघा धेनु समान छे अने एज नंदनवन छे (३६). "एज आत्मा सुख अने दुःखनो कर्ता अने अकर्ता छे; एज आत्मा सदाचारथी वर्ते तो मित्र समान छे अने दुराचारथी वर्ते तो शत्रु समान छे. (३७). " हे राजन! एटलु छता पण अनाथता रही जाय छे; ते अनाथता हु तने कही सभळावुंछुं ते तुं सावधान थइने एकाग्र चित्तथी श्रवण कर :–निर्ग्रंथ (साधु) धर्म प्राप्त थया छता केटलाक कायर मनुष्यो साध्वाचार पाळवामां शिथिलता दर्शावे छे. (३८).* "दीक्षा ग्रहण कर्या छता जे [1]साधु प्रमादने लीधे पंच महाव्रत बराबर पाळतो नथी, जे आत्म-निग्रहकरतो नथी, अने भोगनी इच्छा करे छे, ते (राग द्वेषरूपी) संसारनां बंधनने जड मूळथी छेदी शकतो नथी (३९)

* प्रो. जेकोबी शंका करे छे के गाथा ३८ थी ५३ पाछळथी उमेराइ होय एम जणाय छे, अने तेना कारणमा ते जणावे छे के प्रथमनी ३७ गाथाओमां वर्णवेल विषय साथे आ गाथाओनो संबंध बराबर सचवातो नथी अने वळी आ गाथाओनुं माप आगला श्लोको करतां जुदा प्रकारनुं छे. १. An ordained Monk.

आउत्तयाजरसयनथ्थि काई इरियाए भासाए तहेसणाए । आयाण निक्खेव दुगंछ्णाए नवीरजायं अणुजाईमग्ग ॥४०॥ चिरंपिसेमुडरुई भवित्ता अथिरव्वए तव नियमेहिं भट्ठे । चिरापि अप्पाणकिले सइत्ता नपारए होइ हुसपराए ॥ ४१ ॥ पोलेव्वमुट्ठी जहासे असारे अयतिए कुडकहावणेवाराटामणी वेरुलियप्पगासे । अमहग्गए होइ हुजाणएसु ॥ ४२ ॥ कुसीललिंग इह धारइत्ता इसिझय जीवियवूहइत्ता असंजए सजयजप्पमाणे विणिहायमागच्छइसे चिरपि ॥ ४३ ॥

"जे साधु इर्या (गमनागमनमां), भाषा (बोलवा चालवामां), एषणा (आहार व्होरवामां), आदान-निक्षेप (वस्त्र पात्रादि वस्तुओ लेवा राखवामां), अने पारिष्ठापन (मळ-मूत्रादि क्रियामां), ए पांच समितिने विषे सदा सावधान रहेतो नथी, ते धीर पुरुषोना (तीर्थंकरोना) [1]मार्गने (मोक्षने) प्राप्त करी शकतो नथी. [४०]. "कोइ साधु चिरकाळ सुधी [2]मुडन करे अने आत्माने क्लेश उपजावे, पण जो ते व्रत पाळवामां अस्थिर रहे, अने तप नियमथी भ्रष्ट थाय तो ते कदि संसारनो पार पामी शके नहि [४१]. "पोली [3]मूठी, [4]अयंत्रित कूट-कार्षापण (छाप वगरनुं कूडुं नाणुं), अने वैडूर्य-मणि (नीलम)ना जेवा देखावनो काचनो कटको जेम असार गणाय छे, तेम धर्महीन मुनिने गुणज्ञ पुरुषो वंदनीय गणता नथी. [४२]. "जे सदाचार रहित कुशील साधु, आजीविकाने अर्थे, रजोहरणादिक चिह्न धारण करीने भेखधारी बने छे, अने पोते असंयत होवा छतां संयत होवानो डोळ करे छे, ते दीर्घ काळ सुधी नरकमां पडे छे. [४३].

---

[1]. The road trod by the Lord. [2] दिक्षा पाळे. [3]. Clenched fist [4]. Uncoined

उ.अ. २०

१६१

विसतुपीयं जहकालकूट हणाइ,सथ्थं जहकुग्गहीय। एसोवधम्मो-विसओववसणो हणाइ वेयालइवा विवणो ॥४४॥
जे लख्खण-सुविण पउजमाणे।निमित्तको ऊहल सपगाढे। कुहेडविज्जा सवदारजीवी नगछई सरण तमिकाले॥४५॥
तमतमेणेवउसे-असीले सयादुही विप्परिया समुवेइ । सधावई-नरयतिरिख्खजोणी मोणविराहित्त असाहुरूवे ॥४६॥
उद्देसिय कीयगड नियागं नमुच्चई किंचिअणे सणिज्जा। अग्गीविवासव्व भख्खीभवित्ताईओ चुओ गछइ कट्टुपात्र॥४७॥

"जेम कालकूट विष तेना पीनारने मारे छे, जेम विपरीत रीते पकडायलु शस्त्र तेना पकडनारने हणे छे, अने जेम वेताल तेनुं निवारण न करनारने मारी नाखे छे, तेम जे कोई धर्मने विषय [1]सुखनी वासना साथे मिश्र करे छे, तेने ते धर्म हणे छे. [४५]. "जे साधु शरीरना शुभाशुभ चिह्न प्रकट करे, स्वप्नना फलाफल कहे, भूकपादि कुतूहल लोकोने देखाडे, पुत्र प्राप्तिने माटे स्नानादि क्रिया करावे, अने कुहेटक विद्या (एटले नजरबंदी,मत्र,तत्र) आदि आश्रवद्वारो सेवीने आजीविका करे, तेने जे काळे तेनां पाप कर्मनो उदय काळ आवे त्यारे कोइनु शरण मळतु नथी.[2] [४६]. "आचार भ्रष्ट साधु सदा दुःखी थइने अज्ञानरूपी अधकारमां भ्रमण करे छे अने विपरीत गतिने प्राप्त थाय छे; सयमनी विराधना करनार कुसाधु नरकने विषे धसे छे अने तिर्यच योनिने पामे छे [४६] "जे साधु असूझतो आहार व्होरे—एटले के पोताने मन गमतुं भोजन मागीने ले (अथवा साधुने उद्देशीने तैयार करेलु भोजन ले), मूल्य आपीने साधुने निमित्ते लीधेलो खोराक व्होरे, अथवा नित्य-पिंड [एटले अमुक घेरथी हमेशां आहार व्होरे] ग्रहण करे, अने अग्निनी पेठे सर्व-भक्षी होय ते आ मनुष्य भवमा भ्रष्ट थइने छूट्या बाद दुर्गतिने विषे जाय छे.[3] [४७].

---

[1]. Sensuality. [2]. प्रो. जेकोबी आ माटे नीचे मुजब शब्दो वापरे छे. He who practises divination from bodily marks and dreams, who is well versed in augury and superstitious rites, who gains a sinful living by practising magic tricks, will have no refuge at the time of (retribution) [3]. दरेक सम्प्रदायना आचार्यश्रीए आवी शिथिलता प्रवेशवा न पामे ते माटे खास सावधानी राखवी घटे छे.

नत अरीकंठछेता करेइ जसेकरे अप्पणिया दुरप्पया सेनाहई मच्चुमुहत्तु पत्ते पच्छाणुतावेण दयाविहूणो ॥ ४८ ॥
निरठ्ठिया निग्गरुईउ तरसजेउत्तमट्ठे विवज्जासमेई । इमेविसेनथ्थि परेविलोए दुहओ विसेखिज्झइतथ्थ लोगे ॥४९॥
एमेवहा छदकुसीलरुवे मग्गंविराहित्तु जिणुत्तमाण कुररी विवाभोग रसाणुगिद्धा निरठ्ठसोयापरि यावमेइ ॥ ५० ॥
सोच्चाण मेहाविसुभासिय इम अणुसासण नाणगुणो ववेय । मग्ग कुसीलाण जहायसव्व महानियं ठाण वएपहेण ॥५१॥
चरित्तमायार गुणण्णिएतओ अणुत्तर सजमपालियाण । निरासवेसखवियाणकम्म उवेइठाण विउलुत्तम धुव ॥५२॥

" दुरात्मता [दुष्टाचार] जे दुःख उपजावे छे तेवुं दुःख गळु वाढनार वेरी पण उपजावी शकतो नथी;१ दयारहित मनुष्यने मरण समये पश्चाताप थाय छे. [४८]. " जे साधु संयमरुपी उत्तम मार्गने विषे विपरीत गतिथी वर्ते छे, तेनु चारित्र [नग्न-रुचि] निष्फळ थाय छे, ते आ लोक के परलोक साधी शक्तो नथी, अने उभय लोकनां सुखथी भ्रष्ट थाय छे. [४९]. " आ प्रमाण जे स्वच्छदी, कुशील साधु उत्तम जिन-मार्ग विराधीने टीटोडीनी पेठे रस-भोगमा ग्रस्त रहे छे, तेने [पछीथी थतो] शोक, पश्चात्ताप निरर्थक छे. (५०). " हे पंडित ! हे राजन ! आ शुभाषित अने ज्ञान दर्शन चारित्रना गुणवाळो उपदेश सांभळे छे, ते कुशील मार्ग तजे छे अने महा निग्रथनो मार्ग सेवे छे. [५१]. " जे कोइ चारित्राचारना गुणे करीने सहित छे, जे सर्वोत्तम संयम पाळे छे, जेणे सर्व आश्रव रुंध्या छे,२ अने जेणे हिंसारहित आठ कर्मने खपाव्यां छे, ते विपुल, उत्तम अने निश्चळ ३ मुक्तिने पामे छे. " [५२].

१ A cut throat enemy will not do him such harm as his own perversity will do him
२ Who keeps from sinful influences ३. The permanent place.

एवुग्गदंतेविमहातवोधणेमहामुणी महापइण्णे महायसे । महानियंठिज्जमिणं महासुयंसेकहि एमहयाविथ्थरेणं ॥ ५३ ॥ तुठ्ठोयसेणिओ रायाइणमुदाहु कयजली । अणाहत्त जहाभूय सुठ्ठुमेउवदसिय ॥ ५४ ॥ तुझंसुलद्धखुमणुस्सजम्म लाभासुलद्धाय तुमेमहेसी । तुम्हेसणाहाय सबधवाय जभेट्ठिया मग्गजिणुत्तमाण ॥ ५५ ॥ तासिणाहो अणाहाणं सव्व भूयाण संजया खामेमिते महाभागा इच्छामि अणुसासिउ ॥ ५६ ॥ पुच्छिऊणमएतुझंझाणविग्घो उजोकओ । निम तियाय भोएहिं तसव्व मरिसेहिमे ॥ ५७ ॥ एव थुणित्ताण सरायसीहो अणगारसीह परमाइभत्तिए । सउरोहो सपरियणो सबधवो धम्माणुरत्तो विमलेण चेयसा ॥ ५८ ॥

उग्र तपस्वी अने इन्द्रियोने दमनार महामुनि अने महा पडित जेणे पच महाव्रत सेव्यां छे अने जे महा यशना धणी छे, तेणे उपर प्रमाणे श्रेणिक राजाने महा निग्रथना महान धर्मनो विस्तारथी उपदेश कर्यो. [५३]. श्रेणिक राजा संतुष्ठ थइने, हाथ जोडीने आ प्रमाणे बोल्यो, " अनाथत्व शु ? तेनु आपे मने बराबर दर्शन [भान] कराव्यु छे. [५४]. " हे महर्षि ! आपे मनुष्य जन्मनुं सार्थक कर्यु छे, आपे धर्म लाभ बराबर लीधोछे, आप पोते सनाथ छो, अने बाधव, ज्ञाति, कुटुंबादिकना पण नाथ छो, कारण के आप श्री तीर्थंकरोना भाखेला उत्तम मार्गने विषे रह्या छो. [५५]. " हे सयत ! आप अनाथ प्राणीओना नाथ छो ; हे महाभाग ! हु आपने खमावुं छु, अने मने आप खरे रस्ते चडावो एम इच्छु छु. (५६). " आपने प्रश्नो पूछीने में आपना ध्यानमां विघ्न कर्यु छे, अने आपने मैं भोग भोगववानु निमत्रण कीधुं छे, ते सर्वे मारा अपराध क्षमा करो. " (५७). आ प्रमाणे राजाओमां सिंह समान श्रेणिक साधुओमां सिंह समान मुनिवरनी परम भक्ति पूर्वक स्तुति करीने, पोतानी स्त्रीओ, परिवार अने बाधवो सहित श्री जिन धर्मने विषे शुद्ध मनथी अनुरक्त थयो. * (५८).

---

* Became a staunch believer in the Law

उरमसिय रोमकुवो काऊणय पयाहिण । अभिवदि ऊणसिरसा अइयाओ नराहिओ ॥ ० ॥ ईयरोवि गुणसमिद्धोतिगुत्तिगुत्तोतिदंड विरओय विहगइव विप्पमुक्को विहरइव सुह विगयमोहो तिबेमि ॥ ६० ॥

● ॥ इति श्री महानियठिज्जं झयण वीसम सम्मत्त ॥ ●

हर्षथी जेना शरीरनां रोमांच उभां थयां छे एवो श्रेणिक नराधिप मुनिश्वरने *प्रदक्षिणा दइ*, मस्तक नमावी वंदणा करीने पोताने घेर गयो. [५९]. अने गुणे करीने समृद्ध, त्रण गुप्तिए गुप्त, मन, वचन, कायाये करीने पाप कर्मथी निवृत्त, एवा ममत्वभाव अने मोह रहित मुनि पक्षिनी [१] पेठे ज्गतने विषे विचरवा लाग्या. (६०).

—(* वीसमु अध्ययन संपूर्ण. *)—

---

* अने पडले आगळ माफक प्रोफेसर जेकोबी ल्खे छे के " पोतानी जमणी बाजुए राखीने ".
[१] Free like a bird

अध्ययन २१मुं. * समुद्रपाल.

चंपाए पालिए नामंसावए, आसिवाणिए । महावीरस्स भगवओ सीरसोसोओ महप्पणो ॥१॥ निग्गथे पावयणेसावए सेनिकोविदे । पोएण ववहरते पिहुडनगरमागए ॥२॥ पिहुडे ववहरतस्स वाणिओ देइधूयरं । त ससत्त पइगिझसदेस अहपथ्यिए ॥ ३ ॥ अहपालियस्स घरणी समुद्दम्मिपसवई । अहदारए तहिजाए समुद्दपालेत्तिनामए ॥ ४ ॥ खेमेण आगए चपसाबए वाणिए घर । सवढ्ढई घरेतस्स दारएसे सुहोइए ॥५॥ बावत्तरी कलाओय सिख्खिए नीइकोविए । जोव्वणेणयसपण्णे सुरूवे पियदसणे ॥ ६ ॥

⊛ अध्ययन २१. ⊛

चंपा नगरीने विषे पालित नामे श्रावक वाणियो (व्यापारी) रहेतो हतो. ते महापुरुष श्री महावीर भगवानना शिष्य हतो (१). ते श्रावक तरीके श्री वितरागनां सिद्धांतमा (जिन शास्त्रमां) प्रवीण हतो. ते एक वखत व्यापार अर्थे वहाण लइने पिहुड नगरमा गयो. [२] . ते पिहुडमां व्यापार करतो हतो एवामा त्याना कोइ वेपारीए तेने पोतानी पुत्री परणावी ते स्त्री ज्यारे सगर्भा थइ त्यारे ते वाणिओ तेने साथे लइने स्वदेश जवा नीकळ्यो.(३). पालितनी स्त्रीने समुद्रने विषे प्रसव थयो; ते बाळक समुद्रमां जन्मेलु होवाथी तेनु नाम समुद्रपाल पाडवामां आव्यु. [४], ते वणिक-श्रावक चपा नगरीमा कुशल क्षेम पोताने घेर आवी पहोंच्यो. त्यां ते बाळक सुख च्हेनमा वृद्धि पामवा लाग्यो. [५]. ते बाळक बहोंतेर कळा शीख्यो, अने नीति शास्त्रमां* निपुण थयो; ते अनुक्रमे युवावस्थाने पाम्यो; तेनु स्वरूप अति सुदर अने मुखाकृति मनोहर हतो. [६].

---

* Knowledge of the world

तरसरूवत्रई भज्जापिया आणेइ रूविणीं । पासाए कीलए रम्मोदेवो दोगुंदगो जहा ॥ ७ ॥ अह अन्नया कयाई पासाया लोयणेट्ठिओ । वज्ञ मंडणसोभागं वज्ञपासइ वज्ञग ॥ ८ ॥ त पासिऊण संवेगं समुद्दपालोइण मब्बवी । अहो असुहाणकम्माणंनिज्जाणं पावगइम ॥ ९ ॥ संबुद्धोसो तहिं भगव परमंसंवेगमागओ आपुछम्मापियरो पब्बइए अणगारियं ॥ १० ॥ जहित्तु सगंथ महाकिलेसं महतमोह कसिणं भयावहं । परियाय धम्मच भिरोयएज्जा वयाइंसीलाइं परीसहेय ॥ ११ ॥

तेना पिताए तेने रुपिणी नामे अति रुपवती भार्या परणावी; ते पोताना रमणीक महेल्मां पोतानी स्त्री सगाथे दोगुंदक देवनी पेठे क्रीडा करवा लाग्यो. (७). एक समये ते पोताना महेल्ना झरूखामां बेठो बेठो नगरनी शोभा जोतो हतो एवामां तेणे देहांत दंडनी सजा पामेला एक चोरने वध-शणगारयुक्त * वध-भूमिने विषे लइ जतां जोयो. [८]. ते जोइने समुद्रपाल वैराग्यवंत थयो अने बोली उठ्यो के " पाप कर्मनुं आ अशुभ फल छे. " [९]. ते समुद्रपाल महात्मा त्यांथीज प्रतिबुद्ध[१] थयो अने तेने परम संवेग (वैराग्य) उपज्यो; पोताना माता पितानी आज्ञा लइने तेणे साधु-धर्म अंगीकार कर्यो. (१०). स्वजनादिनो सम्बन्ध जे महा क्लेश अने महा मोहना कारण रुप छे, अने कृष्णलेश्या तथा भयना हेतुरुप छे, तेनो त्याग करीने, परियाय[२] [प्रव्रज्या] धर्म उपर रुचि राखवी जोइए, पंच महाव्रत अने शीलाचार सेववां जोइए अने बावीश परिसह सहेवां जोइए. [११].

---

* मोतनी सजा माटे लइ जती वखते आगळना वखतमां वेदीने चंदन वीगेरे चोपडतां, करेणनां फूल्नी माळा तथा वस्त्रो पेरावतां. १. Enlightened २. Law of the monks.

अहिंस सच्चच अतेणगच्च तत्तो यवभं अपरिग्गहंच। पडिवज्जिया पचमहव्वयाइचरिज्जा धम्मजिणदेसियविऊ ॥१२॥
सव्वेहिं भूएहिंदयाणुकपी खतिखमे सजयबंभयारी सावज्जाजोग परिवज्जयतो। चरिज्ज भिक्खूसु समाहिइदिए
॥ १३ ॥ कालेण काल विहरिज्जरट्ठे वलावल जाणिय अप्पणोय । सीहोव्व सद्देण नसतसेज्जा वयजोग सोच्चाण
असब्भ माहु ॥ १४ ॥ उवेहमाणोउपरिव्वएज्जा पियमप्पिय सव्व नितिक्खएज्जा । न सव्व सव्वत्थभिरोयएज्जा
नयाविपूयगरहच सजए ॥ १५ ॥

जीवदया पाळवी, सत्य बोलवु, अदत्ता दान न लेवु, ब्रह्मचर्य सेववुं अने परिग्रह न राखवो, ए पच महाव्रत अगीकार करीने जिन-भाषित धर्म पडित साधुए सेववो. (१२). साधुए सर्व जीव प्रति दया राखवी, क्षमावान थवु, सयम पाळवो, ब्रह्मचर्य सेववुं अने जेथी पाप लागे ते सर्व त्यागवु अने इन्द्रिय दमन करीने देशने विषे विचरवु. [१३]. + प्रत्येक पहोरे ते काळने योग्य [ध्यानानुष्ठान तपादि] कार्य पोताना आत्मानु बलाबल विचारीने करवु,+ भयानक शब्द सांभळीने सिहनी माफक चमकवुं नहि; अने कोइनां मखे तेवां कठोर वचन सांभळवा छतां असभ्य वचन उचारवु नहि. (१४). प्रिय अने अप्रिय सघळु एक सरखी रीते सहन करीने, मनमां काइ पण आण्या सिवाय, गामो गाम विचरवु, सर्वत्र सर्व वस्तु तरफ अभिरुचि राखवी नहि, अने कोइ पोतानी स्तुति करे या निंदा करे ते उपर समान भाव राखवो. (१५).

+ आने बदले प्रो. जेकोबी एवो अर्थ करे छे के " प्रत्येक देशनां साधन अने पोतानी शक्तिनो विचार करीने साधुए बलतो परत ते देशमां विचरवु. "

अणुनए नावणए महेसीनयाविपूयंगरहंच संजए । सेउज्जुभाव पडिवज्ज संजए निव्वाणमग्गं विरएउवेइ ॥ २० ॥
अरइरइ सहेपहीणसथवे विरए आयहिए पहाणवं परमट्ठप एहि चिट्ठई छिन्नसोए अममे अकिंचणे ॥ २१ ॥
विवित्त लयणाइ भएज्जताई निरोवलेवाइ अस थडाइ इसीहिं चिन्नाइ महायसेहिंकाएण फासेज्जा परिसहाइं ॥२२॥
सनाण नाणोवगओ महेसी अणुत्तरंचरिओ धम्मसचय अणुत्तरेनाणधरेजससी । उभासईसूरिएवंतरिक्खे ॥ २३ ॥

महर्षि अभिमानथी अति उच्च, अथवा अतिदीन थता नथी, पोतानी स्तुतिथी हर्ष पामता नथी, अने निंदाथी दुःख आणता नथी. उन्नत अने अवनत भाव रहित [अथवा विरक्त थयेल] साधु [समुद्रपाल] पोतानी सरळताए करीने निर्वाण-मार्गने प्राप्त करी शक्या [२०]. विद्वान साधु रति अरति सहन करे छे, कोइनो परिचय सेववो नथी, सर्व वस्तुथी विरक्त रहे छे, पोताना आत्मानुं हित विचारे छे अने संयम सहित परमार्थ पदे [मोक्ष मार्गे] विचरे छे, अने शोक, ममत्व तथा परिग्रहथी मुक्त रहे छे. [२१]. सर्व जीवोना प्रतिपाल साधु एकान्त, १ निर्लेप अने जीव जंतु रहित उपाश्रयने सेवे छे* अने महर्षिओए सहन करेला सर्व परिसह कायाए करीने सहे छे. (२२). महर्षि समुद्रपाल ज्ञान-बोध ग्रहण करीने अने सर्वोत्तम चारित्र संपूर्ण रीते पाळीने, जेम आकाशमां सूर्य बीराजे छे, तेम ते केवळ ज्ञान अने तपना प्रभावे करीने बीराजवा लाग्या. [२३].

* आने स्थळे प्रो. जेकोबी एवो भावार्थ करे छे के ' दयाळु साधुए बीजा साधुओथी दूर पोतानी शय्या करवी जोइए, अने जे शय्या तेने माटे खास तैयार करेली अने जीवजंतु वाळा पदार्थोनी बनेली न होवी जोइए !'. १. साधुओने माटे खास साफ करेल न होय एवो भावार्थ कोइ टीकामांथी मळे छे.

दुविहंखवेऊणयपुन्नपाव निरंगणे सव्वओ विप्पमुक्के । तरित्तासमुद्दंच महाभवोह्‌समुद्दपालो अपुणागमगइगए त्तिबेमि ॥ २४ ॥

→। इति श्री समुद्दपालियनाम ज्झयणं एकवीसमं सम्मत्त ॥←

अध्ययन २२. रथनेमि (रहनेमि).

सोरियपुरंमि नयरे आसिराया महड्डिए । वसुदेवेत्तिनामेण रायलक्खण संजुए ॥ १ ॥ तस्सभज्जा दुवेआसी रोहिणी देवइतहा । तासिंदुण्हंपिदोपुत्ता इट्ठाराम केसवा ॥ २ ॥

शुभ अने अशुभ बन्ने प्रकारनां कर्मने खपावीने, संयमने विषे निश्चळ रहीने, अने सर्व बंधनथी मुक्त थइने, समुद्रपाल साधु संसार-समुद्र तरीने अपुनरागम गतिने [मुक्तिने] प्राप्त थया. [२४].

* एकवीसमुं अध्ययन संपूर्ण. *

अध्ययन २२.

*सौर्यपुर नगरने विषे वसुदेव नामे महा ऋद्धिवान राजा राज्य करतो हतो; ते राज-लक्षणे करीने (छत्र, ध्वजा, चामरादि) सहित हतो. [१]. ते राजाने रोहिणी अने देवकी नामे बे राणीओ हती. ते प्रत्येकने राम अने केशव नामे अकेक प्रिय पुत्र हतो. [रोहिणीने राम अथवा बलभद्र अने देवकीने केशव अथवा कृष्ण] (२).

---

*. प्रथम ब्राह्मण प्रमाणे वसुदेव मथुरामां रहेता हता. सौर्यपुर ए मथुरानुं नगर नाम होतुं जोइए जरासंधे मथुरानगर उपर हुमला कर्या तेथी श्रीकृष्णे द्वारका नगरी वसावी अने आ अध्ययनमां प्रकाशेली हकीकत श्री द्वारकामां बनेली छे.

सोरियपुरम्मिनयरे आसिराया महिड्डिए। समुद्दविजएनाम रायलख्खणसंजुए ॥ ३ ॥ तस्सभज्जा सिवानाम तीसे पुत्ते महायसे। भयवं अरिट्ठनेमित्ति लोगनाहे दमीसरे ॥४॥ सोरिट्ठनेमिनामाउ लख्खणस्सरसंजुओ। अट्ठसहस्सलख्ख-णधरो गोयमो कालगच्छवी ॥ ५ ॥ वज्जरिसहसंघयणो समचउरसो फसोयरो। तस्सरायमइकन्नं भज्जंजायइ केसवो ॥ ६ ॥ अहसाराय वरकन्ना सुसीला चारुपेहिणी। सव्वलख्खणसंपन्ना विज्जूसोया मणीप्पभा ॥७॥ अहाहजणउ तिसे वासुदेव महड्ढिय। इहा गच्छओ कुमारो जासेकन्न दलामह ॥८॥

सौर्यपुर नगरने विषे समुद्रविजय नामे बीजो एक महा ऋिद्धिवान राजा हतो; ते पण राज लक्षणे करीने युक्त हतो. [३]. तेनी राणीनु नाम शिवादेवी हतु. तेने महायशस्वी भगवत अरिष्टनेमि (नेमीनाथ) नामे पुत्र हता जे *लोकनाथ अने [१]दमीश्वर (एटले आ लोकने तारनार अने जितेन्द्रिय पुरुषोना इश्वर समान) हता. [४]. आ अरिष्टनेमि उत्तम स्वर-लक्षणे करीने सहित अने एक हजारने आठ शुभ लक्षणना धरणहार हता; ते गौतम गोत्रना अने श्याम कान्तिवाळा हता. [५]. तेमनु शरीर वृषभना जेवु मजबूत अने वज्रना जेवु सखत हतु, तेमना अवयवो प्रमाणशुद्ध हतां अने तेमनु उदर मत्स्यना उदर सरखुं हतु. केशवे नेमिनाथ नी भार्या तरिके राजिमती कन्यानु मागु कर्यु (६) आ उत्तम राज कन्या ([२]उग्रसेन राजानी पुत्रि) सुशील अने सुंदर हती; ते सर्व शुभ लक्षणे संपुर्ण हती अने सौदामिनी विद्युत प्रभाना सरखी तेनी कान्ति देदीप्यमान हती. (७). राजिमतीना पिता उग्रसेने महा ऋिद्धिवान कृष्ण वासुदेवने कह्यु के "नेमि-कुमार मारी पासे आवे एटले हु तेमने मारी कन्या आपीश." [८].

* Savior of the world १. Lord of the ascetics २. श्री कृष्णे कंसने मारीने उग्रसेनने गादी आपी हती एम विष्णुपुराण कहे छे.

सव्वोसहिहिं ण्हविओ कयकोउय मंगलो । दिव्वजुयलं परिहिउ आभरणेहिं विभूसिउ ॥ ९ ॥ मत्तंच गंधहत्थिंच वासुदेवस्स जिट्ठगं । आरूढो सोहए अहियं सिरे चुडामणीजहा ॥१०॥ अह ऊसिएण छत्तेण चामराहि यसोहिओ । दसारचक्केण य सो सव्वउ परिवारिओ ॥ ११ ॥ चउरंगिणीए सेणाए रइयाए जहक्कम । तुरियाण सन्निनाएण दिव्वेण गगणफुसे ॥ १२ ॥ एयारिसीए इड्ढीए जुइए उत्तमाय इ । नियगाओ भवणाओ निज्जाओ वण्हिपुंगवो ॥ १३ ॥ अह सो तत्थ निज्जंतो दिस्स पाणे भयदुए । वाडेहिं पंजरेहिंच सनिरुद्धे सुदुक्खिए ॥ १४ ॥ जीविय तंतु मपत्ते मंसट्ठा भक्खियव्वए । पासित्ता से महापन्ने सारहिं इणमब्बवी ॥ १५ ॥

ते उपरथी नेमि-कुमारने सर्व सुगंधी औषधिथी स्नान कराववामां आव्यु, लौकिक मंगळ क्रियाओ करवामां आवी, दिव्य वस्त्र धारण करावामां आव्यां अने अलंकारोथी शणगारवामां आव्या.[९]. वसुदेवना उत्तम गंध-हस्ति उपर ते आरूढ थया, अने मस्तक उपर जेम चूडामणि [मुकुट] शोभे तेम शोभवा लाग्या. [१०]. माथे छत्र धारण कर्युं छे, बे पासे चामर ढोळाय छे, दशार्ह (यादवो)नो समुदाय चोतरफ विंटळायेलो छे, चतुरंगिणी सेना यथाक्रम गोठवायेली छे, अने विविध प्रकारना वाजिंत्रोना दिव्य नाद आकाशे पहोंची रह्या छे. [११-१२]. आवी उत्तम ऋद्धि अने कान्ति सहित वृष्णिपुंगव (यादव-कुळ भूषण) पोताना मन्दिरेथी बहार नीकळ्या (१३) आगळ चालतां तेमणे अनेक प्राणीओने पांजरामां अने वाडामां पूरेला जोयां;तेओ अति भय-भ्रान्त थयेलां अने दुःखी देखातां हतां [१४]. तेमने मारीने पछीथी ते मांस भक्षण करवानी खातर आटला बधां प्राणीओनो अंतकाळ नजीक जोइने ते महा बुद्धिशाळी पुरुष पोताना *सारथीने आ प्रमाणे कहेवा लाग्या.[१५].

* १०मी गाथामां हाथीपर बेठेल जणावेल छे आमां रथपर जणावे छे. शेहेरमांथी नीकळ्या त्यारे हाथीपर होय अने पछी रथमां बेठेला होय एम अनुमान थाय छे. प्रो. जेकोबी तो दशमी गाथा पाछळथी उमेरायेली माने छे.

करसट्टाइमेपाणा एएसव्वे सुहेसिणो । वाडेहि पजरेहिंच सनिरुद्धेय अथ्थइ ॥१६॥ अहसारहीतओ भणई एएभद्दाउ पाणिणो । तुज्झ विवाहकज्जमि भोयावेउ बहुजण ॥ १७ ॥ सोऊण तस्स सोवयण बहुपाणिविणासण । चिंतेइसे महापन्ने साणुक्कोसे जिएहिउ ॥ १८ ॥ जइमज्झ कारणाएए हम्मतिसु बहुजिया । नमे ए यतु निस्सेस परलोए भविस्सई ॥ १९ ॥ सोकुडलाण जुयल सुत्तगच्च महायसो । आभरणाणिय सव्वाणि सारहिस्सपणामए ॥ २० ॥ मण परिणामेयकए देवाय जहोइय समोइन्ना । सव्वड्ढीए सपरिसा निख्खमण तस्सकाउजे ॥ २१ ॥

"आटलां बधां प्राणीओ, जे सर्व सुखनी अभिलाषा राखता हशे, तेमने पांजरामां अने वाडामां शामाटे पूरी राखवामां आव्यां हशे ?" (१६). सारथीए उत्तर आप्यो के, "हे स्वामिन्! आ प्राणीओ पूर्ण भाग्यशाळी के आपना विवाह प्रसंगे अनेक जनाना भोजनना उपयोगमां तेओ आवी शकशे।" (१७). सारथीनां आवां वचन सांभळीने, अने घणा प्राणीओनो विनाश थतो जाणीने सर्व जीव तरफ दया राखनार अने प्राणी मात्रनु हित विचारनार ते महाप्राज्ञ पुरुष आ प्रमाणे विचारवा लाग्या:–(१८). "जो मारा [विवाह] निमित्ते आटला बधां प्राणीओ हणाशे तो परलोके मारु कल्याण थशे नहि." (१९). ते उपरथी महायशस्वी नेमिनाथे पोताना कानना बन्ने कुंडलो, *कटि सूत्र (कडनो कंदोरो) अने सर्व आभरणो उतारीने सारथीने आपी दीधा. (२०). नेमिकुमारनुं मन-परिणाम जोइने, देवताओ यथोचित समये पोतानी सकल ऋद्धि अने परिवार साथे, तेमनो दीक्षा महोत्सव उजववाने आव्या. [२१].

---

* मो. नेकोरी Neck-Chain अर्थ करे छे.

देव मणुस्स परिवुडो सिवियारयणंतओ समारूढो । निरगमित्र धारगाउ रेवयं मिठिउ भयवं ॥ २२ ॥ उज्जाणंमि नपत्तो उइन्नो उत्तम'ओसीयाओ । साहस्सीए परिवुडो अहनिक्खमइउ चित्ताहिं ॥ २३ ॥ अहसो सुगधिगधिए तुरियं मिउय कुंचिए । सयमेव लुचिइ केसे पचमुठ्ठीहिं समाहिए ॥२४॥ वासुदेवोइण भणइ लुत्तकेसजिइंदियं । इच्छियमणो रहंतुरियं पावेसुत दमीसरा ॥ २५ ॥ नाणेण दसणेणच्च चरित्तेणं तवेणय खंतीए मुत्तीए वद्धमाणो भवाहिय ॥ २६ ॥ एवंते रामकेसवा दसाराय बहुजणा । अरिट्ठनेमिं वंदित्ता अइगया बारगापुरिं ॥ २७ ॥

देव अने मनुष्योथी विंटळायेला भगवान नेमि कुमार उत्तम शिबिका [पालखी]मां बेसीने, द्वारिकाथी नीकळीने रेवतक [गिरनार] पर्वत गया. [२२]. रेवतकना उद्यानमां (सहस्रावनमां) आवीने* श्री नेमिकुमार पोतानी उत्तम शिबिकामांथी नीचे उतर्या अने चित्रा नक्षत्रने विषे तेमणे एक हजार राजविओ सगाथे दीक्षा ग्रहण करी. (२३). त्यारपछी नेमिनाथे स्वहस्ते पोताना मृदु सुगंध वाळा, सुकुमार, वांकडिया वाळनो पंच मुष्टिए लोच कर्यो. [२४]. त्यारपछी कृष्ण-वासुदेव, समुद्रविजय आदि नृपतिओ ते जितेन्द्रिय पुरुष जेणे केशलोचन कर्युं छे तेने कहेवा लाग्या हे दमीश्वर ! आपना इप्सित मनोरथ शीघ्र सफळ थाओ. [२५]. " आपनां ज्ञान, दर्शन, चारित्र, क्षमा अने निर्लोभ सदा वृद्धि पामो. " (२६). आ प्रमाणे राम, केशव, दशार्ह [यादवो] अने बीजा अनेक लोको श्री अरिष्टनेमिने वांदीने द्वारिकापुरीमां पाछा आव्या. [२७].

---

* मो. जेकोबी Surrounded by thousands अर्थ करेछे पण मूळ पाठ अने टीकामां जे शब्दो छे ते परथी एवो अर्थ नीकळे छे के एक हजार राजवी समान पुरुष साथे दिक्षा ग्रहण करी.

सोऊण रायवरकन्ना पव्वज्जांसा जिणरसओ । निंहासाय निराणदा सोगेणउ समुथ्थया ॥ २८ ॥ रायमइ विं‍च्तेइ धिरथ्थु ममजीविय । जाहतेण परिच्चित्ता सेयपव्वइओमम ॥२९॥ अहसा भमरसनिभे कुच्च फणगपसाहिए । सयमेव लुच्चइकेसे घिइमता ववरिसया ॥३०॥ वासुदेवोइण भणई लुत्तकेसाजि इदिय । ससार सागर घोर तरकन्नेलहुलहु

३१ सापव्वइयासती पव्वावेसी तहिंवहु । सयण परियणचेव सीलवंता बहुस्सुया ॥३२॥

राज कन्या राजिमतीए ज्यारे नेमिनाथे दीक्षा ग्रहण कर्यानु साभळ्युं, त्यारथी तेनो हर्ष अने आनद उडी गयो अने ते शोकमा *गिरफतार थइ गइ. [२८]. राजिमती पोताना मनथी विचारवा लागी के 'नेमिनाथे मारो परित्याग कर्यो तेथी मारा जीवितने धिक्कार छे. हवे मारु श्रेय (पण) दीक्षा लेवामाज समायेलु छे.' [२९]. पोताना काळा भ्रमर जेवा केश जे कूर्च-फनकथी [दातिथी] समारेला हता तेनो राजिमतीए धैर्य अने दृढताथी पोताने हाथे १लोच कर्यो. (३०). राजिमती जेणे केशनो लोच करेलो छे अने जेणे पोतानी इन्द्रिओने वश करेली छे तेने कृष्ण-वासुदेव कहे छे-"हे कन्या! घोर ससार समुद्रथी शीघ्र पार उतरी जाओ." (३१). दीक्षा ग्रहण कर्या पछी ते शीलवती अने बहुश्रुत कन्याए पोताना स्वजन, परिजनादि द्वारिकाना बहु जनोने दीक्षा अपावी. (३२).

*आ प्रसंग, विक्रम नामना कविए 'श्री नेमीदूत काव्य' नामना अद्भूत सस्कृत काव्यमा गुथेलो छे, पादपूर्ती जेवी ए कृतिए योजना थयेली छे. दरेक काव्यनी छेल्ली लींटी कवि कालीदासना मेघदूतमांथी लइने, आ प्रसंगनी नण नण लींटीओ बनाववामां आवी छे. १. 'लोच कर्यो' ने बदले मो. जेकोबी लखे छे के 'कापी नाख्या' अने एवो अर्थ करवाना आधारमा पोतानी मान्यता जणावे छे के स्त्रीओ लोच करती नथी, पण वाळ कपावी नाखे छे; पण ए एनी मान्यता भूल भरेली छे.

गिरिंरेवयंजंती वासेणोल्लाउ अंतरा। वासंते अंधयारंमि अंतो लयणस्स साठिया ॥ ३३ ॥ चीवराइं विसारंती जहा जाइत्ति पासिया। रहनेमी भग्गचित्तो पच्छादिट्ठोयतीइ एवि ॥३४॥ भीयाय सातहिंदठु एगंतेम जयंतय। बाहाहिं काओ संगोफ वेवमाणी निसीयई ॥ ३५ ॥ अहसोविरायपुत्तो समुद्दविजयगओ। भीयपवेइय दठु इमवक्क मुदाहरे ॥३६॥ रहनेमी अहंभद्दे सुरूवे चारुभासिणि। मम भयाहि सुतणुनतेपीला भविस्सई ॥३७॥ एहिता भुंजिमोभोए माणुस्सखु सुदुल्लहं। भुत्तभोगी तओ पुच्छा जिणमग्ग चरिस्सामो ॥ ३८ ॥

एक वखत ते रैवतक पर्वत उपर (स्वामि वंदनार्थे) जती हती एवामां मार्गमां वरसाद वरसवा लाग्यो. पोतानां वस्त्र भींजाइ गयां हतां अने मेघ-वृष्टिने लीधे अंधकार छवाइ रहयुं हतुं तेथी राजिमती एक गुफामां पेठी. [३३]. त्यां तेणे पोतानां वस्त्रो (सूकवा माटे) उतारी नांख्यां अने जन्म समये होय तेवी निर्वस्त्र (नग्न) थइ गइ. एवी स्थितिमां *रथनेमिए तेने जोइ, तेथी तेनुं चित्त चलित थइ गयुं. एवामां राजिमतीनी नजर पण तेना उपर पडी. [३४]. ते गुफामां (रथनेमि) साधुनी साथे पोते एकांतमां छे ते जोइने राजिमती भय पामी; पोताना बाहुवति छाती ढांकीने धुजती धुजती नीचे बेसी गइ. (३५). राजिमतीने भयथी धुजती जोइने समुद्रविजय राजानो पुत्र [रथनेमि] तेने नीचे प्रमाणे कहेवा लाग्यो. (३६). " हे भद्रे! हुं रथनेमि छुं. हे सुरूपे! हे चारुभाषिणी! हे सुतनु! मारा भर्त्तार तरीके मारो अंगीकार कर तेम करवाथी तने कांइ हानी थशे नहि. (३७). " मनुष्य भव मळवो दुर्लभ छे, माटे आव आपणे भोग भोगवीए, अने भोग भोगव्या पछी आपणे जिनमार्गने विषे विचरीशुं. " [३८].

* ते गर्भपतिना 'जठ' थया हतो. श्री दश वैकालिक सूत्रनी श्री हरिभद्रजीनी टीकामां विशेष विस्तार छे के राजेमतीए मदन पीधुं अने तेनी उल्टी करी ते रहनेमिने पीवा आप्यो अने सुमज्यो, जुओ आ अध्ययननी गाथा ४२. १. विष्णुपुराण प्रमाणे के मतिमतीनुं बीजुं नाम हतुं हतुं.

दट्ठूण रहनेमित भग्गुजोय पराइय । रायमइ असभता अप्पाण संवरे तहिं ॥ ३९ ॥ अहसाराय वरकन्ना सुट्ठिया नियमव्वए । जाइकुलच सीलच रक्खमाणी तयव्वए ॥ ४० ॥ जइसिरूवेण वेसमणो ललिएण नलकूबरो । तहावि तेनइच्छामि जइसिसक्ख पुरदरो ॥ ४१ ॥ पक्खदे जलियंजोइं धूमकेउं दुरासय । नेच्छतिवंतयभोत्तु कुलेजाया अगंधणे ॥ ४२ ॥ धिरथ्थुते जसोकामी जोतजीविय कारणा । वतइच्छसि आवेउं सेयते मरणमवे ॥ ४३ ॥

रथनेमिने संयम भग थयेलो अने स्त्री परिसहथी ललचायेलो जोइने राजिमती सती निर्भयपणे पोताना आत्मानु सरक्षण करवाने तत्पर थइ. [३९] त उत्तम राज कन्या पोताना व्रत नियममां अडग रही*, तेणे पोताना जात अने कुळनी लाज राखी, तेणे पोतानुं शील साचव्युं अने ते रथनेमिने कहेवा लागी :- (४०). " हे रथनेमि ! तु रुपमा वैश्रमण [धनद अथवा कूबेर] सरखो होय [illegible] नलकूबेर सरखो होय, अने तु साक्षात पुरदर (इन्द्र) होय, तोपण हु तारी इच्छा करती नथी. " (४१). " हे [illegible] धूमकेतुना अग्निनी ज्वाळाओ जे सहन करवी दुःसह छे, ते कदाच सहन करे, परतु अगधन कुळने विषे उत्पन्न थयेला सर्प, वमन करेलु विष पाछु पीवानी इच्छा करता नथी.¹ " हे अयश (अपयशने इच्छनार)! धिक्कार छे तारा पुरुपत्वने के त [illegible] जिविने [illegible], वमन करेलो आहार फरी खावानी इच्छा करे छे ! तारे माटे तो मोतज सारुं छे. [४३].

* True to self control and her vows १. आ आखी गाथा मो. जेकोबीए पोताना भाषान्तरमां मूकी दीधी छे तेथी तेने अहि अनुक्रम नबर चडाव्यो नथी.

गिरिंरेवयंजंती वासेणोह्लाउ अंतरा । वासंते अंधयारंमि अंतो लयणस्स साठिया ॥ ३३ ॥ चीवराइं विसारंती जहा जाइत्ति पासिया । रहनेमी भग्गचित्तो पच्छादिट्ठोयती एवि ॥३४॥ भीयाय सातहिव्ठु एगंतेस जयतय । बाहाहिं काओ सगोफ वेवमाणी निसीयई ॥ ३५ ॥ अहसोविरायपुत्तो समुद्दविजयगओ । भीयपवेइयं दठु इमंवक्क मुदाहरे ॥३६॥ रहनेमी अहंभद्दे सुरूवे चारुभासिणि । मम भयाहि सुतणुनतेपीला भविस्सई ॥३७॥ एहिता भुंजिमोभोए माणुस्सखु सुदुल्लह । भुत्तभोगी तओ पच्छा जिणमग्ग चरिस्सामो ॥ ३८ ॥

एक वखत ते रेवतक पर्वत उपर (स्वामि वंदनाथे) जती हती. एवामां मार्गमा वरसाद वरसवा लाग्यो. पोताना वस्त्र भींजाइ गयां हतां अने मेघ-वृष्टिने लीधे अंधकार छवाइ रहयुं हतु तेथी राजिमती एक गुफामा पेठी. [३३]. त्यां तेणे पोताना वस्त्रो (सूकवा माटे) उतारी नाख्यां अने जन्म समये होय तेवी निर्वस्त्र (नग्न) थइ रही. एवी स्थितिमां *रथनेमिए तेने जोइ; तेथी तेनु चित्त चलित थइ गयु. एवामां राजिमतीनी नजर पण तेना उपर पडी. [३४]. ते गुफामां (रथनेमि) साधुनी साथे पोते एकलीज छे ते जोइने राजिमती भय पामी, पोताना बाहुवति छाती ढांकीने ध्रुजती ध्रुजती नीचे बेसी गइ. (३५). राजिमतीने भयथी ध्रुजती जोइने समुद्रविजय राजानो पुत्र [रथनेमि] तेने नीचे प्रमाणे कहेवा लाग्यो. (३६). " हे भद्रे ! हु रथनेमि छु. हे सुरुपे ! हे चारुभाषिणी ! हे [1]सुतनु ! तारा भर्त्तार तरीके मारो अंगीकार कर, तेम करवाथी तने काइ हानी थशे नहि. (३७). " मनुष्य भव मळवो दुर्लभ छे, माटे आव आपणे भोग भोगवीए; अने भोग भोगव्या पछी आपणे जिनमार्गने विषे विचरीशुं. " [३८].

* ते राजेमतिनो 'जेठ' थतो हतो. श्री दश वैकालीक सूत्रनी श्री हरीभद्रजीनी टीकामां विशेष विस्तार छे के राजेमतीए सरवत पीधुं अने तेनी उलटी करी ते रहनेमिने पीवा आप्यो अने बुझव्यो, जुओ आ अध्ययननी गाथा ८२. १. विष्णुपुराण कहेछे के राजिमतीनु बीजु नाम सुतनु हतु.

दठूर्ण रहनेमित भग्गुजोय पराइय । रायमइ असमता अप्पाण संवरे तहिं ॥ ३९॥ अहसाराय वरकन्ना सुठ्ठिया नियमव्वए । जाइकुलच सीलच रक्खमाणी तयव्वए ॥ ४० ॥ जइसिरूवेण वेसमणो ललिएण नलकूवरो । तहावि तेनइछामि जइसिसक्ख पुरदरो ॥ ४१ ॥ पक्खदे जलियंजोइं धूमकेउ दुरासय । नेछ्तिवंतयंभोतु कुलेजाया अगधणे ॥४२॥ धिरथ्थुते जसोकामी जोतजीविय कारणा । वतइछसि आवेउ सेयंते मरणंभवे ॥ ४३ ॥

रथनेमिने सयम भग थयेलो अने स्त्री परिसहथी ललचायेलो जोइने राजिमती सती निर्भयपणे पोताना आत्मानुं संरक्षण करवाने तत्पर थइ. [३९] ते उत्तम राज कन्या पोताना व्रत नियममां अडग रही*, तेणे पोतानी जात अने कुळनी लाज राखी, तेणे पोतानुं शील साचव्युं अने ते रथनेमिने कहेवा लागी :– (४०). " हे रथनेमि ! तुं रूपमा वैश्रमण [धनद अथवा कूबेर] सरखो होय, विलासमा नलकूबेर सरखो होय, अने तु साक्षात पुरदर (इन्द्र) होय, तोपण हु तारी इच्छा करती नथी. " (४१), " हे [illegible] धूमकेतुना अग्निनी ज्वाळाओ जे सहन करवी दुःसह छे, ते कदाच सहन करे, परतु अगधन कुळने विषे उत्पन्न थयेला सर्प, वमन करलु विष पाछु पीवानी इच्छा करता नथी." " हे अयश (अपयशने इच्छनार)! धिकार छे तारा पुरुषत्वने के [illegible] आ जिवितने अर्थ, वमन करेलो आहार फरी खावानी इच्छा करे छे ! तारे माटे तो मोतज सारुं छे. [४३].

---

* True to self control and her vows १. आ आखी गाथा मी. जेकोबीए पोताना भाषान्तरमा मूकी दीधी छे तेथी तेने अनुक्रम नबर चडाव्यो नथी.

अहन्च भोगरायस्स तंचासि अंधगवन्हिणो। माकुलेगंधणाहोमो संजम निहुउचर॥४४॥ जइतंकाहिसिभावं जाजादिक्कसिनारीओ। वायाविद्धोव्वहडो अट्ठिअप्पा भविस्ससि ॥ ४५ ॥ गोवालो भंड वालोवा जहा तद्दवनिस्सरो। एव अणिस्सरोतवि सामन्नस्स भविस्ससि ॥ ४६ ॥ कोहमाण निगिण्हित्ता माया लोभच सव्वसो। इंदियाइ वसेकाउ अप्पाण उवसहरे ॥४७॥

" हे रथनेमि ! हु भोग-राजानी [उग्रसेननी] पुत्रि छु अने तु अन्धकवृष्णिनो (समुद्रविजयनो) पुत्र छे आपणे बन्ने गन्धन कुल [उमदा]मां उत्पन्न थयेला होइने अगन्धन* कुलोत्पन्न सर्प जेवा न थवु जोइए, माटे संयमने विषे स्थिर चित्त राख. (४४) " जो तु हरकोइ रुपाळी स्त्रीने जोइने भोगनी इच्छा करीश तो जेम हठ वनस्पति[1] [शेवाळ] वायराथी आम तेम चलायमान थाय छे तेम तुं पण अस्थिर आत्मा [वृत्ति] वाळो थइश.(४५). "जेम कोइ गोवाळ अथवा भाड पालक करियाणु साचवनार ते मालनो धणी गणातो नथी [पण मात्र रखवाळज गणाय छे] तेम तु पण श्रमण धर्मनो खरो मालेक गणाइश नहि [अर्थात्–तारु चारित्र मात्र उदर पोषण अर्थेज तने काम लागशे, मोक्ष प्राप्ति अर्थे काम नहि लागे] " (४६). क्रोध, मान, माया अने लोभथी पोतानी इन्द्रिओने वश करीने रथनेमिए पोताना आत्माने धर्मने विषे दृढ कर्यो २

---

*.सर्प बे प्रकारना छे. गन्धन सर्प दश दइने पछी पोतानुं झेर चूसी लेछे अगन्धन मरे पण पाछु झेर चूसता नथी [1]पाणीमा उगती वनस्पति Pistia Stratiotes [2] आ गाथा पण मो [illegible] ना [illegible] नथी [illegible] मूलमां [illegible] गाथा छे. मो. जेकोबी कृत भाषान्तरमा ४९ छे.

तीसेसो वयण सोच्चा सजयाए सुभासियं । अकुसेण जहा नागो धम्मे सपडिवाइओ ॥ ४८ ॥ मणगुत्तो वयगुत्तो कायगुत्तो जिइदिओ । सामण निच्चल फासे जावजीव दढव्वउ॥४९॥ उग्ग तव चरित्ताण जाया दुन्निवि केवली। सव्व कम्म खवित्ताण सिद्धि पत्ता अणुत्तर ॥ ५० ॥ एव करतिसबुद्धा पडियापवियक्खणा । विणियट्टति भोगेसु जहासेपुरिसोत्तमो त्तिबेमि ॥५१॥

॥ इति रहनेमियनाम ज्झयण बाविस सम्मत्त ॥ २२ ॥

राजिमती साध्वीना आवां सुभाषित वचन साभळीने हस्ति जेम अकुशथी पाछो फरेछे तेम रथनेमि धर्म मार्गमा पाछो फर्यो.* [४८]. मन, वचन, कायाये गुप्त रहीने, इन्द्रिओने वश राखीने, अने पच महाव्रतमा दृढ रहीने, रथनेमिए निश्चळ मनथी जींदगी पर्यंत श्रमण धर्म पाळ्यो [४९]. उग्र तप१ आदरीने तेओ बन्ने (राजिमती अने रथनेमि) केवली पदने पाम्या अने सर्व कर्मनो क्षय करीने सर्वोत्तम सिद्ध गतिने प्राप्त थया. [५०]. तत्वना जाण पडित, विचक्षण अने विवेकी पुरुषो आ प्रमाणे वर्ते छे. तेओ पुरुष वर्गमां उत्तम एवा रथनेमिनी पेठे निवर्त्ते छे २ [५१]

* बावीसमु अध्ययन सपूर्ण. *

* टीकाकार देवेन्द्र अहिं नूपुर पडितनु दृष्टात टांके छे जे विस्तारथी श्रीमद् हेमचद्राचार्य कृत परिशिष्ट पर्वमां छे. १. Severe austerities २. नवमा अध्ययननी छेल्ली गाथा साथे सरखावो.

अध्ययन २३. * केशि अने गौतम (नो संवाद).

जिण पासित्ति नामेण अरहालोग पूइए । संबुद्धप्पाय सव्वन्नू धम्मतित्थयरेजिणे ॥१॥ तस्स लोगपइवस्स आसी-सीसे महायसे । केसीकुमार समणे विज्जाचरणपारगे ॥ २ ॥ उहिनाण सुए बुद्धे सीससंघ समाउले । गामाणुगाम रीयंते सावत्थिं नगरमागए ॥३॥ तिंदुय नामउज्जाण तमिनयर मंडले । फासुएसेज्जसंथारे तत्थवास मुवागए ॥४॥ अह तेणेवकालेणं धम्मतित्थयरेजिणे । भगवं वध्धमाणेत्ति सव्वलोगंमि विस्सुए ॥ ५ ॥

॥ अध्ययन २३. ॥

जिन मार्गने विषे श्री पार्श्वनाथ नामे तीर्थंकर थइ गया छे ते पोते अरिहंत (कर्मरूपी शत्रुओने हणनार), भव्य लोकोने पूजवा योग्य, प्रबुद्ध [तत्वना जाण], सर्वज्ञ, धर्मतीर्थंकर (धर्मरूपी तीर्थना * करणहार), अने केवलि हता. (१). ते लोकप्रदीप [जगत् ज्योति] पार्श्वनाथने केशि कुमार श्रमण नामे महायशस्वी शिष्य हता, जे ज्ञान, दर्शन, चारित्रना पारगामी (निपुण) हता. [२]. ते केशि-कुमार श्रुत अने अवधि ज्ञाने करीने सहित हता अने तेमने शिष्य वर्गनो मोटो समुदाय हतो, तेओ गामो गाम विहार करतां एक समये श्रावस्ती नगरीने विषे आवी रह्या.(३) ते श्रावस्ती नगरीना प्रदेशमां तिन्दुक नामे एक उद्यान छे, ते उद्यानना एक जीव रहित विभागमां तेमणे वास कर्यो. [४]. ते अवसरे श्री जिन धर्मना तीर्थंकर भगवान वीराजमान हता, तेओ सर्व लोकने विषे श्री वर्धमानना नामथी सुविख्यात हता.[५].

---

* तीर्थ चार छे. श्रावक, श्राविका, साधु अने साध्वी.

तरस लोगप्पईवरस आसिसिरसे महायसे । भगवगोयमोनाम विज्जाचरण पारगे ॥६॥ वारसगाविओबुध्धे सीससघस माउले । गामाणुगाम रीयते सेविसावथ्थीमागए ॥ ७ ॥ कोठ्ठग नामउज्जाण तमिनयर मडले । फासूएसेज्जसथारे तथ्थवास मुवागए ॥८॥ केसीकुमार समणे गोयमेय महायसे । उभओवितथ्थविहरिसु अल्लीणासुसमाहिया ॥ ९ ॥ उभओ सीससंघाणं संजयाणं तवस्सिणं । तथ्थचिता समुप्प । गुण नाणताइण॥१०॥ केरिसोवाइमो धम्मो इमोधम्मो वकेरिसो । आयार धम प्पणिही इमावासावकेरिसी ॥ ११ ॥

... महावीर भगवानने गौतम नामे महायशस्वी शिष्य हता; जे ज्ञान, दर्शन, ... (६) ... ...गना जाण अने सबुद्ध हता; अने तेमने शिष्य वर्गनो म्होटो समुदाय हतो. तओ पण ग्राम, ग्राम विहार करतां ... आवी चढ्या.[७]. ते श्रावस्ती नगरीना प्रदेशमा कोष्टुक नामे एक उद्यान छे, ते उद्याननो जीव रहित एक ... स्थाने वास कर्यो (८). केशी कुमार श्रमण अने यशस्वी गौतम बन्ने मन, वचन, कायानी गुप्तिथी रक्षाता, सावचेतीथी (समाधि युक्त रहीने) त्या विचरवा लाग्या. [९]. बन्नेनो शिष्यवर्ग जे संयत, तपस्वी साधुना ... गुण करी सहित अने *सर्व ... छे तेमने नीचे प्रमाणे विचार उपज्यो. (१०). 'आपणो धर्म साचो हशे के तेमनो धर्म साचो हशे? (पार्श्वनो के महावीरनो) आपणा आचार विचार खरा हशे के तेमना? [११].

१. Light of the world. * आन नद्धेले मो. जेकोबी 'आत्म रक्षक' लखे छे.

चाउज्जामोयजो धम्मो जोइमो पंचसिक्खिओ। [illegible] ॥ १४ ॥ [illegible]
जो इमो सतरुत्तरो एक कज्ज पवन्नाण विसेसे किंनु कारणं ॥ १३ ॥ [illegible]
न मइ उमउ केसि गोयमा ॥ १४ ॥ [illegible]
। मागउ ॥ १५ ॥ केसीकुमार समणे गोयमे दिस्स मागयं । [illegible]
१६ ॥

नाथ भगवाने प्ररुपेला धर्ममां *१चार महाव्रतनो स्वीकार करेलो छे, ज्यारे श्री वर्द्धमान भगवाने प्ररुपेला
कारेलां छे. श्री महावीर भगवाने [साधुने] *२अचेल (वस्त्र रहित) रहेवानु फरमान करेलुं छे;
२अन्तरोत्तर [उपरनु अने अदरनु] वस्त्र राखवा फरमावेलु छे. बन्ने एकज कार्यने विषे उद्यत होवा छतां
द शाथी उत्पन्न थयो हशे? [१२-१३] पोताना शिष्योनो आवो अभिप्राय जाणी लइने केशि अने गौतम बन्नेए एक
ने मळवानो निश्चय कर्यो. (१४). विनयनुं स्वरूप विचारीने अने ज्येष्ठ (वडा) कुळनु मान साचवीने, गौतम पोताना शिष्य-
आव्या. (१५) गौतम स्वामिने आवता जोइने केशि कुमार श्रमणे तेमनु योग्य सन्मान कर्युं. (१६).

वाने प्ररुपेला पच महाव्रत पैकी मैथुन-परिहार व्रत श्री पार्श्वनाथना चार महाव्रतमां नथी परतु 'परिग्रह-
तेनो समावेश थतो होवो जोइए *(२) आने बदले संस्कृत टीकाकार एम लखे छे के-श्री महावीर भगवाने जीर्ण,
करवानु फरमावेलु छे, अने श्री पार्श्वनाथे विविध वस्त्र पहेरवा कहेलु छे.

पलाल फासुय तथ्थ पचम कुस तणाणिय । गोयमस्स निसिज्जाए खिप्पं स पणामए ॥१७॥ केसीकुमार समणे गोयमेय महायसे । उभओ निसन्ना सोहंति चंद सूर समप्पभा ॥१८॥ समागया बहु तथ्थ पासंडा कोउगा मिया । गिहथ्थाण अणेगाउ साहस्सीउ समागया ॥ १९ ॥ देव दाणव गंधव्वा जक्ख रक्खस्स किन्नरा । अदिस्साणय भूयाण आसी तथ्थ समागमो ॥२०॥ पुच्छामि ते महाभाग केसी गोयम मब्बवी । तओ केसी बुवंतंतु गोयमो इण मब्बवी॥२१॥ पुच्छ भंते जहिच्छं ते केसी गोयम मब्बवी । तओ केसी अणुन्नाए गोयम इण मब्बवी ॥२२॥ चाउज्जामोय जो धम्मो जो इमो पंचसिक्खिओ । देसिओ वध्धमाणेण पासेणय महामुणी ॥ २३ ॥

केशि कुमारे तरतज गौतमने बेसवा माटे *पाच प्रकारनु बीज रहित पलाल [घास] अने दर्भनु आसन हाजर कर्यु. [१७] केशि-कुमार श्रमण अने यशस्वी गौतम बन्ने साथे साथे बेसवाथी चंद्र अने सूर्यना सरखी कान्तिथी शोभवा लाग्या. [१८]. आ कौतुक जोवाने त्यां घणा पाखंडी लोको अने हजारो ग्रहस्थो एकठा मळ्या. [१९]. देव, दानव, गधर्व, यक्ष, राक्षस, किन्नर अने अदृश्य रुपवाळा भूत व्यंतर पण त्यां आवी लाग्या. [२०]. केशि-कुमार गौतमने कहे छे, "हे पवित्र पुरुष ! हुं आपने काइक पूछवा इच्छुं छुं." केशिनां आवां वचन सांभळीने गौतम कहे छे, "हे महाभाग ! यथा रुचि प्रश्न करो." पछी गौतमनी आज्ञाथी केशि कुमार नीचे प्रमाणे पूछवा लाग्या. [२१-२२]. "महा मुनि श्री पार्श्वनाथे उपदेशेला धर्ममां चार महाव्रतनो स्वीकार करेलो छे, ज्यारे श्री वर्द्धमान भगवाने पंच महाव्रतनो उपदेश करेलो छे. (२३).

---

* साली, व्रीही, कोद्रव, रालग अने पांचमु रन्नतणा ए पासनी जातो छे.

एककज्ज पवन्नाणं विसेसे किंतुकारण । धम्मे दुविहेमेहावी कहंविप्पच्चउनते ॥ २४ ॥ तउकेसिं वुवतंतु गोयमोइण मव्वत्री । पन्नासमिक्खए धम्मं तत्ततत्त विणिछ्छय ॥ २५ ॥ पुरिमा उज्जुजडाउ वकजड्डाय पछ्छिमा । मज्झिमा उज्जु पन्नाओ तेण धम्मे दुहा कउ ॥ २६ ॥ पुरिमाण दुव्विसोझोओ चरिमाण दुरणु पालए । कप्पो मज्झिमगाणतु सुवि सुझो सुपालए ॥ २७ ॥ साहुगोयमपन्नाते छिन्नो मे ससओ इमे । अन्नोविससओ मझ त कहसु गोयमा ॥ २८ ॥

" बन्ने एकज कार्यने विषे उद्यत होवा छतां आवो मत भेद शाथी उत्पन्न थयो हशे ? हे मेधाविन ! आवो द्वी गुण [बे मकारनो] धर्म जोइने आपना मनमा काइ संदेह नथी उपजतो ? " (२४). केशि-कुमारनां आवा वचन सांभळीने गौतम कहेछे, " बुद्धि वडे धर्मनु रहस्य पारखी शकाय छे अने बुद्धि वडेज जीवादि तत्वनो निश्चय करी शकाय छे. [२५]. " प्रथम तीर्थंकरना समयना मनुष्यो सरळ प्रकृतिना अने जड बुद्धिना हतां, छेल्ला तीर्थंकरना समयना जीव वक्र अने जड बुद्धिना हता, अने ते बेनी वचेना समयना जीव सरळ अने पंडित हता. तेथी धर्म द्वी गुणो [बे मकारनो] भाखेलो छे. [२६]. " प्रथम तीर्थंकरना समयना साधुओने धर्म समजवो दोहिलो जणातो हतो, छेल्ला तीर्थंकरना समयना साधुओने ते पाळवो दोहिलो लागतो हतो ; पण ते बेनी वचेना समयना साधुओने धर्म समजवो अने पाळवो ए बन्ने सरळ लागता हतां." [२७]. ए सांभळीने केशि कुमार कहे छे, " हे गौतम ! आप प्रज्ञावत (बुद्धिशाळी) छो ; आपे मारो संशय दूर कर्यो छे. पण हे गौतम ! मने बीजो एक संशय उपजे छे तेनो आप उत्तर आपो. (२८).

अचेलउय जो धम्मो जो इमो सतरूत्तरो । देसिउ वध्धमाणेणं पासेणय महामुणी ॥ २९ ॥ एककज्जा पन्नन्नाण विसेसे किंतु कारण । लिगे दुविहे मेहावी कह विप्पच्चओ न ते ॥३०॥ केसिं एवं बुवाणतु गोयमो इण मव्ववी। विन्नाणेण समागम्म धम्म साहण मिछ्छियं ॥ ३१ ॥ पच्चयथ्थच लोगस्स नाणाविह विगप्पण । जत्तथ्थ गहण१यच लोगे लिंगप्पउयण ॥३२॥ अह भवे पइन्नाओ मोख्खस झूय साहणे । नाणच दंसण चेव चारित्त चेव निछ्छिय ॥३३॥ साहु गोयम पन्नाते छिन्नो मे ससओ इमो । अन्नोवि ससउ मझ त मे कहसु गोयमा ॥ ३४ ॥

" श्री वर्द्धमान भगवाने *अचेल [वस्त्र रहित] धर्मनो उपदेश करेलो छे, ज्यारे महा मुनि श्री पार्श्वनाथे* अन्तरोत्तर (उपरनु अने अंदरनु) वस्त्र पहेरवा फरमान करेलु छे. बन्ने एकज कार्यने विषे उद्यत होवा छता आवो मत भेद शाथी उत्पन्न थयो हशे ? हे मेधाविन ! आवो द्वी गुण धर्म जोइने आपना मनमा काइ संदेह नथी उपजतो ? " [२९-३०] केशि-कुमारना आवां वचन साभळीने गौतम कहे छे, " तीर्थंकरोए पोताना केवल-ज्ञान वडे शु करवु उचित छे ते विचारीने धर्मना साधनो नक्की करेला छे. " (३१). " साधुओनां नाना प्रकारनां बाह्य लक्षणो [चिन्हो] लोको तेमने ओळखी शके तेटला माटे दाखल करवामां आवेला छे; १संयमना निर्वाह अर्थे अने ज्ञान ग्रहणने अर्थे भिन्न भिन्न वेष योजायेला छे. [३२]. " परंतु हे केशि-कुमार! श्री पार्श्वनाथ अने श्री वर्द्धमान भगवाननी एवी आज्ञा छे के ज्ञान, दर्शन अने चारित्र एज मोक्षना साधन रुप छे, बाह्य लक्षणो मुक्तिना साधन नथी. " (३३). ए सांभळीने केशि-कुमार कहेछे, " हे गौतम ! वगेरे गाथा २८ प्रमाणे. [३४].

---

* जुओ गाथा १२-१३नी फुट नोट. १. Religious life.

अणेगाण सहस्साण मज्झे चिट्ठासि गोयमा तेय ते अभि गच्छंति कहंते निज्जिया तुमे ॥ ३५ ॥ एगे जिए जिया पञ्च पञ्च जिए जिया दस । दसहाओ जिणित्ताण सव्व सत्तू जिणामिहं ॥ ३६ ॥ सत्तूय इइ के वुत्ते केसी गोयम मब्बवी । तउ केसि बुवंततु गोयमोइणमब्बवी ॥३७॥ एगप्पा अजिए सत्तू कसाया इंदियाणिय । तेजिणी त्ताजहानाय विहरामि अहंमुणी ॥३८॥ साहुगोयमपन्नाते छिन्नोमे संसओ इमो । अन्नोवि संसउ मज्झं तमे कहसु गोयमे ॥३९॥ दीसंति बहवेलोए पास बध्धा सरिरिणो । मुक्कपासो लहुभूओ कहंत विहरसी मुणी ॥४०॥

" हे गौतम ! आप हजारो शत्रुओनी वचे उभा छो, अने ते शत्रुओ आपनी सन्मुख धसी आवे छे, तेने आप शी रीते जीती शक्या छो ? [३५].* गौतम कहेछे, " एकने जीतवाथी पाचने जीती शकाय छे, अने पाचने जीतवाथी दशने जीती शकाय छे; अने आ दश गणी जीतथी सर्व शत्रुओने जीती शकाय छे. " [३६]. ए साभळीने केशि-कुमार कहे छे, " हे गौतम ! आप शत्रु कोने कहो छो ? " केशि-कुमारनु आवु वचन साभळीने गौतम कहे छे :– [३७]. " एक आत्मा जे अजित शत्रु गणाय छे तेने जीतवाथी चार कषायने (क्रोध, मान, माया अने लोभने) जीती शकाय छे, अने तेने जीतवाथी पाच इन्द्रिओने वश करी शकाय छे ए रीते-दश शत्रुओ [१ आत्मा+४ कषाय+५ इन्द्रिओ]ने जीतवाथी सर्व शत्रुओ जीताय छे, अने तेमने यथा न्याय जीतीने हु सुखे विचरु छु. (३८). ए साभळीने केशि कुमार कहे छे, " हे गौतम ! वगेरे गाथा २८ प्रमाणे. (३९). " हे मुनिश्वर ! आ लोकने विषे अनेक जीव पाशथी बधायेला नजरे आवे छे आप ते बधन तोडीने शीरीते मुक्त थया छो ते मने कहो. " [४०].

*श्री पार्श्वनाथ अने महावीर भगवानना अनुयायीओ वचे चार अने पाच महाव्रत तथा साधुओना बाह्याचार सबधी मत भेदनु आगली गाथाओमा समाधान कर्या पछी, आ गाथाथी जिन धर्मना सामान्य सिद्धांतोनु शिष्य श्रोता वर्गनी जाण अने उपदेशने माटे निरुपण करेलु छे.

तेपासे सव्वसो छित्ता निहतूण मुवायउ । मुक्कपासो लहुभूओ विहरामि अहमुणी ॥ ४१ ॥ पासाय इइकेवुत्ता केसी गोयम मव्ववी । तओकेसि वुवततु गोयमो इणमव्ववी ॥ ४२ ॥ रागदोसादयो तिव्वा नेहपासा भयकरा । तेछि दित्तु जहानाय विहरामि जहक्कम ॥४३॥ साहु गोयमपन्नाते छिन्नोमे ससओइमो । अन्नोवि ससउ मझ तमेकहसु गोयमा ॥ ४४ ॥ अतोहियय संभूया लया चिठई गोयमा । फलेइ विसभख्खीण साउ उध्दरिया कह ॥ ४५ ॥ तलय सव्वसोछित्ता उद्धरित्ता समूलिय । विहरामि जहानाय मुक्कोमि विसभख्खणं ॥४६॥ लयाय इइकावुत्ता केसी गोयम मव्ववी । केसिमेव वुवततु गोयमोइण मव्ववी ॥ ४७ ॥

गौतम कहे छे, "हे मुनिश्वर ! सर्व पाश छेदीने अने वुद्धि पूर्वक उपायो* वडे ते थकी मुक्त थइने हु सुखेथी विचरु छु." (४१) केशि कुमार कहे छे, "हे गौतम ! आप पाश [वन्धन] कोने कहो छो ?" केशिनु आवु वचन सांभळीने गौतम कहे छे– (४२). "राग, द्वेषादि अति तिव्र पाश छे, अने [पुत्र कलत्रादिना] स्नेह पाश अति भयकर वधन छे, तेने यथा न्याय१ छेदीने हु आचारे२ विचरु छु." [४३] ए सांभळीने केशि-कुमार कहे छे, "हे गौतम ! वगेरे गाथा २८ प्रमाणे [४४] "हे गौतम ! अतर हृदयने विषे एक लता उत्पन्न थाय छे जेने विषमय फळ लागे छे. ए लता आपे शीरीते उखाडी नाखी छे ?" [४५]. गौतम कहे छे, "ए लताने में मूळथी छेदी नाखीछे अने तेने समूळि उखाडी नाखी छे अने ए रीते तेना विषरुप फळथी मुक्त थइने हु विचरु छु." (४६). केशि-कुमार कहे छे, "हे गौतम ! ए लताने आप शु नाम आपो छो ?" केशिनुं आवु वचन सांभळीने गौतम कहे छे :– [४७].

---

* By the right means १ Regularly २ The Rules of conduct

भवतण्हालया वुत्ता भीमाभीम फलोदया । तमुद्धित्तु जहानायं विहरामि जहक्कमं ॥४८॥ साहुगोयमपन्नाते छिन्नोमे ससउ इमो । अन्नोवि ससउ मज्झ तमेकहसुगोयमा ॥ ४९ ॥ सपज्जलियाघोरा अग्गीचिट्ठइगोयमा । जेडहति सरीरत्था कहविज्झा वियातुमे ॥५०॥ महामेहपसुत्ताओ गिज्झ वारिजलुत्तम । सिंचामि सययतेउ सित्तानोवडहतिमे॥५१॥ अग्गीय इइकेवुत्ते केसीगोयम मब्बवी । तउकेसिं वुवततु गोयमो इणमब्ववी ॥ ५२ ॥ कसाया अग्गिणोवुत्ता सुयसील तवोजल । सुयधाराभिहयासता भिन्नानय डहतिमे ॥ ५३ ॥ साहुगोयमपन्नाते छिन्नोमे ससउ इमो । अन्नोवि ससओ मझं तमेकहसुगोयमा ॥ ५४ ॥

" भव तृष्णा*रूपी ए भयकर लता छे अने दुष्ट कर्मना विपाकरूपी भयकर फळ तेने लागेलां छे. ए लताने मूळमांथी छेदीने हुं सुख समाधिमां विचरुं छुं." (४८). ए साभळीने केशि-कुमार कहे छे, " हे गौतम! वगेरे गाथा २८ प्रमाणे [४९]. "हे गौतम! जाज्वल्यमान [1] घोर [2] अग्नि संसारमां सळगी रह्यो छे, जे शरीरने दहेछे, ते अग्निने आप शीरीते बुझावी शक्या छो?"(५०) गौतम कहे छे, " महामेघथी उत्पन्न थयेली नदीना उत्तम जळवडे हु ए अग्निने निरतर सींचु छुं, तेथी ते अग्नि मने बाळी शकतो नथी. [५१]. केशि-कुमार कहे छे, " ए अग्नि आप कोने कहो छो ? " केशिनु आवुं वचन साभळीने गौतम कहे छे :-(५२). " चार कषाय अग्नि रुप छे, अने ज्ञान, शील तथा तप जळ रुप छे. ज्ञान रुपी जळ धाराए सींचायेलो अग्नि ओलाइ जाय छे तेथी मने बाळी शक्तो नथी. " (५३). ए सांभळीने केशि-कुमार कहे छे, " हे गौतम वगेरे गाथा २८ प्रमाणे. [५४].

---

* Love of existence. १ Frightful. २. मूळ पाठमां अग्नि बहु-वचनमां छे. चार कषायो तरीके ते होवाथी बहुवचन वापरेल जणाय छे.

अय साहसिउभीमो दुठ्ठसो परिधावइ । जसिगोयम आरूढो कह तेण नहिरसी ॥ ५५ ॥ पहानत निगिण्हामि सुयरस्सी समाहिया । नमे गछ्छइ उम्मगा मग्गच पडिवज्जई ॥५६॥ अस्सेय इइकेवुत्ते केसीगोयम मब्बवी । तउ केसिं बुवततु गोयमोइण मब्बवी ॥५७॥ मणोसाहसिउ भीमो दुठ्ठसो परिधावई । त सम्म तुनिगिण्हामि धम्मासिखाय कथग ॥५८॥ साहुगोयमपन्नाते छिन्नोमे संसउ इमो । अन्नोवि ससउ मझ्झ तंमे कहसुगोयमा ॥५९॥ कुप्पहा बहवेलोए जेहिनासति जतुणो । अद्धाणे कहवट्टतो त न नाससिगोयमा ॥ ६० ॥ जेयमग्गेण गछ्छंति जेय उम्भग्ग पठ्ठिया । तेमव्वे वेइयामझ्झ तो न नारसा मिहंमुणी ॥६१॥

" हे गौतम ! * अति साहसिक, भयंकर अने दुष्ट अश्व उन्मार्गने विषे दोडे छे; एवा अश्व उपर आरुढ थयेल होवा छता आपने ते उन्मार्गने विषे केम घसडी जतो नथी ? " (५५). गौतम कहे छे, " ज्ञानरुपी लगामथी हु ते अश्वनें उन्मार्गने विषे जतो अटकावुं छु तेथी ते मने आडे मार्गे लइ जइ शकतो नथी, पण ते सन्मार्गे चाले छे. " [५६]. केशि-कुमार कहे छे, " हे गौतम ! ए अश्व आप कोने कहो छो ? " केशिनुं आवुं वचन साभळीने गौतम कहेछे :– (५७). " मन ए अति साहसिक, भयकर अने दुष्ट अश्व छे. ए मनरुपी अश्वने हु धर्म-शिक्षा [रुपी लगाम] वडे वश १ करु छुं, तेथी ते [कथकना जेवो] जातवंत अश्व बनी रहे छे. " (५८). ए साभळीने केशि-कुमार कहे छे, " हे गौतम ! वगेरे गाथा २८ प्रमाणे. (५९). " हे गौतम ! आ लोकने विषे कुमार्गो घणा छे, जे मनुष्योने आडे मार्गे दोरवी जाय छे; एम छतां आप उन्मार्गे न दोरवाइ जता सन्मार्गने विषे शी रीते रही शको छो ? " [६०]. गौतम कहे छे, " हे महामुनि ! जेओ सन्मार्गे (जिन-मार्गे) चाले छे अने जेओ उन्मार्गे (जिन मार्गथी विपरीत रीते] प्रवर्त्तेछे त सर्वने हुं सारी पेठे जाणुं छुं; तेथी हु उन्मार्गे दोरवाइ जतो नथी. " (६१).

* Unruly-वश न थइ शके एवो. १. I govern it by the discipline of the Law.

मग्गेय इइकेवुत्ते केसीगोयम मब्बवी । तउकेसिं बुवंतंतु गोयमो इणमब्बवी ॥ ६२ ॥ कुप्पवयण पासंडी सव्वे उम्मग्ग पट्ठिया । सम्मगतु जिणख्खाय एसमग्गेहि उत्तमे ॥ ६३ ॥ साहु गोयम पन्नाते छिन्नोमे ससउइमो । अन्नोवि संसउ मज्झ तमेकहसु गोयमा ॥६४॥ महाउदगवेगेण वुझमाणाण पाणिण । सरणगइ पइट्ठंच दीवंकमणमे मुणी ॥६५॥ अथ्थि एगो महादीवो वारिमझे महालउ । महाउदग वेगस्स गइतथ्थ नविझइ ॥ ६६ ॥ दीवेय इइ वेवुत्ते केसीगोयम मब्बवी । तओकेसिं बुवंततु गोयमोइण मब्बवी ॥६७॥ जरामरण वेगेण वुझमाणाण पाणिण । धम्मोदीवो पइठ्ठाय गइसरण मुत्तम ॥ ६८ ॥

केशि-कुमार कहे छे, " हे गौतम ! आप मार्ग [सन्मार्ग अने उन्मार्ग] कोने कहो छो ? " केशिनु आवु वचन सांभळीने गौतम कहे छे :-[६२]. " कुमार्गीओ अने *पाखडीओ (कापिलादि मतानुवर्त्तिओ) उन्मार्गने विषे स्थापित थयेला छे, अने जिनोक्त मार्ग ए सन्मार्ग छे अने ते मुक्तिनो दाता छे " [६३]. ए सांभळीने केशि कुमार कहे छे, " हे गौतम ! नेगेर गाथा २८ प्रमाणे. (६४). " हे गौतम ! महा जळ प्रवाह वसडाता प्राणीओना निवारण अर्थे कोइ आधार, शरणु अथवा दृढ स्थानक छे? एवो कोइ द्वीप आपना जाणवामां छे ? " [६५]. गौतम कहे छे, " समुद्रनी वच्चे एक प्रौढ अने विस्तीर्ण द्वीप छे, महा जळ प्रवाहनी रेल ते द्वीप उपर फरी वळी शकती नथी. "१ (६६) केशि-कुमार कहे छे, " हे गौतम ! आप ए द्वीप कोने कहो छो ? " केशिनु आवु वचन सांभळीने गौतम कहे छेः-(६७). " जरा अने मरण ए जळ प्रवाह छे अने तेमां प्राणीओ वसडाय छे. ए जळनी वच्चे धर्मरुपी महाद्वीप छे, अने ते दृढ स्थानक, आधार अने उत्तम शरणु छे. " [६८].

---

* Heterodox 1. Is not inundated by the great flood of water

साहुगोयमपन्नाते छिन्नोमे ससउ इमो । अन्नोवि ससउ मज्झ तमेकहसु गोयमा ॥ ६९ ॥ अन्नवमि महोहंमि नावावि परिधावइ । जसिगोयममारूढो कहपार गमिस्ससि ॥ ७० ॥ ज्जाउ आसीविणीणावा नसा पारस्सगामिणी । जानिरास्सा विणीनावा साउपारस्सगामिणी ॥ ७१ ॥ नावाय इइकावुत्ता केसीगोयम मब्बवी । तओ केसि बुवतंतु गायमो इणमब्बवी ॥७२॥ सरीरमाहुनावित्ति जीवो वुच्चइ नाविउ । ससारो अन्नवोवुत्तो जतरति महेसिणो ॥ ७३ ॥ साहुगोयमपन्नाते छिन्नोमे ससउ इमो । अन्नोवि ससउ मज्झ तमेकहसुगोयमा ॥ ७४ ॥ अधयारे तमे घोरे चिठ्ठति पाणिणो बहु । को कारिस्सइ उज्जोय सव्वलोगमि पाणिण ॥ ७५ ॥

ए सांभळीने केशि-कुमार कहे छे, " हे गौतम ! वगेरे गाथा २८ प्रमाणे. [६९] " हे गौतम ! महासागरना महा प्रवाहोमां एक नाव परिभ्रमण* करे छे, ते नाव उपर आरूढ थइने आप समुद्रनो पार शीरीते पामी शकशो ? " अथवा-सामे तीरे शीरीते पहोंची शकशो?) (७०). गौतम कहे छे, " जे नाव श्राविणी [गाबडावाळी छिद्रवाळी] छे ते पार पहोंचशे नहि; पण जे नाव निश्राविणी (छिद्र रहित) छे ते समुद्रने सामे तीर पहोंची शकशे. [७१]. केशि कुमार कहे छे, " हे गौतम ! आप ए नाव कोने कहो छो ? " केशिनु आ वचन सांभळीने गौतम कहे छे :– [७२] " शरीर नाव रूप छे, जीव नाविक रूप छे, अने [1] संसार [भव भ्रमण] समुद्ररूप छे, ते संसार समुद्रने महर्षिओ तरी शके छे. " (७३). ए सांभळीने केशि कुमार कहे छे, " हे गौतम ! वगेरे गाथा २८ प्रमाणे. (७४). " हे गौतम ! आ घोर अने भयोत्पादक अंधकारने विषे अनेक प्राणीओ वसेछे; ए सकळ लोकनां सर्व प्राणीओ माटे प्रकाश कोण करशे ? " (७५).

---

* Drifts १. Circle of Births.

उगाओ निमलोमाणू सव्वलोगप्पभं करो । सोकारिसइ उज्जोयं सव्वलोगंमि पाणिणं ॥ ७६ ॥ भाणूय इइकेवुत्ते केसीगोयम मव्व्रवी । तउकेसी बुवतंतु गोयमो इणमव्व्रवी ॥ ७७ ॥ उग्गउ खीणससारो सव्वन्नू जिणभाक्खरो । सोकरिस्सइ उज्जोयं सव्वलोगमि पाणिण ॥७८॥ साहुगोयमपन्नाते छिन्नोमे ससउ इमो । अन्नोवि ससओ मज्झ तमेकहसू गोयमा ॥ ७९ ॥ सारिरमाणसे दुख्खे वझ माणाण पाणिणं । खेमसिव अणाबाहं ठाण किं मन्नसेमुणी ॥८०॥ अथ्थिएग धुवं ठाण लोगग्गमि दुरारुह । जथ्थ नथ्थि जरामच्चू वाहिणो वेयणा तहा ॥ ८१ ॥ ठाणेय इइवुत्ते केसीगोयम मव्वनी । तउकेसिं बुवततु गोयमो इण मव्व्रवी ॥ ८२ ॥

गौतम कहे छे, " सर्व लोक प्रकाशक निर्मळ भानु [सूर्य] उग्यो छे, ते सकळ लोकना सर्व प्राणीओ माटे प्रकाश करशे." (७६). केशि कुमार कहे छे, " हे गौतम ? आप ए सूर्य कोने कहो छो ? " केशिनुं आवुं वचन सांभळीने गौतम कहे छे :-(७७). " संसारमां भव-भ्रमणनो अंत आणवाने सर्वज्ञ[१] जिन-भास्कर (सूर्य) उग्यो छे, जे सकळ लोकनां सर्व प्राणीओनो उद्योत करशे." (७८). ए सांभळीने केशि-कुमार कहे छे, " हे गौतम ! वगेरे-गाथा २८ प्रमाणे. [७९]. " हे गौतम ! प्राणीओ शारीरिक अने मानसिक दुःखोथी पीडाय छे, तेमने वास्ते कोंइ क्षेम [निर्भय, व्याधि रहित], शिव (कल्याणकारी, जरा मरणादि उपद्रव रहित), अने अनाबाध [पीडा रहित] स्थानक आपना जाणवामां छे ? " (८०). गौतम कहे छे, " लोकोनी नजर आगळ एवुं एक निश्चळ [निर्भय] स्थान छे, पण ते प्राप्त थवुं दुर्लभ छे. ते स्थानकने विषे जरा, मरण, व्याधि अने वेदना कशुए नथी. " [८१]. केशि-कुमार कहे छे, " हे गौतम ! ए स्थानकनुं नाम शुं ? " केशिनुं आवुं वचन सांभळीने गौतम कहे छे :- [८२].

---

१. सर्व पदार्थ वेत्ता.

निव्वाणति अवाहति सिद्धीलोगग्गमेवय । खेमं सिवं अणावाहं जंचरंति महेसिणो ॥ ८३ ॥ तठाणं सासयवास लोगग्गमि दुरारुह । जसंपत्ता नसोयंति भवोहंत करामुणी ॥८४॥ साहुगोयमपन्नाते छिन्नोमे संसउ इमो । नमो ते संसया तीत सव्वसुत्तम महोदही ॥ ८५ ॥ एवंतु संसए छिन्ने केसी घोर परक्कमे । अभिवंदित्ता सिरसा गोयमतु महायस ॥ ८६ ॥ पंच महव्वयं धम्मं पडिवज्जइ भावउ । पुरिमस्स पच्छिमामि मग्गे तत्थ सुहावहे ॥ ८७ ॥

"ए स्थानकनुं नाम निर्वाण अथवा व्याधि रहित स्थळ, अथवा सिद्धि स्थानक छे; अने ते लोकना अग्र भागे [नजर आगळ] छे; ते स्थानक क्षेम, शिव अने अनाबाध (निर्भय, कल्याणकारी अने उपद्रव रहित) छे, अने त्यां महर्षिओज पहोंची शके छे. (८३) "हे केशि मुनि! ते स्थानक शाश्वतुं* छे, ते सौनी नजर आगळ छे, पण प्राप्त थवुं दुर्लभ छे; जे मुनिश्वरो त्यां पहोंच्या छे ते शोचथी मुक्त थया छे अने संसार-प्रवाहनो १ [भव-भ्रमणनो] अंत आणी शक्या छे." (८४). ए सांभळीने केशि-कुमार कहे छे, "हे गौतम! आप प्रज्ञावंत छो, आपे मारो संदेह दूर कर्यो छे. आप संदेह रहित अने सर्व सूत्रना महोदधिरूप [पारगामी] होवाथी हुं आपने नमस्कार करुं छुं." (८५). गौतमे पोताना संदेह टाळ्या तेथी [कर्म टाळवामां] घोर पराक्रमी केशि-कुमार श्रमणे महायशस्वी गौतमने मस्तक नमावीने अभिवंदन कर्युं. (८६). ते तिन्दुक उद्यानने विषे श्री केशि कुमार श्रमणे, पहेला अने छेल्ला तीर्थंकर (श्री आदीश्वर अने श्री महावीर) भगवाने प्ररूपेला पंच महाव्रतरूप धर्मनो, पूर्ण श्रद्धाथी अंगीकार कर्यो [८७].

---

* Eterual   १ Stream of existence

केसी गोयमउ निच्च तमि आसि समागमे । सुय सील समुक्कारिसो मह थ्थथ्थ विणिछुउ॥८८॥तोसिया परिसासव्वा समग्गतु समुवठिया । सथुया ते पसीयतु भगव केसि गोयमो त्तिवेमि ॥ ८९ ॥

॥ इति केसि गोयम नाम झयण तेविनर्म सम्मत्त ॥ २३ ॥

अध्ययन २४. समिति (पांच समिति अने त्रण गुप्ति).

अठ प्पवयण मायाओ समिई गुत्ती तहेवय । पचेवय समिइओ तओ गुत्तीओ आहिया ॥१॥ इरिया भासे सणादाणे उच्चारे समिईइय । मण गुत्ती वय गुत्ती कायगुत्तीय अठ्ठमा ॥ २ ॥

ते नगरने विषे केशि अने गौतमनो समागम थवाथी ज्ञान अने चारित्र [शील]नो उत्कर्ष थयो * अने तत्वादि अगत्यना विषयोनो निर्णय थयो [८८]. सकळ सभा अति प्रसन्न थइ अने सम्यक मार्गने विषे उपस्थित(सावधान)थइ. अने सौ कोइ केशि अने गौतमनी प्रशंसा करवा लाग्या के ' ते ज्ञानवत भगवतो आपणा उपर प्रसन्न रहो. '(८९).

* त्रेवीसमु अध्ययन सपूर्ण. *

○ अध्ययन २४. ❁

श्री जिन शासनने विषे समिति अने गुप्ति मळीने अष्ट प्रवचन कह्यां छे. तेमां पांच समिति अने त्रण गुप्ति छे. (१). ए पांच समिति नीचे प्रमाणे छे .–(१) इर्या-समिति, (२) भाषा-समिति, (३) एषणा-समिति, (४) आदान-समिति, अने (५) उच्चार-समिति. त्रण गुप्ति नीचे प्रमाणे छे :–[१] मनो-गुप्ति, [२] वचन-गुप्ति अने [३] काय गुप्ति. (२)

---

* Brought to eminence

एयाउ अट्ठ समिईओ म्मासेण वियाहिया । दुवालसंग जिणखाय माय जथ्थउपवयण ॥३॥ आलवणेण कालेण मग्गेण जयणायथ । चउ कारण परिसुद्ध सजए ईरिय रिए ॥४॥ तथ्थ लवणं नाणं दसण चरण तहा । कालेय दिवसे वुत्ते मग्गे उप्पह वज्जिए ॥५॥ दव्वओ खित्तओ चेव कालओ भावओ तहा । जयणा चउव्विहा वुत्ता त मे कित्तयउ सुणे ॥६॥ दव्वओ चक्खुसापेहे जुगमित्त चखितओ । कालओ जाव रीएज्जा उवउत्तेय भावओ ॥७॥ इंदियथ्थे विवजित्ता सज्झाय चेव पचहा । तम्मुत्ती तप्पुरक्कारे । उवउत्ते रिय रिएं ॥ ८ ॥

ए रीते आठ समिति सक्षेपे वर्णवी छे, जेमा श्री तीर्थंकर भगवानोना भाखेला द्वादश अग अने जिन धर्मनां सर्व सिद्धातोनो समावेश थइ जायछे. [३]. १ इर्या -समिति :-सयमधारी साधुए (१) आलबन, (२) काळ, [३ मार्ग अने (४) यत्ना (जतना, जीव दया) ए चार प्रकारे शुद्ध रहीने विचरवु जोइए [४]. आलंबन एटले ज्ञान, दर्शन अने चारित्रने अनुसरवु ते, काळ एटले दिवसना भागमां [रात्रिए नहि] विहार करवो, अने मार्ग एटले उन्मार्गनो त्याग [५]. यत्ना चार प्रकारनी छे :-[१] द्रव्य -यत्ना, (२) क्षेत्र-यत्ना, [३] काळ-यत्ना, अने [४] भाव-यत्ना. ते चारे हुं समजावुं छुं ते साभळो. [६]. द्रव्य-यत्ना एटले चक्षुवडे जीवादि द्रव्यनु ध्यान राखीने, क्षेत्र यतना एटले युग मार्ग [चार हाथ जमीन] तपासीने, काळ-यत्ना एटल जेटलो काळ विचरवु पडे ते दरमियान, अने भाव यत्ना एटले सावधान रहीने, साधुए विचरवुं. (७). इन्द्रिओना विषयो त्यागीने अने पांच प्रकारे स्वाध्याय अंगीकार करीने ज साधु काय चापल्य रहित सावधानपणे विचरे छे, ते इर्या-समिति बराबर पाळी शके छे. [८].

कोहे माणेय मायाय लोभेय उवउत्तया । हासे भय मोहरिए विगहासु तहेवय ॥९॥ एयाइं अट्ठ ठाणाइ परिवज्जितु सजए । असावज्ज मिय काले भास भासेज्ज पन्नव ॥ १० ॥ गवेसणाय गहणेय परिभोगे सणायजा । आहारो वहि सिज्जाए एए तिन्नि विसोहिए ॥ ११ ॥ उग्गमु प्पायण पढमे बीए सोहिज्ज एसण । परिभोगमि चउक्कच

२. भाषा-समिति–क्रोध, मान, माया, लोभ, हास्य, भय वाचालपणु * अने विकथा (निंदा, वडाइ) ए आठ [पाप] स्थानको प्रज्ञावान साधुए त्यागवा जोइए अने योग्य काळे (जरुरना प्रसंगे) निर्दोष संक्षिप्त भाषा बोलवी जोइए. (९-१०). ३. एषणा-समिति–आहार, वस्त्र पात्रादि अने शय्या-उपाश्रय ए त्रण प्रकारनी वस्तुओनी गवेषणा [विशुद्धतानी तपास], ग्रहण-एषणा(स्वीकार) अने परिभोग-एषणा (उपभोग)ना दोष साधुए त्यागवा जोइए.[११]. यत्नवान साधुए प्रथममां एटले गवेषणामां उद्गम[आपनार] अने उत्पादन [लेनार]ना (सोळ×सोळ)दोष टाळवा जोइए; बीजी ग्रहण-एषणामां एटले आहारादिनो स्वीकार करवामां रहेल[दश×]

* मोहरिए ए आठमा व्रतनो त्रीजो अतिचार छे, जेम तेम बोल्या करवुं. × आपनार अने लेनारना सोळ सोळ दोष नीचे मुजब छे १–साधु निमित्ते, छकायनो आरंभ करी निपजावेलो आहार वोहोरावे तो 'आधाकर्मी' दोष. २–साधु निमित्ते वधारे तैयार करावेल आहार वहोरावे तो 'उद्देशिक' दोष. ३–वहोराववा खातर नेवासर तैयार करेलो आहार आपे ते 'पुइकर्म' दोष [पूतिक]. ४–शुद्ध अने अशुद्ध भळी गयेल आहार आपे ते 'मिश्र' दोष. ५–साधु माटे केटलोक वखत सुधी खास राखी मूकेल आहार आपे ते 'ठवणा' [स्थापना] दोष. ६–साधुने आव्या जाणी वस्तु आगळ पाछळ मूके अथवा गाममां साधुनी हाजरीनो लाभ लेवा विलंब छतां विवाहादिक आरंभे ते 'पाहुडीआ' [प्राभृतिका] दोष ७–वरमां साधुने आववानी सगवड खातर के अजवाळा खातर, छकायनी हिंसा करे ते, 'पाउर' (प्रादुःकरण) दोष. ८–साधुने माटेज पैसा खरचीने लीधेली चीज वहोरावे ते 'क्रीतगड' [क्रीत] दोष. ९–साधुने माटेज उधार उछिनी लीधेल चीज आपवी ते 'पामिच्च' (प्रामित्य) दोष. १०–साधुने माटे । अदल

विसोहिज्जा जय जई ॥ १२ ॥ उहो वहो वग्गहियं भंडगं दुविहं मुणी । गिह्णंतो निक्खवंतोय पउजिज्जा इमंविहिं ॥ १३ ॥ चक्खुसापडिलेहित्ता पमज्जिज्ज जयजई । आइएनिक्खिविज्जावा दुहओविसमिओसया ॥ १४ ॥ उच्चार पासवण खेल सिंघाण जल्लिय । आहार उवहिदेह अन्नवावि तहाविह ॥१५॥

दोष टाळवा जोइए; अने त्रीजी परिभोग-एषणा एटले मळेली वस्तुओनो उपभोग करवामा रहेला(चार¹)दोष टाळवा जोइए.[१२].

४ आदान समिति–साधुए सामुदायिक [रजोहरणादि] अने उपग्रहिक (दंडादि) बन्ने प्रकारनी वस्तुओ लेता-मूकतां नीचेनी विधिए वर्त्तवुं जोइए. (१३). यत्नवान साधुए प्रत्येक वस्तु प्रथम आंखवती तपासवी, पछीथी तेनु पडिलेहन करवु (पूजवुं) अने त्यारपछी आदान निक्षेपणा समिति युक्त [द्रव्ये अने भावे समित रहीने] तेने लेवी अथवा मूकवी. [१४]. ५ उच्चार-समितिः- मळ, मूत्र, श्लेष्म [गळफा] नासिकानो मळ, देह-मळ, आहार-उपधि [पडघाड] अने देह [²संथारा समये] एवा प्रकारनी अन्य वस्तुओ नीचेनी विधिए परठवी. (१५.)

---

१ सोळ उद्गम दोष, सोळ उत्पादन दोष, दश ग्रहण-एषणा दोष अने चार परिभोग एषणा दोष ए प्रमाणे कुल ४६ दोषछे. ते रहित आहार पाणी आदि साधुए व्होरवां जोइए अने तेनो उपयोग करवो जोइए. २. When he is about to die.

×=बदल करेली चीज आपवी ते 'परियट्ट' [परावृत] दोष. ११–साधुने माटेज सामा लावी आपे ते'अभिहड'[अभ्याहृत] दोष. १२- साधुने माटेज ताळुं, दाटा उघाडी चीज आपे तो 'अभिन्न' दोष. १३–साधुने माटेज मेडी के भोंयरामाथी लावी आपे तो 'मालो- हड'मालाहृतदोष. १४-साधुने माटेज कोइना हाथमाथी झुंटावेलो आहार आपे ते'अछिज'(आछेद्य)दोष.१५-साधुने माटेज,सहीयारी मलीयारी वस्तुमाथी भागीआनी रजा विना चीज वहोरावे ते 'अणिसिठ' दोष. १६–साधुने माटेज, आधण वीगेरे उमेरेल होय तो ते 'अमीयर' [अध्यवपुर] दोष.

,अणावाय मसंलोए अणावाए चेवहोइ संलोए । आवाय मसंलोए आवाए चेवसंलोए ॥ १६ ॥

*स्वपक्ष या परपक्षना लोको ज्यां आवता जता न होय अथवा देखाता न होय, जे जगोए तेमनु आववुं जवु थतु न होय पण तेओ देखी शकता होय, अथवा तो आववुं जवु थतुं होय पण तेओ देखी शकता न होय,अथवा तो आववुं जवुं अने देखवु थतं होय (१६)

*आ गाथा बीजी गाथाओथी जुदा छन्दमा [आर्या] छे, वळी गाथा १७ अने १८मा सर्व स्थळोनो समावेश थइ जतो होवाथी एनी जरूर पण जणाती नथी माटे ते पाछळथी उमेराइ होय एवु अनुमान थाय छे.

×=१–गृहस्थनां बाळको रमाडीने आहार ले ते 'धाइ' (धात्री) कर्म दोष. २–गृहस्थना संदेशा कहीने आहारादि ले ते ' दुति ' कर्म दोष. ३–निमित्त प्रकाशी आहारादिक ले ते 'निमित्ति' दोष. ४–जाति कुळनां वखाण करी आहारादिक ले ते 'आजीविका' दोष ५–रांकनी पेठे करगरी आहारादिक ले ते 'वणिमग' [वनीक] दोष. ६–वैदु करी आहारादिक ले ते 'तिगिछ' [चिकित्सा] दोष. ७–क्रोध करी काइ ले ते 'क्रोध' पिंड ८–मान करी काइ ले ते 'मान' पिंड. ९–माया करी कांइ ले ते 'माया' पिंड. १०–लोभ करी कांइ ले ते 'लोभ' पिंड. ११–आगला पाछला परिचयनी पीछान काढी खुशामत करी काइ ले तो 'पूर्वपश्चात संस्तव' दोष १२–विद्यानो डोळ करी आहारादिक ले तो 'विद्या पिंड' १३–मंत्रनो डोळ करी आहारादिक ले तो 'मंत्र दोष'. १४–चूर्ण औषधि वीगेरे आपीने आहारादिक ले तो ' चूर्ण योग'. १५–वशीकरण करी आहारादिक ले तो 'योग पिंड' दोष. १६–गर्भ माटे औषध आपी आहारादिक ले तो ' मूळ कर्म ' दोष.

×=१–दातार रांधतां ते लेतां साधुने उद्गमादिक दोषनी शंका उपजे छतां आहार ले ते ' शंकित ' दोष. २–सचितथी हाथ खरडायां होय ने हाथे आहार ले तो ' मक्खित ' (म्रक्षित) दोष. ३–चीजे सचित्त उपर अचित्त होय तेनो आहार ले तो ' निक्खित '

अणाताय मसलोए परस्सणु वघाइए । समे अझुसिरेयावि अचिर कालकयमिय ॥१७॥ विच्छिन्ने दूरमोगाढे नासन्ने बिलवज्जिए । तसपाणवीय रहिए उच्चाराइणिवोसिरे ॥ १८ ॥

जे जगोए अन्य लोको आवतां जता न होय अने तेओ ते देखी शकता पण न होय, ज्या सयमनो उपघात थतो न होय, ज्यानी जमीन उंची नीची न होय [सपाट धरती होय], जे तृण-पत्रादिथी छवायेली न होय, जे थोडा समय पहेला अचेत [आगथी बाळीने] करवामा आवेली होय, जे विस्तारवाळी होय, जेनु उपरनु पड (अमुक आगळ) अचेत होय, जे गामनी छेक नजीकमा न होय, जेमां उंदर वगेरेनी नखोलो [दर न होय, अने जे त्रस जीव तथा बीज रहित होय एवी दस गुण युक्त जगाए उच्चारादि (मळ-मुत्रादि) परठवु-यत्नाथी नाखी आवनु (१७-१८).

×=[निक्षिप्त] दोष. ४–नीचे अचित उपर सचित होय तेवो आहार ले तो 'पिहित' दोष ५–वासणमा सचित होय ते ठलवी तेमा आहार नांखी आपे ते, ले तो 'साहरिय' (सह्रत) दोष. ६–आखे अखम होय ते उठी आहारादिक वहोरावे ते लेवो ते 'दायगो' (दायक) दोष ७–सचित अचित भेळा होय तेवो आहारदिक ले ते 'मिश्र' दोष. ८–भागीदारनी इच्छा विरुद्ध आपेलु ले ते 'अपरणीत' दोष ९–हाथ धोइने आपे अथवा आप्या पछी हाथ धोवे ते लवु ते 'लिप्त' दोष. १०–वेरातुं वेरातुं लावी आपे ते ले तो 'छड्डक' दोष.

×=१. स्वाद खातर बे चार वस्तु मेळवी आहार करे तो 'सजोग' (संयोजना) दोष २–प्रमाण उपरांत ठांसी ठांसी आहार करे तो 'अप्रमाण' [प्रमाणाति क्रम] दोष. ३–आहार आपे तेनां वखाण करे ते 'इंगाल कर्म' दोष. ४–आहार न आपे तेनी निंदा करे ते 'धूम्र' दोष. परिभोग एषणाना त्रीजाने चोथा दोषने केटलाक ग्रंथोमां एक तरीके जोवामां आवे छे. ५–छ कारण विना आहार करे तो 'कारण' दोष.

एयाओ पंचसमिईओ समासेण वियाहिया । इत्तोय तओगुत्तीओ वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥ १९ ॥ सच्चातहेवमोसाय सच्चामोसा तहेवय । चउथ्थीअसच्चमोसा मणगुत्ती चउव्विहा ॥ २० ॥ सरंभ समारंभे आरंभेय तहेवय । मण पवत्तमाणतु नियत्तिज्ज जयजई ॥२१॥ सच्चातहेव मोसाय सच्चामोसा तहेवय । चउथ्थी असच्चामोसाउ वय गुत्ती चउव्विहा ॥२२॥ सरंभ समारंभे आरंभेय तहेवय । वयं पवत्तमाणतु नियतिज्ज जयजइ॥२३॥ ठाणे निसीयणेच्चेव तहेवय तुयट्टणे । उल्लंघण पल्लंघण इंदियाणयजुं जणे ॥२४॥ सरंभ समारंभे आरंभेय तहेवय । काय पवत्तमाणतु नियत्तेज्ज जयजइ ॥ २५ ॥

पांच समितिनु आ प्रमाणे संक्षिप्त व्याख्यान करीने हवे त्रण गुप्तिनु अनुक्रम वर्णन करु छुं (१९). १ मनो-गुप्ति —[१ सत्य, (२) असत्य, (३) सत्यासत्य, अने (४) असत्य-मृषा ए रीते चार प्रकारनी मनो गुप्ति छे. [२०]. यत्नवान साधुए पोताना मनने संरम्भ १ (अन्यने उपद्रव थाय एवा मनोभाव संकल्पथी), २ समारम्भ–जीवोने दुःख उपजे एवा कृत्योना विचारथी अने ३ आरंभथी जीवोनो घात थाय एवा कृत्योना विचारथी पाछुं वाळवुं–निवर्तावि्वु जोइए २१. २ वचन-गुप्ति–ए पण गाथा २०मां वर्णव्या प्रमाणे चार प्रकारनी छे. २२. यत्नवान साधुए पोताना वचनने गाथा २१ प्रमाणे निवर्त्तावि्वुं जोइए. २३. ३ काय गुप्ति :–यत्नवान साधुए उठतां, बेसतां, सूतां अने ४उंचा-नीचा थतां इन्द्रिओने शब्दादि विषयने विषे जतां अटकावती जोइए,५ अने अन्य जीवोने उपद्रव थाय अथवा तेमनो घात थाय एवां कृत्योथी पोतानी कायाने निवर्त्तावि्वी जोइए. २४-२५.

१ Desires for the misfortune of somebody else २ Thoughts on acts which cause misery to living beings ३ Which cause their distinction ४ आने बदले मो. जेकोबी (Jumping) 'कुदवां' लखे छे, पण साधुने कुदवापणुं संभवतुं नथी. ५. Prevent from intimating obnoxious desires

एयाओ पचसमिईओ चरणस्मथ पवत्तणे । गुत्तीनियत्तणेवुत्ता असु भथ्थेसु सव्वसो ॥ २६ ॥ एया पवयणमाया जोसम्मं आयरे मुणी । सोखिप्प सव्वसंसारा विप्पमुच्चइ पडिए त्तिवेमि ॥ २७ ॥

॥ इति अठपवयणनाम झयण चोविस सम्मत्त ॥ २४ ॥

अध्ययन २५. खरो यज्ञ.

माहण कुल संभूओ आसी विप्पो महायसो । जायइ जम्म जन्नामि जयघोसेत्ति नामओ॥१॥ इंदियग्गाम निग्गाहि मग्गग्गाभी महामुणी । गामाणुगाम रीयतो पत्तो वाणारसि पुरिं ॥ २ ॥

चारित्रमां प्रवर्तमान रहेवाने माटे आ पंच समिति कही छे, अने सर्व प्रकारना अशुभ व्यापारथी [पाप-कर्मथी] निवर्तावराने माटे त्रण गुप्तिओ कही छे. [२६]. आ अष्ट प्रवचन रुपी [1]जिनाज्ञा जे तत्वज्ञ मुनिए रुडी रीते पाळवी जोइए तेथी [जन्म-मरण] संसार-भ्रमणथी[2] शीघ्र मुक्त थवाय छे. [२७].

॥ चोवीसमु अध्ययन संपूर्ण. ॥

अध्ययन २५.

जयघोष नामे एक महायशस्वी ब्राह्मण हतो ; ते ब्राह्मण कुळने विषे उत्पन्न थयो हतो, पण ते पंच महाव्रत (जिन धर्मनां) पाळतो हतो. [१]. ए इन्द्रिय निग्रही अने समार्ग (मुक्ति मार्ग) गामी महा मुनि ग्रामानुग्राम विहार करता एक दिवस वाणारसी [काशी] नगरीने विषे आवी पहोंच्या. [२].

---

1 Essence of creed 2 Circle of births

वाणारसीए वहिया उज्जाणमि मणोरमे । फासूए सिज्ज संथारे तथ्थ वास मुवागए ॥३॥ अह तेणेव कालेण पुरीए तथ्थ माहणे । विजयघोसेत्ति नामेण जन्न जयइ वेयवी ॥४॥ अह से तथ्थ अणगारे मासक्खमण पारणे । विजयघोसस्स जन्नमि भिक्खमट्ठा उवट्ठिए ॥ ५ ॥ समुवट्ठिय तहिंसत जायगो पडिसेहइ । नहु दाहामि ते भिक्खं भिक्खू जायाहि अन्नओ ॥ ६ ॥ जेय वेयविऊ विप्पा जन्नट्ठाय जे दिया । जोइसंग विऊ जेय जेय धम्माण पारगा ॥ ७ ॥ जे समथ्था समुद्धत्तु पर अप्पाण मेवय । तेसिं अन्न मिण देय भो भिक्खु सव्व कामिय ॥ ८ ॥ सो तथ्थ एव पडिसिद्धो जायगेण महामुणी । नवि रुट्ठो नवि तुट्ठो उत्तमट्ठ गवेसओ ॥ ९ ॥

वाणारसी नगरीना बहारना भागमा एक मनोहर उद्यानमा ते आवी रह्या अने त्यां तेमणे एक निर्भीर अने निर्दोष जग्यामां वास कर्यो. (३) तेज काळे अने तेज नगरीमां विजयघोष नामे एक वेदज्ञ ब्राह्मण यज्ञ करतो हतो. [४]. हवे ते अणगार (जयघोष) मासक्खमणने पारणे विजयघोष ब्राह्मणना यज्ञवाडे भिक्षार्थ आवीने उभा रह्या. [५]. भिक्षाने अर्थे ते साधुने आवतो देखीने पेलो यज्ञ करनार ब्राह्मण [विजयघोष] तेने काढी मूकवाने बोल्यो, " हे भिक्षुक ! हु तने भिक्षा नहि आपुं; बीजे ठेकाणे भिक्षा मागवा जा." (६). " हे भिक्षुक ! जे ब्राह्मणो वेद पारगत, यज्ञार्थी अने जितेन्द्रिय छे, जेओ ज्योतिष शास्त्रमां निपुण छे अने धर्म शास्त्रना पारगामी छे. अने जेओ पोताना तेमज अन्यना आत्माने ससार समुद्रथी तारवाने समर्थ छे, तेवा ब्राह्मणोने अर्थे आ षट्रस युक्त भोजन नीपजावेलुं छे." (ते तारे माटे नथी). [७-८]. यज्ञ करनार विजयघोषे आ प्रमाणे ते महा मुनिने ना पाडी ते छतां ते साधु रुष्टा [क्रोधायमान थया] या तुष्टा (खुशी थया) नहि, कारण के ते उत्तमार्थ गवेषक (मोक्षाभिलाषी) हता.[१] [९].

१ Strove for the highest good

न न्नठ पाण हेउंवा नवि निव्वाहणायवा । तेसिं वि मुख्खण ठाए इमं वयण मब्बवी ॥ १० ॥ नवि जाणसि वेय मुह नवि जन्नाण ज मुह । नख्खत्ताण मुह जंच जच धम्माण वा मुह ॥११॥ जे समथ्था समुद्धतु परं अप्पाण मेवय । न ते तुम वियाणासि अह जाणासि तओ भण ॥ १२ ॥ तरसख्खेव प्पमोख्खच अचयतो तहि दिउ । स परिगो पजलिहोउ पुछ्छई त महामुणि ॥ १३ ॥ वेयाणंच मुहबूहि बूहि जन्नाण ज मुह । नख्खत्ताण मुहबूहि बूहि धम्माण ज मुह ॥१४॥ जे समथ्था समुद्धतु परअप्पाण मेवय । एयमे ससयसव्व साहुकहय पुछिओ ॥१५॥ अग्गिहोत्त मुहावेया जन्नट्टीवेयसामुहं नख्खत्ताण मुहचदो धम्माण कासवोमुहं ॥ १६ ॥

अन्न पान अथवा तो पोताना निर्वाह माटे भोजन वस्त्रादिनी प्राप्ति अर्थे नहि, पण ते लोकाने कर्म बन्धनथी [1]मुकाववाने माटे ते महामुनि ब्राह्मणो प्रति कहेवा लाग्या :-(१०). हे विजयघोष! तु वेदनु, यज्ञनु, नक्षत्रनु तेमज धर्मनुं मुख [मूळ तत्व] जाणतो नथी. [११]. "वळी जेओ पोताना तेमज अन्यना आत्माने तारवाने समर्थ छे तेने पण तुं ओळखतो नथी. जो तु जाणतो होय तो कही दे." [१२]. मुनिना आक्षेपनो उत्तर देवाने ते ब्राह्मण असमर्थ हतो. तेथी ते पोते अने त्या भेगा थयेला अन्य ब्राह्मणो हाथ जोडीने ते महामुनिने प्रश्न करवा लाग्या :-[१३]. हे महामुनि! वेदनु, यज्ञनुं, नक्षत्रनु तेमज धर्मनु मुख शु छे ते आप अमने कहो. (१४). "वळी पोताना तेमज अन्यना आत्माने तारवाने कोण समर्थ छे ते पण अमने कहो. हे साधु! अमारा सघळा सन्देह भाग टाळो." (१५). मुनि कहे छे, "हे विजयघोष! वेदनुं मुख अग्निहोत्र [एटले धर्म ध्यानरूपी अग्निमा कर्मरूपी इन्धननो होम करवो ते] छे, यज्ञनु मुख उत्तम भावना (एटले दश प्रकारनो धर्म-सत्य, तप, संतोष, क्षमा, चारित्र, मार्जव, श्रद्धा, [2]धृति, अहिंसा, अने संवर) छे, नक्षत्रनु मुख चन्द्र छे, अने सर्व धर्मनु मुख काश्यपनो [श्री ऋषभदेव भगवाननो] धर्म छे. [१६].

---

1 To save these people. 2 Constancy

जहाचंद गहाईया चिट्ठति पंजलिउडा । वंदमाणा नममता उत्तमं मणहारिणो ॥ १७ ॥ अजाणगा जन्नवाइ त्रिज्जामाहण मपया । मूटा सज्झाय तवगा भाम छन्नाइवग्गिणो ॥ १८ ॥ जोलोए वभणो वुत्तो अग्गीवा महिउ जहा । सयाकुसल संदिट्ठ तनय वूममाहण ॥१९॥ जोन सज्जइ आगतु पव्वयतो न सोयई । रमइ अज्जवयणंमि तंनय वूममाहणं ॥ २० ॥ जाय रूव जहामट्ठ निद्धत मलपावग । रागदोसभयातीत तनय वूममाहणं ॥ २१ ॥

"जेम ग्रहो, नक्षत्रो अने तारा, चन्द्रनी आगळ हाथ जोडीने उभा रहे छे अने नमस्कार करतां थका तेनी सेवा करेछे, तेम मनोहर देवताओ (इन्द्रादि) श्री ऋषभदेव भगवानने विनय पूर्वक वाणीने तेमनी स्तुति करे छे. (१७). तत्वना ज्ञान रहित, यज्ञवादी ब्राम्हणो यज्ञना जाणपणानो डोळ करेछे, पण तेओ अग्नि विद्या अने ब्राम्हण सम्पदाथी अज्ञान होय छे; अने अग्नि जेम राखमां ढंकाइ रहे छे तेम तेओ स्वाध्याय अने तपमां ढंकायेला (बहारथी शान्त पण अंतरमां क्रोध, मान, माया, लोभादिथी दग्ध) रहे छे. [१८]. "जेने लोको ब्राम्हण कहेछे अने अग्निनी पेठे पूजे छे ते खरो ब्राम्हण नथी. पण जेने कुशळ [विद्वान] पुरुषो ब्राम्हण कहे छे तेने अमे खरो ब्राम्हण कहीए छीए. (१९) "जे दीक्षा लीधा पछी ससारीनो सग करतो नथी, जे साधु थया बाद १स्थानान्तर थवाथी शोच करतो नथी अने जे २ आर्य (तीर्थकरना) वचनथी संतोप पामे छे, तेने अमे खरो ब्राम्हण कहीए छीए. (२०). जे राग, द्वेष अने भय रहित होय अने जे अग्निमा शुद्ध करेला अने ओप चढावेला सुवर्णनी माफक पाप मळथी रहित होय तेने अमे खरो ब्राम्हण कहीए छीए. (२१).

१ संस्कृत टीकाकार आनो एवो अर्थ करे छे के "स्वजन मळवाथी जे तेने भेटी पडतो नथी अथवा तो तेमनाथी वियुक्त थती वखते शोक करतो नथी " २. Noble words

तवस्सिय क्सिदत अवचिय मससोणिय । सुव्वय पत्तनिव्वाण तवय बूममाहणं ॥ २२ ॥ तसेपाणे वियाणित्ता सगहेणयथावरे । जोन हिसइतिविहेण तवय बूममाहण ॥ २३ ॥ कोहावा जइवाहासा लोहावा जइवाभया । मुस नवयइजोउ तवय बूममाहण ॥ २४ ॥ चित्तमत मचित्तवा अप्पवा जइवा बहु । न गिण्हइ अदत्तजो तवय बूममाहण ॥ २५ ॥ दिव्व माणुस्सतिरिक्ख जोनसेवइ मेहुण । मणसा कायवक्केण तवय बूममाहण ॥ २६ ॥ जहा-पउम जलेजाय नोवलिप्पइ वारिणा । एव अलित्त कामेहि तवय बूममाहण ॥ २७ ॥

" कृश (दुर्बळ) अने जितेन्द्रिय तपस्वी जेणे पोतानु मास अने लोही शोषी नाख्या होय, जेणे कषाय (क्रोध, मान, माया, लोभ) अग्निनु शमन करेलु होय, अने जेने निर्वाण प्राप्त थयु होय तेने अमे खरो ब्राह्मण कहीए छीए. [२२]. " जे त्रस अने स्थावर (हालतां चालता अने स्थिर) सर्व जीवने बराबर जाणे छे, अने तेनो त्रणे प्रकारे (मन, वचन, कायाये) विनाश करतो नथी तेने अमे खरो ब्राह्मण कहीए छीए. [२३]. " जे क्रोधथी, हास्यथी, (मश्करीमा पण) लोभथी अथवा भयथी मृषावाद बोलतो नथी तेने अमे खरो ब्राह्मण कहीए छीए [२४]. " जे अदत्तादान लेतो नथी—पछी ते सचेत होय के अचेत होय, अथवा थोडुं होय के घणुं होय—तेने अमे खरो ब्राह्मण कहीए छीए. [२५]. "जे देव, मनुष्य अथवा तिर्यचनी साथे मन, वचन, कायाये करीने मैथुन सेवतो[1] नथी, तेने अमे खरो ब्राह्मण कहीए छीए. [२६] " जेम कमल पाणीमा उगे छे छतां तेनाथी अलिप्त (भींजाया वगरनुं रहे छे, तेम जे काम-भोगथी अलिप्त रहे छे तेने अमे खरो ब्राह्मण कहीए छीए. [२७].

१. Does not carnally love.

अलोलुयं मुहाजीविं अणगारं अकिंचणं । असंसत्तं गिहत्थेसु तंवयं बूममाहणं ॥ २८ ॥ जहित्ता पुव्वसंजोगं नाइ संगेय बंधवे । जोनसज्जइ एएसु तवयं बूममाहणं ॥ २९ ॥ पसूबंधा सव्ववेया जट्ठंच पावकम्मुणा । न तं तायंति दुस्सील कम्माणि बलवंतिह ॥ ३० ॥ नवि मुंडिएण समणो नओंकारेण बंभणो । न मुणी रण्णवासेण न कुसचीरेण तावसो ॥३१॥ समयाए समणो होइ बंभचेरेण बंभणो । नाणेणए मुणी होइ तवेण होइ तावसो ॥ ३२ ॥

" जे (आहारादिने विषे) लोलुप रहेतो नथी, जे अज्ञाणपाने त्यागी आहारादि गोचरी लावीने संयमनो निर्वाह करे छे, जे परिग्रह रहित होय छे, अने जे गृहस्थनो परिचय सेवतो नथी तेने अमे खरो ब्राह्मण कहीए छीए [२८]. " जेणे पोतानो (माता पितादि साथेनो) पूर्व संयोग छोडी दीधो छे, जेणे ज्ञाति अने बांधवोनो संग छोडी दीधो छे अने जे काम भोगने विषे तत्पर रहेतो नथी, तेने अमे खरो ब्राह्मण कहीए छीए [२९] " हे विजयघोष! वेद पशु वध करी यज्ञ करवानु कहे छे पण ते पापनां कारण रूप छे; तेमां दुःशीलनुं(पाप कर्म करनारनुं)रक्षण करी शकता नथी(हीणाचारी पुरुषने नर्के पडता रोकी शकता नथी) कारणके करेलां कर्म अति बळवान छे. (अर्थात-कर्मथी बचावनार कोइ नथी) [३०] " माथे मुंडन कराववाथी कोइ श्रमण थवातु नथी ओंकार (ॐ) भणवाथी ब्राह्मण थवातुं नथी, अरण्यमां वास करवाथी कोइ मुनि थवातु नथी अने दर्भ (नु आसन) अने वल्कल धारण करवाथी कोइ तापस (तपस्वी) थवातुं नथी. [३१] " (परन्तु) समता भाव राखे ते श्रमण, ब्रह्मचर्य सेवे ते ब्राह्मण, ज्ञान प्राप्त करे ते मुनि अने तपश्चर्या करे ते तापस कहेवाय छे (३२).

कोइ जेकोबी एनो अर्थ करेछे के Who lives unknown जे अज्ञात रहिने पोतानुं जीवन गाळे छे मूळ शब्द 'मुहाजीवि' छे. संस्कृत 'मुधाजीविन्'; टीकाकारमां लख्यु छे के 'अज्ञात कुळेषु आहारादि गृहित्वा आजीविका कुर्वाणं [illegible] जीविनं पारके'. [illegible] By the tongue

कम्मुणा बंभणो होइ कम्मुणा होइ खत्तिओ । वइस्सो कम्मुणा होइ सुद्दो हवइ कम्मुणा ॥ ३३ ॥ एए पाउ करे बुद्धे जहिं होइ सिणायओ । सव्व कम्म विणिमुक्कं तवयं बूममाहण ॥ ३४ ॥ एव गुण समाउत्ता जे भवंति दिउत्तमा । ते समत्थासमुध्धत्तु पर अप्पाण मेवय ॥ ३५ ॥ एव तु ससए छिन्न विजयघोसेय माहणो । समुदाय तउ तत्तु जयघोस महामुणिं ॥ ३६ ॥ तुट्ठेय विजयघोसो इण मुदाहु कयंजली । माहणत्त जहाभूय सुठु मे उव दासिय ॥३७॥ तुब्भे जइया जन्नाण तुब्भे वेय विउविऊ । जोइसग विऊतुब्भे तुब्भे धम्माण पारगा ॥ ३८ ॥ तुब्भे समत्था समुद्धत्तु पर अप्पाण मेवय । त मणुग्गह करेअम्ह भिक्खेण भिक्खु उत्तमा ॥३९॥

" कर्म प्रमाणेज ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य अने शुद्र कहेवाय छे. [अर्थात–ब्राह्मणादि कुळमा जन्म थवाथी नहि, पण जेनां जेवा लक्षण अथवा कृत्य होय तेवो ते गणावो जोइए १]." [३३] श्री तीर्थंकर भगवाने उपर जे गुणो वर्णव्या छे ते सेववा थकी स्नातक (केवळी) थवाय छे, जे सर्व कर्मथी मुक्त थयेलो होय तेने अमे खरो ब्राह्मण कहीए छीए." [३४]. " जे उपरना सर्व गुणे करीने युक्त होय ते द्विजोत्तम [उत्तम ब्राह्मण] कहेवाय छे. अने ते पोताना तेमज अन्यना आत्माने तारवाने समर्थ थाय छे. " [३५]. आ प्रमाणे पोताना संशयो दूर थवाथी विजयघोष ब्राह्मणे जयघोष मुनिनो सत्कार कर्यो अने तेमनो उपदेश स्वीकार्यो.२ [३६] विजयघोष ब्राह्मण संतुष्ट थयो तेथी ते हाथ जोडीने कहेवा लाग्यो के, " आपे ब्राह्मणत्वनु खरु स्वरूप मने समजाव्युं छे." [३७]. " हे महामुनि ! आप [कर्म] यज्ञना करणहार छो, वेदज्ञ पुरुषोमां आप सौथी श्रेष्ठ छो, आप ज्योतिष शास्त्रना जाण छो अने आप धर्मना पारगामी छो." [३८]. आप पोते संसार समुद्र तरवाने अने अन्यने तारवाने समर्थ छो, हे भिक्षूत्तम ! कृपा करीने अमारे त्यांथी भिक्षा ग्रहण करो. " [३९].

१.कूळनुं अभिमान राखी अनर्थ सेवनाराओए कृपाळु भगवनना आ शब्दो हृदयमा कोतरी राखवा जोइए. २. Assented.

न कज्जं मझ भिक्खेणं खिप्पं निक्खमसुदिया । मामभिहि भयावत्ते घोरे संसार सागरे ॥४०॥उवलेवो होइ भोगेसु अभोगी नोव लिप्पइ । भोगी भमइ संसारे अभोगी विप्पमुच्चइ ॥४१॥ उल्लो सुक्खोय दो छूढा गोलया मट्टियामया । दोवि आवडिया कुडे जोउल्लो सोतथ्थ लगइ ॥४२॥ एव लग्गंति दुम्मेहा जे नरा कामलालसा । विरत्ताउ नलग्गंति जहा सुक्केउ गोलए ॥ ४३ ॥ एव से विजयघोसे जयघोसस्स अंतिए । अणगारस्स निक्खंतो धम्मसुच्चा अणुत्तर ॥ ४४ ॥ खवित्ता पुव्व कम्माइ संजमेणतवेणय । जयघोस विजयघोसा सिध्धिपत्ता अणुत्तरं तिबेमि ॥ ४५ ॥

॥ इति जन्नइज्जनाम झयण पन्नविसम समत्त ॥ २५ ॥

ए सांभळीने मुनि कहे, "भिक्षानी मने जरुर नथी, पण हे द्विज ! तु शीघ्र दीक्षा ग्रहण कर; अने घोर संसार सागरने विषे परिभ्रमण करतो अटक, कारण के तेनु [सप्तभयरुपी] वमळ अति भयानक छे. [४०]. "काम भोगने विषे लेपाएला छे, जेओ भोग भोगवता नथी तेओ ए लेपथी खरडाता नथी, अने जेओ भोग भोगवे छे तेओने संसारमां भ्रमण करवु पडे छे; जेओ अभोगी छे तेओ संसारथी मुक्त थाय छे (४१). "एक लीलो (भीनो) अने बीजो सूको एम माटीना बे गोळा लइने भीत साथे अफाळीए तो लीलो गोळो भींतने चोंटी रहे छे (अने सूको खरी पडे छे) [४२]. "एवी रीते दुष्ट बुद्धिना अने काम लालसावाळा मनुष्यो संसारमां [रमीने] चोंटी रहे छे, पण जेओ काम भोगथी विरक्त छे तेओ माटीना सूका गोळानी पेठे चोंटी रहेता नथी." (४३) आ प्रमाणे जयघोष मुनिनी पासेथी सर्वोत्तम धर्म श्रवण करीने विजयघोष ब्राह्मणे दीक्षा ग्रहण करी. (४४). जयघोष अने विजयघोष बन्ने सत्तरभेदे संयम अने बार भेदे तप आदरीने, पोताना पूर्व कर्मनो क्षय करीने, सर्वोत्तम सिद्ध गतिने प्राप्त थया. (४५)

* पचीसमु अध्ययन संपूर्ण. *

* Glue

अध्ययन २६. सामाचारी (शुद्ध आचार).

सामायारिं पवक्खामि सव्व दुक्ख विमोक्खणि । जंचरित्ताण निग्गथा तिन्नाससारसागरं ॥ १ ॥ पढमा आवसिया नाम विइया होइ निसीहिया । आपुच्छणाय तइया चओत्थी पडिपुच्छणा ॥ २ ॥ पंचमा छदणानाम इच्छाकारोय छट्ठउ । सत्तमो मिछकारोय तहक्कारोय अट्ठमो ॥ ३ ॥ अब्भुट्ठाणंचनवम दसमाउवसपया । एसादसं गासाहुणं सामायारी पवेइया ॥ ४ ॥ गमणे आवस्सियं कुज्जा ठाणेकुज्जा निसीहियं । आपुच्छणा सयकरणे परकरणे पडि

○ अध्ययन २६ ○

सामाचारी एटले शुद्ध करणी अथवा जे क्रिया सर्व दुःखथी मूकावे छे, तेनु हु (सुधर्मा स्वामी) वर्णन करु छु; जे अंगीकार करवाथी निग्रंथो संसार-सागर तरी गया छे [१], श्री तीर्थंकर भगवाने साधुने माटे दश प्रकारनी सामाचारी कही छे :—(१) आवश्यकी, (२) नैषेधिकी, [३] आपृच्छना, (४) प्रतिपृच्छना, [५] छदना, [६] इच्छाकार, [७] मिथ्याकार, (८)तथाकार, (९) अभ्युत्थान, अने [१०] उपसंपद् [२-४]. काइ आवश्यक (जरूरना) कार्य निमित्ते उपाश्रय थकी बहार जता आवश्यकीनी, स्थान कर्णा प्रवेश करती वखते नैषेधिकीनी, पोताने करवाना कार्यमा गुरुनी आज्ञा मागवी तेमा आपृच्छनानी, अन्यना कार्य कारणे गुरुनी आज्ञा लेवामा प्रतिपृच्छनानी, पोतानी पासे [अन्न, पाणी, आदि] जे वस्तुओ होय ते लेवाने अन्य साधुओने निमत्रण करवामा छदनानी, पोतानु अथवा पोताने सोंपायेलु काम बीजानी इच्छानुसार सोंपवामा इच्छाकारनी, काइ अयोग्य कार्य थइ जाय तो 'मिच्छामी दुक्कड' देवामा मिथ्याकारनी, गुरु काइ कार्य बतावे ते 'तथास्तु' कही अंगीकार करवामा तथाकारनी, गुरु, आ-

न कज्जं मज्झ भिक्खेणं खिप्पं निक्खमसू दिया । मा भमिहिइ भयावत्ते घोरे संसार सागरे ॥४०॥ उवलेवो होइ भोगेसु अभोगी नोव लिप्पइ । भोगी भमइ संसारे अभोगी विप्पमुच्चइ ॥४१॥ उल्लो सुक्को य दो छूढा गोलया मट्टियामया । दोवि आवडिया कुड्डे जो उल्लो सोत्थ लग्गइ ॥४२॥ एवं लग्गंति दुम्मेहा जे नरा कामलालसा । विरत्ता उ न लग्गंति जहा सुक्के उ गोलए ॥ ४३ ॥ एवं से विजयघोसे जयघोसस्स अंतिए । अणगारस्स निक्खंतो धम्मं सुच्चा अणुत्तरं ॥ ४४ ॥ खवित्ता पुव्वकम्माइं संजमेण तवेण य । जयघोस विजयघोसा सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं त्तिबेमि ॥ ४५ ॥

॥ इति जन्नइज्जनाम अज्झयणं पंचविसमं समत्तं ॥ २५ ॥

ए सांभळीने मुनि कहे छे, " भिक्षानी मारे जरुर नथी. पण हे द्विज ! तुं शीघ्र दीक्षा ग्रहण कर, अने घोर संसार सागरने विषे परिभ्रमण करतो अटक, कारण के तेनुं [संसारसमुद्र] स्थळ अति भयानक छे. [४०]. " काम भोगने विषे लेपकर्मरहेलो छे; जेओ भोग भोगवता नथी तेओ ए रूपथी खरडाता नथी; अने जेओ भोग भोगवे छे तेओने संसारमां भ्रमण करवुं पडे छे जेओ अभोगी छे तेओ संसारथी मुक्त थाय छे. (४१) "एक लीलो (भीनो) अने बीजो सूको एम माटीना बे गोळा लइने भींत साथे अफाळीए तो लीलो गोळो भींतने चोंटी रहे छे (अने सूको खरी पडे छे) [४२]. " एवी रीते दुष्ट बुद्धिना अने काम लालसावाळा मनुष्यो संसारमां [स्पर्शे] चोंटी रहे छे, पण जेओ काम भोगथी विरक्त छे तेओ माटीना सूका गोळानी पेठे चोंटी रहेता नथी. " (४३) आ प्रमाणे जयघोष मुनिनी पासेथी सर्वोत्तम धर्म श्रवण करीने विजयघोष ब्राह्मणे दीक्षा ग्रहण करी. (४४) जयघोष अने विजयघोष बन्ने सत्तरभेदे संयम अने बार भेदे तप आचरीने, पोताना पूर्व कर्मनो क्षय करीने, सर्वोत्तम सिद्ध गतिने प्राप्त थया. (४५)

* पचीसमुं अध्ययन संपूर्ण. *

° Glue

अध्ययन २६. सामाचारी (शुद्ध आचार).

सामायारिं पवक्खामि सव्व दुक्ख विमोक्खणि । जंचरित्ताण निग्गथा तिन्नाससारसागर ॥ १ ॥ पढमा आवसिया नाम बिइया होइ निसीहिया । आपुच्छणाय तइया चओत्थी पडिपुछणा ॥ २ ॥ पचमा छदणानाम इच्छाकारोय छट्ठउ । सत्तमो मिच्छकारोय तहक्कारोय अट्ठमो ॥ ३ ॥ अब्भुट्ठाणंचनवम दसमाउवसपया । एसादसं गासाहुणं सामायारी पवेइया ॥ ४ ॥ गमणे आवस्सिय कुज्जा ठाणेकुज्जा निसीहिय । आपुच्छणा सयकरणे परकरणे पडि

⊛ अध्ययन २६ ⊛

सामाचारी एटले शुद्ध करणी अथवा जे क्रिया सर्व दुःखथी मूकावे छे, तेनु हु (सुधर्मा स्वामी) वर्णन करु छु, जे अगीकार करवाथी निग्रंथो ससार-सागर तरी गया छे [१], श्री तीर्थकर भगवाने साधुने माटे दश प्रकारनी सामाचारी कही छे :—(१) आवश्यकी, (२) नैषेधिकी, [३] आपृच्छना, (४) प्रतिपृच्छना, [५] छदना, [६] इच्छाकार, [७] मिथ्याकार, (८)तथाकार, (९) अभ्युत्थान, अने [१०] उपसपद् [२-४]. काइ आवश्यक (जरुरना) कार्य निमित्ते उपाश्रय थकी बहार जता आवश्यकीनी, स्थानकमां प्रवेश करती वखते नैषेधिकीनी, पोताने करवाना कार्यमा गुरुनी आज्ञा मागवी तेमां आपृच्छनानी, अन्यना कार्य कारणे गुरुनी आज्ञा लेवामा प्रतिपृच्छनानी, पोतानी पासे [अन्न, पाणी, आदि] जे वस्तुओ होय ते लेवाने अन्य साधुओने निमत्रण करवामा छदनानी, पोतानु अथवा पोताने सोंपायेलु काम बीजानी इच्छानुसार सोंपवामा इच्छाकारनी, काइ अयोग्य कार्य थइ जाय तो 'मिच्छामी दुक्कड' देवामां मिथ्याकारनी, गुरु काइ कार्य बतावे ते 'तथास्तु' कही अगीकार करवामा तथाकारनी, गुरु, आ-

पढमं पोरिसि सज्झायं बिइयं झाणं झियायइ । तइयाए भिक्खायरियं चउथी भुज्जोवि सज्झायं ॥ १२ ॥ आसाढमासे दुपया पोसमासे चउप्पया । चित्तासोएसु मासेसु तिपया हवइ पोरिसी ॥ १३ ॥

प्रथम पौरुषीने विषे स्वाध्याय करवु, बीजी पौरुषीने विषे ध्यान करवु, त्रीजी पौरुषीने विषे भिक्षाचर्याने विषे जवुं अने चोथी पौरुषीने विषे पाछा स्वाध्याय (स्थंडिल, प्रतिलेखनादि)मा मन लगाडवु [१२]. आषाढ मासमां रात्रिनी पौरुषीने बे पाया [द्विपाद] होय छे; पोष मासमा चार अने चैत्र तथा आश्विन मासमा त्रण पाया होय छे. (१३).१६

१६पोरसी एटले प्रहर अने प्रहर एटले रात्रि या दिवसनो चोथो भाग. अहोरात्रिना आठ भाग योजेला छे. चार दिवसना अने चार रात्रिना एटले सामान्य रीते एक प्रहर त्रण कलाकनो गणी शकाय. विषुवकाळमा एटले चैत्र अने आश्विन मासमा ज्यारे रात्रि अने दिवस सरखां होय छे त्यारे दरेक पौरुषीना त्रण पाया-पग गाथामा कह्या छे, ते उपरथी सिद्ध थाय छे के प्रत्येक पायो एक कलाकनो होवो जोइए आषाढ मासमा रात्रिनी पौरुषीने बे पाया कह्या छे ते उपरथी जणाय छे के सूत्र लखाया ते वखते आषाढ मासमा दिवस १६ कलाकनो अने रात्रि ८ कलाकनी होवी जोइए. अने पोष मासमा चार पाया कह्या छे तेथी ते मासमा दिवस ८ कलाकनो अने रात्रि १६ कलाकनी होवी जोइए. वैदिक ज्योतिषमा पण आवीज गणतरी छे. हालना समयमां विषुवकाळ [Equinox] ता. २१ मार्च अने ता. २२ सप्टेम्बरना अरसामा आवे छे जे वखते दिवस रात्रि सरखा होय छे. लांबामां लांबो दिवस (Summer solstice] ता. २१ जुन अने टुंकामा टुंको दिवस [Winter solstice] ता. २१ डिसेम्बरना अरसामा आवे छे. हालना अने गाथामा दर्शावेल समयनी गणतरीथी सूत्रो लखायाना काळनु निर्माण शक्य होय तो तेम करवानु काम ज्योतिष अने गणित शास्त्री विद्वानोनु छे.

पढमे पोरिसि सज्झाय बिइयझाणझियायइ । तइयाए निद्दमोक्खच चउथ्थी भुज्जोविसज्झाय ॥१८॥ जनेइ जयाररत्तिं नक्खत्ततमिनह चउब्भाए । सपत्ते विरमिज्जा सज्झाय पउसकालमि॥१९॥तम्मेवय नक्खत्ते गयण चउभाग सावसेसमि। वेरत्तियापि काल पडिलेहित्ता मुणीकुज्जा ॥२०॥पुव्विल्लमि चउब्भागे पडिलेहित्ताण भडग। गुरु वदित्तु सज्झायं कुज्जा दुक्ख विमोक्खण ॥२१॥ पोरसीए चउब्भाए वदित्ताण तओगुरु । अपडिक्कमित्ता कालस्स भायण पडिलेहए ॥२२॥

प्रथम पौरुषीमा स्वाध्याय करवो, बीजी पौरुषीमां ध्यान धरवु. त्रीजी पौरुषीमा (ने अंते) निद्राथी मुक्त* थवु अने चोथी पौरुषीने विषे पाछु स्वाध्यायमा मन लगाडवु. (१८). जे [1]नक्षत्र रात्रि पूर्ण थती होय ते नक्षत्र ज्यारे आकाशना चतुर्भागे पहोंचे त्यारे स्वाध्यायथी विरमवु [१९]. आकाशना जे चतुर्भागमा ते नक्षत्र होय तेनो शेष भाग बाकी रहे ते वैरात्रिक अथवा प्रदोषकाळ (सुर्योदय पहेलानो काळ एटले परोढीउ) गणातो होवाथी तेमा मुनिए प्रतिलेखन (पडीलेहन) करवुं. (२०). प्रथम पौरुषीना प्रथम पादमा (कलाकमा) वस्त्रादि तपासीने तेनु पडिलेहण करवुं, पछी गुरुने वदन करवु अने त्यारपछी पापने निर्मळ करनार [दु:खथी मूकावनार] जे स्वाध्याय ने आदरवुं.[2] (२१). प्रथम पौरुषीना चोथा भागमा गुरुने वदन करवु अने आलोयणा लेवा (काउ प्रतिक्रमण करवा) न रोकातां [3] साधुए पोताना पात्रादिनु विधि पूर्वक पडिलेहन करवुं. [२२].

---

* मुनिओए केटले सुधी प्रमादने पडखे न चडवु ए आ उपरथी समजी शकाय छे. नपोरे निराते पोढी जनारने आ शब्दो सविनय समर्पण हो. [1] जे नक्षत्र सूर्यनी बराबर सन्मुख होय ते एटले स्वाभाविक रीते ते नक्षत्रनो सूर्यास्त समये उदय थाय अने सूर्योदय समये तेनो अस्त थाय. [2] प्रो. जेकोबी अहिं पण दशमी गाथा जेवो अर्थ करेछे. [3] प्रथम पौरुषीना प्रथम त्रण भागमा वस्त्रादिनु पडिलेहन तथा स्वाध्याय करेल तेमा लागेला दोषो आळोववा प्रतिक्रमवा ते वखते न रोकातां काम आगळ चलाववु कारण दीवस दरम्यानना घणा कार्योनी आलोयणा सांजरे भेगी लेवानी छे.

उ अ २६

पसिढिल पलम्ब लोला एगा मोसा अणे गुरुव धुणा । कुणइ पमाणे पमाय सङ्किए गणणोवगं कुज्जा ॥ २७ ॥ अणुणाइ रित्त पडिलेहा अविवच्चासा तहेवय । पटम पय पसत्थं सेसाणिउ अप्प सत्थाणि ॥ २८ ॥

११८

वस्त्रने शिथिलपणे पकडे, अथवा वस्त्रने मात्र एक खुणेथीज पकडे, अथवा तो जमीन साथे तेने फडफडया दे-घसावाटे, अथवा ने छेडा आगंने एकदम वस्त्रने पहोळुं करे अथवा तेने त्रण पुरिमानी विधि उपरांत आम तेम हलावे अथवा तो पस्फोडादी प्रमाणने विषे प्रमाद करे अने शुल्ल पडनाथी आंगळी वति गणे आ सघळा प्रतिलेखनना दोष गणीने ते त्यागवा जोइए. १(२७). पडिलेहन न्युनाधिक पटले वधतुं ओछु करवु नहि अने विपरित रीते पण करवु नहि. पडिलेहन करवानो ए खरो मार्ग छे, बीजा वधा भांगा खोटा छे. (२८).

१.२५,२६,२७ विगेरे गाथानी बारीकीथी प्रो. जेकोबी पण मुझाइ जायछे अने जाहेर करेछे के Much in my translation is conjectural There are some technicalities in these verses which I fail to understand clearly.........I am not sure of having bit the true meaning.

पडिलेहणं कुणंतो मिहो कहं कुणइ जणवय कहंवा । देइ वपच्चक्खाणं वाएइ सयं पडिच्छइवा ॥२९॥ पुढवी आउ क्काए तेउ वाउ वणस्सइ तसाण । पडिलेहणा पमत्तो छण्हपि विराहउ होइ ॥३०॥ पुढवी आउ क्काए तेऊ वाऊ वण-स्सइ तसाण । पडिलेहण आउत्तो छण्हपि आराहउ होइ ॥३१॥ तइयाए पोरसीए भत्तपाण गवेसए । छण्ह मन्न-यरागमि कारणं मिसमुट्ठिए॥३२॥वेयण वेयावच्चे इरियट्ठाएय सजमट्ठाए । तह पाण वत्तियाए छट्ठपुणधम्मचिंताए ॥३३॥

पडिलेहन करती वखते कोइनी साथे वातचित करे, * कोइने पच्चखाण करावे* अथवा ते वखते पोते काइक वाचे अथवा बीजा वाचे ते पोते सांभळे; प्रतिलखन करवामां एवो प्रमादवत साधु [१] पृथ्वीकाय, (२) अपकाय, [३] तेउकाय, [४] वायुकाय, (५) वनस्पतिकाय अने (६) त्रसकाय ए पटकायनो विराधक (हिंसक) थाय छे; पण जे साधु सावधानपणे पडिलेहन करे छे ते ए पटकायनो रक्षक थाय छे. (२९ ३१)१. त्रीजी पौरुषीने विषे [ध्यान मुक्त थइने]साधुए गोचरीना नीचे लखेला छ कारण पैकी एकाद कारणने लइने आहार पाणीनी गवेषणा करवी '–[३२]. (१) वेदनानु उपशमन [शान्ति]करवा माटे, [२] गुरुने वास्ते आहारपाणी लाववा माटे, [३]२ इर्यासमिति बराबर पळाय तेटला माटे [४] ३ संयमना निर्वाह अर्थे (५) ४पोतानो जीव बचाववा अर्थ अने [६] धर्मध्यान करी शकाय तेटला माटे. (३३).

** आने बदले प्रो. जेकोबी एवो अर्थ करेछे के 'पोते काइक वस्तुनो त्याग करे' Renounces something 'देइ पच्चरवाण' ए शब्दोनो भावार्थ पोते नहि पण बीजाने पच्चखाण कराववानोछे. मतलब ए छे के ए वखते बीजे क्याइ पण ध्यान दोडवु न जोइए. १ प्रो. जेकोबीए गाथा ३०-३१ उलटी सुलटी लखी छे, पण आ भाषान्तरमा मूळनो अनुक्रम साचव्यो छे अने बणे गाथानो परस्पर संबध होवाथी ते भेगी लखी छे. २ भूख तरसथी पीडातो साधु इर्यासमिति (हालवा चालवामा सावचेती) पाळी शके नहि. ३ Self control बहु भुखथी पीडायतो प्रसगे असुझतो आहार लेवा आकर्षाय. ४ भूख तरस वेठीने जीव काढवाथी आत्महत्यानो दोष लागे तेनाथी बचवा माटे.

उ.अ
२६

२१७

निग्गथो धिइमतो निग्गथिपि नकरिज्ज छहिंचेव । ठाणेहिंतु इमेहिं अणइक्कमणाय से होइ ॥ ३४ ॥ ओयक उवसग्गे तितिक्खया वभचेरगुत्तिसु । पाणिदया तवहेऊ सरीर वुच्छेयणट्ठाए ॥ ३५ ॥ अवसेस भडग गिज्झ चक्खुसा पटिलेहए । परमद्ध जोयणाओ विहार विहरए मुणी ॥ ३६ ॥ चउथ्थीए पोरिसीए निक्खिवित्ताण भायण । सज्झायं तउ कुज्जा सव्वभावविभावण ॥ ३७ ॥ पोरिसीए चउझाए वदित्ताण तउ गुरु । पडिक्कमित्ता कालस्स सिज्जतु पडिलेहए ॥ ३८ ॥

धैर्यवान निग्रथ अथवा निग्रंथी [साधु अथवा साध्वी] नीचेना छ कारणोने लीधे आहार पाणीनी गवेषणा न करे तो तेणे सयम योगनु अतिक्रमण (उल्लघन) कर्यु गणाय नहि :–(३४). (१) ज्वरादि रोगने लीधे, (२) उपसर्ग [आफत]ने लीधे, [३] १ ब्रह्मचर्य अने गुप्तिनी तितिक्षा [रक्षण]ने लीधे,१ [४]२जीवदया अर्थे, (५) तपश्चर्या अर्थे अने (६)३ शरीर-विच्छेद अर्थे.[३५]४ सर्व भांडक [पात्र उपगरणादि] साधुए प्रथम पोताना चक्षुवति पडिलेहवा अने त्यारपछी [भिक्षार्थे] विचरवु, पण अरधा योजनथी वधारे दूर जवुं नहि. (३६). चोथी पौरुषीने विषे आहार पाणी करी लइने पातरा वगेरे पडिलेहीने मूकी देवां अने त्यारपछी सर्व पदार्थनुं प्रकाशक जे स्वाध्याय ते आदरवु. [३७]. चोथी पौरुषीना छेल्ला भागमा गुरुने वदणा करवी अने पछी काल-प्रतिक्रमण करीने पाट वगेरेनु पडिलेहन करवुं. (३८).

१ जे वखते खानपानथी इन्द्रिओ काबुमां रही शक्ती न होय अने ब्रह्मचर्य अने गुप्तिनी रक्षा थइ शके तेम न होय तेवे प्रसगे आहार पाणीनो निरोध ए दोष गण्यो नथी. २. वर्षा ऋतुमा व्होरवा जवु पडे तो वनस्पति, अपकायादि जीवनी विराधना थाय माटे. ३ उचित काले खानपान तजीने, अनशन करीने, सथारो करवो तेमां दोष गणेलो नथी. ४. आ अध्ययनमां १५, १६, १०,२०, २४, २६, २७, २९, ३३, ३४, ३५ ए गाथाओ आर्या छंदमा छे. बाकीनी गाथाओ श्लोकोमा छे.

किंतवं पडिवज्जामि एवंतथ्थ विचिंतए । काउस्सग्गंतु पारित्ता वंदइय तउगुरुं ॥५१॥ पारिय काउसग्गो वंदित्ताण तओगुरु । तत्र सपडिनज्जित्ता करिज्जासिद्दाण सथव ॥ ५२ ॥ एसा सामायारी समासेण वियाहिया । जचरित्ता वहुजीवा तिन्ना ससारसागर त्तिवेमि ॥ ५३ ॥

॥ इति सामायारीनाम झयणं छविसम सम्मत्त ॥ २६ ॥ ॥

मारे केवा मकारनु तप करवुं ते वावतनुं चिंत्वन करवुं. काउसग्ग पार्यां पछी गुरुने वदणा करवी. [५१]. कायोत्सर्ग कर्यां पछी अने गुरुने वदणा कर्यां पछी उपवासादि जे तप करवानु नकी-कर्यु होय ते आदरवु अने सिद्ध पुरुषोनी (तीर्थंकरोनी) स्तुति करवी. (५२). आ ममाणे सामाचारीनु सक्षिप्त वर्णन कर्युं छे, जे अंगीकार करवाथी घणा जीवो ससार-सागर तरी गयाछे. (५३).

* छव्वीसमुं अध्ययन संपुर्ण. *

अध्ययन २७. गलिया बळद.

थेरे गणहरे गग्गे मुणी आसि विसारए । आइन्नेगणभावामि समाहि पडिसधए ॥ १ ॥ वहणेवहमाणस्स कतारं अइवत्तइ । जोए वहमाणस्स ससारो अइवत्तई ॥ २ ॥ खलुके जोओ जोएइ विहमाणो किलिस्सई । असमाहिच वेएई तोत्तएय सेभज्जइ ॥३॥ एग डसइ पुछमि एगं विधइ अभिक्खण । एगोभजइ समिल एगो उप्पह प्पठिउ ॥४॥

◎ अध्ययन २७. ◎

गर्ग नामे [१]स्थविर, [२]गणधर अने सर्व शास्त्र निपुण मुनि हता. ते गर्ग गणधर एक वखत निचे प्रमाणे चिन्तन करवा लाग्या :-(१). '[३]रथने सारा बळद जोडवाथी अटवी (अरण्य)नो पार पमाय छे; तेम संयम मार्गने विषे (सदाचारथी) गाडुं चलाववाथी संसारनो पार पमाय छे.' (२). 'पण जे कोइ [४]गलिया बळदने पोताने गाडे जोडे छे ते तेमने मारी मारीने थाकी जाय छे, तेने क्लेश उपजे छे अने आखरे तेनो परोणो पण भांगी जाय छे.' [३]. '[५]हठेलो सारथी दातवति गलिया बळदनु पूछडु करडे छे अने तेने आरवति वींधे छे; ते बळद धुसरीनी समिला (मेख) भागी नाखे छे, अने आडे मार्गे (उन्मार्गे) दोडवा मांडे छे. ८

---

[१] स्थविर=धर्मने विषे स्थिर अथवा दृढ. [२] गणधर=गण अथवा गच्छनो धारक, तीर्थंकर भगवानना गणधरना अर्थमा ए शब्द अहिं वपरायेल नथी. [३] आने बदले मो. जेकोबी एम लखे छे के 'गाडामां जेमवाथी अटवीनो पार पमाय छे. [४] Strong but lazy bull [५] आटला भागनुं भाषान्तर मो. जेकोबी एवी रीते करे छे के 'गलियो बळद पोताना जोडिया बळदनु पुंछडुं करडे छे अने तेने घायल करेछे.

एगोपडइ पासेणं निवेसइ निवज्जइ । उक्कुदइ उप्फिडइ सढे बालगविचए ॥ ५ ॥ माइ मुद्धेण पडइ कुद्धे गच्छइ पडिपहं । मयलक्खेण चिट्ठइ वेगेणय पहावइ ॥६॥ छिन्नालेछिंदइ सिल्लिं दुदंते भंजइजुगं । सेविय सुस्सुयाइत्ता उज्जहित्ता पलायइ ॥ ७ ॥ खलुंका जारिसाजोज्जा दुस्सिसाविहुतारिसा । जोइया धम्मजाणंमि भज्जंतिधिइ दुब्बला ॥८॥ इड्ढीगारविए एगे एगेऽथ रसगारवे । साया गारविए एगे एगेसुचिर कोहणे ॥९॥

'गलियो बळद पडखा भेर पडी जाय छे, अथवा बेसी जाय छे, अथवा सूइ जाय छे, अथवा कूदवा अने ठेकडा माडे छे, अथवा तो ए बाल गायने देखीने तेनी पाछळ दोडे छे. (५). 'गलियो बळद कोइ उपर हुमलो करवा जतो होय तेवी रीते माथुं नीचुं नमावीने गुस्साथी आगळ धसे छे, अथवा तो क्रोधथी पाछो हठे छे; अथवा तो मृत्यु पाम्यो होय तेवो ढोंग करीने [1] पृथ्वी उपर पडे छे अथवा तो वेगथी दोडे छे. (६). ते दुष्ट बळद रास तोडी नाखे छे अथवा तो ते शिरजोर बळद धुंसरी भागी नाखे छे; अने ते गराडा पाडतो छूटो थइने न्हासी जाय छे. [७]. जेवी रीते गलियो बळद रथमां जोडावाथी क्लेश उपजावे छे, तेम दुष्ट [विनय-रहित] शिष्यो पण धर्मरुपी रथमां जोडाइने पोतानी अस्थिर [2] वृत्तिने लीधे संयम मार्गनो भंग करे छे. (८). कोइ शिष्य मानरुपी रिद्धिनो गर्वित होय छे, कोइ रस गर्वित [स्वाद लंपट] होय छे, कोइ शाता-गर्वित होय छे तो कोइ सुचिर क्रोधी [दीर्घ रोषी] होय छे. [९].

---

[1] आने बदले प्रोफेसर जेकोबी लखे छे के "स्थिर उभो रहे छे ;" पण मूएलो बळद स्थिर उभो रहे ते समजे नहि.
[2] Want of Zeal

भिख्खालसिए एगे एगे उमाणभीरएथद्धे । एगंच अणुसासंमि हेऊहिं कारणेहिय ॥१०॥सोविअत्तर भासिल्लो दोसमेव पकुव्वइ । आयरिआण तवयण 'पडिकूलेइ आभिख्खण॥ ११ ॥ नसामम वियाणाइ नाविसा मझदाहिइ । निग्गयाहोहिइमन्ने साहु अन्नोथ्थ वच्चउ ॥ १२ ॥ पेसियापलिउचाति ते परियति समतओ । रायवेठ्ठीच मन्नता करिति मिउडिंमुहे ॥१३॥ वाइया सगहियाचेव भत्तपाणेय पोसिया । जाय पख्खा जहाहसा पक्कमति दिसोदिसिं ॥१४॥ अह सारहि विचिंतेइ खलुकेहि समागओ । किंमझ दुठ्ठसीसेहिं अप्पामे अवसीयइ ॥ १५ ॥

'कोइ भिक्षा मागवा जवाना आलसु होय छे, तो कोइ अपमानथी डरीने स्तब्ध बेसी रहेछे; एवा कुशिष्योने हेतु अने कारणोथी हुं केवी रीते समजावी शकुं ?' [१०]. 'एवा कुशिष्यो गुरुना शिक्षणमां दोष काढे छे, तेमाथी खोटी खोटी कल्पीत मुश्केलीओ काढी बतावे छे अने आचार्यना वचनथी वारवार प्रतिकुळ रीते वर्त्ते छे. [११]. 'गुरु तेने कोइ ग्रहस्थने त्यां आहारादि लेवाने मोकले तो एम कहेछे के 'ते श्राविका मने ओळखती नथी, ते मने काइ देशे नहि; हु धारु छु के ते घेरथी बहार गइ हशे; ए कार्यने माटे बीजा कोइ साधुने मोकलो.' (१२). 'गुरुए एवा कुशिष्येने काइ काम करवा मोकल्या होय तो ते बतावेलु काम करता नथी, पण पोताने फावे त्यां भटकता करे छे, अथवा तो राजाना वेठिया (नोकरो)नी माफक (रुवारथी) वर्त्तेछे अने भ्रकुटी चडावे छे. [१३]. 'एवा कुशिष्योने शास्त्राभ्यास कराव्यो, सम्यक धारण कराव्यु, खानपानथी पोषण कर्यु, पछी हसना बच्चाने पांखो आववाथी जेम [पोतानां मावापने छोडीने] ते उडी जाय छे, तेम एवा कुशिष्यो (पोताना गुरुनो त्याग करीने) दशे दिशामां यथेच्छ विहार करे छे. [१४]. हवे ते सारथी (गर्गाचार्य) विचार करे छे के 'मने गलिया बळद जेवा कुशिष्यो मळेला छे. एवा दुष्ट शिष्योनुं मारे शुं करवुं? तेमनाथी मारो आत्मा क्लेश पामे छे. [१५].

जारिसा ममसीसाओ तारिसा गलिगदहा । गलिगदहे चइत्ताणं दढंपगिण्हइतवं ॥१६॥मिउ मद्दवसंपन्ने गंभिरेसु समाहिए । विहरइ महिं मइप्पा सीलभूएण अप्पणो त्तिबेमि ॥ १७ ॥

॥ इति खलुंकियनाम झयण सत्तावीस सम्मत्त ॥ २७ ॥

अध्ययन २८. मोक्ष मार्गनी प्राप्ति.

मोक्खमग्गगइ तच्चं सुणेह जिणभासियं । चउकारण संजुत्त नाण दंसण लक्खणं ॥१॥ नाणंच दंसणचेव चरित्तंच तवोतहा । एस मग्गोत्ति पन्नत्तो जिणेहिं वरदंसिहिं ॥२॥

मारा शिष्यो गलिया बळद जेवा छे, माटे ए सुस्त गधेडाओनो त्याग करीने हुं दृढ तप आदरीश. (१६). मृदु मार्दव गुण संपन्न, [एटले विनयवान अने कोमळ अंतःकरण वाळा] गंभीर अने समाधि संयुक्त महात्मा [गर्गाचार्य] शीलयुक्त वर्तनथी पृथ्वीने विषे विचरवा लाग्या. (१७).

॥ सत्तावीशमुं अध्ययन संपूर्ण ॥

○ अध्ययन २८. ○

हे भव्य जीवो ! श्री जिन भाषित मोक्ष-मार्गनी सत्य गति तमे सांभळो ; ते चार कारणे करीने संयुक्त छे अने ज्ञान, दर्शनना लक्षणे करीने सहित छे. (१). [१] ज्ञान[1], [२] दर्शन[2], [३] चारित्र[3] अने [४] तप, ए मुक्ति-मार्ग, विशिष्ट, सम्यक ज्ञानना धरणहार श्री तीर्थंकर भगवाने कह्यो छे. (२).

1 Right knowledge 2 Faith 3 Conduct

नाणच दसणचेव चरित्तच चवोतहा । एयमग्ग मणुप्पत्ता जीवा गच्छंति सुग्गइ ॥ ३ ॥ तत्थ पचविहनाण सुय आभिणिबोहिय । उहिनाण चतइय मणनाणच केवल॥४॥एयं पचविहनाण दव्वाणय गुणाणय । पज्जवाणच सव्वेसि नाण नाणिहिं देसिय ॥५॥ गुणाण मासयो दव्व एगदव्वासिया गुणा । लक्खण पज्जवाणतु उभउ अरिसयाभवे ॥६॥

ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तप; ए मुक्ति-मार्गने विषे चालनारा जीव १ सद्गतिने पामे छे. [३]. २ ज्ञान :—ज्ञानना पाच भेद छे:-(१)२ श्रुत ज्ञान, (२) अभिनि बोधिक अथवा मति ३ ज्ञान, (३) अवधि४ ज्ञान, [४] मनः५ पर्यव-ज्ञान अने [५] केवल-६ ज्ञान [४]. ए प्रमाणे पाच प्रकारनु ज्ञान छे. द्रव्य, गुण अने पर्याय ए सवळा भेदनु ज्ञान श्री ज्ञानी पुरुषोए कहयुं छे. [५]. गुणनो आश्रय ते द्रव्य; रुपादिक गुण एक द्रव्यने आश्रये रहे छे; पण पर्यायनु लक्षण एवुं छे के ते द्रव्य अने गुण बन्नेनु आश्रित छे.७ [६].

---

१ Will obtain beautitude २ श्री नंदी सूत्र वीगेरेमां प्रथम मति ज्ञान अने बीजु श्रुत ज्ञान लेखामा आवेल छे. सर्व ज्ञानना हेतु रुप सूत्र ज्ञान होवाथी ते विशेष उपकारी गणाय छे ए अपेक्षाए अहिं प्रथम लीधेल छे. सूत्रो साभळवाथी जे ज्ञान प्राप्त थाय ए श्रुत ज्ञान कहेवाय छे. ३ पाच इन्द्रि अने छठा मनथी जे ज्ञान थाय ते. ४ इद्रियादिकनी अपेक्षा विना आत्माने विषे जे साक्षात् प्रत्यक्ष ज्ञान थाय ते. अवधिनो अर्थ मर्यादावाचक पण थाय छे. अमुक हद सुधीनु जाणे देखे ते ज्ञान. ५ ते ' मन पर्याय ' नामथी पण प्रसिद्द छे. संज्ञी पचेंद्रि जीवना मनना भाव जाणी शकाय ते ज्ञान. ६ सर्वोत्तम ज्ञान. सर्व स्थळे सघळु जाणे देखे ते. ७ प्रो. जेकोबीना आ माटेना शब्दो असरकारक छे. Substance is the substrate of qualities, the qualities are inherent in one substance, But the characteristic of developments is that they inhere in either (viz substances or qualities).

धम्मो अहम्मो आगासं कालो पुग्गल जंतवो । एसलोगोत्ति पन्नत्तो जिणेहिंवर दसीहिं ॥ ७ ॥ धम्मो अहम्मो आगास दव्व इक्किक्कमाहिय । अणताणिय दव्वाणि कालो पुग्गल जतवो ॥ ८ ॥ गइ लख्खणोउ धम्मो अहम्मो ठाण लख्खणो । भायण सव्व दव्वाण नह ओगह लख्खणं ॥ ९ ॥ वत्तणा लख्खणो कालो जीवो उवओग लख्खणो । नाणेण दसणेणच सुहेणय दुहेणय ॥ १० ॥ नाणच दसणचेव चरित्तच तवोतहा । वीरियं उवउगोय एव जीवस्स लख्खणं ॥ ११ ॥ सदधयार उज्जोओ पहा छाया तवोविय । वन्न रस गध फासा पुग्ग लाणतु लख्खणं ॥१२॥ एगत्तन्त पुहत्तच संखा सट्ठाण मेवय । सजोगाय विभागाय पज्जवाणतु लख्खण ॥१३॥

(१) धर्मास्तिकाय, [२] अधर्मास्तिकाय, (३) आकाशास्ति-काय, [४] काल समयादिरूप, (५) पुद्गल अने [६] जीव :–ए षद्-द्रव्योनु[१] आ जगत रचेलुं छे एम वस्तुओना यथास्थित ज्ञानवाळा श्री केवलि भगवाने कह्युछे. [७]. धर्म अधर्म अने आकाश ए त्रणे एक द्रव्यरूप छे, पण काल, पुद्गल अने जीव ए अनत द्रव्यरूप (पुद्गालिक) कह्यां छे [८]. धर्मनु लक्षण [२] गति, अधर्मनुं लक्षण [३] जडता, अने नभ अथवा आकाश जे षद् द्रव्यनु भाजन-स्थान छे तेनु लक्षण अवगाह एटले सर्व द्रव्यने अवकाश आपवानुं छे. [९]. कालनुं लक्षण वर्त्तना एटले [४] अविराम छे, ज्ञान, दर्शन, सुख अने दुःखना ज्ञानने [५] उपयोग ए जीवनु लक्षण छे. [१०]. ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, वीर्य[६] अने उपयोग ए जीवनां लक्षण छे (११). शब्दनो ध्वनि, अधकार, उद्योत, प्रभा,छाया, प्रकाश, वर्ण, रस, गध अने स्पर्श ए सर्व [७] पुद्गलनां लक्षणो छे. (१२). एकत्व, (एकपणु) पृथकत्व, [छूटापणु] सख्या, आकार, सयोग अने वियोग अथवा विभाग ए [८] पर्यायना लक्षण छे. (१३).

१ Six substances realities २ चलन स्वभाव Motion ३ स्थिरता-Immobility. ४ Duration ५ Realisation ६ Energy ७ Matter ८ Development

जीवा जीवाय बंधोय पुन्नपावा सवोतहा । सवरो निज्जारामोख्खो सतिएए तहिया नव ॥ १४ ॥ ताहियाणतु भावाणं मझावे उवएसण । भावेण सद्दहतस्स समत्त तं वियाहिय ॥ १५ ॥ निसग्गुवएसरुइ आणारुइ सुत्तबीयरुइमेव । अभिगम विथ्थार रुइ किरिया सखेव धम्मरुइ ॥ १६ ॥ भूयथ्थेणाहिगया जीवा जीवाय पुन्नपावच । सहसमुइया सव सवरोय रोएइउ निस्सग्गो ॥ १७ ॥

---

१ जीव, २ अजीव, ३ बन्ध*, ४ पुण्य, ५ पाप, ६ आश्रव, ७ संवर, ८ निर्जरा अने ९ मोक्ष ए नव तत्त्व१ जाणवा. २(१४). उपर कहेला जीव-अजीवादि नव तत्त्वनो सत्य उपदेश शुद्ध भावथी अंगीकार करवो तेनु नाम सम्यक्त्व ज्ञान कहेवाय.(१५) २ दर्शन:-सम्यक्त्वना दश भेद छे [अथवा रुचि दश प्रकारनी छे]:-१ निसर्ग रुचि, २ उपदेश-रुचि, ३ आज्ञा रुचि, ४ सूत्र-रुचि, ५ बीज रुचि, ६अभिगम-रुचि, ७विस्तार-रुचि, ८क्रिया-रुचि, ९संक्षेप-रुचि अने १० धर्म-रुचि.[१६]३. जे जीव, अजीव, पुण्य, पापादि तत्त्वनो सत्यार्थ पोतानी स्वबुद्धिए४ करीने समजे अने पापना अंतःप्रवाहने ५ रोके तेनी निसर्ग-रुचि कहेवाय. [१७].

---

*श्री ठाणांगजी विगेरे सूत्रोमा नव तत्त्वोमा बन्धनो नंबर आठमो छता अहि काव्य क्रम जाळववा तेने त्रीजो मुकवामा आवेल छे ए उपरांत जीव अजीवनो बंध समजाववा अमुक अपेक्षाए पण अहिं अने बीजी जग्याए क्रम बदल्यो जणाय छे. १ Nine truths २ (1) Soul, (2) inanimate things, (3) binding of the soul by Karman, (4) Merit, (5) de-merit, (6) that which causes the soul to be affected by sins (7) the prevention of Asrava by watchfulness, (8) the annihilation of Karman (9) final deliverence ३. (1)Nature(2)instruction (3) command (4) study of the sutras (5) suggestion (6) comprehension of the meaning of the sacred lore (7) complete course of study (8) religious exercise (9) brief exposition (10) The Law. ४ By a spontaneous effort of his mind. ५ Sinful influences

जोजिणदिट्ठे भावे चउव्विहेवि सद्दहाइ सयमेव । एमेव नन्नहत्तिय सनिसग्ग रुइत्ति नायव्वो ॥१८॥ एएचेवउ भावे उवइट्ठे जोपरेण सद्दहइ । छओमथ्थेण जिणेणवा उवदेस रुइत्ति नायव्वो ॥१९॥ रागो दोमो मोहो अन्नाण जस्स अवगय होइ । आणाए रोयंतो सो खलु आणारुईनाम ॥ २० ॥ जो सुत्त महिज्जंतो सूएण उग्गहइओ समत्त । अंगेण बाहिरणवा सो सुत्त रुइत्ति नायव्वो ॥२१॥ एगेण अणेगाइ पयाइ जो पसरइओ समत्त । ओदएव तिल्लबिंदु सोबीयरुइत्तिनायव्वो॥२२॥ सोहोइ अभिगमरुइ सुयनाण जेण अथ्थउ दिट्ठ । इक्कारस अगाइ पइन्नग दिठ्ठिवाउय ॥२३॥

जे मनुष्य श्री तीर्थंकर भगवाने भाखेला तत्वोने चतुर्विधाने एटले द्रव्ये, क्षेत्रे, काळे अने भावे करीने स्वयमेव (पोतानी मेळे) माने अने श्री भगवानना भाखेला तत्वो अन्यथा न होय एम जाणे, तेनी निसर्ग–रुचि कहेवाय. [१८]. पण जे मनुष्य उपर कहेला नव तत्वो अन्यना एटले [1]छद्मस्थ अथवा केवलिना उपदेशथी जाणे अने माने तेनी उपदेश–रुचि कहेवाय [१९]. जेणे राग, द्वेष, मोह अने अज्ञाननो त्याग कर्यो होय अने श्री भगवाननी आज्ञा छे माटे नव तत्वने माने तेनी आज्ञा–रुचि कहेवाय. [२०]. जे सूत्रो, तेना [2]अंग अने [3]उपांग भणीने सम्यक्त–ज्ञान प्राप्त करे तेनी सूत्र–रुचि कहेवाय. [२१]. जे एक पदार्थनु सत्य ज्ञान थवाथी, पाणी उपर प्रसरता तेलना बिन्दुनी माफक अनेक पदार्थोनु सत्य–ज्ञान प्राप्त करी शके तेनी बीज–रुचि कहेवाय. [२२]. जे अगियार अंग, [4]प्रकीर्णो अने [5]दृष्टिवाद आदि श्रुत–ज्ञानथी सत्यार्थ समजे छे तेनी अभिगम–रुचि कहेवाय. [२३].

---

१ जेने केवल ज्ञान नथी उपज्युं ते छद्मस्थ कहेवाय. २ अंग प्रविष्ट ३ अंग बाहिर. ४ पइन्ना सूत्रो. आ सूत्रो जीर्ण थइ जवाथी पाछळथी तेमां घणु नवु उमेरायुं मनाय छे. एटले ते प्रमाण रुप मनातां नथी. ५ बारमुं अंग जेमां चौद पूर्व समाइ गयेल मनातां पण कम नशीबे आ अंग विच्छेद गयु छे.

दव्वाण सव्वभावा सव्व प्पमाणेहिं जस्स उवलद्धा । सव्वाहि नयविहीहिय सो विथ्थार रुइत्ति नायव्वो ॥ २४ ॥
दंसण नाण चारित्ते तव विणए सव्वसमिइ गुत्तिसु । जो किरिया भावरुइ सो खलु किरिया रुइ नाम ॥ २५ ॥
अणभिग्गहिय कुदिठ्ठी सखेव रुइत्ति होइ नायव्वो । अविसारउ पवयणे अणभिग्गहिओय सेसेसु ॥ २६ ॥
जोअथ्थिकाय धम्म सुयधम्मखलु चारित्तधम्मच । सदहइ जिणाभिहिय सोधम्म रुइत्तिनायव्वो ॥ २७ ॥
परमथ्थ संथवोवा सुदठ्ठपरमथ्थसेवणावावि । वावन्न कुदसण वज्जणाय सम्मत्त सदहणा ॥ २८ ॥
नथ्थि चारित्त समत्त विहुण दसणेउभइयव्व । समत्त चारित्ताइ जुगव पुव्वंच समत्त ॥ २९ ॥

सर्व पदार्थना भाव प्रत्यक्ष प्रमाणथी अने [1]नय विधिथी जाणे तेनी विस्तार-रुचि कहेवाय. [२४]. ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप अने [2]विनयथी समिति अने गुप्तीने विषे रहीने सर्व क्रिया शुद्ध भावथी करे तेनी क्रिया-रुचि कहेवाय [२५]. जे प्रवचन (सिद्धांत) ने विषे कुशळ होतो नथी, अने जेने बुद्धादिक मत मतांतरोनुं ज्ञान होतु नथी, छतां जेने अन्य- दर्शनने माटे अनादर होय तेनी संक्षेप-रुचि कहेवाय. [२६]. जे धर्मास्ति कायादि छ द्रव्य श्रुत धर्म अने चारित्र धर्म जेम श्री तीर्थंकरे भाखेला छे तेम सत्य माने तेनी धर्म-रुचि कहेवाय. [२७]. जीवादि तत्वोना स्वरुपनुं ज्ञान, नव तत्वोनु ज्ञान धरावनारनी सेवा अने कुदर्शनी तथा भ्रष्टाचारीनो [3]त्याग ए सम्यक्तना लक्षण छे (२८). सम्यक्त विना (शुद्ध) चारित्र संभवे नहिं ; सम्यक्तथी चारित्र प्राप्त थाय छे. सम्यक्त अने चारित्र समकालिन होइ शके, अथवा तो सम्यक्त चारित्रना पहेलु होय. [२९].

---

१ नैगमनय, संग्रहनय, व्यवहारनय, रुजुसूत्रनय, शब्दनय, संभीरुढनय, अवंभूतनय ए सात नय छे. डॉ. भांडारकर तेनी एवी व्याख्या करे छे के The seven Nayas are "points of view or principles with reference to which certain judgments are arrived at or arrangements made. २. By discipline. ३ Avoiding of schismatical and heretical tenets.

जोजिणदिठ्ठे भावे चउव्विहेवि सद्दहाइ सयमेव । एमेव नन्नहत्तिय सानिसग्ग रुइत्ति नायव्वो ॥१८॥ एएचेवउ भावे उवइठ्ठे जोपरेण सद्दहइ । छओमथ्थेण जिणेणवा उवदेस रुइत्ति नायव्वो ॥१९॥ रागो दोसो मोहो अन्नाण जरस अवगय होइ । आणाए रोयतो सो खलु आणारुईनाम ॥ २० ॥ जो सुत्त महिज्जानो सूएण उग्गहइओ समत्त । अग्गेण बाहिरेणवा सो सुत्त रुइत्ति नायव्वो ॥२१॥ एगेण अणेगाइ पयाइ जो पसरइओ समत्ता । ओदएव तिल्लबिंदु सोबीयरु इत्तिनायव्वो॥२२॥ सोहोइ अभिगमरुइ सुयनाण जेण अथ्थउ दिठ्ठ । इक्कारस अगाइ पइन्नग दिठ्ठिवाउय ॥२३॥

जे मनुष्य श्री तीर्थंकर भगवाने भाखेला तत्वोने चतुर्विधाने एटले द्रव्ये, क्षेत्रे, काळे अने भावे करीने स्वयमेव (पोतानी मेळे) माने अने श्री भगवानना भाखेला तत्वो अन्यथा न होय एम जाणे, तेनी निसर्ग–रुचि कहेवाय. [१८]. पण जे मनुष्य उपर कहेला नव तत्वो अन्यना एटले [1]छद्मस्थ अथवा केवलिना उपदेशथी जाणे अने माने तेनी उपदेश–रुचि कहेवाय [१९]. जेणे राग, द्वेष, मोह अने अज्ञानतो त्याग कर्यो होय अने श्री भगवाननी आज्ञा छे माटे नव तत्वने माने तेनी आज्ञा-रुचि कहेवाय. [२०]. जे सूत्रो, तेना [2]अग अने [3]उपाग भणीने सम्यक्त–ज्ञान प्राप्त करे तेनी सूत्र–रुचि कहेवाय. [२१]. जे एक पदार्थनुं सत्य ज्ञान थवाथी, पाणी उपर मसरता तेलना बिन्दुनी माफक अनेक पदार्थोनु सत्य–ज्ञान प्राप्त करी शके तेनी बीज–रुचि कहेवाय. [२२]. जे अगियार अंग, [4]प्रकीर्णो अने [5]द्रष्टिवाद आदि श्रुत–ज्ञानथी सत्यार्थ समजे छे तेनी अभिगम–रुचि कहेवाय. [२३].

---

१ जेने केवल ज्ञान नथी उपज्युं ते छद्मस्थ कहेवाय. २ अंग प्रविष्ट. ३ अंग बाहिर. ४ पइन्ना सूत्रो. आ सूत्रो जीर्ण थइ जवाथी पाछळथी तेमां घणुं नवु उमेरायुं मनाय छे. एटले ते प्रमाण रुप मनाता नथी. ५ बारमु अंग जेमां चौद पूर्व समाइ गयेल मनातां पण कम नशीबे आ अग विच्छेद गयु छे.

दव्वाण सव्वभावा सव्व प्पमाणेहिं जस्स उवलद्धा । सव्वाहि नयविहीहिय सो विथ्थार रुइत्ति नायव्वो ॥ २४ ॥
दंसण नाण चारित्ते तव विणए सव्वसमिइ गुत्तिसु । जो किरिया भावरुइ सो खलु किरिया रुइ नाम ॥ २५ ॥
अणभिग्गहिय कुदिट्ठी सखेव रुइत्ति होइ नायव्वो । अविसारउ पवयणे अणभिग्गहिओय सेसेसु ॥ २६ ॥
जोअथ्थिकाय धम्म सुयधम्मखलु चारित्तधम्मच । सद्दहइ जिणाभिहिय सोधम्म रुइत्तिनायव्वो ॥ २७ ॥
परमथ्थ सथवोवा सुदट्ठपरमथ्थसेवणावावि । वावन्न कुदसण वज्जणाय सम्मत्त सद्दहणा ॥ २८ ॥
नथ्थि चारित्त समत्त विहुण दसणेउभइयव्व । समत्त चारित्ताइ जुगव पुव्वंच समत्त ॥ २९ ॥

सर्व पदार्थना भाव प्रत्यक्ष प्रमाणथी अने [1]नय-विधिथी जाणे तेनी विस्तार-रुचि कहेवाय. [२४]. ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप अने [2]विनयथी समिति अने गुप्तीने विषे रहीने सर्व क्रिया शुद्ध भावथी करे तेनी क्रिया-रुचि कहेवाय [२५]. जे प्रवचन (सिद्धांत) ने विषे कुशळ होतो नथी, अने जेने बुद्धादिक मत मतांतरोनुं ज्ञान होतु नथी, छतां जेने अन्य- दर्शनने माटे अनादर होय तेनी संक्षेप-रुचि कहेवाय. [२६]. जे धर्मास्ति कायादि छ द्रव्य श्रुत धर्म अने चारित्र धर्म जेम श्री तीर्थंकरे भाखेला छे तेम सत्य माने तेनी धर्म-रुचि कहेवाय. [२७]. जीवादि तत्वोना स्वरुपनु ज्ञान, नव तत्वोनु ज्ञान धरावनारनी सेवा अने कुदर्शनी तथा भ्रष्टाचारीनो [3]त्याग ए सम्यक्तना लक्षण छे. (२८). सम्यक्त विना (शुद्ध) चारित्र संभवे नहि, सम्यक्तथी चारित्र प्राप्त थाय छे. सम्यक्त अने चारित्र समकालिन होइ शके, अथवा तो सम्यक्त चारित्रना पहेलु होय. [२९].

१ नैगमनय, सग्रहनय, व्यवहारनय, रुजुसूत्रनय, शब्दनय, समभीरुढनय, अेवंभूतनय ए सात नय छे. डॉ. भाडारकर तेनी एवी व्याख्या करे छे के The seven Nayas are "points of view or principles with reference to which certain judgments are arrived at or arrangements made. २. By discipline ३. Avoiding of schismatical and heretical tenets.

उ.अ. २८

२३०

नावंसणिस्स नाणं नाणेण विणा नहुंति चरणगुणा। अगुणस्स नथ्थि मोक्खो नथ्थि अमोक्खस्स निव्वाणं ॥३०॥ निस्संकिय निक्कंखियं निवितिगिछ्छा अमुढदिट्ठीय। उववूह थिरीकरणे वछ्छल प्पभावणे अठ्ठ ॥ ३१ ॥ सामाइयत्थ पढमं छेउवट्ठावण भवेबिइय। परिहारविसुद्धियं सुहुमतह संपरायच ॥ ३२ ॥ अकसाय महक्खाय छउमथ्थस्स

सत्य-दर्शन विना सत्य ज्ञान सभवे नहि; सत्य-ज्ञान विना शुद्ध चारित्र सभवे नहि; शुद्ध-चारित्र विना कर्मनो क्षय सभवे नहि; अने कर्म क्षय विना निर्वाण (मुक्ति) सभवे नहि [३०]. सम्यक्तना आठ लक्षण[१] :–१ धर्म-तत्वो तरफ शंकारहित भाव, २ अन्य धर्मनी वाच्छना न राखे, ३ निर्वितिकित्सा एटले फळ प्रति संदेह न आणे, ४ कुतीर्थीओनी रिद्धि देखीने ते तरफ मोह रहित (अमूढ) दृष्टि राखे, ५ धर्मवंत पुरुषोनी प्रशंसा करे, ६ स्वधर्मी भाइओने सहाय करे, ७ साधर्मिकोनु पोषण करे अने तेमना तरफ भक्तिभाव राखे अने ८ स्वधर्मनी उन्नति करे. [३१]. ३. चारित्रः–चारित्रना भेदः–१ सामायिक[२] (एटले राग द्वेष रहित मन परिणामे सर्व पापकारी कामोथी निवृत्ति), २ छेदोपस्थापन[३] (एटले महाव्रत आरोपणा) ३ परिहार[४]–विशुद्धिक[५] [एटले

---

१ सम्यक्त्वनां ते आठ कोट छे निशंका, निकंखा, निवितिगिच्छा, अमूढ दृष्टि, दोषा कथन, स्थिरता, वात्सल्य, प्रभावना.
२ The avoidance of everything sinful ३ The initiation of a novice ४ संस्कृत टीकामा 'परिहार विशुद्धि' आ प्रमाणे समजावेलछेः–नव साधुओ अढार मास सुधी साथे रहेवानो निश्चय करेछे. तेमानो एक कल्पस्थित (आचार्य)बनेछे, चार परिहारिक थायछे, अने बाकीना चार अनुपरिहारिक थइने पहेला छ मास सुधी परिहारिक तथा कल्पस्थितनी सेवा करे छे. पछीना छ मासमा परिहारिक होय ते अनुपरिहारिक बनेछे अने अनुपरिहारिक परिहारिक बनेछे. छेल्ला छ मासमा कल्पस्थित तप करेछे अने बाकीना आठे साधु परिहारिक बनीने तेमनी सेवा करे छे. ५ Purity produced by peculiar austerities

जिणस्सवा । एयचयरित्तकर चारित्त होइ आहिय ॥३३॥ तवोय दुविहो वुत्तो बाहिरब्भि तरो तहा । बाहिरो छव्वि होवुत्तो एवमब्भितरो तवो ॥ ३४ ॥ नाणेण जाणइ भावे दसणेणय सद्दहे । चरित्तेण नगिण्हाइ तवेण परिसूझइ ॥ ३५ ॥ खवित्ता पुव्वकम्माइं सजमेण तवेणय । सव्वदुक्खप्पहिणट्ठा पक्कमंति महेसिणो त्तिबेमि ॥ ३६ ॥

❀॥ इति मोक्खग्ग झयण अठाविस सम्मत्त ॥ २८ ॥❀

अमुक तपथी माप्प थती विशुद्धता) ४ सूक्ष्म-[१] सम्पराय (एटले इच्छाओ स्वल्प करवी ते), ५ यथाख्यात-[२] अकपाय [एटले क्रोध,मान,माया अने लोभनुं उपशमन];ए पांच मकारे चारित्र पाळवांथी कर्मनो क्षय थायछे एम श्री तीर्थंकर भगवाने भाख्युछे.३२-३३.

४ तप :-तपना वे मकार छे :-१ बाह्य तप अने २ अभ्यंतर-तप. बाह्य अने अभ्यतर मत्येक तपना छ छ [३] भेद छे. [३४]. ज्ञानथी जीवादि भाव जाणी शकाय छे ; दर्शनथी तेमां श्रद्धा उत्पन्न थाय छे, चारित्रथी कर्मनो क्षय थाय छे अने तपथी आत्मा विशुद्ध थाय छे. [३५]. संयम अने तपथी पूर्व कर्म खपावीने अने सर्व दुःखनो क्षय करीने महर्षिओ सिद्धिने माप्त थायछे. (३६).

॥ अट्ठावीशमुं अध्ययन सपूर्ण. ॥

---

१ Reduction of desire २ Annihilation of sinfulness

३ आ सूत्रनुं त्रीशमुं आखुं अध्ययन ' तप 'नुंज छे तेमां विस्तार पूर्वक विवेचन छे.

अध्ययन २९. सम्यक्त पराक्रम.

सूयमे आउसंतेणं भगवया एवमक्खाय। इह खलुसमत्त परक्कमे नामअज्झयणे समणेणं भगवया महाविरेण कासवेण पवेइय ज सम्म सद्दहित्ता पत्तिय इत्ता रोयइत्ता फासइत्ता पालइत्ता तीरइत्ता किट्टइत्ता सोहइत्ता आराहइत्ता आणाए अणुपालइत्ता बहवे जीवा सिज्झति बुझति मुच्चति परिनिव्वायाति सव्वदुक्खाण मतंकरिंति तस्सण अयमट्ठे एवमाहिज्जइ तजहा

⊛ अध्ययन २९. ⊛

हे आयुष्मन्! नीचेनुं व्याख्यान १में श्री महावीर भगवान पासेथी साभळ्युं छे :—आ सम्यक्त पराक्रम नामनु अध्ययन काश्यप गोत्रने विषे उत्पन्न थयेला श्रमण भगवत श्री महावीरे कह्युंछे; जे अध्ययन श्रध्धा पूर्वक मानवाथी, तेना प्रति रुचि राखवाथी, तेनो स्वीकार करवाथी, ते रुडी रीते पाळवाथी, ते प्रमाणे वर्तवाथी, तेनो अभ्यास करवाथी, ते समजवाथी, तेनी आराधना करवाथी अने गुरुनी आज्ञानुसार तेनु सेवन करवाथी अनेक जीव सिध्धिने पाम्या छे, तत्वज्ञान प्राप्त करी शक्या छे, कर्म बन्धनथी मुक्त थया छे, निर्वाण पहोंच्या छे अने सर्व दुःखनो अंत आणी शक्या छे. आ सम्यक्त पराक्रम अध्ययनमा नीचेनी बाबतोनु वर्णन करेलुं छे :—

---

१ श्री सुधर्मास्वामी जंबुस्वामी प्रत्ये कहेछे.

उ.अ. २९

सवेगो १ निव्वेगो २ धम्मसद्धा ३ गुरुसाहम्मिय सुस्सूसणया४ आलोयणया ५ निंदणया ६ गरहणया ७ सामाइए ८ चउवीसथ्थए ९ वदणे १० पडिक्कमणे ११ काउसग्गे १२ पच्चक्खाणे १३ थयथुइ मगले १४ कालपडिलेहणया १५ पायछित्तकरणे १६ खमावणया १७ सज्झाए १८ वायणया १९ पडिपुच्छणया २० परियट्टणा २१ अणुप्पेहा २२ धम्मकहा २३ सुयस्स आराहणया २४ एगग्गमणस निवेसणया २५ सजमे २६ तवे २७ वोदाणे २८

२३३

१ समृवेग एटले मोक्षनी अभिलाषा. २ निर्वेद एटले ससारथी विरक्तता. ३ धर्म श्रद्धा. ४ गुरु साधर्मिक शुश्रूषणा एटले गुरु अने स्वधर्मी भाइओनी सेवा ५ आलोचना एटले गुरुनी समक्ष पाप आलोचवा ते, अथवा पाप-निवेदन करवु ते ६ निन्दा एटले पापने माटे आत्म निन्दा करवी ते. ७ गर्हा एटले गुरु पासे स्वदोष निवेदन करवा ते. ८ सामायिक एटले शत्रु-मित्र तरफ समान वृत्ति राखवी ते, अथवा आत्मानी नैतिक अने मानसिक विशुद्धता करवी ते. ९ चतुर्विंशतिस्तव एटले चोवीश जिनवरोनी [तीर्थंकरोनी] स्तुति १० वदन. ११ प्रतिक्रमण १. १२ कायोत्सर्ग एटले काउसग्ग. १३ प्रत्याख्यान एटले पच्चखाण. १४ स्तव स्तुति मगल एटले कल्याणकारी स्तवन अने स्तुति. १५ काल प्रतिलेखना एटले योग्य काळे पडिलेहनादि करवु ते. १६ प्रायश्चित करण एटले पापनी निवृत्ति अर्थे तप करवु ते. १७ क्षमापना एटले अपराधनी क्षमा मागवी ते. १८ स्वाध्याय. १९ वाचना एटले गुरु पासेथी सूत्रना बोल लेवा, देवा ते. २० प्रतिपृच्छना एटले सदेह उपजे ते बाबत गुरुने पूछवु ते. २१ परावर्त्तन एटले सूत्रना पाठ वारवार बोली जवा ते. २२ अनुप्रेक्षा एटले सूत्रनु मनन करवु ते. २३ धर्म कथा. २४ श्रुत-आराधना एटले सूत्रनी आराधना. २५ एकाग्र मनः संन्निवेशना २ एटले मनने एकाग्र वृत्तिमा राखवु ते. २६ सयम. २७ तप. २८ व्यवदान एटले कर्मनो अत आणवो ते कर्म कापवां ते.

१ Expiation of sins पाप माटे प्रायश्चित. २ Concentration of thoughts

सुहसाए २९ अप्पडिबद्धया ३० विवित्तसयणासणसेवणया ३१ विणियट्टणया ३२ संभोगपच्चक्खाणे ३३ उवहि-पच्चक्खाणे ३४ आहारपच्चक्खाणे ३५ कसायपच्चक्खाणे ३६ जोगपच्चक्खाणे ३७ शरीर पच्चक्खाणे ३८ सहाय पच्चक्खाणे ३९ भत्त पच्चक्खाणे ४० सब्भावपच्चक्खाणे ४१ पडिरूवणया ४२ वेयावच्चे ४३ सव्वगुणसंपन्नया ४४ वियरागया ४५

२९ सुखशाता एटले विषय सुखनी इच्छा निवारण करवी ते. ३० अप्रतिबद्धता१ एटले प्रतिबंधरहित थवुं ते. ३१ विविक्त शयनासन सेवना एटले स्त्री, पशु, पंडकादि रहित शयनासन सेववुं ते. ३२ विनिवर्त्तना एटले विषयथी पराङमुख रहेवुं ते. ३३ * सम्भोग प्रत्याख्यान एटले मंडळीमां आहार करवानां पच्चखाण करवां ते * ३४ उपधि प्रत्याख्यान एटले [रजोहरण, मुखवस्त्रिका पात्रादि जरूरनी वस्तुओ सिवाय बीजी] वस्तुओ राखवाना पच्चखाण करवा ते. ३५ आहार प्रत्याख्यान एटले (सदोष)आहारना पच्चखाण करवां ते. ३६ कषाय प्रत्याख्यान एटले क्रोध, मान, माया अने लोभना पच्चखाण करवां ते. ३७ योग प्रत्याख्यान एटले मन, वचन, कायाना योग अथवा व्यापारना पच्चखाण. [अर्थात मन, वचन, कायानो निरोध करवो ते]. ३८ शरीर प्रत्याख्यान एटले योग्य काळे शरीरनो त्याग करवो ते. ३९ सहाय प्रत्याख्यान एटले सहायक साथे राखवाना पच्चखाण करवा ते. ४० भक्त प्रत्याख्यान एटले भात (आहारपाणी)ना पच्चखाण करवा ते. ४१ सद्भाव प्रत्याख्यान एटले सर्व संवर रुप पच्चखाण ४२ प्रतिरुपता एटले स्थविर कल्पि साधुने योग्य वेष धारण करवो ते. ४३ वैयावृत्य एटले साधुओने आहारादि आणी आपवामां सहाय करवी ते. ४४ सर्व गुण सम्पन्नता एटले ज्ञानादि सर्व गुणे करीने सहित होवुं ते. ४५ वीतरागता एटले राग द्वेषनुं निवारण करवुं ते.

१ Mental independence * आने बदले प्रोफेसर जेकोबी एवो अर्थ करे छे के–'एकज मंडळी अथवा विभागमांथी आहारपाणी व्होरवानां पच्चखाण करवां ते.'

खती ४६ मुत्ति ४७ अज्जवे ४८ मद्दवे ४९ भावसच्चे ५० करणसच्चे ५१ जोगसच्चे ५२ मणगुत्तया ५३ वयगुत्तया ५४ कायगुत्तया ५५ मणसमाधारणया ५६ वयसमाधारणया ५७ कायसमाधारणया ५८ नाणसंपन्नया ५९ दसणसंपन्नया ६० चरित्तसंपन्नया ६१ सोइंदियनिग्गहे ६२ चक्खुदीय निग्गहे ६३ घाणिंदियनिग्गहे ६४ जिब्भिंदियनिग्गहे ६५ फासिंदियनिग्गहे ६६ कोहविजए ६७ माणविजए ६८ मायाविजए ६९ लोभविजए ७० पेज्जदोसमिच्छा दसणविजए ७१ सेलेसी ७२ अकम्मया ७३

---

४६ क्षान्ति एटले क्षमा. ४७ मुक्ति एटले निर्लोभता. ४८ आर्जव एटले सरलता. ४९ मार्दव अने निराभिमान. ५० भाव सत्य एटले अतरात्मानी विशुद्धि. ५१ करण-सत्य एटले प्रतिलेखनादि क्रिया यथा विधि अने आळस विना करवी ते. ५२ योग-सत्य एटले मन, वचन, कायाना व्यापारमा साचापणु राखवु ते. ५३ मनो गुप्ति एटले मनने अशुभ पदार्थोथी सभाळवुं ते. ५४ वाग-गुप्ति एटले वचनने अशुभ पदार्थोथी सभाळवु ते. ५५ काय-गुप्ति एटले कायाने अशुभ व्यापारथी सभाळवी ते. ५६ मनः समाधारणा एटले मनने शुभ स्थानने विषे स्थिर करवुं ते. ५७ वाक-समाधारणा एटले वचनने शुभ कार्यमा स्थापवु ते. ५८ काय समाधारणा एटले कायाने शुभ कार्यमां स्थापवी ते ५९ ज्ञान सपन्नता.* ६० दर्शन सपन्नता. ६१ चारित्र-संपन्नता. ६२ श्रोतेन्द्रिय निग्रह. ६३ चक्षुरिन्द्रिय निग्रह. ६४ घ्राणेन्द्रिय-निग्रह ६५ जिह्वेन्द्रिय-निग्रह. ६६ स्पर्शेन्द्रिय-निग्रह. ६७ क्रोध-विजय. ६८ मान विजय. ६९ माया-विजय. ७० लोभ-विजय. ७१ प्रेम-द्वेष, मिथ्या दर्शन विजय. ७२ शैलेशी[1] एटले चतुर्दश गुणस्थानने विषे स्थायिपणुं अने ७३ अकर्मता एटले कर्मनो अभाव अथवा कर्म-रहितपणुं.

---

* Possession of knowledge [1]. Stability

सवेगेण भते जीवे किं जणयइ । सवेगेणं अणुत्तर धम्म सद्धं जणयइ । अणुत्तराए धम्म सद्धाए । सवगे हव्व मागच्छइ । अणताणु बन्धी कोहमाण माया लोभे खवेइ नवच कम्मं न बधइ । तप्पच्चइय चण मिच्छत्त विसोहिं काऊणे । दसणाराहए भवइ । दसण विसोहीएण विसुद्धाए । अथ्थेगइए तेणेव भवगहणेणं सिझइ । सोहीएण विसुद्धाए । तच्च पुणो भवग्गहण नाइक्कमइ ॥ १ ॥ निव्वेएण भते जीवे किं जणयइ । निव्वेएण दिव्व माणुस तिरिच्छिएसु कामभोगेसु (निव्वेय हव्वमागच्छइ । सव्व विसएसु विरज्जइ । सव्वविसएसु विरज्जमाणे । आरभ परिग्गह परिच्चाय करेइ । आरभपरिग्गहपरिच्चायकरेमाणे । ससारमग्ग वोच्छिदइ । सिद्धिमग्ग पडिवन्नेय भवइ ॥ २ ॥

१ *शिष्य पूछे छे, " हे भदन्त ! मोक्षनी अभिलापा करवाथी जीव शु उपार्जन करी शके छे ? " गुरु कहेछे, " हे शिष्य ! मोक्षाभिलापथी जीव अनुत्तर[१] धर्म-श्रद्धा उपार्जे छे. अनुत्तर धर्म श्रद्धाए करीने विशिष्ट[२] वैराग्य शीघ्रपणे प्राप्त थाय छे, त्यार पछी ते (जीव) क्रोध, मान, माया अने लोभ ए चारे अनन्तानुबंधी[३] कषायनो क्षय करे छे, नवां अशुभ कर्म बांधतो नथी, अने कषायना परिणामरुप जे मिथ्यात्व ते त्यागवाथी विशुद्ध थइने ते शुद्ध सम्यक्तनो आराधक थाय छे ; आ प्रमाणे आत्मा [दर्शन] शुद्ध करवाथी केटलाक जीव एकज जन्ममा सिद्धि प्राप्त करी शके छे ; एम नहि तो सद्दर्शनथी त्रीजे भवे तो जरुर मुक्ति प्राप्त करे छे (१). २ निर्वेद एटले संसारनी विरक्ततांथी देव, मनुष्य, अने तिर्यचने लगता कामभोगथी जीवने शीघ्र त्याग बुद्धि उपजे छे;[४] सर्व विषयथी ते विरक्त थाय छे; अने तेम थवाथी ते आरम्भ परिग्रहनो त्याग करे छे, अने तेम करवाथी जीव ससार मार्गने छोडीने मुक्ति मार्गमा प्रवेश करे छे. (२).

*प्रत्येक गाथानी शरुआतमां आ प्रमाणे प्रश्न पुछेलुछे अने गुरु तेनो उत्तर आपेछे. परंतु आ भाषान्तरमा मात्र उत्तरज लखेलछे, प्रश्ननी पुनरुक्ति करी नथी. १. Intense. २ Increased. ३ एवो गाढ के जेथी अनंता संसार वधे. ४ Feels disgust

धम्मं सध्धाएण भंते जीवे किं जणयइ । धम्म सध्धाएणं साया सोख्खेसुरज्जमाणे विरज्जइ । आगारधम्मं चण चयइ । अणगारेण जिवे सारीर माणसाणं दुख्खाणं छेदण भेदण सजोगादिण वोछ्रेय करेइ । अव्वावाहच सुह निवत्तेइ ॥ ३ ॥ गुरु साहम्मिय सूसूसणयाएण भंते जीवे किं जणयइ । गुरु साहम्मिय सूस्सूसणयाएण विणय पडिवत्तिं जणयइ । विणय पडिवन्नेयण जीवे अणच्चासायणसीले नेरइय तिरिख्खजोणिय मणुस्सदेव दुग्गईउ निरुभइ । वण स्संजलण भत्तिं बहुमाणयाए जणयइ । वण स्संजलण भत्तिं बहुमाणयाए मणुस्सदेव सुग्गइउ निबधइ । सिध्धि सुग्गइ च विसोहइ । पसथ्थाइ चण विणय मूलाइं सव्व कज्जाइ साहेइ । अन्नेय बहवे जीवे विणइता भवइ ॥ ४ ॥

---

३. धर्म श्रद्धाथी जीवने मोज शोख अने सुख शाता उपर प्रथम जे राग होय छे तेनाथी ते विरक्त थाय छे ; तेथी ते गृहस्थाश्रमनो त्याग करे छे अने अणगारपणु अंगीकार करीने छेदन, भेदन, सयोग, वियोगादि शरीर अने मनना दुःखनो अंत आणेछे अने अवरोध रहित* मोक्ष सुखने पामेछे. (३). ४. गुरु अने साधर्मिकोनी सेवा करवाथी जीव विनय प्राप्त करी शके छे, विनय अंगीकार करवाथी अने देव-गुरुनी अशातना न करवाथी जीव नर्क तिर्यंच योनिमा अथवा तो मनुष्य अने देवतानी [चांडाल, किल्विषादि] कुगतिमां उत्पन्न थतो नथी. गुरुनी प्रशंसा, भक्ति अने सत्कार करवाथी जीव देवता अने मनुष्यनी उत्तम गतिने पामेछे, मोक्ष अने निर्मळ सद्गतिने प्राप्त थाय छे अने प्रशस्त विनय मूल सर्व कार्य साधे छे अने अन्य जीवोने पण विनयने विषे स्थापे छे. [४].

---

* Unchecked happiness.

आलोयणयाएणं भंते जीवे किं जणयइ । आलोयणयाएणं माया नियाण मिच्छा दंसणं सूल्लाणं मोक्खमग्ग विग्धाणं । अणंत ससार वध्धमाणाण । उध्धरणं करेइ उज्जुभावंचणं जणयइ । उज्जुभाव पडिवन्नएयण जीवे अमाइ इथिवेयं नपुसक वेयच नवधइ पुव्ववध्धन्नणं निज्जरइ ॥५॥ निंदणयाएण भते जीवे किं जणयइ । निंदणयाएणं पच्छाणुताव जणयइ । पच्छाणुत्तावेणं विरज्जामाणे करणगुण सेढिं पडिवज्जाइ । करणगुणसेढिं पडिवणेय अणगारे मोहणिज्जा कम्म उग्घाएइ ॥ ६ ॥ गरहणयाएण भते जीवे किं जणयइ । गरहणयाएणं अपुरक्कार जणयइ । अपुरक्कार गएण जीवे अप्पसथ्थेहिंतो जोगेहिंतो नियत्तेइ पसथ्थेहिय पवत्तेइ पसथ्थ जोग पडिवणेयण अणगारे अणतघाइ पज्जवेखवेइ ॥७॥

---

५. गुरुनी पासे पाप निवेदन [आलोयणा] करवाथी माया निदान अथवा तप विक्रय एटले इन्द्रादि पद लेवाने माटे करेलुं तप, अने मिथ्यात्व दर्शनरूपी शल्य, जे मोक्ष मार्गने विषे विघ्न करनारां छे अने अनत भवना *वधारनारा छे, ते दूर थइ शके छे; अने जीव सरलपणु उपार्जे छे अने ते वडे माया-रहित थइने स्त्रीवेद अने नपुसकवेद बांधतो नथी अने पूर्वे बांधेला कर्मनो क्षय करे छे. (५) ६. पोते करेला पापनी पोतानी मेळे निंदा [आत्म निंदा] करवाथी जीवने पश्चात्ताप थाय छे; पश्चात्ताप थवाथी ते वैराग्य पामे छे, अने वैराग्यथी अपूर्व-करण गुण श्रेणी १ अंगीकार करे छे, अने ते वडे मोहनी कर्म खपावीने मुक्ति मेळवे छे. [६]. ७. गर्हा एटले गुरु समक्ष स्वदोष निवेदन करवाथी जीव अपुरस्कार २ [गर्व भंग] पामे छे; अने गर्वभंग [निरभिमानी] थवाथी अप्रशस्त [भूंडां] कर्मना योगथी ते निवर्त्ते छे अने प्रशस्त योग अंगीकार करे छे. अने प्रशस्त योगने प्राप्त थयेलो अणगार ज्ञानावरणादि अनत घाति कर्मनो क्षय करे छे. [७].

---

*Migration of soul १ क्रमे क्रमे अशुद्धता अदृश्य थती जता सरवाळे सद्गुणोनु वाजबुं उच्चु चडतु जावछे ते. By successively destroying moral impurities one arrives at higher and higher virtues २ Humiliation

सामाइए भंते ।जीवे ।कि जणयइ सामाइएण सावज्ज जोग विरइ जणयइ ॥ ८ ॥ चओविसत्थएण भंते जीवे किं जणयइ । चओविसंथ्थएण दसण विसोहि जणयइ ॥ ९ ॥ वदणएण भंते जीवे किं जणयइ । वंदएण निया गोय कम्म खवेइ उच्चागोयकम्मनिबधइ सोहगचणं अप्पडिहय आणाफल निवत्तइ दाहिणभावचण जणयइ ॥ १० ॥ पडिक्कमणेण भंते जीवे कि जणयइ पडिक्कमणेण वयछिद्दाइं पिहेइ पिहिय वय छिद्दे पुण जीवे निरुध्धासवे असबल चरित्ते अट्ठसु पवयणमायासु उवउत्ते अपुहत्ते सुप्पणिहिए विहरइ ॥ ११ ॥

---

८. सामायिक एटले समता, समानवृत्ति अथवा नैतिक अने मानसिक शुद्धिथी जीव सावद्य* पाप योगथी निवर्ते छे. (८). ९. चतुर्विंश (चोवीश) जीनवरो (तीर्थकरो)नी स्तुति करवाथी जीव दर्शन-विशुद्धि अथवा सम्यक्तनी निर्मळता मेळवी शके छे. [९]. १०. गुरुने वंदन करवाथी नीच गोत्रमां जन्म अपावनार कर्मनो क्षय थाय छे, अने उच्च गोत्रना (मां जन्म थाय एवां) कर्म बंधाय छे. ते सर्व लोकनी प्रीति मेळववाने भाग्यशाळी बनेछे अने अप्रतिहत आज्ञा[१] फळ [प्रभुत्व] पामे छे तथा सर्व लोकनी शुभेच्छा मेळवी शके छे. (१०). ११. प्रतिक्रमण [पडिक्कमण] करवाथी जीव व्रतमां थता अतीचारनु[२] निवारण करी शके छे; वळी ते वडे जीव आश्रवोने[३] रुधी शके छे, निर्मल चारित्र पाळी शके छे, अष्ट प्रवचनने[४] विषे सावधान रही शके छे, संयम पाळवामां आळस करतो नथी, परतु सन्मार्गने विषे इन्द्रियोने स्थापित करीने संयम मार्गे विचरे छे. (११).

---

*Sinful [१] Looked upon as an authority लोक प्रियता अने बहु मानपणानी परिसीमा बतावीछे. [२] Transgressions व्रतनी विराधना चार प्रकारे थइ शके छे. अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतीचार, अणाचार ते पिनल कोडना, Intention, preparation, attempt and completion ने मळता छे. [३] कर्मोनो चाल्यो आवतो प्रवाह Flowing of the Karmans [४] पांच सुमिति अने त्रण गुप्ति २४मा अध्ययनमां ते विषे विस्तार पूर्वक विवेचन छे.

उ.अ.
२९

२५०

काउस्सग्गेणं भंते जीवे किं जणयइ । काउस्सग्गेणं तीयपडुप्पन्नं पायच्छित्तं विसोहेइ । विसुध्ध पायच्छित्तेय जीवे निव्वुयहियए । उहरिय भरोव्व भारवहे । पसथ्थझाणो वगए सुह सुहेणं विहरइ ॥ १२ ॥ पच्चखाणेण भंते जीवे किं जणयइ । पच्चक्खाणेण आसवदाराइ निरुंभइ पच्चक्खाणेण इच्छानिरोह जणयइ इच्छानिरोहगएण जीवे सव्वदव्वेसु निणीयतण्हे सलिभूए विहरइ ॥१३॥ थयथुइ मगलेण भते जीवे किं जणयइ । थयथूय मंगलेणं नाणदंसण चरित्त बोहिलाभ जणयइ नाणदसण चरित्त बोहिलाभ सपणेण जीवे अतकिरियं कप्पविमाणो ववत्तियं आराहण आराहेइ ॥ १४ ॥ कालेपडिलेहणयाएण भते जीवे किं जणयइ । कालपडिलेहणयाएण नाणावरणिज्ज कम्म खवेइ ॥१५॥

---

१२. कायोत्सर्ग [काउसग्ग]थी पूर्वनां अने वर्तमान कालनां अतीचार दूर थायछे, अने आ प्रमाणेना प्रायश्चित (आलोचना) थी आत्मा विशुद्ध थाय छे, अने ते वडे जेम भारवाहक (मजूर) पोताना शिर परनो बोजो उतरवाथी स्वस्थ थाय छे, तेम तेनु हृदय पण स्वस्थ थाय छे, मन स्वस्थ थवाथी प्रशस्त ध्यान धरी शकाय छे अने तेथी सुखमा विचरी शकाय छे. [१२]. १३.प्रत्याख्यान एटले पच्चखाणथी आश्रवद्वारो बंध करी शकाय छे. पच्चखाणथी इच्छानो निरोध करी शकाय छे. इच्छानो निरोध करवाथी जीव सर्व द्रव्य तरफ निस्पृही अने तृष्णारहित थइने विचरी शके छे. (१३). १४. स्तवन अने स्तुतिथी ज्ञान दर्शन अने चारित्रनो लाभ प्राप्त [धर्म-प्राप्ति] करी शकाय छे, बोधि-लाभ प्राप्त थवाथी जीव मान साधी शके छे, अने तेम थवाथी संसार कर्मनो अंत आणी शके छे, अथवा तो कल्प अने विमानादि देव लोकमां उत्पन्न थाय छे. [१४]. १५ काल प्रतिलेखन (प्रत्युपेक्षणा) एटले योग्य काले पडिलेहण करवाथी ज्ञानावरणीय कर्मनो क्षय थाय छे. [१५].

पायछ्त्तिकरणेणं भंते जीवे किंजणयइ । पायछ्त्तिकरणेणं पावकम्म विसोहिं जणयइ निरईयारेयावि भवइ । ममचणं पायछ्त्ति पडिवज्जमाणे मग्गंच मग्गफलच विसोहइ आयारच्च आयारफलच आराहेइ ॥ १६ ॥ खमावणयाएण भंते जीवे किजणयइ खमावणयाएण पल्हायणभाव जणयइ । पल्हायणभाव मुवगएय सव्वपाण भूय जीवसत्तेसु मेत्तीभावच उप्पाएइ मेत्तीभाव मुवगएयावि जीवेभाव विसोहिं काउण निझए भवइ ॥ १७ ॥ सझाएण भंते जीवे किंजणयइ । सझाएण नाणावरणिज्ज कम्म खवेइ ॥ १८ ॥ वायणयाएण भंते जीवे किजणयइ वायणयाएण निज्जर जणयइ । सुयस्स अणासायणाए वट्टइ सुयस्स अणासायणयाए वट्टमाणेतित्थ धम्म अवलवइ । तित्थ धम्म अवलव माणे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ ॥ १९ ॥

---

१६. प्रायश्चित्त करवाथी पाप छेदाय छे अने अतीचार रहित थवाय छे जे सन्मार्गे रहीने प्रायश्चित्त करे छे ते ज्ञान मार्गनो हेतु अने फळ (अर्थात–सम्यक्त) प्राप्त करी शके छे, अने (शुद्ध) आचार अथवा चारित्रनुं फळ [अर्थात–मुक्ति] मेळवी शके छे [१६]. १७. क्षमापना एटले खमाववाथी अथवा अपराधनी क्षमा मागवाथी मानसिक सुख [उल्लास–भाव] प्राप्त करी शकाय छे, अने ते मळवाथी सर्व प्राण, जीव, भूत अने सत्व [प्राणी मात्र] तरफ मित्र भाव उत्पन्न थाय छे; आवा मित्र भावथी जीव राग द्वेष त्यागीने सप्त भय रहित थाय छे. (१७). १८. स्वाध्यायथी जीव ज्ञानावरणीय कर्मनो क्षय करी शके छे. [१८]. १९. वाचना एटले सूत्र–पठनथी कर्मनो क्षय करी शकाय छे अने सूत्र–सिद्धांतोनी अनाशातना (रक्षण) थइ शके छे, सिद्धांतोनी अनाशातनाने विषे वर्तवाथी जीव श्री तीर्थंकरोना धर्मने पामी शके छे, जे धर्म वडे महान कर्मोनो अने भव सागरनो अंत आणी शकाय छे. (अर्थात–मुक्ति मेळवी शकाय छे). (१९)

पडिपुच्छणयाएण भंते जीवे किं जणयइ पडिपुच्छणयाएणं सुत्तत्थ तदुभयाइ विसोहेइ । कंखा मोहणिज्जं कम्म वोच्छिंदइ ॥२०॥ परियट्टणयाएण भंते जीवे किं जणयइ । परियट्टणयाएण वंजणाइ जणयइ । वंजण लद्धिं च उप्पाएइ ॥ २१ ॥ अणुप्पेहाएण भंते जीवे किं जणयइ । अणुप्पेहाएण आउयवज्जाउ सत्त कम्म पगडीओ धणिय बंधण बद्धाओ सिढिल बंधण बद्धाओ पकरेइ । दीहकालट्ठिइयाओ रहस्स कालट्ठिइयाओ पकरेइ । तिव्वाणुभावाओ मंदाणु भावाउ पकरेइ । बहु पएसग्गाओ अप्पपएसग्गाओ पकरेइ । आउयं च णं कम्मं सिय बंधइ सिय नो बंधइ । असाया वेयणिज्जं च णं कम्मं नो भुज्जो भुज्जो उवचिणाइ । अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंत संसार कंतारं खिप्पामेव वीइवयइ ॥ २२ ॥

२०. प्रतिपृच्छना एटले संदेह उपजे ते गुरुने पूछवाथी सूत्र अने सूत्रार्थ स्पष्ट समजी शकाय छे, अने शंका (संदेह) तथा मोहनी कर्मनो नाश थाय छे. [२०]. २१. परावर्तन एटले सूत्र वारंवार पाठ करवाथी व्यंजनादि अक्षरोनुं ज्ञान थाय छे अने तेम करवाथी पदनां पद याद रही शके छे. (२१). २२. अनुप्रेक्षा एटले सूत्रोनुं मनन करवाथी आयुःकर्म सिवाय बाकीना सात कर्म, जेना गाढ बंधन वडे जीव बंधायेलो छे, तेनी गाठ ढीली करी शकाय छे, ते कर्मोनी दीर्घ स्थितिने टुंकी करी शकाय छे, तेना तीव्र भावने मंद करी शकाय छे अने " जीवना घणा प्रदेशोने [भागोने] ए कर्म लागेला होय ते ओछा करी शकाय छे "* ते वडे आयु कर्म बंधाय या न बंधाय परंतु वेदनी कर्म तो फरीथी बंधातां नथी, अने आदि तथा अंतरहित, चतुर्गतिरूप संसार अटवीनो शीघ्र पार पामी शकाय छे. (२२).

* गेराकार कहे छे के आ वाक्य केटलीक प्रतोमां पाछळथी दाखल करायु छे.

धम्म कहाएणं भंते जीवे कि जणयइ ? धम्म कहाएणं निज्जर जणयइ पवयण पभावेइ । पवयण पभावएण । जीवे आगमिसस्स भद्दत्ताए कम्म निबंधइ ॥ २३ ॥ सुयस्स आराहणयाएण भंते जीवे किं जणयइ । सुयस्स आराहणयाएणं आणाण खवेइ नय संकिलिस्सइ ॥ २४ ॥ एगगामण संनिवेसणयाएणं भंते जीवे कि जणयइ । एगगामण संनिवेसणयाएणं चित्त निरोह करेइ ॥ २५ ॥ सजमेणं भंते जीवे कि जणयइ । सजमेणं अणएहयत्त जणयइ ॥ २६ ॥ तवेण भंते जीवे किं जणयइ । तवेण वोदाण जणयइ ॥ २७ ॥ वोदाणेण भंते जीवे कि जणयइ वोदाणेण अकिरिय जणयइ । अकिरियाए भवित्ता तओपच्छा सिझई बुझई मुच्चई परिनिव्वायइ सव्व दुक्खाण मत करेई ॥ २८ ॥

---

२३. धर्म-कथा करवाथी जीव कर्मनो क्षय करी शके छे, धर्म-कथाथी सिद्धांतोनो प्रभाव वधारी शकाय छे, अने जिन-शासननो प्रभाव वधारवाथी जीव आवता कालने माटे शुभ कर्म उपार्जे छे. [२३]. २४. श्रुत-आराधनाथी जीव अज्ञानतानो क्षय करी शके छे अने रागादिके करीने क्लेश पामतो नथी. (२४). २५. एकाग्र मनः सन्निवेशनाथी चित्त-निरोध थइ शके छे एटले के मनने उन्मार्गे जतुं अटकावी शकाय छे. [२५]. २६. संयम अथवा चारित्र वडे पांचे आश्रवोने रुंधी शकाय छे, अर्थात-पाप कर्मथी मुक्त रही शकाय छे. [२६]. २७. तप वडे पूर्वे बांधेलां कर्मनो क्षय अने आत्मानी शुद्धि करी शकाय छे. (२७). २८. व्यवदान एटले कर्मने छेदवाथी जीव शुक्ल ध्याननो चोथो पायो जे अक्रिया छे ते उपार्जे छे; अक्रियापणु पामवाथी जीव सिद्धि, बुद्धि, मुक्ति अने निर्वाण प्राप्त करी शके छे अने सर्व दुःखनो अंत आणी शके छे. [२८].

सुहसाएणं भंते जीवे किं जणयइ सुहसायाएणं अणुस्सुयत्तं जणयइ। अणुस्सुएणं जीवे अणुकंपए अणुब्भडे विगयसोए चरित्त मोहणिज्जं कम्मं खवेइ ॥ २९ ॥ अपडिबद्धयाएणं भंते जीवे किं जणयइ । अपडिबद्धयाएणं निस्संगत्तं जणयइ । निस्संगत्तेणगएण जीवे एगे एगग्गचित्ते दियाय राओय असज्जमाणे अपडिबद्धेयावि विहरइ ॥ ३० ॥ विवित्त सयणासण सेवणयाएण भंते जीवे किं जणयइ । विवित्त सयणासण सेवणयाएण चरित्त गुत्ति जणयइ चरित्त गुत्तेयण जीवे विवित्ताहारे दढचरित्ते एगंतरए मोक्ख भावपडिवणे अट्ठ विहकम्म गंठि निज्जरेइ ॥ ३१ ॥ विणियट्टणयाएण भंते जीवे किं जणयइ । विणियट्टणयाएणं पावाण कम्माण अकरणयाए अब्भुट्ठेइ पुव्वबद्धाणय निज्जरणयाए तानियत्तइ तओ पच्छा चाउरंत संसार कंतार विइवयइ ॥ ३२ ॥

२९. सुख शाता एटले विषय सुखनी इच्छा निवारण करवाथी जीव विषय सुख प्रति निस्पृहा [इच्छा रहितपणुं] उपार्जे छे; अने एवुं अनुत्सुकपणुं प्राप्त थवाथी जीव दयावान, अभिमान रहित अने शोक रहित थाय छे अने चारित्र* मोहनी कर्मने खपावे छे. [२९]. ३०. अप्रतिबद्धता एटले प्रतिबंध रहित थवाथी जीव निस्संगत्व एटले संग रहितपणुं [निर्ग्रंथपणुं] उपार्जे छे, अने ते वडे धर्मने विषे एकाग्र वृत्ति राखी शके छे, अने रात्रि दिवस [निरंतर] राग द्वेष रहित थइने अप्रतिबद्धपणे विहार करे छे. [३०] ३१. विविक्त शयनासन सेवना एटले स्त्री, पशु, पंडकादि रहित शयनासन सेववाथी जीव चारित्र गुप्ति [रक्षण] प्राप्त करी शके छे, शुद्धनो [शरीरने पुष्ट बनावे एवो नहि] आहार करे छे, चारित्रमां दृढ रहे छे, संयमने विषे सावधान रहे छे, मोक्षने विषे मति[1] राखे छे, अने आठ प्रकारनां कर्मनी गांठने तोडी नाखे छे (३१). ३२. विनिवर्त्तना एटले विषयथी पराङमुख रहेवाथी जीव पाप कर्म रहित थाय छे अने पूर्व बांधेला कर्मनो क्षय करी शके छे अने त्यार पछी चतुर्गति रूप संसार-कान्तार (अटवि‍नो) पार पामी शके छे. [३२]

* जे मोहनी कर्मथी धर्म ध्यान जाणवा न पामाय—तेना २५ भेद छे कषायनी चोकडीना सोळ भेद अने नवनो कषाय,
[1] उत्कंठा Yearning

सभोग पच्चक्खाणेणं भंते जीवे किं जणयइ । सभोग पच्चक्खाणेणं आलंबणाइ खवेइ निरालंबणस्सय आयतट्ठिया जोगा भवंति सएण लाभेण संतुस्सइ । परस्सलाभंनो आसाएइ नोतक्केइ नोपिहेइ नोपत्थेइ नोअभिलस्सइ । परस्सलाभअणासाएमाणे अतक्केमाणे अपीहेमाणे अपत्थेमाणेअणभिलस्समाणे दोच्चं सुहसेज्जं उवसं पज्जित्ताणं विहरइ ॥ ३३ ॥ उवहिपच्चक्खाणेणं भंते जीवे किं जणयइ । उवहि पच्चक्खाणेणं अपलिमंथं जणयइ निरुवहिएणं जीवे निक्कंखे उवहि मंतरेणय नयसंकिलिस्सइ ॥ ३४ ॥ आहार पच्चक्खाणेणं भंते जीवे किं जणयइ आहारपच्चक्खाणेणं जीवियाससप्पउगं वोच्छिंदइ जीवियाससप्पउगं वोच्छिंदित्ता जीवे आहारमंतरेणनय संकिलिस्सइ ॥ ३५ ॥

३३ सम्भोग–प्रत्याख्यान एटले *मंडळमां [सौनी साथे बेसीने] आहार करवाना पच्चखाण करवाथी जीव आलम्बन दूर करी शके छे; अनालम्ब थवाथी ते आत्मानो अर्थ (मोक्ष) साधी शके छे, पोताने मळेला लाभमांज संतोष माने छे, पारकाने थयेला लाभने ते चांहतो नथी, तेनी इच्छा करतो नथी, स्पृहा करतो नथी अथवा तो तेनी याचना करतो नथी, अने बीजा साधुओनी इर्षा कर्या सिवाय ते जुदा उपाश्रयने विषे रहे छे (३३). ३४. उपधि–प्रत्याख्यान एटले रजोहरण, मुख वस्त्रिका, पात्रादि जरुरनी वस्तुओ सिवाय बीजी वस्तुओ राखवाना पच्चखाण करवाथी निर्विघ्ने स्वाध्याय [अभ्यास] करी शकाय छे, उपधि रहित जीव वस्त्रादिनी इच्छा-रहित थइ शके छे अने क्लेश पामतो नथी. [३४]. ३५. आहार–प्रत्याख्यान एटले (सदोष) आहारना पच्चखाण करवाथी जीव जीवितव्यनी आशा राखतो नथी, अने जीवितव्यनी आशा रहित जीव आहारना अभावे क्लेश पामतो नथी.(३५)

*आने बदले प्रो. जेकोबी एवो अर्थ करेछे के 'एकज मंडळ, अथवा विभागमांथी आहार व्होरवाना पच्चखाण करवाथी.'

वीयरागयाएणं भंते जीवे किं जणइ वीयरागयाएणं नेहाणुबंधणाणिय तण्हाणुबंधणाणिय वोच्छिंदइ मणुण्णा मणुणेसु सद्दफरिस रसरूव गधेसु चेव विरज्जइ ॥ ४५ ॥ खतीएणं भंते जीवे किं जणयइ । खतीएणं परीसहे जिणयइ ॥ ४६ ॥ मुत्तीएण भंते जीवे किं जणयइ । मुत्तीएण अकिंचणं जणयई । अकिंचणेय जिवे अथ्थ लोलाणपुरिसाण अप्पथ्थणिज्जे हवई ॥ ४७ ॥ अज्जवयाएण भंते जीवे किं जणयइ अज्जवयाएण काउज्जुयय भावज्जुयय भासुज्जुयय । आविसंवायणजणयइ अविसंवायण संपन्नयाण जीवे धम्मरसु आराहए भवइ ॥ ४८ ॥ मद्दवयाएण भंते जीवे किं जणयइ मद्दवयाएणं अणुस्सियत्तं जणयइ अणुस्सियत्तेण जीवे मिउमद्दव सपन्ने अठमयट्ठाणाई निठवेइ ॥ ४९ ॥

---

४५. वीतरागता एटले राग द्वेष रहित पणाथी जीव स्नेह अने तृष्णाना बंधन छेदी शके छे; अने शुभाशुभ शब्द, स्पर्श, रस, रुप अने गंधथी विरक्त थाय छे [४५]. ४६.क्षान्ति एटले क्षमा राखवाथी जीव परिसहने जीती शके छे,(४६). ४७. मुक्ति एटले निर्लोभताथी जीव अकिंचनता (परिग्रहरहितपणु) उपार्जे छे, अने एवो अकिंचन एटले अर्थरहित जीव *द्रव्यार्थी लोको [चोर वगेरे] ने अप्रार्थनीय थाय छे.* [४७]. ४८. आर्जव एटले सरलताथी जीव कायानी [अथवा कार्यनी], भावनी अने भाषानी सरलता प्राप्त करी शके छे, अने अविसंवाद (सत्य-शीलता) पामे छे; अने अविसंवाद संपन्न जीव धर्मनो आराधक बने छे. [४८]. ४९. मार्दव एटले निराभिमानथी जीव अहंकारनो अभाव उपार्जे छे, अने एवो मान त्यागी जीव मृदु अने कोमळ स्वभावनो थाय छे, अने अष्ट १ मद स्थाननो क्षय करी शके छे. [४९].

---

* आने बदले प्रो. जेकोबी एवो अर्थ करे छे के 'द्रव्यनी इच्छाने वश थतो नथी.' १ आठ मद—जाती मद, कुळ मद, तप मद, रुप मद, बळ मद, लाभ मद, ज्ञान मद अने ऐश्वर्य मद.

भावसच्चेणं भंते जीवे किं जणयइ भावसच्चेणं भावविसोहिं जणयइ भावविसोहिए वट्टमाणे जीवे अरहंत पण्णत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्ठेइ अरहंत पण्णत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्ठित्ता परलोगस्स धम्मस्स आराहए भवइ ॥ ५० ॥ करणसच्चेण भंते जीवे किं जणयइ करणसच्चेणं जीवे करणसत्तिं जणयइ करणसच्चे वट्टमाणे जीवे जहावाइ तहाकारियावि भवइ ॥ ५१ ॥ जोगसच्चेण भंते जीवे किं जणयइ । जोगसच्चेण विसोहेइ ॥ ५२ ॥ मणगुत्तयाएण भंते जीवे किं जणयइ मणगुत्तयाएण जीवे एगग्ग चित्त जणयइ एगग्ग चित्तेणजीवे मणगुत्तेसंजम माराहए भवइ ॥ ५३ ॥ वयगुत्तयाएण भंते जीवे किं जणयइ । वयगुत्तयाएणं निव्विकारत्तं जणयइ । निव्विकारेण जीवे वयगुत्ते अज्झप्प जोग साहणजुत्तेय वि भवइ ॥ ५४ ॥

---

५०. भाव-सत्य एटले साचा भावथी जीव मननी विशुद्धि प्राप्त करे छे, अने भाव विशुद्ध जीव श्री जिन-भाषित धर्म आराधे छे, अने धर्मने विषे सावधान रहेवाथी परलोके पण ते श्री अर्हंत प्रणीत धर्मनो आराधक थाय छे. [५०]. ५१. करण अथवा क्रिया-सत्य एटले प्रतिलेखनादि क्रिया यथाविधि करवाथी जीव क्रिया-सामर्थ्य मेळवे छे, अने क्रिया-सत्य जीव जे प्रमाणे बोले ते प्रमाणे वर्त्ते छे. (५१). ५२ योग-सत्य एटले मन, वचन, कायाना सत्य व्यापारथी मन, वचन, काया निर्दोष थाय छे (५२). ५३ मनो-गुप्ति एटले मनने अशुभ पदार्थोथी सभाळवाथी एकाग्रवृत्ति प्राप्त थाय छे, अने एवो एकाग्रवृत्ति वाळो जीव सयमनो आराधक [पालक] थाय छे. [५३]. ५४. वाग-गुप्ति एटले वचनने अशुभ पदार्थोथी सभाळवाथी जीव निर्विकारपणु प्राप्त करी शके छे, अने निर्विकारपणु पामवाथी जीव अध्यात्म-योग साधी शके छे. (५४).

कायगुत्तयाएण भंते जीवे किं जणयइ । कायगुत्तयाएण संवरं जणयइ । संवरेण कायगुत्ते पुणोपावासवनिरोहं करेइ ॥ ५५ ॥ मणसमाहारणयाएण भंते जीवे किं जणयइ । मणसमाहारणयाएण एगग्गं जणयइ एगग्गं जणइत्ता नाणपज्जवे जणयइ नाणपज्जवे जणइत्ता सम्मत्तं विसोहेइ मिच्छत्तं च निज्जरेइ ॥ ५६ ॥ वइसमाहारणयाएण भंते जीवे किं जणयइ । वइसमाहारणयाएण दंसणपज्जवे विसोहेइ दंसणपज्जवे विसोहित्ता सुलभबोहियत्तं निव्वत्तेइ दुल्लभबोहियत्तं निज्जरेइ ॥५७॥ कायसमाहारणयाएण भंते जीवे किं जणयइ । कायसमाहारणयाएण जीवे चरित्तपज्जवे विसोहेइ । चरित्तपज्जवे विसोहित्ता अहक्खाय चरित्तपज्जवे विसोहेइ अहक्खाय चरित्तपज्जवे विसोहित्ता चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ । तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वायइ सव्वदुक्खाण मंतं करेइ ॥ ५८ ॥

५५. काय-गुप्ति एटले कायाने अशुभ व्यापारथी संभाळवाथी जीव *संवर-योग उपार्जे छे, अने तेम थवाथी पापाश्रवनो निरोध करी शके छे [५५]. ५६. मन-समाधारणा एटले मनने शुभ स्थानने विषे स्थापवाथी जीव धर्ममां स्थिर वृत्ति अथवा एकाग्रपणुं पामे छे, अने एवी एकाग्रवृत्ति प्राप्त थवाथी ज्ञानना पर्याय पामी शकाय छे जे सम्यक्त्वने निर्मल करे छे अने मिथ्यात्वनो क्षय करे छे [५६]. ५७, वाक-समाधारणा एटले वचनने शुभ कार्यमां स्थापवाथी दर्शन विशुद्ध थाय छे, सम्यक्त्व निर्मल थवाथी सुलभ बोधित्व प्राप्त थाय छे अने दुर्लभ बोधित्वनो नाश थाय छे. (५७). ५८. काय-समाधारणा एटले कायाने शुभ कार्यमां स्थापवाथी चारित्र निर्मल थाय छे, अने तेम थवाथी जीव यथाविधि संयम पाळी शके छे अने ते वडे चार केवलि कर्मना अंश (वेदनी, आयु, नाम अने गोत्र)नो क्षय करी शके छे. त्यारपछी जीव सिद्धि, बुद्धि, मुक्ति अने निर्वाण प्राप्त करी शके छे अने सर्व दुःखनो अंत आणी शके छे [५८]

*समिति अने गुप्तिथी आश्रवने रोकवु ते.

नाणसपन्नयाएण भते जीवे किं जणयइ नाणसपन्नयाएण जीवे सव्वभावाभिगमं जणयइ नाणसपन्नेणं जीवे चाउरत ससार कतारे नविणस्सइ जहासुइ ससुत्ता पटियाविनविणस्सइ । तहा जीवो निससुत्तो ससारे नविणस्सइ नाण वि- णय तवचरित्तजोगे सपाउणइ ससमयपरसमय सघायणिज्जे भवइ ॥ ५९ ॥ दसण सपन्नयाएण भते जीवे कि जणयइ दसणसंपन्नयाएणं भवमिछुत्तछेयणकरेइ । पर नविझायइ पर अविझायमाणे अणुत्तरेणंनाणदसणेण अप्पाणं संजोएमाणेसम्मभावेमाणे विहरड ॥ ६० ॥ चरित्त सपणयाएण भते जीवे कि जणयइ । चरित्त सपणयाएण सेले सीभावजणयइ । सेलेसीभाव पडिवणेय अणगारे चत्तारि केवलि कम्मसे खवेड । तओ पछा सिझइ बुझइ मुचइ परिनिव्वायइ सव्वदुख्खाण मत करेइ ॥ ६१ ॥

५९. ज्ञान–सपन्नताथी *जीव–अजीवनु स्वरुप (तत्व ज्ञान) जाणी शकाय छे.* अने एवो तत्व ज्ञान सपन्न जीव चतुर्गति संसाररूप अटविने विषे भटकी मरतो नथी. जेम सूत्र [दोरो] परोवेली सोय कचरामा खोवाइ जती नथी तेम सूत्र [सिद्धान्त] ज्ञाने करीने सहित जीव ससारमा गुम थतो नथी. ते ज्ञान, दर्शन, तप अने चारित्रना योग सम्यक प्रकारे साधे छे, अने पोताना तेमज पर धर्मनां शास्त्रोमा निपुणता मेळवे छे अने प्रधान १ पुरुष [अजीत] गणाय छे. [५९]. ६०. दर्शन–सपन्नताथी भव (भ्रमण)नु कारण जे मिथ्यात्व तेने छेदी शकाय छे; अने आत्मामा [ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनो] जे प्रकाश होय छे तेनो नाश थतो नथी, परतु ते पोताना आत्माने ज्ञान दर्शन युक्त राखीने सम्यक्त भावथी विचरे छे. [६०]. ६१. चारित्र–संपन्नताथी जीव शैलेशीभाव एटले मेरु पर्वतना जेवी दृढता उपार्जे छे; अने ते वडे जीव चार केवलि कर्मना अंशनो क्षय करी शके छे, अने त्यार पछी सिद्धि, बुद्धि, मुक्ति अने निर्वाण पामे छे अने सर्व दुःखनो अत आणी शके छे. (६१).

*आने बदले मो. जेकोबी एनो अर्थ करे छे के ' शब्द अने शब्दार्थ जाणी शके छे. १ Invincible

सोइंदिय निग्गहेणं भंते जीवे किं जणयइ । सोइंदिय निग्गहेणं मणुन्ना मणुन्नेसु सद्देसु रागदोस निग्गहं जणयइ । तप्पच्चइयंच कम्मं नवधइ पुव्वबद्धच निज्जरेइ ॥ ६२ ॥ चक्खिंदिय निग्गहेण भंते जीवे किं जणयइ । चक्खिंदिय निग्गहेण मणुन्ना मणुन्नेसु रूवेसु रागदोस निग्गह जणयइ तप्पच्चइयच कम्म नवधइ पुव्वबद्धच निज्जरेइ ॥ ६३ ॥ घाणिंदिय निग्गहेणं भंते जीवे किं जणयइ । घाणिंदिय निग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु गंधेसु रागदोस निग्गह जणयइ । तप्पच्चइयच कम्म नवधइ पुव्वबद्धच निज्जरेइ॥६४॥जिभिंदिय निग्गहेण भंते जीवे किं जणयइ जिभिंदिय निग्गहेण मणुन्नामणुन्नेसु रसेसु रागदोसानिग्गह जणयइ । तप्पच्चइयच कम्म नवधइ पुव्वबद्धच निज्जरेइ ॥ ६५ ॥ फासिंदिय निग्गहेण भंते जीवे किं जणयइ । फासिंदिय निग्गहेण मणुन्ना मणुन्नेसु फासेसु रागदोस निग्गह जणयइ तप्पच्चइयच कम्म नवधइ पुव्वबद्धच निज्जरेइ ॥ ६६ ॥ कोहविजएण भंते जीवे किं जणयइ । कोहविजएण खंतिं जणयइ कोहवेयणिज्जं कम्म नवधइ पुव्वबद्धच निज्जरेइ ॥६७॥

---

६२. श्रोत्रेन्द्रिय-निग्रह एटले कानने वश राखवाथी जीवने भला भूडा शब्द उपर रागद्वेष उपजतो नथी, अने तेथी ते संबंधीनां कर्म जीव बांधतो नथी अने पूर्वे बांधेलां कर्मने खपावी शके छे. [६२]. ६३–६६. चक्षुरिन्द्रिय-निग्रह, घ्राणेन्द्रिय-निग्रह, जिह्वेन्द्रिय-निग्रह अने स्पर्शेन्द्रिय-निग्रहथी एटले आंख, नाक, जीभ अने त्वचा वश राखवाथी अनुक्रमे भला भूंडा रूप उपर, गंध उपर, रस उपर अने स्पर्श उपर रागद्वेष उपजतो नथी, अने तेथी ते ते संबंधीनां कर्म जीव बांधतो नथी, अने पूर्वे बांधेलां कर्मने खपावी शके छे. (६३–६६). ६७. क्रोध विजयथी जीव क्षमा उपार्जे छे, क्रोधने जीतवाथी जीव क्रोधना वेदनी कर्म बांधतो नथी अने पूर्वे बांधेलां कर्मनो क्षय करी शके छे. [६७].

माण विजएण भंते जीवे किं जणयइ माण विजएण मद्दव जणयइ माणवेयाणिज्जं कम्म नवधइ पुव्वबद्धच निज्जरेइ ॥ ६८ ॥ माया विजएण भंते जीवे कि जणयइ मायाविजएण अज्जव जणयइ माया वेयणिज्जं कम्म नवधइ पुव्वबद्धंच निज्जरेइ ॥ ६९ ॥ लोभ विजएण भंते जीवे किं जणयइ लोभ विजएण सतोसभाव जणयइ लोभ वेयणिज्ज कम्म नवधइ पुव्वबद्धच निज्जरेइ ॥ ७० ॥ पेज्जदोस मिच्छादसण विजएण भंते जीवे कि जणयइ पेज्जदोस मिच्छादसण विजएणं नाण दसण चरित्ता राहणयाए अब्भुट्ठेइ अट्ठविहस्स कम्मस्स कम्मगंठिस्स विमोयण

६८–७०. मान, माया अने लोभने जीतवाथी जीव अनुक्रमे मार्दव, सरलता अने संतोष उपार्जे छे, अने मान, माया अने लोभना वेदनी कर्म बांधतो नथी, अने पूर्वे बांधेला कर्मनो क्षय करी शके छे [६८–७०] ७१. राग, द्वेष अने मिथ्या दर्शन विजयथी जीव ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनी आराधनामा सावधान रहे छे अने अष्ट विध कर्मनी गांठने [अथवा अष्ट प्रकारना घाति कर्मनी कठिन जालने] तोडवाने सावधान बने छे. अनुक्रम प्रथम ते अठ्ठावीश [१६ कषाय+९ नोकषाय+३ दर्शन मोहनी कर्म] मोहनी कर्मने* खपावे छे, पछीथी १ पांच ज्ञानावरणीय, २ नव दर्शनावरणीय अने ३ पांच अंतराय कर्मने खपावे छे, छेल्ला त्रण प्रकारनां कर्मना अंश ते एकी साथेज खपावे छे, त्यारपछी ते सर्वोत्कृष्ट अनन्तार्थ, संपूर्ण, निरावरण, विशुद्ध, दोषरहित अने लोका-

---

* मोहनी कर्मना बे भेद छे. दर्शन मोहनी अने चारित्र मोहनी. दर्शन मोहनीना त्रण भेद–सम्यक्त्व मोहनी, मिश्र मोहनी अने मिथ्यात्व मोहनी. चारित्र मोहनीना २५ भेद–१६ कषायनी चोकडी अने ९ नोकषाय. १. मति ज्ञानावरणीय, श्रुत ज्ञानावरणीय, अवधि ज्ञानावरणीय, मनपर्यव ज्ञानावरणीय, केवल ज्ञानावरणीय. २ चक्षु दर्शनावरणीय, अचक्षु दर्शनावरणीय, अवधि दर्शनावरणीय, केवळ दर्शनावरणीय, निद्रा, निद्रा निद्रा, प्रचला, प्रचला प्रचला, थीणद्धि निद्रा. ३. दानांतराय, भोगांतराय, उपभोगांतराय, भोगांतराय, वीर्यांतराय.

याए तप्पटमयाएण ऱ्हाणुपुव्विं अठाविसइ विह मोहणिज्ज कम्म उग्घाणु । पचविह नाणावरणिज्ज नवविह दसणावरणिज्ज पचविह अतराय एए तिणिवि कम्मसे जुगवं खवेइ तओ पच्छा अणुत्तर अणत कसिण पडिपुण निरावरण वितिमिर विसुद्ध लोगा लोग प्पभावग केवलवरनाण दसण समुप्पाडेइ जाव सजोगी भवइ ताव इरियावहिय कम्म निबधइ सुह फरिस दुसमयठिइय तजहा तपढम समए बद्ध बीइय समए वेदिय तइए समए निज्जिन्न त बध्ध पुठ्ठ उदिरिय वेइय निज्जिन्न सेयकालेय अकम्मयावि भवइ ॥ ७१ ॥ अहाउय पालइत्ता अतोमुहुत्तध्धावसेसाउए जोग निरोहं करेमाणे सुहुमकिरिय अप्पडिवाइय सुक्कझाण झायमाणे तप्पढमयाए मणजोगं निरुभइ मणजोगं निरूभइत्ता वयजोग निरुभइ वइजोग निरुभइत्ता कायजोग निरुभइ कायजोग निरुभइत्ता आणापाण निरोहकरेइ आणापाण निरोहकरित्ता इसिं पच रहस्स क्खरुच्चारणध्धाएयण अणगारे समुच्छिन्न किरिय अनियट्टि सुक्क

लोक प्रकाशक एवु केवल ज्ञान-दर्शन प्राप्त करे छे, ज्या सुधी जीव सयोगी [एटले मन, वचन, कायाना व्यापारमां] रहे छे त्या सुधी ते इर्या-पथिक [एटले हालवा चालवाथी लागता] कर्म बांधे छे, ते सुख स्पर्शनी स्थिति मात्र द्वि समय (बे पळ) नी छे; प्रथम पळे ते कर्म बंधाय छे, बीजी पळे ते अनुभवाय छे अने त्रीजी पळे तेनो लय थाय छे. आ प्रमाणे कर्म बंधाय छे, जीवने ते स्पर्श करे छे, तेनो उदय थाय छे, ते अनुभवाय छे अने तेनो नाश थाय छे, अने भविष्यकालमां जीव कर्मरहित बने छे (७१).
७२. आ प्रमाणे केवल ज्ञान प्राप्त थया पछी अने अवशेष मुहूर्त मात्र आयुष्य पाळ्या पछी जीव मन, वचन, कायाना व्यापारनो निरोध करे छे अने शुक्ल ध्याननी त्रीजी पंक्तिमां प्रवेश करे छे, जेमांथी पाछा पडवापणु नथी अने जेमां मात्र सूक्ष्म क्रियाबीज रहे छे. प्रथम ते मनोयोग रुधे छे, पछी वचन योग रुधे छे, त्यारपछी काया योग रुधे छे अने उश्वासने रुधे छे पांच ह्रस्व

झाण झायमाणे वेयणिज्जं आउय नाम गोत्त च्एण चत्तारिविकम्मसे जुगव खवेइ ॥ ७२ ॥ तउ उरालिय तेय कम्माइच सव्वाहि विप्पजहाणाहि विप्पजहित्ता उजुसेढिपत्ते अफुसमाणगई उड्ढ एगसमएणं अविग्गहेणं त·थ गता सागारो वउत्ते सिझइ बुझइ मुचइ परिनिव्वायइ सव्वदुक्खाण मत करेइ ॥ ७३ ॥ एस खलु सम्मत्त परक्कमस्स अझयणस्स अट्ठेममणेण भगवया महावीरेण आघविए पन्नविए परुविए दसिए निदसिए उवदसिए त्तिबेमि

❀ ॥ इति समत्त परक्कमनाम झयण ओगनतिसमं सम्मत्त ॥ २९ ॥ ❀

अक्षरनो उच्चार करवामा जेटलो वखत लागे तेटला वखतमा ते शुक्ल ध्याननी चोथी पक्तिमा पहोंचे छे अने शैलेशी अवस्था अनुभवे छे, अने वेदनी, आयु, नाम अने गोत्र ए चार कर्मना अश एकी साथे खपावे छे. (७२). ७३. वेदनीयादि चारे कर्म खपाव्या पछी *औदारिक, १ कार्मण अने २ तेजसादि शरीर तजीने जीव ऋजुश्रेणी [सीधी लीटी]नु स्वरुप धारण करीने एक क्षणमा फशाने स्पर्श कर्या सिवाय अने लेश मात्र जग्या रोक्या सिवाय उर्ध्व गतिने विषे चाल्यो जाय छे, अने मोक्ष स्थानने विषे पहोंच्या पछी साकार रुप [ज्ञानोपयोग युक्त] धारण करे छे, अने सिद्धि, बुद्धि, मुक्ति अने निर्वाण प्राप्त करेछे अने सर्व दुःखनो अत आणे छे. [७३]. सम्यक्त पराक्रमनो सत्यार्थ आ प्रमाणे श्रमण भगवत श्री महावीर देवे कह्यो छे, प्रकट कर्यो छे, प्ररुप्यो छे अने दर्शाव्यो छे

* ॥ ओगणत्रीसमु अध्ययन संपूर्ण ॥ *

---

* जे शरीरमां हाड मास होय ते. १—२ जीव साथे आ बे सुक्ष्म शरीर रहे छे. देवताओने औदारिक शरीर न होय पण तेने बदले वैक्रिय शरीर होय, जेथी ते नानुं मोटु स्वरुप धारण करी शके. पाचमुं आहारक शरीर. चौद पूर्व धारी मुनीराज तीर्थकरनी रिद्धि प्रमुख जोवा एक हाथ प्रमाण देह धारण करे ते.

अध्ययन ३०. तपनो मार्ग.

जहाउ पावग कम्मं रागदोस समज्जियं । खवेइ तवमा भिक्खू तमेगग्गमणो सुण ॥१॥ पाणवह मुसावाया अदत्त मेहुण परिग्गहाओ विरओ । राइभोयण विरओ जीवो भवइ अणासवो ॥२॥ पचसमिओ तिगुत्तो अकसाओ जिइंदिओ । अगारवोय निसल्लो जीवो भवइ अणासवो ॥ ३ ॥ एएसिंतु विवच्चासे रागदोस समज्जियं । खवेइउ जहा भिक्खू तमेगग्गमणो सुण ॥ ४ ॥ जहा महा तलागस्स सनिरुध्धे जलागमे । उस्सिंचणाए तवणाए कम्मेण सोसणा भवे ॥ ५ ॥ एवंतु सजयस्सावि पावकम्म निरासवे । भवकोडी संचियं कम्मं तवसा निज्जरिज्जइ ॥ ६ ॥ सो तवो दुविहो वुत्तो वाहिरब्भितरो तहा । वाहिरो छव्विहो वुत्तो एव मब्भि तरो तवो ॥ ७ ॥

⊛ अध्ययन ३०. ⊛

राग द्वेषे करीने उपार्जेलां पाप कर्मनो साधु तप वडे केवी रीते क्षय करे छे ते एकाग्र मने सांभळो. (१). प्राणी वध, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह अने रात्रि भोजनथी विरक्त रहेवाथी जीव निराश्रव [पाप हेतु रहित] बने छे. (२). पांच समिति अने त्रण गुप्तिए सहित, कषाय रहित, जितेन्द्रिय, गर्व रहित अने निशल्य [शल्य अथवा माया रहित] थवाथी जीव अनाश्रव [आश्रवरहित] बने छे. [३]. पुर्वोक्त (उपर कहेला) लक्षणोना अभावे साधु रागद्वेषवडे उपार्जेला कर्मनो केवी रीते क्षय करे छे ते एकाग्र मनथी सांभळो. [४]. जेम कोइ मोटा तळावनो पाणी आववानो मार्ग रुंधी राखवाथी जेम ते तळाव उपयोग अने सूर्यना किरणना आकर्षणवडे धीमे धीमे शोषाइ जाय छे, तेवी रीते जो साधु पाप कर्मने आववानो मार्ग रुंधे तो कोटी भवमां तेने लागेला कर्मनो तप वडे करीने ते क्षय करी शके छे [५-६]. तप बे प्रकारना छे :-(१) बाह्य तप अने (२) अभ्यंतर तप. बाह्य तपना छ भेद छे तेमज अभ्यंतर तपना पण छ प्रकार छे. (७).

अणसण मूणो यरिया भिख्खायरियाय रसपरिच्चाओ । कायकिलेसो संलीणयाय बज्झो तवोहोइ ॥ ८ ॥ इत्तरिय मरणकालाय अणसणा दुविहा भवे । इत्तरिया सावकंखा निरवकखाओ बेइज्जिया ॥ ९॥ जो सो इत्तरिय तवो सो समासेण छविहो । सेढि तवो पयर तवो घणोय तहहोइ वग्गेय ॥ १० ॥ तत्तोय वग्गवग्गो पंचमोछठओ पइन्नतवो । मण इच्छिय चित्तथ्थो नायव्वो होइ इत्तरिओ॥११॥जा सा अणसणा मरणे दुविहा सावियाहिया । सविया रमवियारा कायचिठ्ठपइभवे ॥ १२ ॥

वाह्य तपना छ प्रकार :–(१) अनशन एटले उपवासादिक. [२] *उनोदरिक एटले ओछुं खावुं ते. ३ भिक्षाचर्या एटले घरोघर भटकीने आहार मेळववो ते. (४) रस त्याग एटले स्वादिष्ट खोराकनो परित्याग करवो ते. [५] काय-क्लेश एटले टाढ तडको सहन करवो ते. [६] संलीनता एटले अंग-उपांग संकोचवा ते ए प्रमाणे छ भेद वाह्य तप कह्यो छे.(८). १. अनशनना वे भेद छे :–[अ] इत्वरिक तप अने [व] मरण काल पर्यंत तप करवुं ते इत्वरिक तपमा भोजन करवानी इच्छा रहे अथवा तो तेवी इच्छा न पण रहे. (९). (अ) इत्वरिक तपना संक्षेपे छ भेद कह्या छे. (१) श्रेणि तप [२] प्रतर-तप [३] घन-तप [४] वर्ग-तप ५ वर्गवर्ग तप अने [६] प्रकीर्ण तप. ए रीते इत्वरिक तप इप्सित पदार्थनी प्राप्ति अर्थे करी शकाय छे. (१०-११).१ [व] मरण काल-तप बे प्रकारनु छे :–१ सविकार एटले काय-चेष्टा सहित [एटले हाथ पग हलाववा ते] अने २ अविकार एटले काय चेष्टा रहित. [१२].

---

* प्रतिदिन आहारमा उतरता जवु एटले प्रथम ३२कोळिया जमता होइए तेमाथी अनुक्रमे उतरता उतरता एक कोळिया उपर निर्वाह चलाववो ते. १. आ रीते पहेलामां ४ बीजामा १६ त्रीजामां ६४, चोथामा ६४×६४=४०९६, पाचमामा १६७७७२१६ उपवास आवे छे. अने छेल्ला प्रकारना उपवास करता तो सात लाख वर्ष वीती जाय छे. माटे ए तप दीर्घ आयुष्यना धणी श्री तीर्थंकर भगवानथीज वनी शके तेवा छे.

अहवा स पडिकम्मा अपरिकम्माय आहिया । नीहारि मनिहारी आहारछेओय दोगुवि ॥१३॥ उमोयरिय पचहा समासेण वियाहिय । दव्वउ खेत्त कालेण भावेण पज्जवेहिय ॥ १४ ॥ जो जस्सउ आहारो ततो उणतु जो करे । जहन्नेण गमित्थाइ एव दव्वेण उभवे ॥ १५ ॥ गामे नगरे तह रायहाणि निगमेय आगार पल्ली । खेड कव्वड दोणमुह पट्टण मडव सवाहे ॥ १६ ॥ आसमपए विहार सनिवेसे समाय घोसेय । थल्ल सेणाखधारे

अथवा तो १ परिकर्मणा सहित अने २ परिकर्मणा रहित, एटले परिवर्त्तनादि चेष्टा सहित अथवा एवी चेष्टा रहित. बन्ने प्रकारे आहार त्याग करे. [१३]. २. उनोदरिक तप :-एना पाच भेद संक्षेपे कह्या छे -[अ] द्रव्ये, [ब] क्षेत्रे, [क] काले, [ड] भावे अने [इ] पर्याये. (१४). [अ] द्रव्य उनोदरिक तप :-जेने जेटलो आहार होय ते करता ओछो आहार करे, छेवट एकज कोळियो ओछो जमे ते द्रव्य-उनोदरिक तप केहवाय. (१५)*. (ब) क्षेत्र-उनोदरिक तप :-क्षेत्र एटले गाम, नगर, राजधानीनु शेहेर, निगम [वणिक निवास], आगम (सुवर्णादि उत्पन्न थता होय तेवु स्थळ), पल्ली (वृक्षादिथी व्यापेलु अने वसायेलु स्थळ), खेट (धूळना कोटवाळु स्थळ), कर्बट (सामान्य नगर), द्रोण मुख (जळ अने स्थळ बन्ने मार्गे जे गाममां प्रवेश करी शकाय ते, सेतु के भ्रगु कच्छ), पट्टण (मोटु शहेर), मडम्ब [जेनी आसपास साडा त्रण योजन सुधीमां बीजु कोइ गाम न होय तेवु स्थळ], सम्बाध [ज्यां चारे वर्णनो निवास होय एवु स्थळ], आश्रम [तापस लोक वसता होय एवु स्थळ], विहार [देव गृह अथवा भिक्षुकने रहेवानु स्थळ], सन्निवेश [यात्रादिक अर्थे लोको ज्यां भेगा थता होय तेवु स्थळ], समाज (पथी लोक अथवा मुसाफरो ज्यां

* पुरुषनो पूरो आहार ३२ कोळियानो अने स्त्रीनो २८ कोळियानो गणाय छे

स॰ये संवट्टकोट्टेय ॥ १७ ॥ वाडेसुव रथासुव घरेसुवा एव मित्तिय खेत्त । कप्पइओ एवमाइ एव खित्तेणउ भवे ॥ १८ ॥ पेडाय अद्धपेडा गोमुत्ति पयगवीहियाचेव । सबुकावट्टाय गतु पच्चागया छट्टा ॥ १९ ॥

भेगा थता होय तेनु स्थळ], घोष [गोवाळिया भेगा थता होय तेनु स्थळ], स्थल-सेनास्कन्धार (उच्च भूमिपर सेना पडाव नांखीने रहेती होय तेनु स्थळ), करियाणादि लइने जता आवता लोकोने भेगा थवानु स्थळ, कोट (एटले गढवाळु गाम), वाडी, शेरी, घर, ए सघळानो समावेश क्षेत्रमा थाय छे. ए अने एवा बीजा क्षेत्रमा विहार करवो साधुने कल्पे छे. अने एम करवु ते क्षेत्र उनोदरिक तप कहेवाय. [१६–१८]. १ पेटीना आकारे, २ अर्ध-पेटीना आकारे, ३ गोमुत्रना आकारे, ४ पतग विथीका एटले पतग उडे ते रीते, ५ शम्बूकावर्त्त एटले शखना वळनी पेठे अने ६ आयतम गत्वा-प्रत्यागत एटले छेडा सुधी सीधा चाल्या जवु अने पछी पाछा फरवु ते. ए छ रीते गोचरी करे ते क्षेत्र-उनोदरिक तप कहेवाय. [१९]*

---

* भिक्षा चर्यानी जुदी जुदी रीतो आ गाथामा दर्शावेली छे. (१–२) पेटी अने अर्ध पेटीना आकारे एटले गाम अथवा शेरीने चोखुण कल्पीने तेने चारे खूणे आवेला चार घेर भिक्षार्थे जवु ते. (३) गोमुत्रिका एटले हारबंध अथवा सीधी लींटीमा आवेला घेर नहि, पण वाका चूका अथवा सर्पाकारे एटले अमुक घरो पडता मूकीने अमुक घेर भिक्षा मागवी ते. [४] पतग विथीका एटले पतग उडे छे तेवी रीते एक बीजाथी घणे दूर आवेला घेर भिक्षार्थे जवु ते. (५) शम्बूकावर्त्त एटले शखना वळनी पेठे एटले मध्य भागमाथी बहारना भागमा अथवा तो स्कूना आकारे अमुक घर पडता मूकी अमुक घेर भिक्षा मागवी ते. अने [६] आयतम-गत्वा-प्रत्यागत एटले अमुक अतर सुधी सीधा गया पछी पाछा फरीने अमुक अमुक घेर भिक्षा मागवी ते.

दिवसस्स पोरिसीण चउण्हपिउ जात्तिओ भवे कालो । एव चरमाणो खलु कालोमाण मुणेयव्वं ॥ २० ॥ अहवा तइया पोरिसीए उणाए घासमेसतो । चउभागूणाएवा एव कालेणऊ भवे ॥ २१ ॥ इथ्थीवा पुरिसोवा अलंकिओवा णलंकिओवावि । अन्नयर वयथ्थोवा अन्नयरेणंच वथ्थेणं ॥ २२ ॥ अन्नेण विसेसेण वन्नेण भावमणु मुयंतेउ । एव चरमाणो खलु भावोमाण मुणेयव्वं ॥ २३ ॥ दव्वे खित्ते काले भावम्मिय आहियाओ जेभावा । एएहिं ओम चरओ पज्जव चरओ भवे भिक्खू ॥२४॥अठविहं गोयरग्गतु तहा सत्तेव एसणा । अभिग्गहाय जेअन्ने भिक्खायरियमाहिया ॥ २५ ॥

[क] काल उनोदरिक तप :-दिवसनी चार पौरुषि (पोरसि, महर) पैकी कइ पौरुषिने विषे केटलो काल गोचरीमां गाळवो तेनुं प्रमाण बांधीने ते प्रमाणे ते काले बराबर विचरे ते काल-उनोदरिक तप कहेवाय. अथवा तो त्रीजी पौरुषिना अमुक भागमां अथवा तेना छेल्ला पायामां [चोथा भागमां] आहारनी गवेषणा करे ते काल-उनोदरिक तप कहेवाय. [२०-२१]. [ड] भाव-उनोदरिक तप:-स्त्री या पुरुष, अलंकृत अथवा अनलंकृत (एटले आभरण सहित या रहित), गमे ते वयना (एटले बाल, वृद्ध या तरुण), गमे ते वस्त्र पहेरेलां होय एवां, गमे तेवा स्वभावनां, अथवा तो गमे तेवा वर्णनां [काळा, गोरां वगेरे], एवा ने हाथे एवा भावनी परवा कर्या सिवाय आहार ग्रहण करवो ते भाव-उनोदरिक तप कहेवाय. [२२-२३]. (इ) पर्याय-उनोदरिक तप :- द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव आदि जे भाव उपर वर्णव्या छे ए भाव सहित जे साधु विचरे ते पर्याय-चरक एटले पर्याय-उनोदरिक तप पाळनार साधु कहेवाय. (२४). ३ भिक्षा-चर्या:-गोचरीना आठ प्रकार तथा एषणाना सात प्रकार कह्या छे, अने ते सिवाय भिक्षा चर्याना अन्य अभिग्रह (भेद) श्री तीर्थंकर भगवाने कहेला छे. (२५).

खीर दहि सप्पिमाइ पणीय पाणभोयण । परिवज्जणं रसाणतु भणिय रस विवज्जण ॥ २६ ॥ ठाणा वीरासणाइया जीवस्सओ सुहावहा । उग्गा जहा धरिज्जाति कायकिलेसत माहियं ॥ २७ ॥ एगत मणावाए इथ्थी पसु विवज्जिए । सयणासण सेवणया विवित्त सयणासण ॥२८॥ एसो बाहिरंग तवो समासेण वियाहिओ । अभितरो तवो एत्तो वोच्छामि अणुपुव्वसो ॥ २९ ॥ पायछित्त विणओ वेयावच्च तहेव सझाओ । झाण उस्सग्गोविय अभितरओतवो होइ ॥ ३० ॥ आलोयणा रिहाइयं पायछित्तु दसविह । जेभिख्खू वहइ सम्म पायछित्त तमाहियं ॥ ३१ ॥ अझुठाणं अंजलि करण तहेवा सणदायणं । गुरुभत्ति भाव सुस्सुसा विणओ एस वियाहिओ ॥ ३२ ॥

---

४. रस त्याग :–दूध, दहीं, घी वगेरे पुष्टिकारक खानपाननो परित्याग करवो ते रस-परित्याग तप कहेवाय. [२६]. ५. काय क्लेश:–वीरासनादि आसनो जे आत्माने सुखावह छे, पण जे करवा अति मुश्केल छे ते करवां तेने काय-क्लेश तप कहे छे.(२७). ६ सलीनता:–स्त्री, पशु रहित अने ज्या कोइनु जवुं आववु थतु न होय एवां एकात शयनासन सेववा ते संलीनता तप कहेवाय.(२८). उपर प्रमाणे बाह्य तपना भेद सक्षेपे वर्णव्या छे. हवे अभ्यंतर तपना छ भेद अनुक्रमे कहुछु :–[२९]. अभ्यंतर तपना छ भेद :– १ प्रायश्चित्त, २ विनय, ३ वैयावृत्य एटले आचार्यादिनी सेवा करवी ते, ४ स्वाध्याय, ५ ध्यान, अने ६ उत्सर्ग एटले कायोत्सर्ग अथवा काउसग्ग. (३०). (१) प्रायश्चित्त :–गुरु समीपे पापने आलोववा, दश विधे प्रायश्चित्त करवुं अने स्वाध्याये करीने सम्यक्त रुडी रीते सेववु ते प्रायश्चित्त अभ्यतर तप कहेवाय. [३१]. २. विनय :–गुरुने आवता जोइने उभा थवु, हाथ जोडवा, तेमने आसन आपवुं, तेमना तरफ भक्तिभाव राखवो अने गुरुना आदेश प्रमाणे वर्त्तवुं ते विनय-अभ्यंतर तप कहेवाय. (३२).

आयरिय माइए वेयावच्चंमि दसविहे । आसेवणं जहाथामं वेयावच्चं तमाहियं ॥ ३३ ॥ वायणा पुच्छणा चेव तहेवय परियट्टणा । अणुप्पेहा धम्म कहा सज्झायं पंचहा भवे ॥३४॥ अट्ट रूद्दाणि वज्जित्ता झाएज्जा सुसमाहिए । धम्म सुक्काइं झाणाइं झाणतनु बुहावए ॥ ३५ ॥ सयणासण ठाणेवा जेउभिक्खू नवावरे । कायस्स विउस्सग्गो छट्ठोसोपरिकित्तिओ ॥ ३६ ॥ एवंतवतु दुविहंजे सम्मं आयरेमुणी । सेखिप्पं सव्वसंसारा विप्पमुच्चइ पण्डिए त्तिबेमि ॥ ३७ ॥

॥ इति तवमग्ग नाम झयणं तयोदसं सम्मत्त ॥ ३० ॥

१ वैयावृत्य :-*आचार्यादिने आहारादि आणी आपवाना दश विधे पोतानी बने तेटली सेवा करवी ते वैयावृत्य अभ्यतर तप कहेवाय. (३३). ४. स्वाध्याय-स्वाध्यायना पाच भेद छे'–१गुरु समीपे पाठ बोली जवो ते. २संदेह विषे पृच्छ्रु ते, ३ परिवर्तन एटले वारवार पाठ बोली जवो ते. ४ अनुप्रेक्षा एटले चिंतन अथवा मनन करवु ते. ५ धर्म-कथा एटले धर्मोपदेश देवो ते. [३४]. ५. ध्यान-आर्त्त रौद्र ध्यान वर्जिने दृढ चित्तथी धर्म ध्यान (शुक्लध्यान) धरवु तेने श्री बुद्ध तीर्थंकर भगवाने ध्यान-अभ्यतर तप कहयुं छे. (३५). ६ उत्सर्ग शयने आसने अने अभ्युत्थाने [एटले सूतां, बेसतां, उठतां] जे साधु कायानो व्यापार [हालवु, चालवु] न करे ते छट्ठा प्रकारनो कायोत्सर्ग अभ्यतर तप कहेवाय. [३६]. जे मुनि बन्ने प्रकारना एटले बाह्य अने अभ्यतर तप रुडी रीते आचरे ते चतुर्गति भव भ्रमणमांथी (ससारमांथी) शीघ्रपणे मुक्त थाय छे. [३७].

* त्रीसमु अध्ययन सपूर्ण. *

* सेवाने योग्य दशनां नाम-आचार्य, उपाध्याय, स्थविर, तपस्वी, ग्लान, सहृण, साधर्मिक, कुल, गण अने सघ.

अध्ययन ३१. चारित्र विधि.

चरणविह पवक्खामि जीवस्सउ सुहावह जं चरित्ता बहुजीवा तिन्ना संसारसागरं ॥ १ ॥ एगओ विरइ कुज्जा एगओय पवत्तण । असंजमे नियतंच संजमेय पवत्तणं ॥ २ ॥ रागदोसेय दो पावे पावकम्म पवत्तणे । जे भिक्खू रुभई निच्चसेन अच्छइ मंडले ॥३॥ दंडाण गारवाणच सल्लाणच तियं तियं। जे भिक्खू चयई निच्चसेन अच्छइमंडले ॥ ४ ॥ दिव्वेयजे उवसग्गे तहातेरिच्छि माणुसे । जे भिक्खू सहई सम्मसेन अच्छइ मंडले ॥ ५ ॥ विगहा कसाय सन्नाणं झाणाणच दुयं तहा । जे भिक्खू वज्जई निच्चसेन अच्छइ मंडले ॥ ६ ॥

⊛ अध्ययन ३१ ⊛

चारित्र विधि जे जीवने सुखावह छे ते हुं वर्णवुं छुं, जे विधि आदरवाथी घणा जीव संसार-सागर तरी गया छे. (१). एकथी निवर्त्तवु अने बीजामा प्रवर्त्तवु :-अर्थात असंयमथी (हिंसादिथी) निवर्त्तवु अने संयममा प्रवर्त्तवु. [२]. राग अने द्वेष बन्ने पाप कर्मना उत्पन्न करनारा छे, माटे जे साधु तेने अलगा करे छे ते चतुर्गति संसारथी मुक्त थाय छे. (३). जे साधु दंड गारव अने शल्यना त्रीगुण क्रत्यनो (अर्थात-मन, वचन अने कायाये करीने दंडनो, रिद्धि, रस अने शातारूपी गारवनो, अने माया, नियान अने मिथ्या दर्शनरूपी शल्यनो) परित्याग करे छे ते चतुर्गति संसारथी मुक्त थाय छे [४]. जे साधु देवता, तिर्यंच अने मनुष्यना उपसर्ग सम्यक् बुद्धिथी (रूडी रीते) सहन करे छे ते चतुर्गति संसारथी मुक्त थाय छे.[५]. जे साधु चार प्रकारनी विकथा [राज्य, देश, भोजन अने स्त्रीना रूप संबंधी], चार कषाय, [क्रोध, मान, माया अने लोभ], चार संज्ञा, (आहार, भय, परिग्रह अने मैथुन), अने चार ध्यान पैकी बे ध्याननो [आर्त अने रौद्र ध्याननो] परित्याग करे छे ते चतुर्गति संसारथी मुक्त थाय छे. [६].

वएसु इंदियत्थेसु समिईसु किरियासुय । जे भिक्खू जयई निच्चंसेन अच्छइ मंडले ॥ ७ ॥ लेसासु छसु काएसु छक्के आहार कारणे । जे भिक्खू जयई निच्चंसेन अच्छइ मंडले ॥ ८ ॥ पिंडोग्गह पडिमासु भयट्ठाणेसु सत्तसु । जे भिक्खू जयई निच्चंसेन अच्छइ मंडले ॥ ९ ॥ मएसु बंभगुत्तीसु भिक्खू धम्ममि दसविहे । जे भिक्खू जयई निच्चंसेन अच्छइ मंडले ॥१०॥ उवासगाणंपडिमासु भिक्खूणं पडिमासुय । जे भिक्खू जयई निच्चंसेन अच्छइ मंडले ॥ ११ ॥ किरियासु भूयगामेसु परमाहम्मिएसुय । जे भिक्खू जयई निच्च सेन अच्छइ मंडले ॥१२॥

जे साधु पंच महाव्रत, पंच इन्द्रिओ, पंच समिति, अने पंच क्रियाने विषे *सदा यत्न करे छे* ते चतुर्गति संसारथी मुक्त थाय छे. (७). जे साधु छ लेश्या, छ काय, अने आहारनां छ कारणने विषे सदा यत्न करे छे ते चतुर्गति संसारथी मुक्त थाय छे. (८). जे साधु आहार लेवाना सप्त अभिग्रहने विषे अने आलोकादि सप्त भय स्थानकने विषे सदा यत्न करे छे ते चतुर्गति संसारथी मुक्त थाय छे. (९). जे साधु 'जाति मदादिक' आठ मदने विषे, ब्रह्मचर्यनी नव वाडने विषे अने 'क्षमादि' साधुना दश प्रकारना धर्मने विषे सदा यत्न करे छे, ते चतुर्गति संसारथी मुक्त थाय छे. (१०). जे साधु उपासकना अगियार धर्मने, विषे, अने भिक्षुकना बार धर्मने विषे सदा यत्न करे छे ते चतुर्गति संसारथी मुक्त थाय छे. ११. जे साधु 'स्वार्थ-अनर्थादि' तेर क्रियाना परिहारने विषे, चौद प्रकारना प्राणीओना रक्षणने विषे अने पंदर प्रकारना परमाधार्मिक [पाप स्थानक]थी निवर्तवा-ने सदा यत्न करे छे ते चतुर्गति संसारथी मुक्त थाय छे. १२.

---

* दरेक गाथामां 'सदा यत्न करे छे' एम लखेलुं छे एनो अर्थ एवो समजवानो छे के 'जे जाणवा योग्य होय ते जाणवानो, आदरवा योग्य होय ते आदरवानो अने त्यागवा योग्य होय ते त्यागवानो सदा यत्न करे छे.'

गाहासोलसएहिं तहाअस्सं जमम्मिय । जे भिक्खू जयई निच्चसेन अच्छइ मडले ॥ १३ ॥ बभंमि नायज्झयणेसु ठाणेसु असमाहिए । जे भिक्खू जयई निच्चसेन अच्छइ मडले ॥ १४ ॥ एगविसाए सबलेसु बावीसाए परिसहे । जे भिक्खू जयई निच्चसेन अच्छइ मडले ॥१५॥ तेवीसइ सुयगडे रूवाहिएसु सुरेसुय । जे भिक्खू जयई निच्चसेन अच्छइ मडले ॥ १६ ॥ पणवीस भावणाहिं उद्देसेसु दसाइण । जे भिक्खू जयई निच्चसेन अच्छइ मंडले ॥ १७ ॥

जे साधु सोल गाथाना (एटले श्री सूत्र कृताग अथवा श्री सुगडागजी सूत्रना प्रथम श्रुत स्कन्धना) अध्ययनने विषे, अने सयमना सत्तर भेदथी विपरीत न वर्तवाने विषे सदा यत्न करे छे, ते चतुर्गति ससारथी मुंक्त थाय छे. (१३). जे साधु ब्रह्मचर्यना अढार भेदने विषे, श्री ज्ञाताजीना ओगणीस अध्ययन [प्रथम स्कन्ध]ने विषे अने समाधिना वीश स्थानकथी विपरीत न वर्तवाने सदा यत्न करे छे ते चतुर्गति संसारथी मुक्त थाय छे. (१४). जे साधु एकवीश प्रकारना शबल [अशुभ कृत्यो]थी, अने बावीश परिसहथी दूर रहेवाने सदा यत्न करे छे ते चतुर्गति संसारथी मुक्त थाय छे. [१५]. जे साधु सूत्रकृतागना त्रेवीश अध्ययनने विषे अने तेथी एक अधिक एटले चोवीश देव [१० भवन पति+८ व्यतर+५ ज्योतिष+१ वैमानिक=२४ अथवा तो ऋषभ देवादि २४ तीर्थंकर]ने विषे सदा यत्न करे छे ते चतुर्गति ससारथी मुक्त थाय छे. (१६). जे साधु पंच महाव्रतनी पचीश भावनाने विषे अने दशाश्रुत स्कन्ध, कल्प अने व्यवहार सूत्रना छव्वीश उद्देशने विषे सदा यत्न करे छे ते चतुर्गति संसारथी मुक्त थाय छे. (१७).

अणगार गुणेहिंच पकप्पमि तहे वय । जे भिक्खू जयई निच्चसेन अछइ मडले ॥ १८ ॥ पावसुयप्पसगेसु मोहट्ठाणेसु चे वय । जे भिक्खू जयई निच्चसेन अछइ मडले ॥ १९ ॥ सिद्धाइगुण जोगेसु तित्तीसा सायणासुय । जे भिक्खू जयई निच्चसेन अछइ मडले ॥ २० ॥ इइ एएसु ठाणेसु जे भिक्खू जयई सया । खिप्पसे सव्वससारा निप्पमुच्चइ पडिए त्तिबेमि ॥ २१ ॥

० ॥ इति चरणविहनाम झयण एकत्तीसं सम्मत्त ॥ ०

जे साधु *अणगारना सत्तावीश गुणने विषे अने प्रकल्पना [श्री आचाराग सूत्रना] १अठावीश अध्ययनने विषे सदा यत्न करे छे ते चतुर्गति ससारथी मुक्त थाय छे. [१८]. जे साधु ओगणत्रीस पापश्रुत प्रसगथी अने त्रीस मोह स्थानथी निवर्त्तवाने सदा यत्न करे छे ते चतुर्गति ससारथी मुक्त थाय छे. [१९]. जे साधु श्री सिद्धना एकत्रीस गुणने विषे, अने [मन, वचन कायाना] योगना बत्रीस भेदने विषे सदा यत्न करे छे अने तेत्रीस प्रकारनी आशातनाथी निवर्त्ते छे ते चतुर्गति ससारथी मुक्त थाय छे [२०]. जे पडित साधु उपर वर्णवेला स्थानोने विषे सदा यत्न करेछे ते चतुर्गति रूप ससारथी शीघ्र मुक्त थायछे [२१].

* एकत्रीसमुं अध्ययन सपूर्ण. *

* मुळ गाथामां 'अणगार' शब्द छे छता जेकोरो तेनो अर्थ 'समाधि' करे छे. १. श्री आचारांग सूत्रमां हाल चोवीश अध्ययन छे, पण अगाउ अठावीश हतां एम मनाय छे.

अध्ययन ३२. प्रमाद-स्थान.

समूलयरग सव्वरस दुक्खरसउ जो पमोक्खो । त भासओ मे पाडिपुन्न चित्ता सुणेहए गंत हिय ॥ नाणस्स सव्वरस पगासणाए अन्नाण मोहस्स विवज्जणाए । रागस्स दोसस्सय संखएण एगत सोक्ख । २ ॥ तस्से समग्गो गुरु विद्दसेवा विवज्जणा बालजणस्सदूरा । सज्झाय एगत निसेवणाए सुत्त१थ य ॥३॥ आहार मिच्छे मियमेसणिज्जा सहाय मिच्छे निउणठ्ठ बुद्धि । निकेय मिच्छेज्ज विवेग जोगं १ समणे तवस्सी ॥ ४ ॥ न वालभेज्जा निउण सहाय गुणाहिय वा गुणओ समवा । एक्कोवि पावाइ रतो विहरेज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥ ५ ॥

ॐ अध्ययन ३२ ॐ

अनादी कालनी अविरतिरूप सर्व दुःखमय संसारथी मुक्त थवाने तमने जे कहेवामा आवे छे ते एकाग्र चित्तथी श्रवण करो. [१]. ज्ञाननो प्रकाश करवाथी, अज्ञान अने मोह वर्जवाथी, अने राग द्वेषनो क्षय करवाथी एकात निराबाध सुख मोक्ष पामे. [२]. गुरु अने वडानी सेवा करवी, मूर्ख जनथी सदा दूर रहेवु, एकातमा अध्ययन करवु अने सूत्रार्थनु एकाग्र वृत्तिथी चिंतन करवु–ए मोक्षनो मार्ग छे. (३). [ज्ञानादिकनी] समाधिने* इच्छनार अने तपनो करनार श्रमण (साधु) दोषरहित कल्पतो आहार, निपुण, बुद्धिशाळी शिष्य अने एकातवासने योग्य [स्त्री, पशु पंडक रहित] उपाश्रयने इच्छे छे. [४]. पोताथी गुणमा अधिक अथवा सरखो एवो निपुण शिष्य कदाच न मळे तो पाप कर्मथी अने काम भोगथी १ दूर रहीने तेणे एकला रहेवु.(५).

---

* Who longs for righteousness 1 Not devoted to pleasures.

जहाय अडप्पभवा बलागा अंड बलागप्पभवं जहाय । एमेव मोहाय यणखु तन्हा मोहंच तन्हाययणं वयति ॥६॥ रागोय दोसोविय कम्मबीयं कम्मंच मोहप्पभवं वयति । कम्मंच जाई मरणस्स मूळं दुक्खं च जाई मरणं वयंति ॥ ७ ॥ दुक्खं हयं जस्स न होइ मोहो मोहो हओ जस्स न होइ तन्हा । तन्हा हया जस्स न होइ लोहो लोहो हओ जस्सनकिंचणाइ ॥ ८ ॥ रागंच दोसंच तहेव मोहं उद्धत्तु कामेण समुळजाल । जे जे उवाया पडिवज्जियव्वा ते कित्तइस्सामि अहाणुपुव्विं ॥ ९ ॥

जेम पक्षी इंडामांथी उत्पन्न थाय छे अने इंडु पक्षीमांथी उत्पन्न थाय छे तेम तृष्णा मोहनुं उत्पत्ति स्थान छे अने मोह ए तृष्णानुं उत्पत्ति स्थान छे एम (तीर्थंकरे) कह्युं छे. [६]. रागद्वेष कर्मथी उत्पन्न थाय छे अने कर्मनुं उत्पत्ति स्थान (तीर्थंकरे) मोह कह्युं छे. कर्म ए जन्म मरणनुं मूळ छे अने जन्म-मरणने (भगवाने) दुःखनुं कारण कह्युं छे. [७]. मोहना अभावे दुःख हणाय छे तृष्णाना अभावे मोह हणाय छे, लोभना अभावे तृष्णा हणाय छे, अने द्रव्यना अभावे लोभ हणाय छे. *[अर्थात मोह न होय तो दुःख न होय, तृष्णा न होय तो मोह न होय, लोभ न होय तो तृष्णा न होय, अने द्रव्य न होय तो लोभ न होय.]* [८]. रागद्वेष अने मोहने मूळमांथी [१]उखेडी नाखनारे शुं शुं उपाय आदरवा ते हुं अनुक्रमे कहुं छुं. (९).

---

* Delusion the origin of desire मो. जेकोबी आ माटे एवा चमत्कारक शब्दो वापरेछे के "Misery ceases on the absence of delusion, delusion ceases on the absence of desire, desire ceases on the absence of greed, greed ceases on the absence of property " १ Thoroughly uproot

रसापगाम न निसेवियव्वा पाय रसा दित्ति करा नराण । दित्त च कामा समतिद्दवति दुम जहा सादु फलव पक्खो॥१०॥ जहा दवग्गी पउरिंधणे-वणे समारुओ नोवसम उवेइ । एविंदियग्गीवि पगाम भोइणो न बभयारिस्स हियाय करसई ॥ ११ ॥ विवित्त सेज्जासण जतियाणं ओमासणाण दमिइंदियाण । न राग सत्तू धरिसेइ चित्त पराइओ वाहिरिवो सहेहि ॥ १२ ॥ जहा विराला वसहस्स मूले न मूसगाणं वसही पसत्था । एमेव इत्थी निलयस्स मझे न बभयारिस्स खमो निवासो ॥ १३ ॥ न रूव लावन्न विलास हास न जपिय इंगियपेहियवा । इत्थीण चित्तसि निवेसइत्ता दठु ववरसे समणे तवस्सी ॥ १४ ॥

रस [घृतादि विगय] घणा सेववा नहि. कारणके रस सेववाथी मनुष्य दीप्तिकर [वीर्यवान-उन्मादि] बने छे, अने जेम पक्षीओ स्वादिष्ट फळवाळा वृक्ष उपर धसी आवे छे, तेम वीर्यवान मनुष्य उपर काम धसी आवे छे.*(१०) जेम काष्टथी भरेला वनने विषे पवनना झपाटा साथे लागेलो अग्नि बुझातो नथी तेम पचेंद्रिय रुपी अग्नि मनवाछित-उन्मादि आहार करनार ब्रह्मचारीने हितकारक नीवडतो नथी. (११). निर्दूषण (स्त्री, पशु, पडक रहित) शयन, उपाश्रय अने आसन सेवनारनो, उणो आहार करनारनो, अने इद्रियोने दमनार साधुना चित्तनो रागरुपी शत्रु पराभव करी शकतो नथी; जेम औषध रोगनो पराभव करे छे तेम. [१२]. ज्या बिलाडा वसता होय त्या जेम उदरने रहेवु सलामत नथी तेम ज्या स्त्रीयो वसती होय त्या ब्रह्मचारीने वसवु सलामत नथी, (१३). तपस्वी साधुए स्त्रीना रुप, लावण्य, विलास, हास्य, वचन, अगतु मोडवु अने कटाक्ष—कुदृष्टि तरफ नजर करवी नहि, तेमज पोताना चित्तने विषे तेनी याददास्त राखवी नहि. [१४].

* लसण, डुगळी, पटाटा वीगेरे उन्मादी आहार वर्जवाथी जीवदया उपरात मन शान्त अने विषय वीरक्त बने छे. अत्र एवु मन-ए सिद्धात अहिं सत्य ठरे छे.

अदंसणंचेव अपत्थणंच अचिंतणंचेव अकित्तणंच । इत्थीजणस्सा रिय झाणजुग्गंहियं सया बंभेचेरे रयाणं ॥ १५॥ कामंतु देवीहिं विभूसियाहिं न चाइया खोभइउ तिगुत्ता । तहावि एगंत हियंति नच्चा विवित्त वासो मुणिणं पसत्थो ॥ १६ ॥ मोक्खा भिकंखिस्सवि माणवस्स संसार भीरुस्स ठियस्स धम्मे । न तारिसं दुत्तरमत्थि लोए जहित्थिओ बाल मणो हराओ ॥ १७ ॥ एएय संगे समइक्कमित्ता सुहुत्तराचेव भवंति सेसा । जहा महासागर मुत्तरित्ता नई भवे अवि गंगा समाणा ॥ १८ ॥ कामाणु गिद्धिप्पभवंखु दुक्खं सव्वस्स लोगस्स सदेवगस्स । जं काइयं माणसियंच किंचि तस्स तगं गच्छइ वीयरागो ॥ १९ ॥

धर्म ध्यानमां अनुरक्त रहेनार आर्य अने सदा सर्वदा ब्रह्मचर्यना रागी पुरुषे स्त्री जाति तरफ जोवुं नहि, तेनी इच्छा करवी नहि, तेनुं चिंतन करवुं नहि तेमज तेनां वखाण करवां नहि. [१५]. जो के त्रण गुप्ते गुप्त पुरुषने अलंकारे करी सहित एवी देवांगनाओ पण क्षोभ पमाडवाने असमर्थ छे, तथापि साधुने माटे स्त्रीयादिक रहित एकांतवास (तीर्थंकरे) हितकारक कह्योछे. [१६] मोक्षना अभिलाषि, संसारथी डरनार अने धर्म प्रमाणे वर्त्तनारने पण, अज्ञानीना मन हरण करनार स्त्रीना जेवुं आ लोकमां बीजुं कांइ दुस्तर [दोहिलुं] नथी. [१७]. जेवी रीते महासागर पार उतरनारने गंगा जेवी म्होटी नदी उतरवी अति सहेल छे, तेम स्त्री संगथी विरक्त थयेलाने आ लोकमां बीजु बधु त्यागवुं सहेल छे.* (१८). कामनी इच्छाथी देवता सहित सर्व लोकने दुःख उपजेछे. श्री वीतराग मुनीवर काया तथा मननां सर्व दुःखनो अंत आणी शके छे [१९].

---

* All others will offer no difficulties

जहाय किंपाग फला मणोरमा रसेण वन्नेणय भुज्जमाणा। ते खुदए जीविय पच्चमाणा एउत्र मा कामगुणा विवागे ॥२०॥ जे इदियाण विसया मणुन्ना नतेसु भाव निसिरे कयाई। मया मणुन्नेसु मणपि कुज्जा समाहि कामे समणे तवस्सी ॥२१॥ चखुस्स रूव गहणं वयति त राग हेउं तु मणुन्न माहु। त दोस हेउ अमणुन्नमाहु समोय जो तेसु स वीयरागो ॥२२॥ रूवस्स चक्खुं गहणं पयति चक्खुस्स रूवं गहणं वयंति। रागस्स हेउ समणुन्न माहु दोसस्स हेउ अमणुन्न माहु ॥ २३ ॥ रूवेसु जोगिद्धि मुवेइ तिव्वं अकालिय पावइ से विणास। रागाउरे से जह वापयगे अलोय लोले समुवेइ मच्चुं ॥ २४ ॥

किम्पाकना फळ जेम रस अने वर्ण (स्वाद अने देखाव)मा सुदर जणाय छे, परतु भक्षण करवाथी ते जेम जीदगीनो अत आणे छे, तेवोज गुण काम भोगनां फळने विषे रहेलो छे. [२०]. तपनो करनार अने समाधिनो अभिलापि श्रमण इन्द्रियोना विषयने विषे मनथी भाव करतो नथी, या तो अमनोज्ञ* विषय प्रति द्वेष करतो नथी. [२१]. रुप आखनु आकर्षण करे छे. मनोहर रुपने रागनु अने अमनोहर रुपने द्वेषनुं कारण (तीर्थंकरे) कह्यु छे. भला भूंडा रुपने विषे राग द्वेष रहित होय ते वीतराग[1] कहेवाय.[2] [२२]. चक्षु रुपने ग्रहण करे छे अने रुप चक्षुनु आकर्षण करे छे. मनोहर रुप रागनु अने अमनोहर रुप द्वेषनु कारण (तीर्थंकरे) कह्यु छे. [२३]. जेवी रीते रागातुर पतंग दीपकथी आकर्षाइने तेमां झपलाइने विनाश पामे छे, तेवी रीते रुपने विषे तीव्र मूर्छा राखनार अकालिक विनाशने पामे छे. (२४).

---

*Unpleasant. १ Dispassionate. २ ससारमा शान्ति साधक जीज्ञासुओए आ शब्दो स्मरणमां राखवा जेवा छे.

जेयावि दोसं समुवेइ तिव्वं तंसिक्खणे सेउ उवेइ दुक्खं । दुद्दंत दोसेण सएण जंतूनकिंचिरूवंअवरज्झईसे ॥२५॥ एगंत रत्तो रुइरंसि रूवे अतालिसे से कुणई पओसं । दुक्खस्स संपील मुवेइ बाले न लिप्पई तेण मुणी विरागे ॥ २६ ॥ रूवाणुगासाणु गए य जीवे चराचरे हिंसइ णेग रूवे । चित्तेहिं ते परितावेइ बाले पीलेइ अत्तट्ठ गुरू किलिट्ठे ॥२७॥ रूवाणुवाएण परिग्गहेण उप्पायणे रक्खण सन्निओगे । वए विओगे य कहिं सुहसे संभोग कालेय अतित्त लाभे ॥२८॥ रूवे अतित्तेय परिग्गहंमि सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं । अतुट्ठि दोसेण दुही परस्स लोभाविले आययई अदत्तं ॥ २९ ॥

जे कोइ कुरूप देखीने अति द्वेष आणे छे, ते तत्क्षण दुःख पामे छे. तेने जे दुःख उपजे छे तेमां तेनो पोतानोज दोष छे, तेमां रूपनो कांइ दोष नथी.* [२५]. जे कोइ मनोहर रूप उपर अति राग करे छे तेने अमनोहर रूप उपर द्वेष उपजे छे. अने तेथी मूर्ख माणस दुःख पामे छे, ज्यारे वीतराग मुनि एवा राग द्वेषथी मुक्त रहे छे. (२६). रूपना भोगनी इच्छावाळो जीव अनेक चराचर [त्रस अने स्थावर] जीवोने हणे छे, स्वार्थमां लीन थयेलो अज्ञानी जीव ए जीवोने अनेक प्रकारे पीडे छे अने तेमने दुःख उपजावे छे [२७]. मनोहर रूपनो रागी जीव ते वस्तु प्राप्त करवानी, तेनुं रक्षण करवानी, तेनो उपभोग करवानी, तेना नाशनी अने तेना विरहनी मुर्छाने लीधे क्यांथी सुखी थाय? भोग भोगवती वखते पण तेने तेनाथी तृप्ति थती नथी. [२८]. ज्यारे ते रूपथी तृप्त थतो नथी अने मुर्छाने लीधे ते उपर तेनी आसक्ति वधतीज जाय छे त्यारे ते असंतोषना दोषथी दुःखी थाय छे अने लोभथी घेराइने पारकानी रजा सीवी (अदत्ता) वस्तु हरण करे छे.१ [२९].

*आ प्रमाणे पीडा पामतां पामर प्राणीओ उपर दया थाय छे. १ आवी रीते पायमाल थइ दुर्गम अने दुर्गति पामेलां घणां दृष्टांतो आपणे अनुभवीए छीए.

तन्हाभिभूयरस अदत्तहारिणो रूवे अतित्तरस परिग्गहेय । माया मुसं वड्ढइ लोभ दोसा तथ्थावि दुक्खानवि मुच्चई से ॥३०॥ मोसरस पच्छाय पुरथ्थओय पओगकालेय दुही दुरंते । एव अदत्ताणि समाययतो रूवे अतित्तो दुहिओ अणिरसो ॥३१॥ रूवाणुरत्तरस णररस एव कत्तो सुह होज्ज कयाइ किंचि । तथ्थोव भोगेवि किलेस दुक्ख निव्वत्तई जरस कएण दुक्ख ॥३२॥ एमेव रूवमि गओ पओस उवेइ दुक्खोह परंपराओ । पदुट्ठ चित्तोय चिणाइ कम्म जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ ३३ ॥ रूवे विरत्तो मणुओ विसोगो एएण दुक्खोह परपेरण । न लिप्पए भवमज्झे व सतो जलेणवा पुक्खरिणी पलास ॥ ३४ ॥

तृष्णाथी पराभव पामेलो ते प्राणी पारकानी वस्तु ले छे, छता ए रुप अने परिग्रहथी तेने सतोप थतो नथी, अने पछी लोभना दोषथी तेनामा माया अने जूठ वधे छे. एटलु छता पण ते दुःखथी मुक्त थतो नथी. [३०]. जूठ बोलवा पूर्वे अने त्यार पछी तेमज जूठ बोलती वखते पण ते अति दुःखी थाय छे. आ प्रमाणे पारकानी वस्तु ग्रहण कर्या छता तेना रुपथी ते तृप्त थतो नथी, परतु दुःखी थाय छे. अने एवा जीवनो कोइ रक्षक नथी. [अर्थात्–ते दुर्गतिने पामेछे]. (३१). एवा रुपमा अनुरक्त मनुष्यने कदापि काळे किंचित सुख पण क्याथी सभवे ? जे वस्तु प्राप्त करवाने तेणे कष्ट वेठेलु ते वस्तुनो उपभोग करती वखते पण तेने दुःख (क्लेश) उपजे छे. [३२]. एवीज रीते रुप उपर द्वेप करनार जीव दुःखनी परपरा* उपार्जे छे. ज्यारे तेनु चित्त द्वेपथी भरेलु होय छ त्यार ते घणा कर्म बाधे छे, जे कर्म परीणामे दुःखना कारण रुप थइ पडे छे. (३३). परतु रुपना मोहथी विरक्त मनुष्य शोकथी मुक्त रहे छे. जेम कमल पत्र जळमा रहेवा छता भीजातु नथी, तेम जो के ते ससारमा रहे छे छता दुःखनी परपराथी ते खरडातो नथी. [३४].

*Succession of pains

सोयस्स सद्दं गहणं वयंति तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु । तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु समो य जो तेसु स वीयरागो ॥ ३५ ॥ सद्दस्स सोयं गहणं वयंति सोयस्स सद्दं गहणं वयंति । रागस्स हेउं समणुन्नमाहु दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥३६॥ सद्देसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं अकालियं पावइ से विणासं । रागाउरे हरिणमिगेव्व मुद्धे सद्दे अतित्ते समुवेइ मच्चुं ॥ ३७ ॥ जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं । दुद्दंत दोसेण सएण जंतू न किंचि सद्दं अवरज्झई से ॥ ३८ ॥ एगंत रत्तो रुइरंसि सद्दे अतालिसे से कुणई पओसं । दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ३९ ॥ सद्दाणुगासाणुगए य जीवे चराचरे हिंसइणेगरूवे चित्ते हिं ते परितावेइ बाले पीलेइ अत्तट्ठ गुरु किलिट्ठे ॥ ४० ॥

शब्द काननु आकर्षण करे छे. मधुर शब्द रागनु अने कठोर शब्द द्वेषनु कारण (तीर्थंकरे) कह्युं छे. भला भूडा शब्दने विषे राग द्वेष रहित होय ते वीतराग कहेवाय. [३५]. कान शब्दने ग्रहण करे छे अने शब्द काननु आकर्षण करे छे. मधुर शब्द रागनु अने कठोर शब्द द्वेषनु कारण [तीर्थंकरे] कह्युं छे. [३६]. जेवी रीते रागातुर हरण मुग्ध शब्दथी लल्चाइने अकालिक मरण पामे छे तेवी रीते शब्दने विषे तीव्र मूर्छा राखनार अकालिक विनाशने पामे छे [३७]. जे कोइ कुशब्द सांभळीने अति द्वेष करे छे ते तत्क्षण दुःख पामे छे. तेने जे दुःख उपजे छे तेमां तेनो पोतानोज दोष छे, तेमां शब्दनो कांइ दोष नथी. (३८). जे कोइ मधुर शब्द उपर अति राग करे छे, तेने कठोर शब्द उपर द्वेष उपजे छे अने तेथी मूर्ख माणस दुःख पामे छे, ज्यारे वीतराग मुनी एवा रागद्वेषथी मुक्त रहे छे [३९] मधुर शब्दने विषे लुब्ध थयेलो जीव अनेक चराचर जीवने हणे छे. स्वार्थमां लीन थयेलो अज्ञानी जीव ए जीवोने अनेक प्रकारे पीडे छे अने तेमने दुःख उपजावे छे. (४०).

सद्दाणुगाएण परिग्गहेण उप्पायणे रक्खण सन्निओगे । वए विओ गेय कह सुहसे समोग कालेय अतित्त लाभे ॥४१॥ सद्दे अतित्तेय परिग्गहमि सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठि । अतुट्ठि दोसेण दुही परस्स लोभाविले आययई अदत्त ॥ ४२ ॥तण्हाभिभूयस्स अदत्त हारिणो सद्दे अतित्तस्स परिग्गहेय । माया मुस वड्ढइ लोभ दोसा तथावि दुक्खा नवि मुच्चइसे ॥ ४३ ॥ मोसस्स पच्छाय पुरथओय पओग कालेय दुही दुरते । एवं अदत्ताणि समाययंतो सद्दे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ४४ ॥ सद्दाणु रत्तस्स नरस्स एवं कत्तो सुह होज्ज कयाइ किंचि । तथ्येव भोगेवि किलेस दुक्ख निव्वत्तई जस्स कएण दुक्ख ॥४५॥

मधुर शब्दनो रागी जीव ते वस्तु प्राप्त करवानी, तेनु रक्षण करवानी, तेनो उपभोग करवानी, तेना नाशनी, अने तेना विरहनी मूर्च्छाने लीधे क्याथी सुखी थाय ? ते भोगवती वखते पण तेनाथी ते तृप्त थतो नथी. [४१] ज्यारे ते शब्दथी तृप्त थतो नथी, अने मूर्च्छाने लीधे ते उपर तेनी आसक्ति वधतीज जाय छे त्यारे ते असंतोषना दोषथी दुःखी थायछे अने लोभथी दोरवाइने पारकानी अण दीधी [अदत्त] वस्तु हाथ करे छे. (४२). तृष्णाथी पराभव पामेलो ते प्राणी पारकानी वस्तु ले छे छता ए शब्द अने परिग्रहथी तेने संतोष थतो नथी, अने पछी लोभना दोषथी तेनामा माया अने जूठ वधे छे. एटलु छता पण ते दुःखथी मुक्त थतो नथी. [४३] जूठ बोल्या पूर्वे अने त्यारपछी तेमज जूठ बोलती वखते पण ते अति दुःखी थाय छे. आ प्रमाणे पारकानी वस्तु ग्रहण कर्या छता तेना शब्दथी ते तृप्त थतो नथी परतु दुःखी थाय छे अने एना जीवनो कोइ रक्षक नथी. (४४). एवा शब्दमा अनुरक्त मनुष्यने कदापि काळे किंचित सुख पण क्याथी सभवे ? जे वस्तु प्राप्त करवाने तेणे कष्ट वेठेलु ते वस्तुनो उपभोग करती वखते पण तेने दुःख उपजे छे. [४५].

एमेव सद्दंमि गओ पओसं उवेइ दुक्खोह परंपराओ। पदुट्ठ चित्तो य चिणाइ कम्मं जंसे पुणो होइ दुहं विवागे ॥४६॥ सद्दे विरत्तो मणुओ विसोगो एएण दुक्खोह परंपरेण। न लिप्पए भव मज्झेव संतो जलेणवा पुक्खरिणी पलासं ॥ ४७ ॥ घाणस्स गंधं गहणं वयंति तं रागहेउंतु मणुन्न माहु। तं दोसहेउं अमणुन्न माहु समोय जो तेसु स वीयरागो ॥ ४८ ॥ गंधस्स घाणं गहणं वयंति घाणस्स गंधं गहणं वयंति। रागस्सहेउ समणुन्न माहु दोसस्स हेउ अमणुन्न माहु ॥४९॥ गंधेसु जो गिद्धि मुवेइ तिव्वं अकालियं पावइ से विणासं। रागाउरे ओसहि गंधगिद्धे सप्पे बिलाओविव निक्खमंतो ॥५०॥ जेयावि दोसं समुवेइ तिव्वं तंसि क्खणे सेउ उवेइ दुक्खं। दुद्दंत दोसेण सएण जंतू न किंचि गंधं अवरज्झई से ॥५१॥

एवीज रीते शब्द उपर द्वेष करनार जीव दुःखनी परंपरा उपार्जे छे. ज्यारे तेनु चित्त द्वेषथी भरेलुं होय छे त्यारे ते घणा कर्म बांधे छे जे कर्म परीणामे दुःखना कारण रुप थइ पडे छे. (४६). परंतु शब्दथी विरक्त मनुष्य शोकथी मुक्त रहे छे. जेम कमळ पत्र जलमां रहेता छतां भींजातुं नथी तेम ते जो के संसारमां रहे छे छतां दुःखनी परंपराथी ल्हेवातो नथी [४७]. गंध नासिकानु आकर्षण करे छे. सुगंध रागनुं अने दुर्गंध द्वेषनु कारण [तीर्थंकरे] कह्युं छे. भली भूंडी गंधने विषे राग द्वेष रहित होय ते वीतराग कहेवाय.० [४८] नासिका गंधने ग्रहण करेछे अने गंध नासिकानु आकर्षण करेछे. सुगंध रागनुं अने दुर्गंध द्वेषनु कारण (तीर्थंकरे) कह्युं छे [४९] जेम रागातुर सर्प (चंदनादि) औषधिनी सुगंधथी लोभाइने पोताना राफडामांथी बहार नीकळी आवे छे अने मृत्यु पामे छे तेम गंधने विषे तीव्र मूर्छा राखनार अकालिक विनाशने पामेछे. [५०]. जे कोइ दुर्गंध उपर अति द्वेष आणे छे, ते तत्काळ दुःख पामे छे. तेने जे दुःख उपजे छे तेमां तेनो पोतानोज दोष छे, तेमां गंधनो कांइ दोष नथी. [५१]

०दरेक इन्द्रिय उपर तेर तेर गाथामां वर्णन छे.

एगत रत्तो रुइरसि गधे अयालिसेसे कुणई पओस । दुख्खस्स सपील मुवेइ बाले न लिप्पइ तेण मुणी विरागे ॥५२॥ गधाणुगासाणु गएय जीवे चराचरे हिंसइणे गरूवे । चित्तेहिंते परितावेइ बाले पीलेइ अत्तठ्ठ गुरु किलिठ्ठे ॥ ५३ ॥ गधाणुवाएण परिग्गहेण उप्पायणे रख्खण सनिओगे । वए विओगेय कहिं सुहमे सभोग कालेय अतित्त लाभे ॥५४॥ गधे अतित्तेय परिग्गहमि सत्तोवसत्तो न उवेइ तुठ्ठिं । अतुठ्ठि दोसेण दुही परस्स लोभाविले आययई अदत्त ॥ ५५ ॥ तण्हाभिभूयस्स अदत्त हारिणो गधे अतित्तस्स परिग्गहेय । माया मुस वढ्ढइ लोभ दोसा तथ्था विदुख्खा नवि मुच्चई से ॥ ५६ ॥ मोसस्स पछाय पुरथ्थओय पओग कालेय दुही दुरते । एव अदत्ताणि समाययतो गधे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥५७॥

जे कोइ सुगंध उपर अति राग करे छे, तेने दुर्गंध उपर द्वेष उपजेछे, अने तेथी मूर्ख माणस दुःख पामे छे, ज्यारे वीतराग मुनी एवा रागद्वेपथी मुक्त रहे छे. [५२]. सुगंधने विषे लुब्ध थयेलो जीव अनेक चराचर जीवने हणे छे. स्वार्थमा लीन थयेलो अज्ञानी जीव ए जीवोने अनेक प्रकारे पींडे छे अने तेमने दुःख उपजावे छे. [५३]. सुगंधनो रागी जीव ते वस्तु प्राप्त करवानी, तेनुं रक्षण करवानी, तेनो उपभोग करवानी, तेना नाशनी अने तेना विरहनी मूर्च्छाने लीधे कयाथी सुखी थाय? ते भोगवती वखते पण तेनाथी तेने तृप्ति थती नथी. [५४]. ज्यारे ते गंधथी तृप्त थतो नथी, अने मूर्च्छाने लीधे ते उपर तेनी आसक्ति वधती जाय छे त्यारे ते असतोषना दोषथी दुःखी थाय छे अने लोभथी दोरवाइने पारकानी नणदीधी वस्तु हाथ करे छे. [५५]. तृष्णाथी पराभव पामेलो ते प्राणी पारकानी वस्तु ले छे छता ए गंध अने परिग्रहथी तेने सतोष थतो नथी. अने पछी लोभना दोषथी तेनामा माया अने जूठ वधे छे. एटलु छता पण ते दुःखथी मुक्त थतो नथी. (५६). जूठु बोलवा पूर्वे अने त्यार पछी तेमज जूठु बोलती वखते पण ते अति दुःखी थाय छे. आ प्रमाणे पारकानी वस्तु ग्रहण कर्या छतां तेनी गधथी ते तृप्त थतो नथी, परतु दुःखी थाय छे, अने एवा जीवनो कोइ रक्षक नथी. [५७].

गंधाणुरत्तस्स नरस्स एवं कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि । तत्थोवभोगेवि किलेस दुक्खं । निव्वत्तए जस्स कएण दुक्खं ॥ ५८ ॥ एमेव गंधंमि गओ पओसं उवेइ दुक्खोह परंपराओ । पदुट्ठ चित्तोय चिणाइ कम्मं जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥५९॥ गंधे विरत्तो मणुओ विसोगो एएण दुक्खोह परंपरेण । न लिप्पए भवमज्झे वि संतो जलेण वा पुक्खरिणीपलासं ॥ ६० ॥ जीहाए रस गहणं वयंति तं राग हेउं तु मणुन्न माहु । तं दोस हेउं अमणुन्न माहु समोय जो तेसु सवीयरागो ॥६१॥ रसस्स जीहं गहणं वयंति जिब्भाए रस गहणं वयंति । रागस्स हेउं समणुन्न माहु दोसस्सहेउं अमणुन्न माहु ॥ ६२ ॥ रसेसु जो गिद्धि मुवेइ तिव्वं अकालियं पावइ से विणासं । रागा उरे बडिस विभिन्न काए मच्छे जहा आमिसलोभ गिद्धे ॥ ६३ ॥

एवी गंधमां अनुरक्त मनुष्यने कदापि काळे किंचित सुख पण क्याथी संभवे ? जे वस्तु प्राप्त करवाने तेणे कष्ट वेठ्युं ते वस्तुनो उपभोग करवा छतां पण तेने दुःख उपजे छे. [५८]. एवीज रीते गंध उपर द्वेष करनार जीव दुःखनी परंपरा उपार्जे छे. ज्यारे तेनुं चित्त द्वेषथी भरेलुं होय छे त्यारे ते घणां कर्म बांधेछे, जे कर्म परीणामे दुःखना कारणरूप थइ पडे छे. [५९]. परंतु गंधथी विरक्त मनुष्य शोकथी मुक्त रहे छे, जेम कमलपत्र जळमां रहेवा छतां भींजातुं नथी तेम ते जो के संसारमां रहे छे छतां दुःखनी परंपराथी लेपातो नथी. [६०] रस जीभनुं आकर्षण करे छे, मधुर रस रागनुं अने कटु रस द्वेषनुं कारण [तीर्थंकरे] कह्युं छे. भलाबुरा रसने विषे राग द्वेष रहित होय ते वीतराग कहेवाय. [६१]. जीभ रसने ग्रहण करे छे अने रस जीभनुं आकर्षण करे छे, मधुर रस रागनुं अने कटु रस द्वेषनुं कारण (तीर्थंकरे) कह्युं छे [६२]. जेम रागातुर माछलुं रसना लोभथी कांटाने कांटाथी भेदाइने अकाळे मरण पामे छे तेम रसने विषे तीव्र मूर्च्छा राखनार अकालिक विनाशने पामे छे. (६३)

जेयावि दोस समुवेइ तिव्व त सिख्खणे सेउ उवेइ दुख्खं । दुद्दन्त दोसेण सएण जतू न किंचि रसं अवरज्झई से ॥६४॥एगत रत्तो रुइरेरसमि अतालिसे से कुणई पओस । दुख्खस्स सपील मुवेइ वाले न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥६५॥ रसाणुगासाणु गएय जीवे चराचरे हिसइ णेगरूवे । चित्ते हिते परितावेइ बाले पीलेइ अत्तठ्ठ गुरु किलिठ्ठे ॥ ६६ ॥ रसाणुवाएण परिग्गहेण उप्पायणे रख्खण सनिउगे । वए विओगेय कह सुहसे संभोग कालेय अतित्त लाभे ॥६७॥ रसे अतित्तेय परिग्गहमि सत्तोवसत्तो न उवेइ तुठ्ठि । अतुठ्ठि दोसेण दुही परस्स लोभाविले आययई अदत्त ॥ ६८ ॥ तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो रसे अतित्तस्स परिग्गहेय । मायामुसं वड्ढइ लोभ दोसा तथ्थावि दुख्खानवि मुच्चई से ॥६९॥

जे कोइ कटु रस उपर अति द्वेष आणे छे, ते तत्क्षण दुःख पामे छे. तेने जे दुःख उपजे छे तेमा तेनी जीभनो दोष छे, तेमा रसनो कांइ दोष नथी [६४]. जे कोइ मधुर रस उपर अति राग करे छे, तेने कटु रस उपर द्वेष उपजे छे. अने तेथी मूर्ख माणस दुःख पामे छे, ज्यारे वीतराग मुनी एवा राग द्वेषथी मुक्त रहे छे. [६५]. सुरसने विषे लुब्ध थयेलो जीव अनेक चराचर जीवने हणे छे. स्वार्थमां लीन थयेलो अज्ञानी जीव ए जीवोने अनेक प्रकारे पीडे छे अने तेमने दुःख उपजावे छे. [६६] सुरसनो रागी जीव ते वस्तु प्राप्त करवानी, तेनु रक्षण करवानी, तेनो उपभोग करवानी, तेना नाशनी अने तेना विरहनी मूर्च्छाने लीधे क्याथी सुखी थाय ? ते भोगवती वखते पण तेनाथी तेने तृप्ति थती नथी. [६७]. ज्यारे ते रसथी तृप्त थतो नथी, अने मूर्च्छाने लीधे ते उपर तेनी आसक्ति वधतीज जाय छे त्यारे ते असतोषना दोषथी दुःखी थाय छे, अने लोभथी दोरवाइने पारकानी अणदीधी वस्तु हाथ करे छे (६८). तृष्णाथी पराभव पामेलो ते प्राणी पारकानी वस्तु ले छे छता ए रस अने परिग्रहथी तेने सतोष थतो नथी. अने पछी लोभना दोषथी तेनामां माया अने जूठ वधे छे. एटलु छता पण ते दुःखथी मुक्त थतो नथी. [६९].

मोसम्म पत्ताय पुरुग्गओय पओग कालेय दुही दुरते। एवं अदत्ताणि समाययनो रसे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥७०॥ रसाणु रत्तस्स नरस्स एव कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि। तत्थोवभोगेवि किलेस दुक्ख निव्वत्तई जस्सकएण दुक्खं ॥ ७१ ॥ एमेव रसम्मि गओ पओसं उवेइ दुक्खोह परंपराओ। पदुट्ठ चित्तोय चिणाइ कम्म जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥७२॥ रसे विरत्तो मणुओ विसोगो एएण दुक्खोह परंपरेण। न लिप्पइ भवमझेवसंतो जलेण वा पुक्खरिणीपलास ॥७३॥ कायस्स फास गहण वयंति त रागहेउतु मणुन्न माहु। त दोस हेउ अमणुन्न माहु समोयजो तेसु स वीयरागो ॥ ७४ ॥ फासस्स काय गहण वयंति कायस्स फास गहणं वयंति। रागस्स हेउ समणुन्न माहु दोसस्स हेउं अमणुन्न माहु ॥७५॥

चोरी करी लावेली वस्तुथी पण ते अति दुःखी थाय छे. आ प्रमाणे पारकानी वस्तु ग्रहण करनार जीव रसथी तृप्त थतो नथी, परन्तु दुःखी थाय छे अने एवा जीवनो कोइ रक्षक नथी. [७०]. एवा रसमां अनुरक्त मनुष्यने क्यारेय कांइ किंचित सुख पण क्यांथी मळे? जे वस्तु प्राप्त करवाने तेणे कष्ट वेठेलुं ते वस्तुनो उपभोग करती वखते पण तेने दुःख उपजे छे. [७१]. बीजी रीते रस उपर द्वेष करनार जीव दुःखनी परंपरा उपार्जे छे. ज्यारे तेनुं चित्त द्वेषथी भरेलुं होय छे त्यारे ते नवां कर्म बांधे छे, जे कर्म परिणामे दुःखना कारण रूप थइ पडे छे. (७२). परन्तु रसथी विरक्त मनुष्य शोकथी मुक्त रहे छे. जेम कमळ पत्र जळमां रहेता छतां भींजातुं नथी, तेम ते जो के संसारमां रहे छे, त्यां ते दुःखनी परंपराथी लेपातो नथी. (७३). स्पर्श शरीरनुं ग्रहण करे छे. सु स्पर्श रागनुं अने कु स्पर्श द्वेषनुं कारण [तीर्थंकर] कहे छे. भगवंत स्पर्शने विषे राग द्वेष रहित होय ते वीतराग कहेवाय. [७४]. शरीर स्पर्शने ग्रहण करे छे, स्पर्श शरीरनुं आकर्षण करे छे. सु स्पर्श रागनुं अने कु स्पर्श द्वेषनुं कारण [तीर्थंकर] कहयुं छे. [७५].

फासस्सजो गिद्धि मुवेइ तिव्व अकालिय पावइ से विणासं । रागाउरे सीय जलावसन्ने गाह ग्गहीए महिसेवरन्ने ॥ ७६ ॥ जेयावि दोस स मुवेइ तिव्व त मिख्खणे सेउ उवेइ दुख्ख । दुद्दत दोसेण सएण जतू न किंचि फास अवरझईसे ॥ ७७ ॥ एगत रत्तो रुइरसि फासे अतालिसेसे कुणई पओस ! दुख्खस्स सपीलमुवेइबाले न लिप्पई तेण मुणीविरागो ॥ ७८ ॥ फासाणु गासाणु गएयजीवे चराचरे हिंसई णेगरुवे । चित्तेहिते पारितावेइ बाले पीलेइ अत्तठ गुरु किलिठे ॥ ७९ ॥ फासाणु वाएण परिग्गहेण ऊप्पायणे रख्खण सनिओगे । वए विओगेय कह सुहसे सभोग कालेय अतित्त लाभे ॥८०॥ फासे अतित्तेय परिग्गहमि सत्तोवसत्तो न उवेइ तुठि । अतुठि दोसेण दुही परस्स लोभाविले आययइ अदत्त ॥ ८१ ॥

जेम रागातुर महिष शीतळ जळथी ललचाइने मगरमच्छथी पकडाइने अकाळे मरण पामे छे तेम स्पर्शने विषे तिव्र मूर्च्छा राखनार अकालिक विनाशने पामेछे. [७६]. जे कोइ कु-स्पर्श उपर अति द्वेष आणे छे, ते तत्क्षण दुःख पामे छे. तेने जे दुःख उपजे छे तेमा तेनो पोतानोज दोष छे, तेमा स्पर्शनो काइ दोष नथी [७७]. जे कोइ सु-स्पर्श उपर अति राग करे छे, तेने कु-स्पर्श उपर द्वेष उपजे छे. अने तेथी मर्व माणस दुःख पामेछे ज्यारे वीतराग मुनी एवा रागद्वेषथी मुक्त रहे छे. [७८] सु-स्पर्शने विषे लुब्ध थयेलो जीव अनेक चराचर जीवोने हणे छे स्वार्थमा लीन थयेलो अज्ञानी जीव ए जीवोने अनेक प्रकारे पीडे छे अने तेमने दुःख उपजावे छे. (७९) सु-स्पर्शनो रागी जीव ते वस्तु प्राप्त करवानी, तेनु रक्षण करवानी, तेनो उपभोग करवानी, तेना नाशनी अने तेना विरहनी मूर्च्छाने लीधे क्याथी सुखी थाय ? ते भोगवती वखते पण तेनाथी तेने तृप्ति थती नथी [८०]. ज्यारे ते स्पर्शथी तृप्त थतो नथी अने मूर्च्छाने लीधे ते उपर तेनी आसक्ति वधतीज जाय छे त्यारे ते असतोषना दोषथी दुःखी थाय छे अने लोभथी दोरवाइने पारकानी अण दीधी वस्तु हाथ करे छे. [८१].

भावस्स मण गहण वयंति मणस्स भाव गहण वयंति । रागस्स हेउं समणुन्न माहु दोसस्सहेउ अमणुन्न माहु ॥ ८८ ॥ भावेसु जो गिद्धि मुवेइ तिव्व अकालिय पावइ से विणास । रागाउरे कामगुणेसु गिद्धे करेणु मग्गा वहिएव नागे ॥८९ ॥ जेयावि दोसं समुवेइ तिव्व त सिख्खणे सेउ उवेइ दुख्ख दुद्दतदोसेण सएण जतून किंचि भाव अवरझई से ॥ ९० ॥ एगतरत्तो रुइरंसि भावे अतालिसेमेकुणई पओसं । दुख्खस्स सपील मुवेइ बाले न लिप्पई तेण मुणी विरागे ॥ ९१ ॥ भावाणुगासाणु गएय जीवे चराचरे हिंसइणेगरूवे । चित्तेहिंते परितावेइ बाले पीलेइ अत्तट्ठ गुरू किलिट्ठे ॥ ९२ ॥ भावाणु वाएण परिग्गहेण उप्पायणे रख्खण सनिओगे । वए विओगेय कह सुहसे सभोगकालेय अतित्त लाभे ॥९३॥

मन भावने ग्रहण करे छे अने भाव मननु आकर्षण करे छे. मनोहर भाव रागनु अने अमनोहर भाव द्वेषनु कारण [तीर्थंकरे] कह्युं छे. [८८]. कामातुर हाथी जेम हाथणीनी पाछळ आडे मार्गे जाय छे अने परवश पडी अकाले मरण पामे छे तेम भावने विषे तीव्र मूर्च्छा राखनार अकालिक विनाशने पामेछे. (८९). जे कोइ अमनोहर भाव उपर अति द्वेष आणे छे ते तत्क्षण दुःख पामेछे तेने जे दुःख उपजे छे तेमा तेना मननो दोष छे. तेमा भावनो काइ दोष नथी. [९०]. जे कोइ मनोहर भाव उपर अति राग करेछे तेने अमनोहर भाव उपर द्वेष उपजेछे. अने तेथी मूर्ख माणस दुःख पामेछे. ज्यारे वीतराग मुनी एवा राग द्वेषथी मुक्त रहेछे (९१) मनोहर भावने विषे लुब्ध थयेलो जीव अनेक चराचर जीवने हणे छे. स्वार्थमा लीन थयेलो अज्ञानी जीव ए जीवोने अनेक प्रकारे पीडे छे अने तेमने दुःख उपजावे छे (९२). मनोहर भावनो रागी जीव ते वस्तु प्राप्त करवानी, तेनु रक्षण करवानी, तेनो उपभोग करवानी, तेना नाशनी अने तेना विरहनी मूर्च्छाने लीधे क्याथी सुखी थाय? ते भोगवती वखते पण तेनाथी तेने तृप्ति थती नथी (९३).

एविदियत्थाय मणस्स अत्था दुक्खस्स हेउ मणयस्स रागिणो। ते चेव थोवंपि कयाइ दुक्खं न वीयरागस्स करेंति किंचि॥१००॥ न कामभोगा समयं उवेंति नयावि भोगा विगइं उवेंति । जे तप्पओसीय परिग्गहीय सो तेसु मोहाविगइ उवेइ ॥ १०१ ॥ कोहच्च माणच्च तहेव मायं लोभं दुगंछं अरइं रइंच । हासं भयं सोग पुमित्थिवेयं नपुंसं वेयं विविहेय भावे ॥१०२॥ आवज्जई एव मणे गरुवे एव विहे कामगुणेसु सत्तो । अन्नेय एयप्पभवे विसेसे कारुन्न दीणे हरिमे वइस्से ॥ १०३ ॥ कप्पं न इच्छेज्ज सहायलिच्छु पच्छाणुतावेय तव प्पभाव । एवं वियारे अमिय प्पयारे आवज्जई इंदिय चोर वस्से ॥ १०४ ॥

आ प्रमाण इन्द्रिय अने मनना संकल्प-विकल्पो रागातुर मनुष्यने दुःख उपजावे छे. परंतु तेओ राग द्वेष रहित वीतराग [जीतेन्द्रिय]ने लेश मात्र दुःख उपजावी शक्ता नथी. [१००] काम भोगनी वस्तुओ पोते समता अथवा विकार उत्पन्न करती नथी, परंतु तेमना प्रति राग द्वेष आणवाथी मायाने लीधे एवा विकार उत्पन्न थाय छे [१०१] क्रोध, मान, माया, लोभ, दुगंछा,अरति, रति, हर्ष, भय, शोक, स्त्री वेद, पुरुष वेद, अने नपुंसक वेद[*] प्रति विषयनी अभिलाषा; आवा विविध प्रकारना भाव विषयासक्त मनुष्यना हृदयमां उत्पन्न थाय छे. तेमज वळी उपर कहेला क्रोधादिकने लीधे अन्य विकारो पेदा थाय छे. एवो मनुष्य दयाने पात्र लज्जित अने सर्वत्र अप्रीतिकर थइ पडे छे. [१०२ १०३]. आचार स्वाध्यायमां शीथील थइ, साधुए शिष्यनी इच्छा करवी नहि, चारित्र लीधा पछी तप वीगेरे माटे खेद न करवो तेम पोताना तपना प्रभावनी साधुए इच्छा करवी नही. एवा अनेक प्रकारना विकारो तो इन्द्रियोने वश थयेलामां उद्भवे छे[1] [१०४].

---

[*] चार कषाय अने नव नोकषाय. 1 Such emotions of an infinite variety arise in one who is the slave of his senses

तओसे ¯ायति पओयणाइ निमिज्जिउं मोहमहन्नवमि सुहेसिणो दुक्ख विणोयणट्ठा तप्पच्चय उज्जमएय रागी ॥१०५॥ विरज्जमाणस्सय इंदियत्था सद्दाइया तावइय प्पगारा । न तस्स सव्वेवि मणुन्नयवा निव्वत्तयती अमणुन्नयवा ॥१०६॥ एवस सकप्पविकप्पणासु सजायई समय मुवट्ठियस्स । अत्थेय सकप्पओ तओ से पही यप काम गुणेसु तन्हा ॥ १०७ ॥ स वीयरागोकय सव्व किच्चो खवेइ नाणावरण खणेणं । तहेव ज दरिसण मावरेइ जच तराय पकरेइ कम्म॥१०८॥ सव्व तओ जाणइ पासएय अमोहणे होइ निरतराए । अणासवे भाण समाहि जुत्तेआ उव्वखए मोक्ख मुवेइ सुद्धो ॥१०९॥

इन्द्रिय मुखनी अभिलाषाथी जीव मोह समुद्रने विषे डुबी दुःखथी दूर रहेवाने अनेक युक्ति प्रयुक्ति रचे छे अने ए निमित्ते रागी द्वेषी जीव [हिंसादिक] उद्यम आदरे छे. [१०५]. इन्द्रिय अने शब्दादिक [शब्द, रूप, रस, गध, स्पर्शादि] विषयो वीरागी (विरक्त) पुरुषने राग द्वेष उपजावी शक्ता नथी. (१०६) राग द्वेषादि सकल्प विकल्प एज समस्त दोषना मूळ छे, एवी भावनाने विषे प्रवर्त्तनारने सपूर्ण समता [समत्वपणु] प्राप्त थाय छे. ज्यारे इन्द्रिय अने शब्दादि वस्तुनी तृष्णा ओछा थाय छे, त्यारे भोग भोगववानी तृष्णा बध पडे छे (१०७) आवी तृष्णाओने त्यजनार वीतराग जे सर्व कार्य सिद्ध करे छे ते क्षण मात्रमा ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय अने अतराय कर्म सर्व खपावी दे छे. [१०८]. [कर्म खपाव्या] पछी ते ज्ञान वडे सर्व लोकालोकने देखी शके छे, ने मोहनी कर्म अने अतराय कर्म रहित थाय छे, तेना आश्रव (पाप) दूर थाय छे अने ते शुद्ध शुक्ल ध्यान* अने समाधि ग्रस्त थइने, आयुष्य खपावीने, मोक्ष प्राप्त करे छे. (१०९)

*He is proficient in meditation and concentration of thought.

सोतस्स सव्वस्स दुहस्स मुक्खो जवाहई सययं जंतुमेय । दीहामय विप्पमुक्को पसथ्थो तोहोइ अच्चत सुही कयथ्थो ॥११०॥ अणाइ कल प्पभवस्स एसो सव्वस्स दुक्खस्स पमोक्खमग्गो । वियाहिओ जं समुवेच्च सत्ता कमेण अच्चंत सुही भवति ।त्तिबेमि ॥ १११ ॥ ❀ इति श्री पमायठाण नाम झयण दुव्वात्तिरसं सम्मत्त ॥ ३२ ॥ ❀

अध्ययन ३३. कर्म-प्रकृति.

अठ कम्माइ वोच्छामि आणुपुव्वि जहक्कम्म जेहि वद्धो अय जीवो ससारे परिवत्तई ॥ १ ॥ नाणा वरण चेव दसणा वरण तहा । वेयणिज्जा तहा मोह आउ कम्म तहेवय ॥ २ ॥ नामकम्मच गोयच्च अतराय तहेवय ।

जे दुःखो जीवने निरतर पीडा कर्या करेछे ते दुःखथी ते मुक्त थाय छे, अने आ प्रमाणे कर्म रूपी रोगनी पीडाथी मुक्त थइने ते अत्यत सुखी थाय छे अने सिद्ध दशाने पामे छे. [११०]. अनादि काळथी उत्पन्न थयेला सर्व दुःखरूप जे कर्म तेनाथी मुक्त थवानो मार्ग श्री तीर्थकर भगवाने कही सभळाव्यो छे. जे जीव ए मार्गे प्रवर्त्तशे ते क्रमे क्रमे अत्यत सुखने पामशे. (१११).

❀ अध्ययन बत्रीशमु सपूर्ण. ❀

❀ अध्ययन ३३ ❀

हवे आठ प्रकारना कर्म अनुक्रमे कहु छुं, जे कर्मथी बंधायेलो जीव (चार गति रूप) ससारमा परिवर्त्तन करे छे. [१]. ए आठ प्रकारनां कर्म सक्षिप्ते नीचे प्रमाणे छे:—१[१] ज्ञानावरणीय कर्म [जेम वादळा सूर्यनी कान्ति ढाके छे तेम आत्मना पाटा समान आ कर्म ज्ञानने रोके छे].

---

१ Which acts as an obstruction to right knowledge आ ज्ञानावरणीय कर्म अनत ज्ञान गुण पामवामां अतराय रूप छे,

एव मेयाइं कम्माइं अट्ठेवउ समासओ ॥३॥

१[२] दर्शनावरणीय कर्म [जेम प्रतिहार राजाना दर्शन करता अटकावे छे तेम आ कर्म दर्शनने रोके छे]. २[३] वेदनीय कर्म (मधथी खरडेली खड्गधारानी पेठे शाता अशाता आ कर्मथी उपजे छे). ३[४] मोहनीय कर्म (मदिरानी पेठे अज्ञानी विकल अने बेभान आ कर्म करे छे). ४[५] आयुः कर्म (नर्कादि गतिथी नीकळवा इच्छे पण आ कर्मथी हेडमां पुरेला केदी पेठे नीकळी न शके). ५[६] नाम कर्म [चितारानी पेठे चार गति रुप संसारमां घणा भव पमाडेछे]. [७] गोत्र कर्म (कुंभारना चाकडानी पेठे उच नीच गोत्रमां आ कर्म जन्म लेवरावे छे). ७[८] अंतराय कर्म (राजानी तेजुरी साचवनार पोताना उपयोग माटे एक पाइ न लइ शके तेम आ कर्मथी स्वायेत्रा सदुपयोग न करी शके). [२—३]

१ Which acts as an obstruction to right faith आ दर्शनावरणीय कर्मे अनंत दर्शन गुण रोकेला छे. २ Which leads to experiencing pain and pleasure अनंत अव्याबाध आत्मिक सुख आ कर्मने लीधे प्राप्त थइ शकतु नथी. ३ Which leads to delusion आ कर्मे क्षायक समकित गुण रोक्यो छे. ४ Which determines the length of life आ कर्म अक्षय स्थिति गुण गुमावे छे. ५ Which determines the name or individuality of the embodied soul आथी अमूर्त्त गुण रोकायछे. ६ Which determines his Gotra. आ कर्मथी अगुरु लघु गुण गुप्त थाय छे. ७ Which prevents one's entrance on the path that leads to eternal bliss अनंत आत्म शक्ति गुण आ कर्मथी दबाइ जाय छे. आ आठ कर्मनो क्रम विचारवा जेवोछे, नाम कर्मने छठ्ठुं केम मुक्युं अने अंतराय कर्मने आठमु शा माटे गोठव्यु ए ज्ञान गोष्टि समजवा जेवी छे. ज्ञान अने दर्शन ए जीवत्वना मुख्य तत्व छे तेमाए ज्ञान प्रधान छे. ज्ञानथीज सारासारनु भान थता जीवन सार्थक थाय छे माटे ज्ञानने प्रथम पद आपी तेने रोकनार ज्ञानावरणीय कर्मने प्रथम अने बीजो नंबर दर्शनावरणीय कर्मने आपेल छे आ बे कर्मना विपाकना उदय निमित्त वेदनिय कर्मछे. वेदनिय कर्मथी सुख दुःख थता, राग द्वेषने जन्म मळे छे जे मोहनीय कर्मछे. मोहाध थता फरी जन्म भ्रमण करवुं पडेछे एथी आयुष्यनी आवश्यकता उभी थायछे. आयुष्य उत्पन्न थवाथी नाम कर्म आवी पळगेछे ते साथे गोत्रनो पण संबंध छे अने गोत्रानुसार अंतराय कर्मने आधीन थया विना छुटको थतो नथी.

नाणावरणं पच विहं सुय आभि णिबोहिय । ओहिनाणच तइय मणनाणंच केवल ॥ ४ ॥ निद्दा तहेव पयला निद्दानिद्दाय पयलपयलाय । तत्तोय थीणगिद्धीउ पंचमा होंइ नायव्वा ॥ ५ ॥ चक्खु मचक्खु ओहिस्स दंसणे केवलेय आवरणे । एवंतु नव विगप्प नायव्व दसणावरणं ॥ ६ ॥

[१] ज्ञानावरणीय कर्मना पाच भेद कह्या छे:-(१) श्रुत-ज्ञानावरणीय, [२]अभिनिबोधिक-ज्ञानावरणीय (मति ज्ञानावरणीय) (३) अवधि ज्ञानावरणीय, [४] मन-पर्याय ज्ञानावरणीय, [५] केवल-ज्ञानावरणीय. [४] [२] दर्शना-वरणीय कर्मना नव भेद कह्या छे:-(१) निद्रा,* (२) प्रचला,* [३] निद्रा-निद्रा,* (४) प्रचला-प्रचला,* [५] थीणद्धि-निद्रा,१* (६)चक्षु-दर्शनावरणीय, [७] अचक्षु-दर्शनावरणीय, [८] अवधि-दर्शनावरणीय, (९) केवल-दर्शनावरणीय. [५-६].

*मो जेकोबी आ पाच प्रकारनी निद्राने जुदो जुदो अर्थ करे छे. जुदा जुदा ग्रन्थो तपासता आ अर्थ नीकळे छे. निद्रा—जगाडता तुरत जगाय एवी उंघ प्रचला—The slumber of a standing or sitting person उभा के बेठा झोका आवी जाय ते. निद्रा निद्रा—Deep sleep जगाडता घणी महेनत पडे तेवी उंघ. प्रचला प्रचला चालतां चालता उंघ आवी जाय ते. मो जेकोबी तेने High degree of activity पण खरो अर्थ तो Sleep of a person in motion थइ शके छे. १चारे निद्रा करता आ अति तीव्र छे. आ निद्रावस्थाए अर्ध वासुदेवनु बळ होय छे. दिवस दरम्यान चितवेल कार्य रात्रीए सुता पछी आ निद्रा वाळा उंघमाने उंघमा करे छे घणुधा आ निद्रामा अनर्थज थाय छे तो पण हालमा एक सारु काम थयानो दाखलो अमेरिकामा बन्यो छे. चोपान्याओमा लखाण करनार एक लेखकने सवारमां एक चोपान्याना तन्त्री तरफथी बेन्कनो चेक मळ्यो के तमारा फलाणा लखाण माटे आ बदलो मोकल्यो छे, लेखके विचार कर्यो के आ लेख में लख्योज नथी ने मोकल्यो पण नथी. घणेरे भोजन लइ निराते आलोटता याद आव्यु के चार दिवस पेहेला आवो विषय लखवा तेनी इच्छा हती. स्मरण शक्तिनी साधता लेतां छेवट सिद्ध थयु के ते दीवसे रात्रीना बार वागते लेखक उंघमाने उंघमा उठ्यो हतो. वती सळगावी लखवाना साधन एकठां कर्या, लख्यु अने जाते पोष्ट ओफीसमा नाखी आवी सूइ गयो. त्रण दिवस वीती गया अने आ पत्र आव्यो त्यारे भान थयुं. आ प्रमाणे उंघमाने उंघमां अर्धी रात्रीए रस्ता वचे चाल्या जता घणा माणसो पोलीसने मळे छे.

वेयणियंपिय दुविहं साय मसायंच आहियं । सायस्सओ बहू भेया एमेव असायस्सवि ॥७॥ मोहणिज्जंपि दुविहं दंसणे चरणे तहा । दंसणे तिविहं वुत्तं चरणे दुविहं भवे ॥८॥ सम्मत्तचेव मिच्छत्त सम्मामिच्छत्त मेवय । एयाओ तिन्नि पयडीओ मोहणिज्जस्स दंसणे ॥९॥ चारित्त मोहणं कम्मं दुविहंतु वियाहियं । कसाय मोहणिज्जंच नोकसाय तहेवय ॥१०॥ सोलस विह भेएणं कम्मंतु कसायजं । सत्तविहं नवविहंवा कम्मं नोकसायजं ॥ ११ ॥

(३) वेदनिय-कर्म बे प्रकारना छे :–[१] शाता-वेदनीय कर्म, (२) अशाता-वेदनीय-कर्म. शाता अने अशाता-वेदनीय कर्मना घणा भेद छे. (७). [४] मोहनीय-कर्म बे प्रकारना छे :–[१] दर्शन-मोहनी-कर्म, [२] चारित्र-मोहनी कर्म. वळी दर्शन-मोहनी-कर्मना त्रण भेद छे अने चारित्र-मोहनी-कर्मना बे भेद छे. दर्शन-मोहनी-कर्मना त्रण भेद :–[१] सम्यक्, (२) मिथ्यात्व, [३] सम्यक्-मिथ्यात्व. चारित्र-मोहनी-कर्मना बे भेद :–[१] कषाय-मोहनी-कर्म अने [२] नोकषाय-मोहनी-कर्म. कषाय मोहनी-कर्मना सोळ अने नोकषाय मोहनी-कर्मना सात अथवा नव भेद छे. [अनन्तानु बंधी, प्रत्याख्यानी, अप्रत्याख्यानी अने *संजल ए प्रत्येकमां क्रोध, मान, माया, लोभ ए रीते कषाय-मोहनी-कर्मना सोळ भेद थाय छे. नोकषाय मोहनी कर्मना भेद–हास्य, रति, अरति, भय, शोक, दुगंछा अने त्रणवेद, ए प्रमाणे सात, अने जो त्रणवेद अर्थात स्त्रीवेद, पुरुषवेद अने नपुसकवेद ए त्रणे जुदा जुदा गणीए तो नव भेद थाय छे]. मोहनी कर्मना कुल २८ भेद थया. (८–११).

*संजवलन–थोडा वखतनुं. जेम पाणीमां लींटी दोरी ते थोडा वखतमां भेगी थइ जाय छे तेम संजलना क्रोध, मान, माया, लोभ थोडा वखत माटेना होय छे.

नेरइय तिरिरखाउ मणुस्साउ तहेवय । देवाउय चउथ्थंतु आउ कम्मं चउव्विहं ॥ १२ ॥ नाम कम्मतु दुविहं सुह मंसुहच आहिय। सुहस्सउ बहूभेया एमेव असुहस्सवि ॥१३॥ गोयं कम्मं दुविह उच्च नीयंच आहियं । उच्च अठ्ठ विह होइ एवनीयापि आहियं ॥ १४ ॥ दाणे लाभेय भोगेय उवभोगे वीरिए तहा । पचविह मतरायं समासेण वियाहियं ॥१५॥

[५] आयुःकर्म चार प्रकारनां छे :—नर्क, तिर्यंच, मनुष्य अने देवता. [१२]* (६) नाम कर्म बे प्रकारनां छे :–[१] शुभ-१ नाम-कर्म, [२] अशुभ-नाम-कर्म. शुभ-नाम कर्मना अनेक (सामान्य रीते ३७) भेद, अने अशुभ नाम-कर्मना पण अनेक (सामान्य रीते ३४) भेद कह्या छे [१३]. (७) गोत्र-कर्म बे प्रकारनां छे :–[१] उच्च-गोत्र-कर्म, [२] नीच-गोत्र-कर्म. उच्च गोत्रना आठ भेद छे तेमज निच गोत्रना पण आठ भेद छे.२ [१४]. [८] अंतराय-कर्म पांच प्रकारना छे :–[१]दान-अंतराय-कर्म, [२]लाभ-अंतराय कर्म, (३) भोग-अंतराय-कर्म, [४] उपभोग-अंतराय-कर्म, [५] वीर्य-अंतराय-कर्म.३[१५].

*महा आरंभ करवाथी, महा परिग्रहथी, मांस मदीरा वापरवाथी, पंचेन्द्रि जीवनो वध करवाथी नारकीनु आयुष्य बंधाय छे. कपट करवाथी, माया जाळ पाथरवाथी, जुठ्ठ बोलवाथी, जुठां तोल माप राखवाथी, खोटां लेख लखाण उभा करवाथी तिर्यंचनुं आयुष्य बंधाय छे भद्रीक प्रकृतिथी, विनयवंत स्वभावथी, पर जीवनी दया राखवाथी अने मत्सर भावनो त्याग करवाथी मनुष्यनु आयुष्य बंधाय छे. सराग संयमथी, संयमा संयमथी, बाळ तपश्चर्याथी, अकाम निर्जराथी देवतानु आयुष्य बंधाय छे. १ काया, भाषा अने भावना सरळताथी शुभनाम कर्म बंधाय छे. २ जाती, कूळ, बळ, रुप, तप, श्रुत, लाभ अने सत्ता. ३बधी जोगवाइ छता आ कर्मने प्रभावे भोगवी शकातु नथी.प्रो. जेकोबीना शब्दो सत्यछे के–The Karman in question brings about an obstruction to the enjoyment &c though all other circumstances be favourable अनाज वीगेरे एक वखत भोगवाय ते भोग अने वस्त्रादि वीगेरे अनेक वखत भोगवाय ते उपभोग.

एयाओ मूल पयडीओ उत्तराओग आहिया । पएसग्गं खित्त कालेय भावंता दुत्तरं सुण ॥ १६ ॥ सव्वेसिं चेव कम्माण पएसग्ग मणतगं । गठियसत्ताईयं अतो सिद्धाण आहिय ॥१७॥ सव्व जीवाण कम्मतु संगहे छद्दिसा गय । सव्वेसुवि पएसेसु सव्व सव्वेण बद्धग ॥१८॥ उदहिसरि नामाणं तीसइ कोडिकोडीओ । उक्कोसिया ठिई होइ अतोमुहुत्त जहन्निया ॥१९॥ आवरणिज्जाण दुन्हपि वेयणिज्जे तहेवय । अंतराएय कम्मंमि ठिई एसा वियाहिया॥२०॥ उदहीसरिस नामाण सत्तर कोडिकोडीओ । मोहणिज्जस्स उक्कोसा अतो मुहुत्त जहन्निया॥२१॥ तित्तीस सागरोवम उक्कोसेण वियाहिया । ठिई आउकम्मस्स अतोमुहुत्त जहन्निया ॥२२॥

ए प्रमाणे आठ मूळ प्रकृति अने श्रुत ज्ञानावरणीयादि उत्तर प्रकृति कही. (अर्थात कर्मना प्रकार अने तेना भेद कह्या). हवे तेना प्रदेशाग्र, क्षेत्र, काळ अने भावना स्वरूप कहुं छुं ते सांभळो. [१६]. (द्रव्यथी) प्रत्येक कर्मना प्रदेशाग्र [परमाणुं] अनंत छे. तेनी संख्या (राग-द्वेषादि) गांठमां गठायेला [अभव्य]जीवोना करता अनत गणी वधारे छे, परंतु सिद्ध जीवोना करतां (अनतमे भागे) ओछी छे. [१७]. (क्षेत्रथी) कर्म सर्व जीवोने छए दिशामां बाधी लेछे अने कर्म आत्म-प्रदेशने सर्वांशे (दूध-पाणीनी पेठे) बधाय छे. [१८]. (काळथी) बन्ने आवरणीय (अर्थात ज्ञानावरणीय अने दर्शनावरणीय) तेमज वेदनीय अने अतराय ए चारे कर्मनी उत्कृष्ट स्थिति त्रीस* कोडाकोडी सागरोपमनी अने तेमनी जघन्य [ओछामां ओछी] स्थिति अत मुहूर्त्तनी [बे घडीथी माठेरी] होय छे. (१९-२०). मोहनीय कर्मथी उत्कृष्ट स्थिति सित्तेर कोडानकोडी सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति अंत-मुहूर्त्तनी होय छे. (२१). आयुः कर्मनी उत्कृष्ट स्थिति तेत्रीस कोडानकोडी सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति अंत मुहूर्त्तनी होय छे. [२२].

*१०००००००००००००००० सागरोपम.

उदहिसरिस नामाण वीसइ कोडिकोडीओ । नाम गोयाण उक्कोसा अठ मुहुत्ता जहन्निया ॥ २३ ॥ सिद्धाणणंत भागोय अणुभागा हवंतिओ । सव्वे सुवि पएसग्ग सव्वजीवे सइच्छियं ॥ २४ ॥ तम्हा एएसिं कम्माणं अणुभागे वियाणिया । एएसिं सवरे चेव खवणेय जए बुहे त्तिबेमि ॥२५॥

॥ इति कम्मप्पगडीय नाम झयण सम्मत्तं ॥ ३३ ॥

अध्ययन ३४. लेश्या विषे.

लेस झयणं पवख्खामि आणुपुव्वि जहक्कम । छन्हपि कम्म लेसाणं अणुभावे सुणेहमे ॥१॥

नाम अने गोत्र कर्मनी उत्कृष्ट स्थिति वीश कोटानकोटी सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति आठ मुहूर्त्तनी होय छे. (२३). [भावथी] सिद्ध अनंत छे अने कर्मना अनुभाग (भेद) पण अनंत छे. अने आ सर्व अनुभागने विषे प्रदेशाग्र [परमाणुओ] सर्व जीव करता अनंतगणा छे (२४). एटला माटे उपर कहेला आठ कर्मना अनुभागने संसारना कारणरूप जाणीने पंडितोए तेनो क्षय करवानो यत्न करवो. [२५]. आ प्रमाणे सुधर्मा स्वामी जंबु स्वामीने कहेछे.

* तेत्रीसमुं अध्ययन संपूर्ण. *

अध्ययन ३४

हवे लेश्या* संबंधी अध्ययन अनुक्रमे कहु छुं कर्मथी उत्पन्न थती छ लेश्यानुं स्वरुपादि कहुं छुं ते सांभळो. (१).

---

* Different conditions produced in the soul by the influence of different Karman.

नामाइं वन्न रस गध फास परिणाम लक्खणं। ठाणं ठिइं गइं चाउं लेसाणंतु सुणेहमे ॥२॥ किन्हा नीला काऊ तेऊ पम्हा तहेवय। सुक्कलेसाय छट्ठाय नामाइतु जहक्कमं ॥३॥ जीमूय निद्ध सकासा गवल रिट्ठ गसन्निभा। खजं जण नयण निभा किन्ह लेसाओ वन्नओ ॥ ४ ॥ नीला सोग सकासा चास पिच्छ सम प्पभा। वेरुलिय निद्ध सकासा नील लेसाओ वन्नओ ॥ ५ ॥ अयसीपुष्फ संकासा कोइल छद सन्निभा। पारेवय गीव निभा काउ लेसाओ वन्नओ ॥६॥ हिंगुलयधाउ सकासा तरुणा इच्च सन्निभा। सुय तुंड पईव निभा तेउ लेसाओ वन्नओ ॥७॥ हरियाल भेय सकासा हलिद्दा भेय सन्निभा। सणासण कुसम निभा पम्ह लेसाओ वन्नओ ॥८॥

लेश्याना [१] नाम, [२] वर्ण, [३] रस, [४] गध, [५] स्पर्श, [६] परिणाम, [७] लक्षण, [८] स्थान, [९] स्थिति, [१०] गति अने [११] आयुष्य साभळो. (२) १ लेश्याना अनुक्रमे नाम :—[१] कृष्ण-लेश्या, [२] नील-लेश्या, [३] कापोत-लेश्या, [४] तेजो-लेश्या, [५] पद्म-लेश्या अने [६] शुक्ल-लेश्या.* (३).[१]कृष्ण-लेश्यानो वर्ण (रंग) जीमूत एटले काळा मेघ जेवो पाडाना शींगडा जेवो, अरीठाना फळ जेवो अथवा तो खंज पक्षीनी आखनी कीकी जेवो होय छे (४) नील लेश्यानो वर्ण नील-अशोक वृक्ष जेवो, नीलचास पक्षीनी पांख जेवो अथवा तो वैडूर्य [नील मणि] जेवो होय छे. (५). कापोत-लेश्यानो वर्ण अलसीना फूल जेवो, कोयलनी पांख जेवो अथवा तो पारेवाना डोक जेवो होय छे. (६). तेजो-लेश्यानो वर्ण हिंगळा जेवो, उगता सूर्यना जेवो, अथवा तो पोपटनी चाच जेवो होय छे (७). पद्म लेश्यानो वर्ण हरतालना भूका जेवो, हळदरना भूका जेवो अथवा तो शण अने अशणना फुल जेवो होय छे (८)

* तेना रंग Black, Blué, Grey, Red, Yellow and white

सखक कुद सकासा खीर पूर समप्पभा । रयय हार संकासा सुक्क लेसाओ वन्नओ ॥९॥ जह कडुय तुंबग रसो निंब रसो कडुय रोहिणि रसोवा । इत्तोउ अणत गुणो। रसोउ किण्हाए नायव्वो ॥ १० ॥ जह तिक्कडुयरस रसो तिक्खो जह हथ्थिपिप्पली एवा । इत्तोवि अणत गुणो रसोउ नीलाए नायव्वो ॥ ११ ॥ जह तरुण अवग रसो तुंवर कविठ्ठरस वावि जारिसओ । इत्तोवि अणत गुणो रसोउ काऊण नायव्वो ॥१२॥ जह परिणयंबग रसो पक्क कविठ्ठरसवावि जारिसओ। इत्तोवि अणत गुणो रसोउ तेऊए नायव्वो ॥१३॥ वर वारुणीएव रसो विविहाणव आसवाण जारिसओ । महु मेरगरसव रसो इत्तो पम्हाए परएण ॥ १४ ॥ खज्जूर मुद्दिय रसो खीर रसो खंड सक्कर रसोवा । इत्तोवि अणत गुणो रसोउ सुक्काए नायव्वो ॥१५॥

शुक्ल-लेश्यानो रंग शख जेवो, अक-मणि [शुक्र मणि] जेवो, कुन्द वृक्षना फुल जेवो, दूधनी धारा जेवो, रुपा जेवो अथवा मुक्ताहार [मोतीनी माळा] जेवो होय छे. (९). ३ कृष्ण-लेश्यानो रस कडवी तुवडीना, कडवा लींबडाना अथवा तो रोहिणीना स्वाद करतां अनंत गणो वधारे कडवो होय छे. [१०]. नील-लेश्यानो रस त्रिकटुक [सुठ, मरी अने पीपर]ना अने हस्ति-पिप्पिली [गज-पीपर]ना स्वाद करतां अनंत गणो तीक्ष्ण [तीखो] होय छे. [११]. कापोत-लेश्यानो रस काची केरीना अने काचा कपित्थ (कोठा)ना स्वाद करतां अनत गणो खाटो होयछे. [१२]. तेजो-लेश्यानो रस पाकी केरीना अने पक कपित्थ[पाका कोठा]ना स्वाद करतां अनंत गणो [खट] मीठो होय छे. [१३]. पद्म-लेश्यानो रस उत्तम मदिराना, विविध प्रकारना आसवना, मधु मद्यना अने मेरकना स्वाद करतां अनंत गणो [खट] मीठो होय छे. [१४]. शुक्ल-लेश्यानो रस खजूर, द्राक्ष, दूध, खाड अने साकरना स्वाद करतां अनंत गणो मधुर [मीठो] होय छे. (१५).

जह गोम डस्स गंधो सुणग मडस्सव जहा अहिमडस्स । इत्तोवि अणत गुणो लेसाणं अप्पसथ्थाणं ॥ १६ ॥ जह सुरहि कुसुम गंधो गंध वासाण पिस्स माणाण । इत्तोवि अणत गुणो पसथ्थ लेसाण तिन्हंपि ॥ १७ ॥ जह करगयस्स फासो गोजिम्भा एव सागपत्ताण । इत्तोवि अणत गुणो लेसाण अप्पसथ्थाण ॥ १८ ॥ जह बूरस्सव फासो नव णीयस्सव सरीस कुसुमाणं । इत्तोवि अणत गुणो पसथ्थ लेसाण तिन्हंपि ॥ १९ ॥ तिविहोव नवविहोवा सत्तावीसइ विहे कूमीउवा । दुसओ तेयालोवा लेसाणं होइ परिणामो ॥२०॥

४. अप्रशस्त (कनिष्ठ) लेश्या अर्थात कृष्ण, नील अने कापोत लेश्यानी गंध गाय, कूतरा अने सर्पनां (सडेलां) कलेवरनी दुर्गंध करतां अनंत गणी वधारे खराब होय छे. [१६]. प्रशस्त [उत्तम] लेश्या अर्थात तेजो, पद्म अने शुक्ल लेश्यानी गंध सुरभि कुसुमनी अने रगतां [पीसातां] वसाणां (कपुर-कस्तुरी वगेरे)नी सुगंध करता अनंत गणी वधारे सारी होय छे.(१७). अप्रशस्त अर्थात कृष्ण नील अने कापोत लेश्यानो स्पर्श करवतना,गायनी जीभना अथवा तो साग वृक्षना पाद्डाना स्पर्श करतां अनंत गणो वधारे कठोर होय छे. [१८]. प्रशस्त अर्थात तेजो, पद्म अने शुक्ल लेश्यानो स्पर्श कपासना फुल, माखण यातो शिरीषनां फुलना स्पर्श करतां अनंत गणो वधारे कोमळ होय छे. (१९). ६ लेश्याना परिणाम त्रण प्रकारना छे :-[१] जघन्य (कनिष्ठ); [२] मध्यम अने [३] उत्कृष्ट ए प्रत्येकना उपर प्रमाणे त्रण त्रण भेद पाडवाथी नव, एना त्रण त्रण भेद पाडवाथी सत्तावीस, एना त्रण त्रण भेद पाडवाथी एकाशी अने एना त्रण त्रण भेद पाडवाथी कुल २४३ परिणाम थाय छे. (२०).

पचासन्न प्पवत्तो तीहिं अगुत्तोछ्सुअविरओय । तिव्वारम परिणओ खुद्दो साहसिओ नरो ॥२१॥निद्धंधस परिणामो निस्संसो अजिइंदिओ । एय जोग समाउत्तो किन्ह लेसंतु परिणमे ॥२२॥ ईसा अमरिस अतवो अविज्ज माया अहिरियाय । गिद्धि पउसेयसढे पमत्ते रसलोलुए ॥ २३ ॥ सायं गवेसे यारंभ अविरओ खुद्दो साहसिओ नरो । एय जोग समाउत्तो नील लेसतु परिणमे ॥ २४ ॥ वंके वंकसमायारे नियडिल्ले अणुज्जुए । पलिउंचगओ विहिए मिच्छदिट्ठी अणारिए ॥ २५ ॥ उप्फालग दुट्ठवाईयतेणेया विय मच्छरी । एय जोग समाउत्तो काउ लेसतु परिणमे ॥२६॥

---

७ लेश्याना लक्षण :—पांच आश्रवे करी प्रमादी, त्रण गुप्तिथी मोकळो, छकायनी रक्षाथी रहित, क्रूर कार्यनो करनार, सर्वेनु अहित इच्छनार, अविचारी कार्यनो करनार, निद्धंस परिणाम वाळो (आ लोकादिना कष्ट, दुःखनी बीक रहित), जीवहिंसाथी न डरनार, अने इन्द्रियोने न जीतनार, एवो मनुष्य कृष्ण लेश्यावाळो गणाय. [२१-२२] इर्षा, कदाग्रह, तप प्रति अभाव, अविद्या, कपट, निर्लज्जता, लंपटता, द्वेष, शठता, प्रमाद,रस-लोलुपता, एटला दुर्गुणे करी सहित, अने वळी इन्द्रिओना सुखनो अभिलाषी, आरंभथी अविरत, क्षुद्र अने साहसिक, एवो मनुष्य नील-लेश्या वाळो गणाय. (२३-२४). जे मनुष्य वचन अने आचारमा वक्र [अप्रमाणिक] होय, कपटथी वर्त्तनो होय, असरल (अप्रमाणिक) होय, अन्यना उपर आक्रोश करनार होय, राग-द्वेषथी दुष्ट बोलनार होय, अनाचारी होय, सम्यक्ना लक्षण रहित [अनार्य] होय, बीजाने दुःख उत्पन्न थाय एवु बोलनार होय, चोर होय, अने अन्यनी संपत्ति जेनाथी देखी न खमाय, एवो मनुष्य कापोत लेश्या वाळो गणाय. [२५-२६].

नीयावत्ती अचवले अमाई अकुतूहले । विणीय विणए दंते जोगवं उवहाणवं ॥२७॥ पियधम्मे दढधम्मे वज्जभीरू हिएसए । एय जोग समाउत्तो तेउ लेसतु परिणमे ॥ २८ ॥ पयणु कोह माणेय माया लोभेय पयणुए । पसतचित्ते दंतप्पा जोगव उवहाणवं ॥२९॥ तहा पयणु वाईय उवसतेजि इंदिए । एय जोग समाउत्तो पम्हलेसतु परिणमे ॥३०॥ अट्ट रुद्दाणि वज्जित्ता धम्म सुक्काइ झायए । पसतचित्ते दंतप्पा समिए गुत्तेय गुत्तिसु ॥३१॥ सरागे वीयरागेवा उवसते जिइदिए । एय जोग समाउत्तो सुक्क लेसतु परिणमे ॥३२॥ असखिज्जाणो सप्पिणीण उसप्पिणीण जेसमया । संखाईया लोगा लेसाणं हुवंति ठाणाइं ॥३३॥

जे मनुष्य नम्रता युक्त, अचपल, माया अने कुतूहल रहित, विनीत, इन्द्रियोने दमनार, योगवान अने उपधानवान होय, धर्म जेने प्रिय होय, धर्ममां जे दृढ होय, पापथी जे डरतो होय अने मोक्षाभिलाषी होय, एवो मनुष्य तेजो-लेश्या वाळो गणाय. (२७-२८). जे मनुष्यने क्रोध, मान, माया अने लोभ बहु ओछां होय, जेनुं चित्त शान्त होय, जे आत्माने दमनार होय, जे योग तथा उपधानवान होय, तथा जे स्वल्प-भाषी [थोडु बोलनार] अने शान्त होय, अने जेणे इन्द्रियोने वश करी होय, एवो मनुष्य पद्म-लेश्या वाळो गणाय. [२९-३०]. जे मनुष्य आर्त्तध्यान अने रौद्रध्यान तजीने धर्म ध्यान अने शुक्ल ध्यान धरनार होय, जेनु चित्त शान्त होय, जे आत्माने दमनार होय, जे पांच समिति अने त्रण गुप्ति युक्त होय, जे सराग अथवा राग रहित होय, शान्त होय, अने जेणे इन्द्रियोने वश करी होय, एवो मनुष्य शुक्ल लेश्या वाळो गणाय. (३१-३२). ८ लेश्याना स्थान :—असंख्य अवसर्पिणी अने उत्सर्पिणीना जेटला समय अने असंख्याता लोक-आकाशना जेटला प्रदेश, तेटलां (शुभ-अशुभ) स्थान लेश्यानां गणवा [३३].

मुहुत्तद्धतु जहन्ना तित्तीस सागरा मुहुत्तहिया । उक्कोसा होइ ठिई नायव्वा किन्ह लेसाए ॥३४॥ मुहुत्तद्धतु जहन्ना दस उदही पलीय मसखभागमब्भहिया । उक्कोसा होइ ठिई नायव्वा नीललेसाए ॥ ३५ ॥ मुहुत्तद्धतु जहन्ना तिन्नुदही पलिय मसखभाग मब्भहिया । उक्कोसा होइ ठिई नायव्वा काउ लेसाए ॥ ३६ ॥ मुहुत्तध्धतु जहन्ना दुन्नुदही पलिय मसखभाग मब्भहिया । उक्कोसा होइ ठिई नायव्वा तेउ लेसाए ॥३७॥ मुहुध्धतु जहन्ना दस उदही हुति मुहुत्त मब्भहिया । उक्कोसा होइ ठिई नायव्वा पम्ह लेसाए ॥३८॥ मुहुत्तध्धतु जहन्ना तित्तीसं सागरा मुहुत्तहिया । उक्कोसा होइ ठिई नायव्वा सुक्क लेसाए ॥३९॥ एमा खलु लेसाणओहेणं ठिईओ वन्नियाहोइ । चउसुवि गईसुइत्तो लेसाण ठिईओ वोच्छामि ॥४०॥

° लेश्यानी स्थिति :–कृष्ण लेश्यानी जघन्य [टुंकामा टुंकी] स्थिति अर्धो मुहूर्त्तनी (बे घडी माहेरी), अने उत्कृष्ट स्थिति तेत्रीश सागरोपम अने एक मुहूर्त्तनी जाणवी. [३४]. नील-लेश्यानी जघन्य स्थिति अर्धो मुहूर्त्तनी अने उत्कृष्ट स्थिति दश सागरोपम अने पल्योपमना असख्यातमा भागथी अधिक जाणवी (३५). कापोत-लेश्यानी जघन्य स्थिति अर्धो मुहूर्त्तनी अने उत्कृष्ट स्थिति त्रण सागरोपम अने पल्योपमना असख्यातमा भागथी अधिक जाणवी.(३६) तेजो-लेश्यानी जघन्य स्थिति अर्धो मुहूर्त्तनी अने उत्कृष्ट स्थिति बे सागरोपम अने पल्योपमना असख्यातमा भागथी अधिक जाणवी. [३७]. पद्म-लेश्यानी जघन्य स्थिति अर्धो मुहूर्त्तनी अने उत्कृष्ट स्थिति दश सागरोपम अने एक मुहूर्त्तनी जाणवी. (३८). शुक्ल-लेश्यानी जघन्य स्थिति अर्धो मुहूर्त्तनी अने उत्कृष्ट स्थिति तेत्रीश सागरोपम अने एक मुहूर्त्तनी जाणवी. (३९). लेश्यानी सामान्य प्रकारनी स्थिति उपर प्रमाणे वर्णवी छे. हवे चार गति (नारकी, तिर्यंच, मनुष्य अने देवता)ने विषे लेश्यानी स्थिति यथास्थित वर्णवु छु. [४०].

दस वास सहस्साइं काऊए ठिई जहन्नियाहोइ । तिन्नु दही पलिओवमअसंखभागच्च उक्कोसा ॥४१॥ तिन्नु दही पलिओवम असंखभागोय जहन्ननीलठिई । दस उदहीपलिओवमअसंखभागच्च उक्कोसा ॥४२॥ दसउदही पलिओवमअसंखभाग जहन्निया होइ।तित्तीस सागराओ उक्कोसा होइ किण्हाए॥४३॥एसा नेरइयाण लेसाण ठिईउ वन्निया होइ । तेण परं वोच्छामि तिरिय मणुयाण देवाणं॥४४॥ अंतोमुहुत्तमद्धा लेसाण ठिई जहिं जहिं जाओ । तिरियाण नराणच्च वज्जिता केवलं लेसं ॥ ४५ ॥ मुहुत्तद्धंतु जहन्ना उक्कोसा होइ पुव्वकोडीओ । नवहिं वरिसेहि ऊणा ना यव्वा सुक्क लेसाए ॥ ४६ ॥ एसा तिरिय नराण लेसाण ठिईओ वन्निया होइ । तेण परं वोच्छामि लेसाण ठिईउ देवाणं ॥ ४७ ॥

कापोत-लेश्यानी [नारकी जीव नरकोनी] जघन्य स्थिति दश हजार वर्षनी अने उत्कृष्ट स्थिति त्रण सागरोपम अने पल्योपमना असंख्यातमा भागनी जाणवी (४१). नील लेश्यानी (नारकी जीव नरकोनी) जघन्य स्थिति त्रण सागरोपम अने पल्योपमना असंख्यातमा भागनी, अने उत्कृष्ट स्थिति दश सागरोपम अने पल्योपमना असंख्यातमा भागनी जाणवी. [४२]. कृष्ण-लेश्यानी (नारकी जीव नरकोनी) जघन्य स्थिति दश सागरोपम अने पल्योपमना असंख्यातमा भागनी अने उत्कृष्ट स्थिति तेत्रीस सागरोपमनी जाणवी. [४३] नारकी जीवनी लेश्यानी (जघन्य अने उत्कृष्ट) स्थिति उपर वर्णवी छे. हवे तिर्यंच, मनुष्य अने देवतानी लेश्यानी स्थिति वर्णवुं छुं (४४). शुक्ल लेश्या सिवाय बाकीनी कोइ पण लेश्यानी तिर्यंच अने मनुष्यनी स्थिति अंतर्मुहूर्तनी जाणवी. [४५] शुक्ल लेश्यानी (तिर्यंच अने मनुष्यनी) जघन्य स्थिति अर्धा मुहूर्तनी अने उत्कृष्ट स्थिति पूर्व-कोटि वर्षमां नव वर्ष ओछां जाणवी (४६). तिर्यंच अने मनुष्यनी लेश्यानी स्थिति उपर वर्णवी छे. हवे देवतानी लेश्यानी स्थिति वर्णवुं छुं. (४७).

दस वास सहस्साइ किन्हाए ठिई जहन्निया होइ। पलिय मसंखिज्जइमो उक्कोसा होइ किन्हाए॥४८॥ जाकिन्हाए ठिई खलु उक्कोसा साउ समय मब्भहिया। जहन्नेणं नीलाए पलिय मसखच उक्कोसा ॥४९॥ जा नीलाए ठिई खलु उक्कोसा साउ समय मब्भहिया। जहन्नेण काऊए पलिय मसखंच उक्कोसा ॥५०॥ तेण पर पोच्छामी तेऊ लेसा जहा सुर गणाणं। भवणवइ वाणमतर जो इस वेमाणिवाणच ॥५१॥ पलिओवमं जहन्न उक्कोसा सागराओ दुन्निहिया पलिय मसखिज्जेण होइ भागेण तेऊए ॥ ५२ ॥ दस वास सहस्साइ तेऊए ठिई जहन्निया होइ। दुन्नुदही पलिओवम असख भागच उक्कोसा ॥ ५३ ॥

कृष्ण लेश्यानी (देवतानी) जघन्य स्थिति दश हजार वर्षनी अने उत्कृष्ट स्थिति पल्योपमना असख्यातमा भागनी जाणवी (४८) नील-लेश्यानी [देवतानी] जघन्य स्थिति कृष्ण लेश्यानी उत्कृष्ट स्थिति करता एक समय वधारेनी, अने उत्कृष्ट स्थिति पल्योपमना असंख्यातमा (म्होटा) भागनी जाणवी. [४९] कापोत लेश्यानी [देवतानी] जघन्य स्थिति नील लेश्यानी उत्कृष्ट स्थिति करतां एक समय वधारेनी, अने उत्कृष्ट स्थिति पल्योपमना असंख्यातमा [एथी म्होटा] भागनी जाणवी.(५०). भुवनपति, व्यन्तर, ज्योतिष्क अने वैमानिक देवताना समुहनी तेजो-लेश्यानी स्थिति हवे वर्णवुं छुं.[५१]. तेजो लेश्यानी (सामान्य देवतानी) जघन्य स्थिति एक पल्योपमनी अने उत्कृष्ट स्थिति बे सागरोपम अने पल्योपमना असंख्यातमा भागनी जाणवी. [५२]. तेजो लेश्यानी (भुवनपति आदि-देवतानी) जघन्य स्थिति दश हजार वर्षनी अने उत्कृष्ट स्थिति बे सागरोपम-अने-पल्योपमना असंख्यातमा भागनी जाणवी. (५३)*

*नोट:—गाथा ३९ थी ५३ सुधीमां ज्यां ज्यां "पल्योपमना असख्यातमा भागनी" लखेलु छे त्यां त्यां प्रो. जेकोबीए एनो शब्दार्थ करेलो छे के "पल्योपम अने असख्येयना एक भाग जेटली".

जा तेऊए ठिई खलु उक्कोसा साउ समय मब्भहिया । जहन्नेण पम्हाए दसउ मुहुत्ता हियाइ उक्कोसा ॥ ५४ ॥ जा पम्हाए ठिई खलु उक्कोसा साउ समय मब्भहिया । जहन्नेण सुक्काए तित्तीस मुहुत्त मब्भहिया ॥ ५५ ॥ किण्हा नीला काऊ तिन्निवि एयाओ अहम्म लेसाओ । एयाहिं तिहिंवि जीवो दुग्गइं उववज्जइ ॥ ५६ ॥ तेऊ पम्हा सुक्का तिन्निवि एयाओ धम्म लेसाओ । एयाहिं तिहिंवि जीवो सुग्गइं उववज्जइ ॥ ५७ ॥ लेसाहिं सव्वाहिं पढमे समयम्मि परिणयाहिंतु । नहु कस्सइ उववाओ परभवे अत्थि जीवस्स ॥५८॥ लेसाहिं सव्वाहिं चरिमे समयम्मि परिणयाहिंतु । नहु कस्सवि उववाओ परभवे अत्थि जीवस्स ॥ ५९ ॥ अंतोमुहुत्तमि गए अंतोमुहुत्तमि सेसएचेव लेसाहिं परिणयाहिं जीवागच्छंति परलोय ॥ ६० ॥

पद्म लेश्यानी (देवतानी) जघन्य स्थिति तेजो लेश्यानी उत्कृष्ट स्थिति करता एक समय वधारेनी अने उत्कृष्ट स्थिति *दश सागरोपम अने एक मुहूर्तनी जाणवी. [५४]. शुक्ल लेश्यानी (देवतानी) जघन्य स्थिति पद्म लेश्यानी उत्कृष्ट स्थिति करता एक समय वधारेनी अने उत्कृष्ट स्थिति *तेत्रीश सागरोपम अने एक मुहूर्तनी जाणवी. (५५). १० लेश्यानी गतिः—कृष्ण, नील अने कापोत ए त्रण अधर्म लेश्याओ छे. ए त्रण लेश्याए करीने जीव दुर्गतिने पामे छे (५६). तेजो, पद्म अने शुक्ल ए त्रण धर्म लेश्याओ छे ए त्रण लेश्याए करीने जीव सद्गतिने पामे छे.(५७). ११ लेश्यानुं आयुष्य—आ सर्व लेश्याओ जीवने प्राप्त थाय ते ना प्रथम समयो विषे उपजवापणुं रहेतुं नथी.(५८) आ सर्व लेश्याओ जीवने प्राप्त थाय तेना चरम [अंतम] समयने विषे उपजवापणुं रहेतुं नथी. [५९] लेश्यानुं अंतर्मुहूर्त चाल्युं होय अने तेनो शेष भाग बाकी रह्यो होय ते समये लेश्याना परिणामना प्रमाणमां जीव नवो जन्म प्राप्त करे छे. [६०]

* नोट ?—गाथा ५४ अने ५५ मां " दश सागरोपम अने एक मुहूर्तनी " अने " तेत्रीश सागरोपम अने एक मुहूर्तनी " लख्युं छे तेने बदले घणा टीकाकारो एवो अर्थ करे छे के " दश मुहूर्त वधारेनी " अने " तेत्रीश मुहूर्त वधारेनी ".

तम्हा एयासिं लेसाण अणुभावे वियाणिया । अप्पसथ्थ ओवज्जित्ता पसथ्थाओ अहिठ्ठए मुणित्तिबेमि ॥ ६१ ॥

⊛ ॥ इति श्री लेसज्झयण सम्मत्त ॥ ३४ ॥ ⊛

अध्ययन ३५. अणगार मार्ग (साधुनो धर्म).

सुणेहमे एगग्ग मणे मग्ग बुद्धेहिं देसियं । जमाय रतो भिख्खू दुख्खाणत करो भवे ॥ १ ॥ गिहिवास परिच्चज्ज पवज्जा मस्सिए मुणी । इम सगे वियाणिज्जा जेहि सज्जति माणवा ॥२॥ तहेवहिंस अलियं चोज्जा अव्वभसेवण । इच्छा कामचलोहच्च सजओ परिवज्जए ॥ ३ ॥ मणोहरचित्त घर मल्ल धूवेण वासियं । सकवाड पडुरुल्लोय मणसावि न पथ्थए ॥४॥

तेटला माटे साधु पुरुषोए सर्व लेश्याना अनुभाग जाणीने अप्रशस्त [कृष्ण, नील, कापोत] लेश्याओनो त्याग करवो अने प्रशस्त (तेजो, पद्म अने शुक्ल) लेश्याओ प्राप्त करवी. [६१]. आ प्रमाणे सुधर्मा स्वामी जबु स्वामीने कहे छे.

॥ अध्ययन चोत्रीसमु सपुर्ण. ॥

॥ अध्ययन ३५ ॥

जे मार्गे चालवाथी भिक्षुक (साधु) सर्व दुःखनो अत आणी शके छे, एवो श्री बुद्ध [तीर्थंकर] देखाडेलो मार्ग हु तमने कही संभळावु छु ते श्रवण करो. (१). गृहवासनो परित्याग करीने अने प्रव्रज्या (दिक्षा) धारण करीने मुनिए [पुत्र कलत्रादिनो] जे सग मनुष्यने बधन कर्ता गणाय छे तेनो त्याग करवो. (२). तेमज वळी मुनिए हिसा, मृषावाद, चोरी [अदत्तादान], विषयनु सेववु [मैथुन-सेवन], इच्छा, काम-भोग अने लोभनो परित्याग करवो. (३). चित्र कामथी सुशोभित करेला, पुष्प अने धूपनी सुगधवाळा-कमाड (कपाट) वाळा, अने उजळा उलेचवाळा मनोहर मदिर [उपाश्रय]नी साधुए मनथी पण इच्छा करवी नहि. (४).

इंदियाणिउ भिक्खूरसंतानिसमि उवस्सए। दुक्कराइ निवारेउ काम राग विवड्ढणे ॥ ५ ॥ सुसाणे सुन्न गारेवा रुक्खमूलेव एगगो। पइरिके पर कडेवा वास तथ्या भिरोयए ॥ ६ ॥ फासुयंमि अणाबाहे इत्थीहिं अणभिदुए। तथ्य संकप्पए वासं भिक्खू परम संजए ॥ ७ ॥ न सयं गिहाइ कुव्वेज्जानेव अन्नेहिं कारए। गिह कम्म समारंभे भूयाणदिस्सए वहो ॥८॥ तसाणं थावराणच सुहुमाणं बायराणय। तम्हागिह समारम्भं संजओ परिवज्जए ॥९॥ तहेव भत्त पाणेसु पयणे पयावणेसुय। पाणभूय दयट्ठाए नपए नपया वए॥१०॥ जल धन्न निस्सिया जीवा पुढ़वी कट्ठ निस्सिया। हम्माति भत्तपाणेसु तम्हा भिक्खू नपयावए ॥११॥

कारण के काम रागने वधारनार एवा मनोहर उपाश्रयमां पोतानी इन्द्रिओने वश राखवानुं काम साधुने मुश्केल थइ पडे छे. (५). स्मशानमां, सूना घरमां, झाडना थड तळे, एकान्त (स्त्री, पशु, पंडक रहित) स्थळमां, अथवा तो अन्यने माटे बंधावेल मकानमां साधुए रहेवुं जोइए. (६). संयम पाळनार साधुए जीव जंतु रहित, आत्माने अबाध [स्वाध्यायमां अंतराय न आवे एवा], अने स्त्री रहित स्थळमां रहेवुं. [७]* साधुए पोते मकान बांधवुं नहि तेमज बीजा पासे बंधाववुं नहि, कारण के घर बांधवामां त्रस अने स्थावर तेमज सुक्ष्म अने बादर जीवनी हिंसा थाय छे. माटे साधुए घर बांधवाना आरंभ समारंभथी दूर रहेवुं. (८-९). तेमज वळी साधुए पोते आहार-पाणी रांधवुं नहि तेमज बीजा पासे रंधाववुं नहि. त्रस अने स्थावर जीवनी दया जाणीने साधुए पोते रांधवुं नहि, अन्य पासे रंधाववुं नहि. (१०]. जळ, धान्य, पृथ्वी अने काष्टने विषे रहेता जीवो आहार-पाणीथी [पकाववाथी] हणाय छे, तेटला माटे साधुए रांधवुं-रंधाववुं नहि. [११].

*मो. जेकोबी आ गाथानो एवो अर्थ करेछे के "संयमवान साधुए स्वच्छ, जीव जन्तु वगरना अने स्त्री रहित स्थळमां रहेवुं.

विसप्पे सव्वओ धारे बहुपाणि विणासणे । नथ्थि जोइ समे सथ्थे तम्हा जोइ नदी वए ॥ १२ ॥ हिरन्नं जाव रूवच मणसावि नपथ्थए । समलेट्ठु कंचणे भिक्खू विरए कय विक्कए ॥ १३ ॥ किणंतो कइओ होइ विक्कणतोय वाणिओ । कय विक्कयमि वट्टतो भिक्खू न हवइ तारिसो ॥१४॥ भिक्खियव्वं नकेयव्व भिक्खुणा भिक्खुवित्तिणा । कय विक्कओ महादोसो भिक्खावित्ती सुहावहा ॥१५॥ समुयाण उछ मेसेज्जा जहा सुत्त मणिदियं। लाभा लाभंमि सतुट्ठे पिंडवायं चरे मुणी ॥१६॥ अलोले न रसे गिद्धे जिभ्भा दते अमुछ्छिए । न रसट्ठाए भुजेज्जा जवणट्ठाए महामुणी ॥१७॥ अच्चण सेवणचेव वदण पूयण तहा । इड्ढी सक्कार सम्माण मणसावि न पथ्थए ॥१८॥

अग्नि जेवु विनाशनु बीजु कोइ शस्त्र नथी, कारण के ते सर्व दिशामा पथराइने घणा जीवनो नाश करे छे. तेटला माटे साधुए अग्नि सळगाववो नहि. (१२). साधुए सोना रुपानी मनथी पण इच्छा करवी नहि काचन अने पाषाणने समान गणीने साधुए क्रयविक्रयथी [लेवा-वेचवाथी] दूर रहेवुं (१३) मूल्य आपी वस्तु लेवाथी ते ग्राहक बनेछे, अने मूल्य लइ वस्तु वेचवाथी ते वाणिओ [वेपारी] बनेछे. क्रय-विक्रय [सूत्र प्रमाणे] साधुनु लक्षण नथी. (१४) भिक्षावृत्तिथी पेट भरनारनु नाम भिक्षुक [साधु], माटे भिक्षुके [साधुए] भिक्षा मागवी जोइए, मूल्य आपीने लेवु न जोइए, क्रय-विक्रय महान दोषछे, परंतु भिक्षावृत्ति सुखने आपनारछे (१५). साधुए घणां घरना समुदायमांथी थोडी थोडी दोषरहित भिक्षा सूत्रोक्त रीते लेवी. भिक्षाना लाभालाभथी [भिक्षा मळे या न मळे तेथी] संतोष मानीने साधुए भिक्षावृत्तिने माटे फरवु जोइए. (१६). मद्य निए सरस आहारनी तीव्र अभिलाषा करवी नहि, पोतानी जीभ अने दातने वश राखवां; अने भोजनना [घी, गोळ वगेरेनो] संचय करवो [वाशी राखवां] नहि. कारणके आहार संयम निर्वाहने अर्थेछे, स्वादने माटे नथी. (१७). पुष्पवडे पूजा, आसनवडे सत्कार, वंदणा, पूजन, [वस्त्रपात्रादिनी] भेट, अथवा सत्कार अने सन्माननी साधुए मनथी पण इच्छा करवी नहि. (१८).

दव्वओ खित्तओ चेव कालओ भावओ तहा । परूवणा तेसिं भवे जीवाण मजीवाणय ॥३॥ रूविणो चेव रूवीय अजीवा दुविहा भवे । अरूवी दसहा वुत्ता रूविणोवि चउव्विहा ॥४॥ धम्मत्थिकाए तद्देसे तप्पए सेय आहिए । अहम्मे तस्स देसेय तप्पएसेय आहिए ॥ ५ ॥ आगासे तस्स देसेय तप्पएसेय आहिए । अद्धा समए चेव अरूवी दसहा भवे ॥ ६ ॥ धम्मा धम्मेय दोएए लोगमित्ता वियाहिया । लोगालोगेय आगासेसमए समयखेत्तिए ॥७॥ धम्मा धम्मागासातिन्निवि एए अणाइया । अपज्जवसिया चेव सव्वद्धतु वियाहिया ॥ ८ ॥ समएवि संतइपप्प एवमेव वियाहिए । आएसपप्प साइए सपज्जवसिएविय ॥ ९ ॥

१ [1] द्रव्य थकी २ [2] क्षेत्र थकी ३ [3] काल थकी ४ [4] भाव थकी जीव अजीवना विभाग वर्णववामा आवशे. [३] अजीव. अजीवना बे भेद छे (१) रुपी अने (२) अरुपी. अरुपीना दश प्रकार छे, अने रुपीना चार प्रकारछे. [४] अरुपी अजीवना दश प्रकार—५ [5] धर्मास्तिकाय, २ तेना देश, [6] ३ तेना प्रदेश, [7] ४ अधर्मास्तिकाय [8] ५ तेना देश, ६ तेना प्रदेश, ७ आकाशास्तिकाय [9] ८ तेना देश, ९ तेना प्रदेश, [10] १० अद्धा समय (काळ). ० [५-६] धर्मास्तिकाय अने अधर्मास्तिकाय लोक मात्रमां [11] व्याप्त छे, आकाशास्तिकाय लोक-अलोक बन्नेमां व्याप्त छे, अने काळ समय क्षेत्र [अढी द्वीप]ने विषे व्याप्त छे. [७] धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय अने आकाशास्तिकाय ए त्रणे सर्वदा आदि अने अन्त रहित छे. [८]. अने समयने जो निरंतर [12] प्रवाहरुपे गणीए तो तपण अनादि अने अनन्त छे, परंतु प्रत्येक कार्यना आरंभ अने समाप्ति रुपे गणीए तो तेने आदि अने अन्त बन्ने छे (९).

[1] Substance [2] Place [3] Time [4] Development [5] धर्मास्तिकायनो चलण सहाय गुण छे. संपूर्ण धर्मास्तिकाय होय ते तेनो स्कंध गणाय [6] स्कंधना विभाग ते देश [7] देशना विभाग ते प्रदेश. [8] तेनो स्थिर सहाय गुण छे. [9] तेनो अवकाश विकास गुण छे [10] ते अविभागी छे. तेना विभाग थइ शक्ता नथी. [11] Are co extensive [12] As a continuous flow

खधाय खधदेसाय तप्पएसा तहेवय । परमाणुणोय बोधव्वा रूविणोवि चउव्विहा ॥ १० ॥ एगत्तेणं पहुत्तेण खधाय परमाणुणो । लोएगदेसे लोएय भइयव्वातेय खित्तओ । इत्तो काल विभागतु तेसिंवोछं चउव्विहं ॥ ११ ॥ संतइंपप्प तेणाई अपज्जवसियाविय । ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसियाविय ॥ १२ ॥ असंख काल मुक्कोसं एक्को समओ जहन्नय । अजीवाणय रूवीणं ठिई एसा वियाहिया ॥ १३ ॥ अणतकाल मुक्कोस एक्कोसमओ जहन्नयं । अजीवाणय रूवीणं अतरेय वियाहियं ॥१४॥

रूपी अजीव चार प्रकारनाछे- १ पुद्गलास्तिकायनो स्कन्ध, २ तेना देश, ३ तेना प्रदेश, अने ४ १ परमाणुओ. (१०). परमाणुओने एकठा मळवानो तेमज जुदा थवानो स्वभावछे. एकठा मळे त्यारे स्कन्ध अने जुदा थाय त्यारे परमाणु कहेवाय छे. आ प्रमाणे स्कन्ध अने परमाणुओना द्रव्य संबधी भेद छे हवे क्षेत्रथी भेद कहे छे परमाणुओ आखा लोकने विषे अने स्कन्ध तेना एक देशने विषे व्यापी छे हवे हुं तेना काळ संबधी चार भेद कहु छुं. (११)[२]. स्कन्ध अने परमाणुओने निरंतर प्रवाह रूपे गणीए तो न आदि अने अन्त रहितछे. परन्तु ते नियम क्षेत्रने विषे अमुक रूप अथवा स्थिति धारण करे तो तेने आदि अने अन्त पण छे. (१२)[३]. स्कन्ध अने परमाणुओनी उत्कृष्ट स्थिति असंख्यात काळनी अने जघन्य स्थिति एक समयनी छे. (१३)[४]. अजीव रूपी पुद्गलोनुं उत्कृष्ट अंतर (आंतरो[५]) अनन्त काळनुं अने जघन्य अंतर एक समयनु छे [१४].

१ जेना एकना बे भाग न थइ शके-Which may not be divided into two parts २ बीजी गाथाओ चार पदनी छे, ज्यारे आ एकज गाथाने छ पद छे ३ आ गाथानो एवो भावार्थ समजाय छे के जो के अमुक वस्तुनो ते रूपे नाश थतो देखाय छे त्यां तेना तत्त्वोनो नाश थतो नथी अने ए सिद्धान्त विज्ञान शास्त्रीओ पण स्वीकारेछे के Matter is indestructible ४ गाथाओना अनुक्रममां टेकनीक भूलोमां तफावत छे टेकनीकमां २७०-२७१-२७२ छे. टेकनीक गाथाओ भेगी करी दीधी छे गाथा ११-१२ टेकनीक भूलोमां भेगी करी दीधी छे ५ Interruption.

वन्नओ गधओ चेव रसओ फासओ तहा । सठाणओय विन्नेओ परिणामो तेसिं पचहा ॥१५॥ वन्नओ परिणया जेउ पचहा ते पकित्तिया । किन्हा नीलाय लोहिया हालिद्दा सुक्किला तहा ॥ १६ ॥ गधओ परिणया जेउ दुविहा ते वियाहिया । सुभ्भि गध परिणामा दुभ्भि गधा तहेवय ॥१७॥ रसओ परिणया जेउ पचहा ते पकित्तिया । तित्त कडुय कसाया अविला महुरा तहा ॥ १८ ॥ फासओ परिणया जेउ अट्ठहा ते पकित्तिया । कख्खडा मउयाचेव गुरुयालहुयातहा ॥१९॥ सीया उन्हाय निद्धाय तहा लुख्खाय आहिया । इइ फास परिणया एए पुग्गला समुदाहिया ॥२०॥ संठाग परिणया जेउ पचहा ते पकित्तिया । परिमडलाय वट्टा तसा चउरस मायया ॥ २१ ॥

भावथी अजीवरूपी पुद्गलना पाच प्रकार छे:–१ वर्णथी २ गधथी ३ रसथी ४ स्पर्शथी अने ५ सस्थान (सठाण-आकार)थी. [१५]. पुद्गलोना वर्णना परिणाम पाच प्रकारना छे.–१ कृष्ण[काळा], २ निला, ३ रक्त[लाल], ४ हारिद्र[पीळा],अने ५ शुक्ल [धोळा] (१६). पुद्गलोनी गधना परिणाम बे प्रकारना छे:–१ सुरभि गध [सुगधवाळा]अने २ दुरभि-गंध [दुर्गंधवाळा] (१७). पुद्गलोना रसना परिणाम पाच प्रकारना छे:–१ तीखा, २ कडवा, ३ कषायला, ४ खाटा अने ५ मीठा. (१८). पुद्गलोना स्पर्शना परिणाम आठ प्रकारना छे:–१ कर्कश [कठण पाणा जेवा], २ कोमल [माखण जेवा], ३ भारे [लोढा जेवा], ४ हळवा, ५ टाढा [चदन जेवा], ६ उना [अग्नि जेवा], ७ स्निग्ध [सुवाळा] अने ८ रुक्ष [लुखा खरबचडा].[1] आ प्रमाणे स्पर्शथी परिणमेला पुद्गलो सम्यक प्रकारे कह्या छे. (१९-२०) पुद्गलोना सस्थान [सठाण-आकार]ना परिणाम पाच प्रकारना छे:–१ परिमडल २ [कंकणना आकारना][2] वर्तुल [3] [लाडुना आकारना] ३ त्रिकोण ४ चतुष्कोण अने ५ लाबा. (२१).

1 Rough 2 Globular 3 Circular

वन्नओ जे भवे किन्हे भइए सेउ गंधओ । रसओ फासओ चेव भइए संठाणओविय ॥२२॥ वन्नओ जे भवे नीले भइए सेउ गंधओ । रसओ फासओ चेव भइए संठाणओविय ॥२३॥ वन्नओ लोहिए जेउ भइए सेउगंधओ । रसओ फासओ चेव भइए संठाणओविय ॥ २४ ॥ वन्नओ पीयए जेउ भइए सेउ गंधओ । रसओ फासओ चेव भइए संठाणओविय ॥२५॥ वन्नओ सुक्किले जेउ भइए सेउ गंधओ । रसओ फासओ चेव भइए संठाणओविय ॥२६॥

कृष्ण वर्णना पुद्गलोना गंध, रस, स्पर्श अने संस्थान प्रमाणे विभाग पाडेला छे. (२२).* नील वर्णना पुद्गलोना गंध, रस, स्पर्श अने संस्थान प्रमाणे विभाग पाडेला छे. (२३) रक्त वर्णना पुद्गलोना गंध, रस, स्पर्श अने संस्थान प्रमाणे विभाग पाडेला छे (२४). हारिद्र [पीळा] वर्णना पुद्गलोना गंध, रस, स्पर्श अने संस्थान प्रमाणे विभाग पाडेला छे. (२५). शुक्ल वर्णना पुद्गलोना गंध, रस, स्पर्श अने संस्थान प्रमाणे विभाग पाडेला छे. [२६].

---

* गाथा २२थी ४७ सुधीनो एवो भावार्थ छे के–प्रत्येक वर्णना पुद्गलो बेमांथी एक गंधवाळा, पांचमांथी एकाद रसवाळा, आठमांथी एकाद स्पर्शवाळा, अने पांचमांथी एकाद आकारवाळा होय छे; एवीज रीते प्रत्येक गंधवाळा पुद्गलो पांचमांथी एकाद वर्णना, पांचमांथी एकाद रसवाळा, आठमांथी एकाद स्पर्शवाळा अने पांचमांथी एकाद आकारना होय छे. एवीज रीते प्रत्येक रसवाळा पुद्गलो पांचमांथी एकाद वर्णना, बेमांथी एकाद गंधवाळा, आठमांथी एकाद स्पर्शवाळा अने पांचमांथी एकाद आकारना होय छे. तेमज वळी प्रत्येक स्पर्शवाळा पुद्गलो पांचमांथी एकाद वर्णना, बेमांथी एकाद गंधवाळा, पांचमांथी एकाद रसवाळा, अने पांचमांथी एकाद आकारना होय छे. एवीज रीते प्रत्येक संस्थानना पुद्गलो पांचमांथी एकाद वर्णना, बेमांथी एक गंधवाळा, पांचमांथी एकाद रसवाळा अने आठमांथी एकाद स्पर्शवाळा होय छे

गधओ जे भवे सुभ्भी भइए सेउ वन्नओ । रसओ फासओ चेव भइए सठाणओविय ॥२७॥ गंधओ जे भवे दुभ्भी भइए सेउ वन्नओ । रसओ फासओ चेव भइए संठाणओविय ॥२८॥ रसओ तित्तओ जेउ भइए सेउ वन्नओ । गधओ फासओ चेव भइए संठाणओविय ॥२९॥ रसओ कडूओ जेउ भइए सेउ वन्नओ । गंधओ फासओ चेव भइए सठाणओविय ॥३०॥ रसओ कसाए जेउ भइए सेउ वन्नओ । गंधओ फासओ चेव भइए संठाणओविय ॥३१॥ रसओ अबिले जेउ भइए सेउ वन्नओ । गंधओ फासओ चेव भइए संठाणओविय ॥ ३२ ॥ रसओ महुरए जेउ भइए सेउ वन्नओ । गंधओ फासओ चेव भइए संठाणओविय॥३३॥ फासओ कख्खडे जेउ भइए सेउ वन्नओ। गधओ रसओ चेव भइए सठाणओविय ॥ ३४ ॥ फासओ मउए जेउ भइए सेउ वन्नओ । गंधओ रसओ चेव भइए सठाणओविय ॥ ३५ ॥

सुगधवाळा पुद्गलोना वर्ण, रस, स्पर्श अने सस्थान प्रमाणे विभाग पाडेला छे. [२७] दुर्गंधवाळा पुद्गलोना वर्ण, रस, स्पर्श अने सस्थान प्रमाणे विभाग पाडेला छे [२८]. तीखा रसना पुद्गलोना वर्ण, गध, स्पर्श अने सस्थान प्रमाणे विभाग पाडेला छे. [२९] कडवा रसना पुद्गलोना वर्ण, गध, स्पर्श अने सस्थान प्रमाणे विभाग पाडेला छे. [३०]. कषाय रसना पुद्गलोना वर्ण, गध, स्पर्श अने सस्थान प्रमाणे विभाग पाडेला छे (३१). खाटा रसना पुद्गलोना वर्ण, गध, स्पर्श अने सस्थान प्रमाणे विभाग पाडेला छे. [३२]. मीठा रसना पुद्गलोना वर्ण, गध, स्पर्श अने सस्थान प्रमाणे विभागो पाडेला छे. (३३). कर्कश स्पर्शना पुद्गलोना वर्ण, गध, रस अने सस्थान प्रमाणे विभाग पाडेला छे (३४). कोमल स्पर्शना पुद्गलोना वर्ण, गंध, रस अने संस्थान प्रमाणे विभाग पाडेला छे. (३५).

फासओ गुरुए जेउ भइए सेउ वन्नओ। गधओ रसओ चेव भइए सठाणओविय ॥ ३६ ॥ फासओ लहुए जेउ भइए सेउ वन्नओ। गधओ रसओ चेव भइए सठाणओविय ॥३७॥ फासओ सीयए जेउ भइए सेउ वन्नओ। गधओ रसओ चेव भइए सठाणओविय ॥ ३८ ॥ फासओ उन्हए जेउ भइए सेउ वन्नओ। गधओ रसओ चेव भइए सठाणओविय ॥३९॥ फासओ निद्धए जेउ भइए सेउ वन्नओ। गंधओ रसओ चेव भइए संठाणओविय ॥४०॥ फासओ लुक्खए जेउ भइए सेउ वन्नओ। गधओ रसओ चेव भइए सठाणओविय ॥ ४१ ॥ परिमडल सठाणे भइए सेउ वन्नओ। गंधओ रसओ चेव भइए फासओविय ॥ ४२ ॥ सठाणओ भवे वट्टे भइए सेउ वन्नओ। गधओ रसओ चेव भइए फासओविय ॥ ४३ ॥ सठाणओ भवे तसे भइए सेउ वन्नओ। गंधओ रसओ चेव भइए फासओविय ॥ ४४ ॥

भारे स्पर्शना पुद्गलोना वर्ण, गध, रस अने सस्थान प्रमाणे विभाग पाडेला छे. [३६]. हळवा स्पर्शना पुद्गलोना वर्ण, गध, रस अने सस्थान प्रमाणे विभाग पाडेला छे (३७). टाढा स्पर्शना पुद्गलोना वर्ण, गध, रस अने सस्थान प्रमाणे विभाग पाडेला छे. [३८] उना स्पर्शना पुद्गलोना वर्ण, गध, रस अने सस्थान प्रमाणे विभाग पाडेला छे. [३९]. स्निग्ध स्पर्शना पुद्गलोना वर्ण, गध, रस अने सस्थान प्रमाणे विभाग पाडेला छे. (४०). रूक्ष स्पर्शना पुद्गलोना वर्ण, गंध, रस अने संस्थान प्रमाणे विभाग पाडेला छे. (४१) परिमडल सस्थानना पुद्गलोना वर्ण, गध, रस अने स्पर्श प्रमाणे विभाग पाडेला छे. [४२]. वर्तुल संस्थानना पुद्गलोना वर्ण, गध, रस अने स्पर्श प्रमाणे विभाग पाडेला छे (४३). त्रिकोण सस्थानना पुद्गलोना वर्ण, गध, रस अने स्पर्श प्रमाणे विभाग पाडेला छे [४४]

सठाणओय चउरसे भइए सेउ वन्नओ । गंधओ रसओ चेव भइए फासओविय ॥ ४५ ॥ जेआयय सठाणे भइए सेउ वन्नओ । गंधओ रसओ चेव भइए फासओविय ॥४६॥ असख काल मुक्कोस एक्कोसमओ जहन्नय । अजीवाणय रूवीण अतरेय वियाहिय ॥४७॥ एसा अजीव विभत्ती समासेण वियाहिया । इत्तो जीव विभात्ति वोच्छामि अणुपुव्वसो ॥४८॥ ससारत्थाय सिद्धाय दुविहा जीवा वियाहिया । सिद्धा णेग विहा वुत्ता त मे कित्तयउं सुण ॥४९॥ इत्थी पुरिस सिद्धाय तहेवय नपुसगा । सलिंगे अन्न लिंगेय गिहिलिगे तहेवय ॥ ५० ॥ उक्कोसा गाहणाएय जहन्न मज्झिमाइय । उड्ढ अहेय तिरियच समुद्दमि जलमिय ॥५१ ॥

चतुष्कोण सस्थानना पुद्गलोना वर्ण, गध, रस अने स्पर्श प्रमाणे विभाग पाडेला छे. ४५) लाबा संस्थानना पुद्गलोना वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श प्रमाणे विभाग पाडेला छे. (४६). अजीव रुपी पुद्गलोनु उत्कृष्ट अंतर [आतरो] असंख्याता काळनु अने जघन्य अतर एक समयनु कर्यु छे. [४७] * रुपी अजीवना ५३० अने अरुपी अजीवना ३० मळी कुल ५६० भेद आ प्रमाणे अजीवना विभाग संक्षिप्त कह्या हवे जीव-विभक्ति (विभाग) अनुक्रमे कहु छुं. [४८] जीव बे प्रकारना कह्या छेः-१ ससारी जीव अने सिद्ध (कर्म-मल रहित) जीव. सिद्ध जीव अनेक प्रकारना छे तेना भेद कहुं छुं ते साभळो. [४९]. पुरुष, स्त्री, नपुंसक, स्वलिंग (जैन दर्शनी), अन्यलिंग (अन्यमार्गी) अने गृहलिंग (गृहस्थाश्रमी) ए छ जीवमाथी सिद्ध थइ शके. [५०]. उत्कृष्ट (पांचसें धनुष्यनी), जघन्य (बे हाथनी) अने मध्यम अवगाहन(कदनी)देहे, उर्ध्व लोकने विषे, अधो लोकने विषे, अढी द्वीपने विषे, समुद्रने विषे अने अन्य जळने विषे सिद्ध दशा प्राप्त थइ शके. [५१]।.

*आ गाथा मो. जेकोबीना भाषान्तरमा नथी. १ गमे ते स्थळे, गमे तेवे शरीरे सिद्ध दशा प्राप्त थइ शके छे ए हेतु आ गाथानो छे.

दसय नपुमएसु वीस इत्थियासुय । पुरिसेसुय अट्ठसय समएणेगेण सिझई ॥५२॥ चत्तारिय गिहिलिगे अन्नलिंगे दसेवय । सलिंगेणय अट्ठसय समएणेगेण सिझई ॥५३॥ उक्कोसो गाहणाएओ सिझते जुगवदुवे । चत्तारिय जहन्नाए जवमझुत्तरं सय ॥५४॥ चउरुद्धलोएय दुवे समुद्दे तओ जले वीस महे तहेवय । सयच अट्ठुत्तर तिरियलोए समएणेगेण सिझई धुव ॥५५॥ कहिंपडिहयासिद्धा कहिसिद्धा पइठिया । कहिंबोंदिं चइत्ताणं कथ्य गतूण सिझई ॥ ५६ ॥ अलोए पडिहया सिद्धा लोयग्गेय पइठिया । इहं बोंदिंच इत्ताणं तथ्य गंतूण सिझई ॥ ५७ ॥ बारसहिं जोयणेहिं सव्वट्ठस्सु वरिं भवे । इसीपभार नामाओ पुढवीछत्त सठिया ॥ ५८ ॥ पणयाण सयसहस्सा

नपुसक लिंगमाथी दश, स्त्री लिंगमाथी वीश, पुरुष लिंगमाथी एक सोने आठ, गृहलिंग (गृहस्थ वर्ग) माथी चार, अन्य लिंग [अन्य दर्शनी] मांथी दश अने स्वलिंग [जैन दर्शनी] मांथी एक सोने आठ एकी साथे सिद्ध थइ शके. [५२-५३] उत्कृष्ट[1] कदना बे जघन्य[2] कदना चार, अने मध्यम कदना एक सो आठ जीव एकी साथे सिद्ध दशाने प्राप्त करी शके [५४]. उर्ध्व लोकने विषे चार, समुद्र विषे बे, अन्य जळने विषे त्रण, अधो लोकने विषे वीश, अने अढी द्वीपने विषे एक सो आठ जीव एकी साथे सिद्ध थइ शके [५५] सिद्ध जीवोने क्यां जवानो प्रतिबंध छे? तेओ क्यां रहे छे ? तेओ पोताना शरीर क्यां छोडी जाय छे ? अने सिद्ध थइने क्यां जाय छे [५६]. सिद्ध जीवोने अलोकने विषे जवानो प्रतिबंध छे. तेओ लोकाग्रना मस्तकने विषे रहे छे तेओ पोताना शरीर आ लोकने विषे छोडी जाय छे अने त्यां [लोकाग्रे] जइने सिद्ध थाय छे. [५७]. सर्वार्थ सिद्ध विमाननी उपर बार जोजन उंचे इषत्-प्रागभारा (इसिपभारा) नामे पृथ्वी [सिद्ध-शिला] छत्रीने आकारे आवी रहेली छे. ते ४५ लाख जोजन लांबी अने तेटलीज पहोळी छे, अने तेथी त्रणथी वधारे गणो तेनो परिघ [घेरावो] छे. [१,४२,३०,२५० जोजन]. ते

---

[1] पांचसो धनुष्यनु कद उत्कृष्ट कहेवाय [2] बे हाथनु कद जघन्य कहेवाय.

जोयणाणतु आयया । तावइयचेव विच्छिन्ना तिगुणो साहिय परिओ ॥ ५९ ॥ अट्ठ जोयण बाहल्ला सा मज्झंमि वियाहिया । परिहायती चरिमते मच्छियपत्ताओ तणुयरी॥६०॥ अज्जुण सुवन्नगमई सा पुढवी निम्मला सहावेणं। उत्ताणय छत्त सठियाय भणिया जिणवरेहिं ॥ ६१ ॥ सख क कुंद सकासा पडुरा निम्मला सुहा । सीयाए जोयणे तत्तो लोयंताओ वियाहिओ ॥६२॥ जोयणस्सउ जो तत्थ कोसो उवरिमो भवे । तस्स कोसस्स छब्भाए सिध्धाणो गाहणा भवे ॥६३॥ तत्थ सिध्धा महाभागा लोयग्गामि पइट्ठिया । भव प्पवचउमुक्का सिध्धि वरगइ गया ॥६४॥ उस्सेहो जस्स जो होइ भवमि चरम मिओ । तिभाग हीणा तत्तोय सिध्धाणो गाहणा भवे ॥६५॥ एगत्तेण साईया अपज्जव सियाविय । पुहुत्तेण अणाईया अपज्जवसियाविय ॥ ६६ ॥

मध्य भागमा आठ जोजन जाडी छे अने घटतो घटतो छेडे जता माखीनी पाख थकी पण पातळी छे. ए पृथ्वी [सिद्ध-शिला] श्वेत काचन समान, स्वभावे निर्मल अने छत्रना आकारनी श्री जिनवरे वर्णवी छे. ए सिद्ध शिला शख, अक-रत्न अने कुन्दना फुल सरखी उजळी छे अने त्याथी एक जोजन उचे लोकनो अन्त आवे छे ते जोजनना छेल्ला कोसना छठ्ठा भागने विषे, सिद्धनी अवगाहना छे त्यां लोकना अग्र भागने विषे महाभाग्यशाळी, अचित्य शक्तिना धणी, भव प्रपचथी मुक्त, मोक्षने प्राप्त थयेला एवा श्री सिद्ध-भगवान विराजी रह्या छे. [५८-६४]. सिद्धनी अवगाहना पोताना छेल्ला भवने विषे देहनुं जेटलु प्रमाण होय तेनाथी त्रीजा भागनी ओछी होय छे. [६५] सिद्धने पृथक् तरीके (एक आश्री) गणीए तो तेने आदि होय पण अन्त न होय, अने जो समस्त तरीके गणीए तो तेने आदि के अन्त काइ न होय. [६६].

दसय नपुंसएसु वीस इत्थियासुय । पुरिसेसुय अट्ठसय समएणेगेण सिज्झई ॥५२॥ चत्तारिय गिहिलिंगे अन्नलिंगे दसेवय । सलिंगेणय अट्ठसय समएणेगेण सिज्झई ॥५३॥ उक्कोसो गाहणाएओ सिज्झते जुगवंदुवे । चत्तारिय जहन्नाए जवमज्झट्ठुत्तर सय ॥५४॥ चउरुड्ढलोएय दुवे समुद्दे तओ जले वीस महे तहेवय । सयंच अट्ठुत्तर तिरियलोए समएणेगेण सिज्झई धुव ॥५५॥ कहिंपडिहयासिद्धा कहिंसिद्धा पइट्ठिया । कहिंबोंदि चइत्ताणं कत्थ गंतूण सिज्झई ॥ ५६ ॥ अलोए पडिहया सिद्धा लोयग्गेय पइट्ठिया । इहं बोंदिंच इत्ताण तत्थ गंतूण सिज्झई ॥ ५७ ॥ बारसहिं जोयणेहिं सव्वट्ठस्सु वरिं भवे । इसीपब्भार नामाओ पुढवीछत्त संठिया ॥ ५८ ॥ पणयाण सयसहस्सा

नपुंसक लिंगमांथी दश, स्त्री लिंगमांथी वीश, पुरुष लिंगमांथी एक सोने आठ, गृहलिंग (गृहस्थ-वर्ग) मांथी चार, अन्य लिंग [अन्य दर्शनी] मांथी दश अने स्वलिंग [जैन दर्शनी] मांथी एक सोने आठ एकी साथे सिद्ध थइ शके [५२-५३] उत्कृष्ट[१] कदना बे जघन्य[२] कदना चार, अने मध्यम कदना एक सो आठ जीव एकी साथे सिद्ध दशाने प्राप्त करी शके [५४]. ऊर्ध्व लोकने विषे चार, समुद्र विषे बे, अन्य जळने विषे त्रण, अधो लोकने विषे वीश, अने अढी द्वीपने विषे एक सो आठ जीव, एकी साथे सिद्ध थइ शके. [५५] सिद्ध जीवोने क्यां जवानो प्रतिबंध छे? तेओ क्यां रहे छे? तेओ पोताना शरीर क्यां छोडी जाय छे? अने सिद्ध थइने क्यां जाय छे [५६] सिद्ध जीवोने अलोकने विषे जवानो प्रतिबंध छे तेओ लोकाग्रना मस्तकने विषे रहे छे ते तो पोतानां शरीर आ लोकने विषे छोडी जाय छे अने त्यां [लोकाग्रे] जइने सिद्ध थाय छे. [५७] सर्वार्थ सिद्ध विमाननी उपर बार जोजन उंचे इषु प्रागभारा (इसिपभारा) नामे पृथ्वी [सिद्ध-शिला] छत्रीने आकारे आवी रहेली छे ते ४५ लाख जोजन लांबी अने तेटलीज पहोळी छे, अने तेथी त्रणथी वधारे गणो तेनो परिघ [घेरावो] छे. [१,४२,३०,२४९ जोजन]. ते

[१] पांचसो धनुष्यनु कद उत्कृष्ट कहेवाय [२] बे हाथनु कद जघन्य कहेवाय.

जोयणाणंतु आयया । तावइयचेव विछिन्ना तिगुणो साहिय परिओ ॥ ५९ ॥ अठ्ठ जोयण बाहल्ला सा मज्झमि वियाहिया । परिहायती चरिमते मच्छीयपत्ताओ तणुययरी॥६०॥ अज्जुण सुवन्नगमई सा पुढवी निम्मला सहावेणं। उत्ताणय छत्त संठियाय भणिया जिणवरेहिं ॥ ६१ ॥ संख क कुंद सकासा पंडुरा निम्मला सुहा । सीयाए जोयणे तत्तो लोयतोओ वियाहिओ ॥६२॥ जोयणस्सउ जो तथ्थ कोसो उवरिमो भवे । तस्स कोसस्स छब्भाए सिध्धाणो गाहणा भवे ॥६३॥ तथ्थ सिध्धा महाभागा लोयग्गमि पइठ्ठिया । भव प्पवचउमुक्का सिध्धि वरगइ गया ॥६४॥ उस्सेहो जस्स जो होइ भवमि चरम मिओ । तिभाग हीणा तत्तोय सिध्धाणो गाहणा भवे ॥६५॥ एगत्तेण साईया अपज्जव सियाविय । पुहुत्तेण अणाईया अपज्जवसियाविय ॥ ६६ ॥

मध्य भागमां आठ जोजन जाडी छे अने घटतां घटतां छेडे जतां माखीनी पांख थकी पण पातळी छे. ए पृथ्वी [सिद्ध-शिला] श्वेत कांचन समान, स्वभावे निर्मल अने छत्रना आकारनी श्री जिनवरे वर्णवी छे ए सिद्ध-शिला शंख, अंक-रत्न अने कुन्दना फुल सरखी उजळी छे अने त्यांथी एक जोजन उंचे लोकनो अन्त आवे छे ते जोजनना छेल्ला कोसना छठ्ठा भागने विषे, सिद्धनी अवगाहना छे त्यां लोकना अग्र भागने विषे महाभाग्यशाळी, अचिंत्य शक्तिना धणी, भव प्रपंचथी मुक्त, मोक्षने प्राप्त थयेला एवा श्री सिद्ध-भगवान बिराजी रह्या छे. [५८-६४] सिद्धनी अवगाहना पोताना छेल्ला भवने विषे देहनुं जेटलुं प्रमाण होय तेनाथी त्रीजा भागनी ओछी होय छे [६५]. सिद्धने पृथक् तरीके (एक आश्री) गणीए तो तेने आदि होय पण अन्त न होय, अने जो समस्त तरीके गणीए तो तेने आदि के अन्त काइ न होय. [६६].

अरूविणो जीवघणा नाण दसणसन्निया । अउल सुह रूपत्ता उवमा जस्स नत्थिओ ॥ ६७ ॥ लोएग देसे तेसेव्वे नाणदंसण सन्निया । संसार पार निच्छिन्ना सिद्धिंवर गइं गया ॥६८॥ संसारत्थाउ जे जीवा दुविहा ते वियाहिया । तसाय थावरा चेव थावरा तिविहा तहिं ॥ ६९ ॥ पुढवी आउ जीवाय तहेवय वणस्सई । इच्चेए थावरा तिविहा तेसिं भेए सुणेहमे ॥७०॥ दुविहा पुढवि जीवा सुहुमा बायरा तहा । पज्जत्त मपज्जत्ता एवमेए दुहा पुणो ॥७१॥ बायरा जेउ पज्जत्ता दुविहा ते वियाहिया । सन्हा खराय बोधव्वा सन्हा सत्त विहा तहिं ॥ ७२ ॥ किन्हा नीलाय रुहिराय हालिद्दा सुक्किला तहा । पडु पणग मट्टिया खरा छत्तीसई विहा ॥७३॥

सिद्ध अरूपी जीव प्रदेशमय,[1] केवल ज्ञान अने केवल-दर्शननी संज्ञा सहित होय छे अने अनुपम अतुल सुख भोगवे छे. [६७] सर्व सिद्ध लोकना एक देशने विषे वसे छे. तेओ केवल ज्ञानअने केवल दर्शनना उपयोग सहित छे, अने संसार पार उतरीने सिद्ध रूपी उत्तम गतिने पहोंच्या छे [६८]. संसारी जीव बे प्रकारना कह्या छे:–[2] त्रस अने स्थावर[3]. स्थावर जीवना त्रण प्रकार कह्या छे:–१ पृथ्वी काय, २ अप्प (जल) काय, ३ वनस्पति काय. ए प्रमाणे स्थावर जीवना त्रण प्रकार छे. हवे तेना भेद कहुं छुं ते सांभळो [६९-७०]. पृथ्वी कायना जीव बे प्रकारना छे:–सूक्ष्म अने बादर. अने ते बन्ने पर्याप्त (शरीर, इन्द्रियो सहित) अने अपर्याप्त (शरीर, इन्द्रियो रहित) होय छे [७१] बादर पर्याप्त जीव बे प्रकारना कह्या छे:–सुंवाळा अने कठोर. सुंवाळा जीवना सात भेद छे - १ काळा, २ नीला, ३ राता, ४ पीळा, ५ धोळा, ६ पांडुवर्ण, अने ७ माटीना रंगना. कठोर पृथ्वी जीवना नीचे प्रमाण छत्रीस भेद कह्या छे [७२-७३]

[1] They consist of Life throughout [2] Movable [3] Immovable

पुढवीय सक्कराय वालुयाय उवले सिलाय लोणोसे । अय तम्ब तउय सीसग रुप्प सुवन्नेय वइरेय ॥ ७४ ॥ हरियाले हिंगलुए मणोसिला रीसग जण, प्पवाले । अब्भपडलब्भ वालुय बायरकाए मणिविहाणा ॥७५॥ गोमिज्जएय रुयगे अंके फलिहेय लोहियक्खेय । मरगय मसारगल्ले भुयमोयग इंदनीलेय ॥७६॥ चंदण गेरुय हंसगब्भे पुलएय सोगंधिएय बोधव्वे । चंदप्पह वेरुलिए जलकंते सूरकंतेय॥७७॥ एए खर पुढवीए भेया छत्तीस माहिया । एगविह मनाणत्ता सुहुमा तत्थ वियाहिया ॥७८॥ सुहुमा सव्वलोगंमि लोग देसेय बायरा । इत्तो काल विभागंतु तेसिं वोच्छं चउव्विहं ॥७९॥ संतइ पप्पणाईया अपज्जवसियाविय । ठिईपडुच्च साईया सपज्जवसियाविय ॥ ८० ॥ बावीस सहस्साइ वासाणुक्कोसिया भवे । आउ ठिई पुढवीण अंतोमुहुत्त जहन्निया ॥८१॥

माटी मरडिया कांकरा, रेती, पाषाण, शीला,लवण, खारीमाटी, लोढु, तांबु, कलइ, सीसु, रुपुं, सोनुं, हीरा, हरियाल, हिंगलो, मणसिल, सीसक, (जसत), सुरमो, परवाळा, अभ्रपटल, अभ्रवालुका, गोमेधमणि, रुचक रत्न, अंक रत्न, स्फटिक रत्न, लोहिताक्ष मणि, मरतक मणि, मसारगल्ल रत्न, भूजमोचक रत्न, इन्द्रनील रत्न, चंदन, गेरु, हंसगर्भ, पुलक, सौगंधिक रत्न, चंद्रप्रभ रत्न, वैडुर्य मणि, जलकान्त मणि अने सूर्यकान्त मणि. [७४-७७] * ए प्रमाणे कठोर (खर) पृथ्वी जीवना छत्रीस भेद वर्णव्या छे. सूक्ष्म पृथ्वी जीवनो एकज भेद छे, तेना जुदा जुदा भेद नथी. (७८). सूक्ष्म पृथ्वी जीव लोकने विषे सर्वत्र फेलाइ रह्या छे, परतु बादर पृथ्वी जीव लोकना एक देशने विषे रहेला छे. हवे हु तेना चार प्रकारना काळ विभाग कहु छु [७९] प्रवाह रुपे जोइए तो पृथ्वी जीव आदि अने अन्त रहित छे परतु ते हाल जे रुपे छे ते रुपे जोइए तो ते आदि अने अन्त सहित छे. (८०). पृथ्वी जीवनी उत्कृष्ट स्थिति बावीश हजार वर्षनी अने जघन्य स्थिति अंत मुहूर्त्तनी छे. [८१]

---

* नोट—छत्रीसने बदले चाळीस थाय छे.

असंख काल मुक्कोमं अतोमुहुत्त जहन्नियं । कायठिई पुढवीणं तकायंतु अमुंचओ ॥ ८२ ॥ अणंतकाल मुक्कोमं अतोमुहुत्त जहन्नय । विजढंमि सए काए पुढवि जीवाण मतरं ॥८३॥ एएसिं वन्नओ चेव गधओ रस फासओ। स्ठाणा देसओवावि विहाणाइ सहस्ससो ॥ ८४ ॥ दुविहा आउ जीवाओ सुहुमा यरा तहा । पज्जत्त मपज्जत्ता एवमेए दुहापुणो ॥८५॥ वायरा जेउपज्जत्ता पचहा ते पक्तित्तिया सुद्धोदएय उस्मेय हरतणु महिया हिमे ॥ ८६ ॥ एगविह मनाणत्ता सुहुमा तथ्य वियाहिया । सुहुमा सव्वलोगमि लोगदेसेय वायरा ॥८७॥ संतइ पप्पणाईया अपज्जवसियावि य । ठिईपडुच्च साईया सपज्जवसियावि य ॥८८॥ सत्तेव सहस्साइ वासाणु क्कोसिया भवे । आउ ठिई आऊण अतोमुहुत्त जहन्निया ॥८९॥

पृथ्वी जीव पृथ्वी कायथी न मूकायतो तेनी उत्कृष्ट स्थिति असंख्याता काळनी अने जघन्य स्थिति अतर मुहूर्त्तनी छे [८२]. पृथ्वी जीव पृथ्वी कायथी चवीने उत्पन्न थाय तेनो उत्कृष्ट आतरो अनता काळनो अने जघन्य आंतरो अत मुहूर्त्तनो छे. [८३]. पृथ्वी जीवोना वर्ण, गंध, रस, स्पर्श अने सस्थानने लइने हजारो भेद पडी शके [८४]. (२) अप्पकाय जीवना बे प्रकार छेः-१ सूक्ष्म अने २ बादर तेना वळी पर्याप्त अने अपर्याप्त एवा बे भेद छे [८५]. बादर पर्याप्त अप्पकायना पाच प्रकार छेः-१ शुद्ध जळ, २ मेघ, समुद्रादिनुं जळ, ३ झाकळ, ४ परसवो, ५ हिम (बरफ). [८६]. सूक्ष्म अप्पकायनो एक प्रकार छे. तेना विविध भेद नथी. सूक्ष्म अप्पकाय आखा लोकने विषे व्यापी छे, परतु बादर अप्पकाय लोकना एक देशने विषे व्याप्त छे. [८७]. प्रवाह रूपे जोइए तो अप्पकाय जीव आदि अने अत रहित छे परंतु तेओ हाल जे रूपे छे ते रूपे जोइए तो ते आदि अने अत सहित छे. [८८]. अप्पकाय जीवनी उत्कृष्ट स्थिति सात हजार वर्षनी अने जघन्य स्थिति अत मुहूर्त्तनी छे (८९)

असखकाल मुक्कोसं अतोमुहुत्तं जहन्निय । कायठिई आऊण त कायंतु अमुंचओ ॥ ९० ॥ अणंतकाल मुक्कोस अतोमुहुत्त जहन्नयं । विजढमि सए काए आउ जीवाण अतर ॥९१॥ एएसिं वन्नओ चेव गधओ रस फासओ । संठाणा देसओवावि विहाणाइ सहस्ससो ॥९२॥ दुविहा वणस्सई जीवा सुहुमा बायरा तहा । पज्जत मपज्जत्ता एवमेए दुहापुणो ॥९३॥ बायरा जेउ पज्जत्ता दुविहा ते वियाहिया । साहारण सरी राय पत्तेगाय तहेवय ॥ ९४ ॥ पत्तेय सरीराओ णेगहा ते पकित्तिया । रुक्खा गुच्छाय गुम्माय लयावल्ली तणातहा ॥ ९५ ॥ वलया पव्वया कुहणा जलरुहा ओसहीतणा । हरीयकायाय बोधव्वा परोयाइति आहिया ॥९६॥ साहारण सरीराओ णेगहा ते पकित्तिया । आलुए मूलए चेव सिगबेरे तहेवय ॥ ९७ ॥ हिरिली सिरिली सिरिसरिली जावई केय कदली । पलडु लसण

अप्काय जीव अप्पकायथी न मूकाय तो तेनी उत्कृष्ट स्थिति असख्याता काळनी अन जघन्य स्थिति अत मुहूर्त्तनी छे.(९०). अप्काय जीव अप्कायथी चवीने उत्पन्न थाय तेना उत्कृष्ट आतरो अनंता काळनो अने जघन्य आतरो अंत मुहूर्त्तनो छे. (९१). अप्काय जीवोनां वर्ण, गध, रस, स्पर्श अने सस्थानने लइने हजारो भेद पडी शके [९२]. (३) वनस्पति जीवना बे प्रकार छेः– १ सूक्ष्म अने बादर तेना वळी पर्याप्त अने अपर्याप्त एवा बे भेदछे. (९३).बादर पर्याप्त वनस्पति जीव बे प्रकारना कह्या छेः-१साधारण शरीरवाळा (एक कायामा अनत जीववाळा), २ प्रत्येक शरीरवाळा (एक कायामां एक जीववाळा) [९४]. प्रत्येक जीवे जुदु शरीर एवा वनस्पति जीवना घणा भेद छेः–जेवाके–वृक्ष, गुच्छ (रींगणी वगेरे), गुल्म (नवमालती वगेरे), लता (चम्पकादि), वेली (तुरडी वगेरे), तृण (कुश वगेरे), वलय (नाळियेरी वगेरे), पर्वग (शेलडी वगेरे), कुहण (सर्पछत्र वगेरे), जलरुह (कमल वगेरे), ओषधि (डागर वगेरे), हरितकाय (तांदलजो वगेरे) उपरना वनस्पति जीवने प्रत्येकने जुदु शरीर होय छे [९५-९६]. साधारण शरीरवाळा–वनस्पति जीवना घणा प्रकार छे. जेवाके–आलुक [रताळु वगेरे], मूलक (मूळा वगेरे), आदु, हरिली,

कदेय कंदलीय कुहुव्वए ॥ ९८ ॥ लोहिणी हूयथ्थी हूयतुहगाय तहेवय । कन्देय वज्जकंदेय कंदे सूरणए तहा ॥९९॥ अस्सकन्नीय बोधव्वा सीहकन्नी तहेवय । मुसढीय हलिद्दाय णेगहा एवमायओ ॥ १०० ॥ एगविह मनाणत्ता सुहुमा तत्थ वियाहिया । सुहुमा सव्वलोगमि लोगदेसेय बायरा ॥१०१॥ संतइ पप्प णाईया अपज्जवसियावि य । ठिईपडुच्च साईया सपज्जवसियाविय ॥१०२॥ दस चेव सहस्साइ वासाणु क्कोसिया भवे । वणस्सईण आउतु अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१०३॥ अणतकाल मुक्कोसा अंतोमुहुत्त जहन्निया । कायठिई पणगाणं तकायतु अमुंचओ ॥१०४॥ असखकाल मुक्कोस अंतोमुहुत्त जहन्नय । विजटमि सए काए पणग जीवाणं अतर ॥ १०५ ॥ एएसिं वन्नओ चेव गधओ रस फासओ । सठाणा देसओवावि विहाणाइं सहस्ससो ॥१०६॥

सिरिली, सिरिलिरिली, जावइ, कन्दली, डुगली, लसण, कदली, लोहिनी, हुयत्थी, हुय, तुहक, कृष्ण कन्द, वज्र कन्द, सूरण, अश्वकर्णी, सिंहकर्णी, मुसढी कन्द, हळदर, अने एवी कन्द मूळनी-अनेक जातो छे [९७ १००]. सूक्ष्म वनस्पति जीवनो एक प्रकार छे. तेना जुदा जुदा भेद नथी. सूक्ष्म वनस्पति जीव आखा लोकने विषे व्याप्त छे, परंतु बादर वनस्पति जीव लोकना एक देशने विषे व्याप्त छे. [१०१] प्रवाह रूपे जोइए तो वनस्पति जीव आदि अने अत रहित छे, परतु हाल ते जे रूपे छे ते रूपे जोइए तो त आदि अने अत सहित छे. [१०२] वनस्पति जीवनी उत्कृष्ट स्थिति दश हजार वर्षनी अने जघन्य स्थिति अत मुहूर्त्तनी छे. [१०३] वनस्पति (पनक) जीव वनस्पति कायथी न मूकाय तो तेनी उत्कृष्ट स्थिति असख्याता काळनी अने जघन्य स्थिति अत मुहूर्त्तनी छे [१०४] वनस्पति जीव वनस्पति कायथी चवीने उत्पन्न थाय तेनो उत्कृष्ट आंतरो अनता काळनो अने जघन्य आंतरो अत मुहूर्त्तनो छे [१०५]. वनस्पति जीवोनां वर्ण, गध, रस, स्पर्श अने सस्थानने लइने हजारो भेद पडी शके. [१०६].

इच्चेते थावरा तिविहा समासेण वियाहिया । इत्तोउ तसे तिविहे वोच्छामि अणुपुव्वसो ॥१०७॥ तेऊ वाऊय बोधव्वा ओरालाय तसा तहा । इच्चेए तसा तिविहा तेसि भेए सुणेहमे॥१०८॥ दुविहा तेउ जीवाओ सुहमा बायरा तहा । पज्जत्त मपज्जत्ता एवमेए दुहा पुणो ॥ १०९ ॥ बायरा जेउ पज्जत्ता णेगहा ते वियाहिया । इग्गारे मुम्मुरे अगणी अच्चिजाला तहेवय ॥ ११० ॥ उक्का विज्जुय बोधव्वा णेगहा एवमाइओ । एगविह मनाणत्ता सुहुमा ते वियाहिया ॥१११॥ सुहुमा सव्व लोगमि लोग देसेय बायरा । इत्तो काल विभागतु तेसि वोछ्र चउव्विहं ॥११२॥ संतइंपप्प णाईया अपज्जवसियाविय । ठिईपडुच्च साईया सपज्जवसियाविय ॥११३॥ तिन्नेव अहोरत्ता उक्कोसेण वियाहिया । आऊ ठिई तेऊण अंतोमुहुत्तं जहन्नय ॥११४॥

उपर प्रमाणे पृथ्वी, पाणी अने वनस्पति ए त्रण स्थावर जीवनु संक्षिप्त वर्णन कर्यु. हवे त्रस जीवोनु अनुक्रमे वर्णन करु छुं [१०७]. १ तेउकाय (अग्निना जीव), २ वायुकाय, ३ उदारिक जीव[बे इन्द्रीयादि]ए त्रस जीवना त्रण प्रकार छे तेना भेद कहु छु ते साभळो. [१०८] १ तेउकायना बे प्रकार छे:-सूक्ष्म अने बादर तेना वळी पर्याप्त अने अपर्याप्त एवा बे भेद छे [१०९]. बादर पर्याप्त तेउकायना घणा प्रकार छे'- जेवाके अगारा, धुमाडा सहित बळतो अग्नि, झाळ, भडका, खरता तारा, विजळी आदि अग्निना जीव अनेक प्रकारना छे [११०] सूक्ष्म तेउकायनो एक प्रकार छे. तेना जुदा जुदा भेद नथी. [१११] सूक्ष्म तेउकाय जीव आखा लोकने विषे व्याप्त छे. परतु बादर तेउकाय जीव लोकना एक देशने विषे व्याप्त छे. [११२]. प्रवाह रुपे जोइए तो तेउकाय जीव आदि अने अत रहित छे, परतु ते हाल जे रुपे छे ते रुपे जोइए तो ते आदि अने अत सहित छे. [११३]. तेउकाय जीवनी उत्कृष्ट स्थिति त्रण अहोरात्रि अने जघन्य स्थिति अत मुहूर्त्तनी छे. [११४].

कंदेय कंदलीय कुहुव्वए ॥ ९८ ॥ लोहिणी हूयथी हूयतुहगाय तहेवय। कन्हेय वज्जकंदेय कंदे सूरणए तहा ॥९९॥ अस्सकन्नीय बोधव्वा सीहकन्नी तहेवय । मुसढीय हलिद्दाय णेगहा एवमायओ ॥ १०० ॥ एगविह मनाणत्ता सुहुमा तथ्थ वियाहिया । सुहुमा सव्वलोगमि लोगदेसेय बायरा ॥१०१॥ संतइ पप्प णाईया अपज्जवसियावियं । ठिईपडुच्च साईया सपज्जवसियावियं ॥१०२॥ दस चेव सहस्साइं वासाणु क्कोसिया भवे । वणस्सईण आउतु अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१०३॥ अणंतकालं मुक्कोसं अंतोमुहुत्तं जहन्निया । कायठिई पणगाणं तंकायंतु अमुंचओ ॥१०४॥ असंखकालं मुक्कोसं अंतोमुहुत्तं जहन्नयं । विजढंमि सए काए पणग जीवाण अंतरं ॥ १०५ ॥ एएसिं वन्नओ चेव गंधओ रस फासओ । संठाणा देसओवावि विहाणाइं सहस्ससो ॥१०६॥

सिरिणी, मिरिणिरिणी, जारड, कन्दली, डुगणी, ल्सण, कदली, लोहिनी, हुयत्थी, हुय, तुहग, कृष्ण कन्द, वज्र कन्द, सूरण, अश्वकर्णी, सिंहकर्णी, मुसढी कन्द, हळदर, अने एवी कन्द मूळनी-अनेक जातो छे [९७ १००]. सूक्ष्म वनस्पति जीवनो एक प्रकार छे तेना जुदा जुदा भेद नथी. सूक्ष्म वनस्पति जीव आखा लोकने विषे व्याप्त छे, परंतु बादर वनस्पति जीव लोकना एक देशने विषे व्याप्त छे [१०१] प्रवाह रूपे जोइए तो वनस्पति जीव आदि अने अंत रहित छे, परन्तु हाल ते जे रूपे छे ते रूपे जोइए तो ते आदि अने अंत सहित छे. [१०२] वनस्पति जीवनी उत्कृष्ट स्थिति दश हजार वर्षनी अने जघन्य स्थिति अंत मुहूर्त्तनी छे. [१०३] वनस्पति (पनक) जीव वनस्पति कायथी न मूकाय तो तेनी उत्कृष्ट स्थिति असंख्याता काळनी अने जघन्य स्थिति अंत मुहूर्त्तनी छे [१०४] वनस्पति जीव वनस्पति कायथी चवीने उत्पन्न थाय तेनो उत्कृष्ट आंतरो अनन्ता काळनो अने जघन्य आंतरो अंत मुहूर्त्तनो छे [१०५]. वनस्पति जीवोनां वर्ण, गंध, रस, स्पर्श अने संस्थानने लइने हजारो भेद पडी शके [१०६].

इच्चेते थावरा तिविहा समासेण वियाहिया । इत्तोउ तसे तिविहे वोच्छामि अणुपुव्वसो ॥१०७॥ तेऊ वाऊय बोधव्वा ओरालाय तसा तहा । इच्चेए तसा तिविहा तेसिं भेए सुणेहमे॥१०८॥ दुविहा तेउ जीवाओ सुहमा बायरा तहा । पज्जत्त मपज्जत्ता एवमेए दुहा पुणो ॥ १०९ ॥ बायरा जेउ पज्जत्ता णेगहा ते वियाहिया । इग्गारे मुम्मुरे अगणी अच्चिजाला तहेवय ॥ ११० ॥ उक्का विज्जुय बोधव्वा णेगहा एवमाइओ । एगविह मनाणत्ता सुहुमा ते वियाहिया ॥१११॥ सुहुमा सव्व लोगमि लोग देसेय बायरा । इत्तो काल विभागतु तेसि वोच्छं चउव्विहं ॥११२॥ संतइंपप्प णाईया अपज्जवसियाविय । ठिईपडुच्च साईया मपज्जवसियाविय ॥११३॥ तिन्नेव अहोरत्ता उक्कोसेण वियाहिया । आऊ ठिई तेऊण अतोमुहुत्तं जहन्नय ॥११४॥

उपर प्रमाणे पृथ्वी, पाणी अने वनस्पति ए त्रण स्थावर जीवनु संक्षिप्त वर्णन कर्यु. हवे त्रस जीवोनुं अनुक्रमे वर्णन करु छु. [१०७]. १ तेउकाय (अग्निना जीव), २ वायुकाय, ३ उदारिक जीव[बे इन्द्रीयादि]ए त्रस जीवना त्रण प्रकार छे तेना भेद कहु छु ते सांभळो. [१०८] १ तेउकायना बे प्रकार छेः-सूक्ष्म अने बादर तेना वळी पर्याप्त अने अपर्याप्त एवा बे भेद छे. [१०९]. बादर पर्याप्त तेउकायना घणा प्रकार छेः- जेवाके अंगारा, धूमाडा सहित बळतो अग्नि, झाळ, भडका, खरता तारा, विजळी आदि अग्निना जीव अनेक प्रकारना छे [११०]. सूक्ष्म तेउकायनो एक प्रकार छे. तेना जुदा जुदा भेद नथी. [१११]. सूक्ष्म तेउकाय जीव आखा लोकने विषे व्याप्त छे. परतु बादर तेउकाय जीव लोकना एक देशने विषे व्याप्त छे. [११२]. प्रवाह रुपे जोइए तो तेउकाय जीव आदि अने अत रहित छे, परंतु ते हाल जे रुपे छे ते रुपे जोइए तो ते आदि अने अत सहित छे. [११३]. तेउकाय जीवनी उत्कृष्ट स्थिति त्रण अहोरात्रि अने जघन्य स्थिति अंत मुहूर्त्तनी छे. [११४].

असख काल मुक्कोसा अंतोमुहुत्त जहन्निया। काय ठिई तेऊण त कायंतु अमुचओ ॥ ११५ ॥ अणंत काल मुक्कोसं अंतोमुहुत्त जहन्नयं। विजढमि मए काए तेऊ जीवाण अतर ॥ ११६ ॥ एएसि वन्नओ चेव गधओ रस फासओ। सठाणा देसओ वावि विहाणाइ सहस्ससो ॥११७॥ दुविहा वाउ जीवाओ सुहुमा बायरा तहा। पज्जत्त मपज्जत्ता एवमेए दुहापुणो ॥ ११८ ॥ बायरा जेउ पज्जत्ता पंचहा ते पकित्तिया। उक्कलिया मडलिया घण गुंजा सुद्धवायाय ॥११९॥ संवट्टग वायायणेगहा एवमाइओ। एगविह मनाणत्ता सुहुमाते वियाहिया ॥ १२० ॥ सुहुमा सव्वलोगमि लोगदेसेय बायरा। इत्तो काल विभागतु तेसिं वोच्छं चउव्विह ॥ १२१ ॥ संतइपप्प णाईया अपज्जव सियाविय। ठिई पडुच्च साईया सपज्जवसियाविय ॥१२२॥

तेउकाय जीव तेउकायथी न मूकाय तो तेनी उत्कृष्ट स्थिति असख्याता काळनी अने जघन्य स्थिति अत मुहूर्त्तनी छे. [११५]. तेउकाय जीव तेउकायथी चवीने उत्पन्न थाय तेनो उत्कृष्ट आतरो अनता काळनो अने जघन्य आतरो अंत मुहूर्त्तनो छे [११६]. तेउकाय जीवनां वर्ण, गध, रस, स्पर्श अने सस्थानने लइने हजारो भेद पडी शके. [११७]. २ वायु कायना बे प्रकार छे.–सूक्ष्म अने बादर. तेना वळी पर्याप्त अने अपर्याप्त एवा बे भेद छे. [११८]. बादर पर्याप्त वायु कायना * पाच प्रकार छे.– उत्कलिक, मडलिक, घनवायु, गुंजवायु, शुद्धवायु, अने सवर्तक वायु. ए वगेरे वायुना अनेक प्रकार कह्या छे. सूक्ष्म वायु-कायनो एक प्रकार छे. तेना जुदा जुदा भेद नथी. [११०-१२०]. सूक्ष्म वायु काय आखा लोकने विषे व्याप्त छे, परंतु बादर वायु काय लोकना एक देशने विषे व्याप्त छे [१२१]. प्रवाह रूपे जोइए तो वायु कायना जीव आदि अने अंत रहित छे, परतु ते काल ने रूपे छे ते रूपे जोइए तो ते आदि अने अत सहित छे [१२२].

* जो के गाथामां पाच प्रकार कह्या छे, छतां गणता छ थाय छे, अने वळी "वगेरे" लखीने एथी वधारेनी हस्ती स्वीकारेली छे.

तिन्नेव सहस्साइ वासाणु क्कोसिया भवे । आऊ ठिई वाऊणं अंतोमुहुत्त जहन्निया ॥१२३॥ असखकाल मुक्कोसा अंतोमुहुत्त जहन्निया । काय ठिई वाऊण त कायतु अमुचओ ॥ १२४ ॥ अणंत काल मुक्कोस अंतोमुहुत्तं जहन्नय । विजढमि सए काए वाऊ जीवाण अतरं ॥१२५॥ एएसि वन्नओ चेव गंधओ रस फासओ मंठाणादेसओ वावि विहाणाइ सहस्ससो ॥१२६॥ ओराला तसाजेऊ चउविहा ते पकित्तिया । बेइंदिय तेइंदिय चउरो पंचिदिया चेव ॥१२७॥ बेइंदियाओ जे जीवा दुविहा ते पकित्तिया । पज्जत्त मपज्जत्ता तेसि भेए सुणेहमे ॥१२८॥ किमिणो सोमगला चेव अलसा माइवाहया । वाम्मी मुहाय सप्पीया संखा संखणगा तहा ॥ १२९ ॥ पल्लो याणुल्लोया चेव तहेवय वराडगा । जल्लगा जालुगा चेव चंदणाय तहेवय ॥ १३० ॥ इइ बेदिया एए णेगहा एवमाइओ । लोएग

वायु काय जीवनी उत्कृष्ट स्थिति त्रण हजार वर्षनी अने जघन्य स्थिति अंत मुहूर्त्तनी छे. [१२३]. वायुकाय जीव वायुकायथी न मूकायतो तेनी उत्कृष्ट स्थिति असख्याता काळनी अने जघन्य स्थिति अंत मुहूर्त्तनी छे [१२४]. वायुकाय जीव वायुकायथी चवीने उत्पन्न थाय तेनो उत्कृष्ट आंतरो अनंत काळनो अने जघन्य आंतरो अंत मुहूर्त्तनो छे. [१२५]. वायुकाय जीवनां वर्ण, गंध, रस, स्पर्श अने संस्थानने लइने हजारो भेद पडी शके. [१२६]. उदारिक त्रस जीवना चार प्रकार छे:-१ बे इन्द्रि, २ त्रण इन्द्रि, ३ चार इन्द्रि अने ४ पांच इन्द्रिवाळां जीव. (१२७). १ बे इन्द्रि (शरीर अने जीभवाळां) जीवना बे प्रकार छे:- पर्याप्त अने अपर्याप्त तेना भेद कहुं छु ते सांभळो. (१२८). कृमि, सोमगल, अलसिया, मातृवाहक [चुडेली], वासीमुखा (वासळीना जेवा-मुखवाळा जीवडा), शंख, शंखनक, पल्लुक, अणुपल्लुक, कोडी, जळो, जालक, अने चदन [घो], आ अने एवां बीजां अनेक

देसे ते मचे न सव्वत्थ वियाहिया ॥ १३१ ॥ संतइपप्प णाईया अपज्जव सियाविय ठिइ पडुच्च साईया सपज्जव सियाविय ॥१३२॥ वासाइं वारसेवउ उक्कोसेण वियाहिया । वेइंदिय आउ ठिई अंतोमुहुत्त जहन्निया ॥ १३३ ॥ संखेज्जकाल मुक्कोसा अंतोमुहुत्त जहन्निया । वेइंदिय काय ठिई तं कायतु अमुचओ ॥ १३४ ॥ अणतकाल मुक्कोस अंतोमुहुत्त जहन्नय । वेइंदिय जीवाण अंतरेय वियाहिय ॥ १३५ ॥ एएसिं वन्नओ चेव गंधओ, रस फासओ । संठाण देसओवावि विहाणाइ सहस्ससो ॥१३६॥ तेंदियाओ जे जीवा दुविहा ते पकित्तिया । पज्जत्त मपज्जत्ता तेसिं भेए सुणेहमे ॥ १३७ ॥ कुंथु पिवीलि उड्डंसा उक्कलुदेहिया तहा । तणहार कट्ठहारा य मालुगा पत्तहारगा॥१३८॥ कप्पासट्ठिमिंजाय तिंदुगाओ गमिंजगा । सयावरीय गुम्मीय बोधव्वा इंदगाईया ॥१३९॥ इंदगोवग

मकारना बे इन्द्रियवाळा जीव लोकना एक देशने विषे व्याप्त छे; आखा लोकने विषे व्याप्त नथी. (१२९-१३१). प्रवाह रूपे जोइए तो बे इन्द्रिय जीव आदि अने अंत रहित छे, परन्तु ते रूप काल ते छे ते रूपे जोइए तो ते आदि अने अंत सहित छे. [१३२]. बे इन्द्रिय जीवनी उत्कृष्ट स्थिति बार वर्षनी अने जघन्य स्थिति अंत मुहूर्त्तनी छे. [१३३]. बे इन्द्रिय जीव बे इन्द्रिय कायथी न मूकाय तो तेनी उत्कृष्ट स्थिति संख्याता काळनी अने जघन्य स्थिति अंत मुहूर्त्तनी छे. [१३४]. बे इन्द्रिय जीव बे इन्द्रिय कायथी नीकळीने उत्पन्न थाय तेनो उत्कृष्ट आंतरो अनंत काळनो अने जघन्य आंतरो अंत मुहूर्त्तनो छे. [१३५]. बे इन्द्रिय जीवना वर्ण, गंध, रस, स्पर्श अने संस्थानने लइने हजारो भेद पडी शके. (१३६) त्रण इन्द्रिय [शरीर, जीभ अने नाकवाळा] जीवना बे प्रकार छे—पर्याप्त अने अपर्याप्त तेना भेद कहुं छुं ते सांभळो (१३७). कुंथु [कंथवा], कीडि, मांकड, उकाल (उत्कलिक जंतु) तृणहार, काष्ठहार, मालुका, पत्रहार, कपासना बिजना जीव, सदावरी, गुल्मी (कानखजुरा), इन्द्रगोप, कानमोला,

माईया-णेगहा एव माइओ । लोएग देसे ते सव्वे न मव्वथ्थ वियाहिया ॥ १४० ॥ संतइपप्प णाईया अपज्जव सियाविय । ठिइ पडुच्च साईया सपज्जव सियाविय ॥१४१॥ एगुणपन्न होरत्ता उक्कोसेण वियाहिया । तेइदिय आउ ठिई अंतोमुहुत्त जहन्निया ॥१४२॥ संखेज्ज काल मुक्कोसा अंतोमुहुत्त जहन्निया । तेइदिय काय ठिई तं कायतु अमुचओ ॥ १४३ ॥ अणत काल मुक्कोसं अंतोमुहुत्त जहन्नय । तेइदिय जीवाण अतरेय विआहियं ॥ १४४ ॥ एएसिं वन्नओ चेव गंधओ रस फासओ सठाणा देसओवावि विहाणाइ सहस्ससो ॥१४५॥ चउरिंदियाओ जे जीवा दुविहा ते पकित्तिया । पज्जत्त मपज्जत्ता तेसिं भेए सुणेहमे ॥ १४६ ॥ अंधिया पुत्तिया चेव मच्छिया मसगा तहा । भमरे कीड पयगेय ढिंकणे कंकणे तहा ॥१४७॥ कुक्कुडे सिंगिरीडीय णदावत्तेय विच्छिए । डोले भिंगारीय विराली

अने एवां बीजां अनेक प्रकारनां त्रण इन्द्रियवाळां जीव लोकना एक देशने विषे व्याप्त छे, तेओ आखा लोकने विषे व्याप्त नथी. [१३९-१४०]. प्रवाह रुपे जोइए तो त्रण इन्द्रिय जीव आदि अने अंत रहित छे, परतु हाल तेओ जे रुपे छे ते रुपे जोइए तो ते आदि अने अंत सहित छे. [१४१]. त्रण इन्द्रिय जीवनी उत्कृष्ट स्थिति ४९ दिवसनी अने जघन्य स्थिति अंत मुहूर्त्तनी छे (१४२) त्रण इन्द्रिय जीव त्रण इन्द्रिय कायथी न मूकाय तो तेनी उत्कृष्ट स्थिति सख्याता काळनी अने जघन्य स्थिति अंत मुहूर्त्तनी छे. [१४३]. त्रण इन्द्रिय जीव त्रण इन्द्रिय कायथी चवीने उत्पन्न थाय तेनो उत्कृष्ट आतरो अनंत काळनो अने जघन्य आतरो अंत मुहूर्त्तनो छे. [१४४]. त्रण इन्द्रिय जीवनां वर्ण, गंध, रस, स्पर्श अने संस्थानने लइने हजारो भेद पडी शके. [१४५]. चार इन्द्रिय (शरीर, जीभ, नाक, अने आंखवाळां) जीवना बे प्रकार छे--पर्याप्त अने अपर्याप्त. तेना भेद कहु छुं ते सांभळो. [१४६]. अन्धिका, पौत्तिका, मक्षिका, मच्छर, भमरा, कीट (पतंगीया), ढिंकण, कुंकण, कुर्कुट, शृंगरीटी, नन्द्यावर्त्त, वींछी, डोल, भृंगरीट,

[illegible] ॥ [illegible] ॥१५०॥ [illegible]
[illegible] ॥१५१॥ [illegible] उक्कोसेण वियाहिया।
[illegible] जहन्निया ॥१५२॥ संखिज्जकालमुक्कोसं अंतोमुहुत्तं जहन्निया। चउरिंदियकाय
ठिई तंकायंतुअमुंचओ ॥ १५३ ॥ अणन्तकाल मुक्कोसं अंतोमुहुत्त. जहन्नय। विजढमि सएकाए अंतरेय वियाहिय
१५४॥ एएसिं वन्नओ चेव गन्धओरस फासओ। सठाणा देसओवावि विहाणाइं सहरससो ॥१५५॥ पांचिंदिया-
ओ जेजीवा चउव्विहाते वियाहिया। नेरइय तिरिक्खाय मणुया देवाय आहिया ॥१५६॥

...ली, अक्षवेधक, आक्षिल, मागध, अक्ष, रोडक, विचित्र, चित्रपत्र, उहिंजलिया, जलकारी, नीया, तंतवगाइया, अने एवा बीजा के प्रकारना चार इन्द्रिवाळो जीव लोकना एक देशने विषे व्याप्त छे, तेओ आखा लोकने विषे व्याप्त नथी. [१४७-१५०].

...रुपे जोइए तो चार इन्द्रिय जीव आदि अने अंत रहित छे, परंतु हाल ते जे रुपे छे ते रुपे जोइए तो ते आदि अने अत छे [१५१] चार इन्द्रिय जीवनी उत्कृष्ट स्थिति छ मासनी अने जघन्य स्थिति अत मुहूर्त्तनी छे. [१५२]. चार इन्द्रिय जीव चार इन्द्रिय कायथी न मूकाय तो तेनी उत्कृष्ट स्थिति संख्याता काळनी अने जघन्य स्थिति अंत मुहूर्त्तनी छे. [१५३]. चार इन्द्रिय जीव चार इन्द्रिय कायथी चवीने उत्पन्न थाय तेनो उत्कृष्ट आंतरो अनत काळनो अने जघन्य आंतरो अंत मुहूर्त्तनो छे. (१५४). चार इन्द्रिय जीवनां वर्ण, गध, रस, स्पर्श अने संस्थानने लईने हजारो भेद पडी शके. (१५५). ४ पचेन्द्रि जीवनां चार प्रकार छेः–१ नारकी, २ तिर्यच, ३ मनुष्य अने ४ देवता. (१५६)

नेरइया सत्तविहा पुढवीसू सत्तसू भवे । पज्जत्तमपज्जत्ता तेसिं भेए सुणेहमे ॥१५७॥ रयणाभसक्कराभावालुयाभाय आहिया । पंकाभा धूमाभातमा तमतमा तहा ॥१५८॥ धम्मावंसगासेलातहा अजणरिट्ठ गामघामाघवइ्चेवणारयाय पुणोपुणो । रयणाइगुत्तओचेवतहाघम्माइणामओ इइ नेरइया एएसत्तहापरिकित्तिया लोगस्स एगदेसमि तेसव्वेउ वियाहिया।। इत्तो कालविभागंतुतेसिं वोछ्छं चउव्विहं ॥ १५९ ॥ संतइपप्पणाईया अपज्जव सियाविय । ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसियाविय ॥१६०॥ सागरोवम मेगंतु उक्कोसेण वियाहिया । पढमाए जहन्नेणं दस वास सहस्सिया ॥१६१॥ तिन्नेव सागराऊ उक्कोसेण वियाहिया । दुच्चाए जहन्नेणं एगतु सागरोवम ॥ १६२ ॥ सत्तेव सागराऊ उक्कोसेण वियाहिया । तइयाए जहन्नेण तिन्नेवउ सागरोवमा ॥ १६३ ॥ दस सागरोवमाऊ उक्कोसेण वियाहिया । चउथ्थीए जहन्नेणं सत्तेवउ सागरोवमा ॥१६४॥

---

१ नारकी जीव सात नरक पृथ्वीने विषे वसता होवाथी तेना सात प्रकार छे, तेनां नामः-रत्नप्रभा, शर्करप्रभा, वालुकप्रभा, पंकप्रभा, धूमप्रभा, तमा अने तमतमा, आ प्रमाणे नारकी जीवना सात प्रकार वर्णव्या छे. (१५७-१५८) नारकी जीव लोकना एक देशने विषे व्याप्त छे, तेओ आखा लोकने विषे व्याप्त नथी. (१५९). प्रवाह रुपे जोइए तो नारकी जीव आदि अने अंत रहित छे, परतु हाल ते जे रुपे छे ते रुपे जोइए तो ते आदि अने अंत सहित छे. (१६०). पेली रत्नप्रभा नारकी जीवनी उत्कृष्ट स्थिति एक सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति दश हजार वर्षनी छे - (१६१). बीजी शर्करप्रभा नारकी जीवनी उत्कृष्ट स्थिति त्रण सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति एक सागरोपमनी छे. (१६२). त्रीजी वालुकप्रभा नारकी जीवनी उत्कृष्ट स्थिति सात सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति त्रण सागरोपमनी छे (१६३). चोथी पंकप्रभा नारकी जीवनी उत्कृष्ट स्थिति दश सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति सात सागरोपमनी छे. (१६४).

सत्तरा सागराऊ उक्कोसेण वियाहिया। पचमाए जहन्नेण दसचेवउ सागरोवमा ॥१६५॥ बावीस सागराउ उक्कोसेण वियाहिया । छट्ठीए जहन्नेण सत्तरस सागरोवमा ॥१६६॥ तित्तीस सागराऊ उक्कोसेण वियाहिया । सत्तमाए जहन्नेणं बावीसं सागरोवमा ॥१६७॥ जाचेवउ आउ ठिई नेरईयाण वियाहिया । सातेसिं काय ठिई जहन्नुक्कोसिया भवे ॥१६८॥ अणत काल मुक्कोसं अतोमुहुत्त जहन्नय । विजढमि सए काए नेरइयाणतु अतर ॥ १६९ ॥ एएर्मि वन्नओ चेव गंधओ रस फासओ । सठाणा देसओवावि विहाणाइं सहस्ससी ॥ १७० ॥ पचिदिय तिरिक्खाओ दुविहा ते वियाहिया । संमुछ्छिम तिरिक्खाओ गम्भ वक्कतिया तहा ॥ १७१ ॥ दुविहा ते भवे तिविहा जलयरा थलयरा तहा । खहयराय बोधव्वा तेसिं भेए सुणेहमे ॥१७२॥

— पाचमी धूमप्रभा नारकी जीवनी उत्कृष्ट स्थिति सत्तर सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति दश सागरोपमनी छे. (१६५). छठी तमा नारकी जीवनी उत्कृष्ट स्थिति बावीश सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति सत्तर सागरोपमनी छे (१६६). सातमी तमतमा नारकी जीवनी उत्कृष्ट स्थिति तेत्रीश सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति बावीश सागरोपमनी छे. [१६७]. नारकी जीव नरकथी न मूकाय तो तेनी उत्कृष्ट अने जघन्य स्थिति जे जे नरकमां ते उपजे ते ते नरकनी उत्कृष्ट अने जघन्य स्थिति प्रमाणे जाणवी. [१६८]. नारकी जीव नरकथी चवीने उत्पन्न थाय तेनो उत्कृष्ट आंतरो अनंत काळनो अने जघन्य आंतरो अतमुहूर्त्तनो छे. [१६९]. नारकी जीवनां वर्ण, गंध, रस, स्पर्श अने सस्थानने लइने हजारो भेद पडी शके. [१७०] (२) पचेंन्द्रि तिर्यचना बे प्रकार छेः–समूर्च्छिम [मन पर्याप्ति रहित]* अने गर्भव्युत्क्रान्तिका [गर्भज मन पर्याप्ति सहित]. [१७१]. ते प्रत्येकना वळी त्रण प्रकार छेः–जळचर, स्थळचर अने खेचर (पक्षीओ) -तेना भेद हवे कहुं छुं ते सांभळो. [१७२].

* Generatio acquivoca

मच्छाय कच्छभाया गाहाय मगरा तहा । सुं सुमाराय बोधव्वा पचहा जलयरा हिया ॥ १७३ ॥ लोएगदेसे ते सव्वे न सव्वथ्थ वियाहिया । इत्तोकाल विभागतु तेसिवोच्छ चउव्विह ॥१७४॥ सतइं पप्पणाईया अपज्जव सियाविय । ठिइ पडुच्च साईया सपज्जव सियाविय ॥ १७५ ॥ एकाय पुव्वकोडी उक्कोसेण वियाहिया । आउ ठिई जलयराण अतोमुहुत्त जहन्निया ॥ १७६ ॥ पुव्वकोडी पुहत्तातु उक्कोसेण वियाहिया । काय ठिई जलयराण अंतोमुहुत्त जहन्निया ॥१७७॥ अणत काल मुक्कोसं अतोमुहुत्त जहन्नय । विजढमि सए काए जलयराणतु अतर ॥१७८॥ एएसिं वन्नयो चेव गवओ रस फासओ । सठाण देसओ वावि विहाणाइ सहस्मसी ॥१७९॥

मांछलां, काचबा, ग्राह, मगर अने शिशुमार ए प्रमाणे जळचर जीवना पाच भेद छे [१७३] जळचर जीव लोकना एक देशने विषे व्याप्त छे, तेओ आखा लोकने विषे व्याप्त नथी हवे हु तेना चार प्रकारे काळ विभाग कहु छुं [१७४] प्रवाह रुपे जोइए तो जळचर जीव आदि अने अंत रहित छे, परतु हाल ते जे रुपे छे ते रुपे जोइए तो ते आदि अने अत सहित छे [१७५]. जळचर तिर्यंच पचेंद्रि जीवनी उत्कृष्ट स्थिति पूर्व कोटि वर्षनी अने जघन्य स्थिति अत मुहूर्त्तनी छे. [१७६]. जळचर पचेंद्रि जीवनी काय स्थिति उत्कृष्ट स्थिति पृथक [1] पूर्व कोटि वर्षनी [2] अने जघन्य स्थिति अत मुहूर्त्तनी छे, (१७७). जळचर जीव जळचर कायथी नवीने उत्पन्न थाय तेनो उत्कृष्ट आतरो अनत काळनो अने जघन्य आतरो अत मुहूर्त्तनो छे (१७८) जळचर जीवना वर्ण, गध, रस, स्पर्श अने सस्थानने लइने हजारो भेद पडी शके. (१७९)[3]

---

१ बेथी लइ नव सुधी पृथक कहेवाय छे. २ बीजा अध्ययननी पदरमी गाथा जुओ. ३ मो. जेकोबीए आ गाथा अहिंआ अने हवेपछी ज्या ज्या आवे छे त्या पडती मूकी छे, तेथी अनुक्रम मळतो नथी

चउप्पयाय परिसप्पा दुविहा थलयरा भवे । चउप्पया चउव्विहाओतेमेकित्तयओसुण ॥१८०॥ एगखुरादुखुराचेव गडीपय सनप्पया । हयमाईगोणमाई गयमाई सीहमाइणो ॥ १८१ ॥ भु उरग परिसप्पा परिसप्पा दुविहा भवे । गोहाई अहिमाईया एक्केक्का णेगहा भवे ॥१८२॥ लोएग देसे तेसव्वे न सव्वथ्थ वियाहिया । इत्तो काल विभा-गंतु तेसिं वोछं चउव्विह ॥१८३॥ सतइं पप्पणाईया अपज्जव सियाविय । ठिई पडुच्च साईया सपज्जवसियाविय ॥१८४॥ पलिओ वमाओ तिन्निओ उक्कोसेण वियाहिया । आउ ठिई थलयराणं अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१८५॥ पलिओवमाओ तिन्निओ उक्कोसेणतु साहिया । पुव्वकोडी पुहुत्तेण अतमुहुत्त जहन्निया ॥१८६॥ कायठिई थल-यराण अतरं तेसिम भवे । अणत काल मुक्कोस अतोमुहुत्त जहन्नय ॥१८७॥

स्थळचर जीवना बे प्रकार छेः—चोपगां अने पेटे चालनारां. चोपगांना चार भेद छे ते तमने कहु छु ते सांभळोः—(१८०). एक खरीवाळां (घोडा वगेरे), बे खरीवाळां (गाय वगेरे), गडी पदा (हाथी वगेरे) अने सनखपदा एटले नोरवाळां (सिंह वगेरे). (१८१). पेटे चालनारा जीवना बे प्रकार छेः—भुजा उपर चालनारां जेवाके उंदर वगेरे, अने पेटे चालनारां जेवांके सर्प वगेरे, ए बन्नेना वळी अनेक भेद छे. [१८२]. स्थळचर जीव लोकना एक देशने विषे व्याप्त छे, तेओ आखा लोकने विषे व्याप्त नथी. हवे हु तेना चार प्रकारे काळ विभाग कहुं छु [१८३] प्रवाह रुपे जोइए तो स्थळचर जीव आदि अने अत रहित छे, परंतु हाल ते जे रुपे छे ते रुपे जोइए तो ते आदि अने अत सहित छे. [१८४]. स्थळचर जीवनी उत्कृष्ट स्थिति त्रण पल्योपमनी अने जघन्य स्थिति अत मुहूर्त्तनी छे. [१८५]. स्थळचर जीव स्थळचर कायथी न मुकाय तो तेनी उत्कृष्ट स्थिति त्रण पल्योपम उपर पृथक पूर्व कोटि वर्षनी अने जघन्य स्थिति अत मुहूर्त्तनी छे (१८६). स्थळचर जीव स्थळचर कायथी चवीने उत्पन्न थाय तेनो उत्कृष्ट आंतरो अनत काळनो अने जघन्य आंतरो अत मुहूर्त्तनो छे. [१८७]

विजटमि सए काए थलयराणतु अतर । एएसिं वन्नओ चेव गधओ रस फासओ ॥१८८॥ सठाणा देसओ वावि विहाणाइ सहस्ससी चम्मेउ लोम पक्खीय तइया समुग्ग पक्खिया ॥ १८९ ॥ वियय पक्खीय बोधव्वा पक्खिणोय चउव्विहा । लोएगदेसे तेसव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ॥ १९० ॥ संतइ पप्पणाईया अपज्जवमियावि य । ठिइपडुच्च साईया सपज्जव सियाविय ॥ १९१ ॥ पलिओवमस्स भागो असंखेज्जाइमो भवे । आउठिई खहयराणं अंतोमुहुत्त जहन्निया ॥ १९२ ॥ असखभागो पलियस्स उक्कोसेण वियाहिओ । पुव्वकोडी पुहुत्तेणं अंतोमुहुत्त जहन्निया ॥ १९३ ॥ काय ठिई खहयराणं अतरतेसिमभवे । काल अणत मुक्कोसं अंतोमुहुत्त जहन्नय ॥ १९४ ॥ एएसि वन्नओ चेव गंधओ रस फासओ सठाणा देसओवावि विहाणाइ सहस्ससो ॥१९५॥

स्थळचर जीवनां वर्ण, गध, रस, स्पर्श अने सस्थानने लइने हजारो भेद पडी शके. [१८८]. खेचर जीवना चार प्रकार छः- चर्मरूप पांखवाळां (वडवागळां वगेरे), रोमरूप पांखवाळां (मोर हस वगेरे), समुग्ग पाखवाळा एटले पांख बांधीने उडनारां, अने वितत पांखवाळां एटले पाख विस्तारीने उडनारां. [१८९]. खेचर जीव लोकना एक देशने विषे व्याप्त छे, तेओ आखा लोकने विषे व्याप्त नथी हवे हु तेना चार प्रकारे काळ विभाग कहुं छुं. [१९०]. प्रवाह रूपे जोइए तो खेचर जीव आदि अने अंत रहित छे, परंतु हाल ते जे रूपे छे ते रूपे जोइए तो ते आदि अने अत सहित छे. [१९१]. खेचर जीवनी उत्कृष्ट स्थिति पल्योपमना असंख्यातमा भागनी अने जघन्य स्थिति अत मुहूर्त्तनी छे. [१९२]. खेचर जीव खेचर कायथी न मूकाय तो तेनी उत्कृष्ट स्थिति पल्योपमनो असंख्यातमो भाग अने पृथक पूर्व कोटि वर्षनी अने जघन्य स्थिति अत मुहूर्त्तनी छे. [१९३] खेचर जीव खेचर कायथी चवीने उत्पन्न थाय तेनो उत्कृष्ट आंतरो अनत काळनो अने जघन्य आंतरो अत मुहूर्त्तनो छे. [१९४]. खेचर जीवनां वर्ण, गध, रस, स्पर्श अने सस्थानने लइने हजारो भेद पडी शके. [१९५].

मणुयादुविहाभेआओतेमेकित्तयओसुण । समुच्छिमायमणुया गब्भवक्कतियातहा ॥ १९६ ॥ गब्भवक्कंतियाजेउतिविहा तेवियाहिया । अकम्मकम्मभूम य अतरदीवगा तहा ॥ १९७ ॥ पन्नरस तीसइ विहा भेया अठ्ठावीसइ । सखाओ कमसो तेसिं इइ एसा वियाहिया ॥१९८॥ समुच्छिमाणएसेव भेउहोइ आहिओ । लोगस्स एगदेसमि ते सव्वे वियाहिया ॥१९९॥ सतइपप्प णाईया अपज्जव सियाविय । ठिइ पडुच्च साईया सपज्जव सियाविय ॥२००॥ पलिओवमाइ तिन्निओ उक्कोसेण वियाहिया । आउ ठिई मणुयाण अतोमुहुत्त जहन्निया ॥२०१॥ पलिओवमाउ तिन्निओ उक्कोसेणंतु साहिया । पुव्वकोडि पुहुत्तेण अतोमुहुत्त जहन्निया ॥ २०२ ॥ काय ठिई मणुयाण अणतर तेसिम भवे । अणात काल मुक्कोस अतोमुहुत्त जहन्नय ॥,२०३ ॥

---

(३) मनुष्यना बे प्रकार छे, ते तमने कहु छु ते साभळोः–१ समूर्च्छिम अने २ गर्भज-गर्भ व्युत्क्रान्तिका. [१९६]. गर्भ व्युत्क्रान्तिका मनुष्यना त्रण प्रकार कह्या छे'--अकर्म भूमिमा वसनारा, कर्म भूमिमां वसनारा अने अन्तर द्वीपमा वसनारा. [१९७]. कर्म भुमिमा पदर जातना (भरत, ऐरावत अने महाविदेह दरेकमां पाच पाच जातना), अकर्म भूमिमा त्रीश जातना (हैमवत, हरिवर्ष, हैरण्यवत, देवकुरु, अने उत्तरकुरु दरेकमा पाच पाच जातना) अने अन्तर द्वीपमां २८ जातना मनुष्य वसे छे एम श्री तीर्थकरे भाख्युं छे [१९८] समूर्च्छिम मनुष्यना घणा प्रकार छे तेओ लोकना एक देशने विषे व्याप्त छे. [१९९]. प्रवाह रुपे जोइए तो मनुष्य जीव आदि अने अत रहित छे, परतु जे रुपे हाल ते छे ते रुपे जोइए तो ते आदि अने अत सहित छे. [२००]. मनुष्यनी उत्कृष्ट स्थिति त्रण पल्योपमनी अने जघन्य स्थिति अत मुहूर्त्तनी छे. (२०१). मनुष्य जीव मनुष्य कायथी न मूकाय तो तेनी उत्कृष्ट स्थिति त्रण पल्योपम अने पूर्व कोटि वर्षनी अने जघन्य स्थिति अत मुहूर्त्तनी छे [२०२] मनुष्य जीव मनुष्य कायथी चवीने उत्पन्न थाय तेनी उत्कृष्ट आतरो अनत काळनो अने जघन्य आतरो अत मुहूर्त्तनो छे. (२०३).

एएसिं वन्नओ चेव गधओ रस फासओ । सठाणा देसओवावि विहाणाइ सहस्ससो ॥ २०४ ॥ देवा चउव्विहा वुत्ता ते मे कित्तयओ सुण । भोमिज्ज वाणमतर जोइस वेमाणिया तहा ॥ २०५ ॥ दसहाओ भवणवासी अट्ठहा वणचारिणो । पचविहा जोइसिया दुविहा वेमाणिया तहा ॥२०६॥ असुरा नाग सुवन्ना विज्जु अग्गीय आहिया । दीवो दहि दिसा वाया थणिया भवणवा सिणो ॥२०७॥ पिसाय भूया जक्खाय रक्खसा किनराय किंपुरिसा।महो-रगाय गधव्वा अट्ठविहा वाणमतरा ॥२०८॥ चदा सूराय नक्खत्ता गहा तारागणा तहा। ठिया विचारिणो चेव पचहा जोइसालया ॥२०९॥ वेमाणियाओ जेदेवा दुविहा ते वियाहिया । कप्पोवगाय बोधव्वा कप्पाईया तहेवय ॥२१०॥

तेओनां वर्ण, गध, रस, स्पर्श अने सस्थानने लइने हजारो भेद पडी शके. [२०४] (४) देवताना चार प्रकार छे, ते कहु छु ते साभळो. १ भोमेयक (भूवनपति), २ व्यन्तर, ३ ज्योतिष्क अने ४ वैमानिक. [२०५] भूवनपतिना दश भेद, व्यन्तरना आठ भेद, ज्योतिष्कना पाच भेद अने वैमानिकना बे भेद छे. [२०६]. भूवनपतिना दश भेदः—असुर कुमार, नाग कुमार, सुवर्ण कुमार, विद्युत कुमार, अग्नि कुमार, द्वीप कुमार, उदधि कुमार, दिसि कुमार, वायु कुमार अने स्तनित कुमार.[१] [२०७] व्यन्तरना आठ भेदः—पिशाच, भूत, यक्ष, राक्षस, किन्नर, किम्पुरुष, महोरगा, गन्धर्व [२०८] ज्योतिष्क देवताना पांच स्थळः—चद्र, सूर्य, नक्षत्र, ग्रह अने तारागण * तेमां अमुक स्थिर अने अमुक फरता छे [२०९]. * वैमानिक देवताना बे भेदः—कल्पोपगा (बार देव लोकमां उपजे ते) अने कल्पातीता (नव ग्रैवेयक अने पाच अनुत्तर विमानमां उपजे ते) [२१०].

---

१ प्रो. जेकोबीए तेमज सस्कृत टीकाकारे आ नाम तदन मूकी दीधुं छे तेथी नव भेद थाय छे. २ आने बदले प्रो. जेकोबीए "धणिक कुमार" लख्यु छे. * गाथा २०९-आटलो भाग प्रो. जेकोबीए मूकी दीधो छे. संस्कृत टीकाकार एनो एवो अर्थ करे छे के तेओ अढी द्वीपमां फरे छे अने अढी द्वीप बहार स्थिर छे.

कप्पोवगा वारसहा सोहम्मी साणगा तहा । सणकुमारमाहिंदा वभलोगायलतगा ॥२११॥ म्हासुक्कासहस्सारा आणया पाणयातहा । आरणा अच्चुया चेव इइ कप्पोवगा सुरा ॥२१२॥ कप्पाईयाय जेदेवा दुविहा ते वियाँहिया । गेवेज्जा णुत्तरा चेव गेवेज्जा नव विहा तहिं ॥२१३॥ हिट्ठिमा हिट्ठिमा चेव हिट्ठिमा मज्झिमा तहा। हिट्ठिमा उवरिमा चेव मज्झिमा हिट्ठिमा तहा ॥२१४॥ मज्झिमा मज्झिमा चेव मज्झिमा उवरिमा तहा । उवरिमा हिट्ठिमा चेव उवरिमा मज्झिमा तहा ॥२१५॥ उवरिमा उवरिमा चेव इइ गेवेज्जगा सुरा। विजया वेजयंताय जयता अपराजिया ॥२१६॥ सव्व ट्ठसिद्धिगा चेव पन्चहा णुत्तरा सुरा । इइ वेमाणिया एए णेगहा एव माइओ ॥ २१७ ॥ लोगस्स एग देसंमि ते सव्वे परिकित्तिया । इत्तो काल विभागतु तेसिं वोच्छं चउव्विह॥२१८॥ संतइपप्पणाईया अपज्जवसियाविय। ठिइं पडुच्च साईया सपज्जव सियाविय ॥ २१९ ॥

कल्पोपगा देवताना वार भेद छेः–१ सौधर्म, २ इशान, ३ सनत कुमार, ४ माहेन्द्र, ५ ब्रह्मलोक, ६ लान्तक, ७ महाशुक्र, ८ सहस्रार, ९ आणत, १० प्राणत ११ आरण अने १२ अच्युत. ए प्रमाणे बार देवलोकमां वसता देवताना वार भेद कह्या छे. (२११-२१२). कल्पातीता देवताना बे भेद छेः–१ ग्रैवेयक अने २ अनुत्तर. ग्रैवेयक देवताना नव भेद छे. [२१३]. १ अधस्तमां अधस्त (हेठलामां हेठला), २ अधस्तमां मध्यम, ३ अधस्तमा उपरि, ४ मध्यमां अधस्त, ५ मध्यममां मध्यम, ६ मध्यममा उपरि; ७ उपरिमां अधस्त, ८ उपरिमां मध्यम अने ९ उपरिमां उपरि. ए प्रमाणे ग्रैवेयक देवता छे. १ विजय, २ विजयन्त, ३ जयन्त, ४ अपराजित अने ५ सर्वार्थसिद्ध ए अनुत्तर देवताना पाच भेद छे. आ प्रमाणे वैमानिक देवताना अनेक भेद छे. [२१४-२१७]. ए देवता लोकना एक देशने विषे व्याप्त छे, हवे हु तेना चार प्रकारे काळ विभाग कहु छु. [२१८]. प्रवाह रुपे जोइए तो देवता आदि अने अंत रहित छे, परंतु हाल तेओ जे रूपे छे ते रूपे जोइए तो ते आदि अने अंत सहित छे. [२१९].

साहियसा गरंएक्क उक्कोसेणठिईभवे । भोमेज्जाणजहन्नेणं दसवाससहस्सिया ॥२२०॥ पलिओवममेगंतु उक्कोसेण ठिई भवे । वतराण जहन्नेण दस वास सहस्सिया ॥२२१॥ पलिओवमतु एगं वासलक्खेण साहियं । पलिओवमट्ठ भागो जोइसेसु जहन्निया ॥२२२॥ दोचेव सागराइं उक्कोसेण वियाहिया । सोहम्ममि जहन्नेण एगंच पलिओवम ॥२२३॥ सागरा साहिया दुन्नि उक्कोसेण वियाहिया । ईसाणंमि जहन्नेणं साहिय पलिओवम ॥२२४॥ सागराणिय सत्तेव उक्कोसेण ठिई भवे । सणक्कुमारे जहन्नेण दुन्निऊ सागरोवमा ॥२२५॥ साहिया सागरा सत्त उक्कोसेण ठिई भवे । माहिंदम्मि जहन्नेण साहिया दुन्नि सागरा ॥ २२६ ॥ दसचेव सागराइ उक्कोसेण ठिई भवे । बंभलोए जहन्नेण सत्तऊ सागरोवमा ॥ २२७ ॥ चउदस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे । लंतगमि जहन्नेण दसऊ सागरोवमा ॥२२८॥

भुवनपति देवतानी उत्कृष्ट स्थिति एक सागरोपमथी अधिक अने जघन्य स्थिति दश हजार वर्षनी छे [२२०]. व्यन्तर देवतानी उत्कृष्ट स्थिति एक पल्योपमनी अने जघन्य स्थिति दश हजार वर्षनी छे. [२२१]. ज्योतिष्क देवतानी उत्कृष्ट स्थिति एक पल्योपम अने एक लाख वर्षनी अने जघन्य स्थिति पल्योपमना आठमा भागनी छे. [२२२]. सौधर्म देवलोकना देवतानी उत्कृष्ट स्थिति बे सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति एक पल्योपमनी छे [२२३]. इशान देवलोकना देवतानी उत्कृष्ट स्थिति बे सागरोपमथी अधिक अने जघन्य स्थिति एक पल्योपमथी अधिक छे. [२२४]. सनत कुमार देवलोकना देवतानी उत्कृष्ट स्थिति सात सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति बे सागरोपमनी छे [२२५]. माहेन्द्र देवलोकना देवतानी उत्कृष्ट स्थिति सात सागरोपमथी अधिक अने जघन्य स्थिति बे सागरोपमथी अधिक छे. [२२६]. ब्रह्म देवलोकना देवतानी उत्कृष्ट स्थिति दश सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति सात सागरोपमनी छे (२२७).लान्तक देवलोकना देवतानी उत्कृष्ट स्थिति चौद सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति दश सागरोपमनीछे.[२२८].

सत्तरस सागराइ उक्कोसेण ठिई भवे । महासुक्के जहन्नेण चउदस सागरोवमा ॥२२९॥ अट्ठारस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे । सहस्सारे जहन्नेण सत्तरस सागरोवमा ॥२३०॥ सागरा अउणवीसंतु उक्कोसेण ठिई भवे । आणयम्मि जहन्नेण अट्ठारस सागरोवमा ॥२३१॥ वीसतु सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे । पाणयम्मि जहन्नेण सागरा अउणवीसई ॥ २३२ ॥ सागराएक्कवीसंतु उक्कोसेण ठिई भवे । आरणम्मि जहन्नेण वीसई सागरोवमा ॥ २३३ ॥ बावीस सागराइ उक्कोसेण ठिई भवे । अच्चुयमि जहन्नेण सागरा एक्कवीसई ॥२३५॥ तेवीस सागराइ उक्कोसेण ठिई भवे। पढमम्मि जहन्नेण बावीस सागरोवमा ॥ २३५ ॥ चउवीस सागराइ उक्कोसेण ठिई भवे । बिइयम्मि जहन्नेण तेवीस सागरोवमा ॥२३६॥

महाशुक्र देव लोकना देवतानी उत्कृष्ट स्थिति सत्तर सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति चौद सागरोपमनीछे [२२९]. सहस्रार देव लोकना देवतानी उत्कृष्ट स्थिति अठार सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति सत्तर सागरोपमनी छे [२३०] आणत देव लोकना देवतानी उत्कृष्ट स्थिति १९ सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति १८ सागरोपमनी छे. [२३१] प्राणत देव लोकना देवतानी उत्कृष्ट स्थिति २० सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति १९ सागरोपमनी छे. [२३२] आरण देव लोकना देवतानी उत्कृष्ट स्थिति २१ सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति २० सागरोपमनी छे (२३३) अच्युत देव लोकना देवतानी उत्कृष्ट स्थिति २२ सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति २१ सागरोपमनी छे. (२३४) प्रथम ग्रैवेयकने विषे देवतानी उत्कृष्ट स्थिति २३ सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति २२ सागरोपमनी छे. (२३५) बीजा ग्रैवेयकने विषे देवतानी उत्कृष्ट स्थिति २४ सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति २३ सागरोपमनी छे. (२३६)

पणवीस सागराइ उक्कोसेण ठिई भवे । तइयम्मि जहन्नेणं चउवीस सागरोवमा ॥२३७॥ छव्वीसं सागराइ उक्कोसेण ठिई भवे । चउत्थम्मि जहन्नेण सागरा पणवीसई ॥ २३८ ॥ सागरा सत्तवीसतु उक्कोसेण ठिई भवे । पचमम्मि जहन्नेण सागरा छव्वीसई ॥२३९॥ सागरा अट्ठवीसतु उक्कोसेण ठिई भवे । छट्ठम्मि जहन्नेणं सागरा सत्तवीसई ॥२४०॥ सागरा अउणतीसतु उक्कोसेण ठिई भवे । सत्तमम्मि जहन्नेण सागरा अट्ठवीसई ॥२४१॥ तीसंतु सागराइ उक्कोसेण ठिई भवे । अट्ठमम्मि जहन्नेण सागरा अउणतीसई॥२४२॥ सागरा एक्कतीसतु उक्कोसेण ठिई भवे। नवमम्मि जहन्नेण तीसई सागरोवमा ॥ २४३ ॥ तेत्तीस सागराऊ उक्कोसेण ठिई भवे । चउसुवि विजयाईसु जहन्नेणे क्कतीसई ॥२४४॥

त्रीजा ग्रैवेयकने विषे देवतानी उत्कृष्ट स्थिति २५ सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति २४ सागरोपमनी छे. [२३७]. चोथा ग्रैवेयकने विषे देवतानी उत्कृष्ट स्थिति २६ सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति २५ सागरोपमनी छे. [२३८]. पाचमा ग्रैवेयकने विषे देवतानी उत्कृष्ट स्थिति २७ सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति २६ सागरोपमनी छे. [२३९]. छट्ठा ग्रैवेयकने विषे देवतानी उत्कृष्ट स्थिति २८ सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति २७ सागरोपमनी छे. [२४०]. सातमा ग्रैवेयकने विषे देवतानी उत्कृष्ट स्थिति २९ सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति २८ सागरोपमनी छे. [२४१]. आठमा ग्रैवेयकने विषे देवतानी उत्कृष्ट स्थिति ३० सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति २९ सागरोपमनी छे. [२४२]. नवमा ग्रैवेयकने विषे देवतानी उत्कृष्ट स्थिति ३१ सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति ३० सागरोपमनी छे. [२४३]. अनुत्तर देवलोकना विजयादि पहेला चार (विजय, विजयन्त, जयन्त अने अपराजित) देवतानी उत्कृष्ट स्थिति ३३ सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति ३१ सागरोपमनी छे. [२४४].

इइ जीव मजीवेय सोचा सद्दहिऊणय । सव्व नयाण अणुमए रमेज्जा सजमे मुणी ॥२५२॥ तओ वहूणि वासाणि सामन्न मणुपालिया । इमेण कम्म जोगेणं अप्पाण सलिहे मुणी ॥ २५३ ॥ वारसेवउ वासाइं सलेहु क्कोसिया भवे । सवच्छर मज्झमिया छम्मासाय जहन्निया ॥२५४॥ पढमे वास चउक्कमि विगई निज्जूहण करे । विइए वास चउक्कमि विचित्तु तवं चरे ॥ २५५ ॥ एगतर मायाम कट्टु सवच्छरे दुवे । तओ सवच्छरद्धतु नाइविगिट्ठं तव चरे ॥२५६॥ तओ सवच्छरद्धतु विगिट्ठतु तव चरे । परिमिय चेव आयाम तमि सवच्छरे करे ॥ २५७ ॥ कोडीसहिय मायाम कट्टु सवच्छरे मुणी । मासद्धमासिएणतु आहारेण तवचरे ॥ २५८ ॥ कदप्प माभि ओग किव्विसिय मोह मासुरत्तच । एयाओ दुग्गईओ मरणमि विराहिया होति ॥२५९॥

उपर प्रमाणे जीव अने अजीवना भेद गुरु पासेथी सांभळीने ते उपर श्रद्धा राखीने मुनिए सयमने विषे विचरवु [२५२]. घणां वर्षसुधी सयम (चारित्र) पाळ्या बाद, मुनिए तपवडे नीचे प्रमाणे सलेखणा आदरवी, (कायाने कृश करवी) [२५३] सलेखणानी[1] उत्कृष्ट मुदत बार वर्षनी, मध्यम एक वर्षनी, अने टुकामा टुकी मुदत छ मासनी छे [२५४] पहेला चार वर्षने विषे विगयनो त्याग करीने आंबिल, नीवी करे, बीजा चार वर्षने विषे जात जातना तप (छट्ठ, आठमादि) आदरे. [२५५]. पछी बे वर्ष सुधी एकांतर उपवास अने पारणे आंबिल करे अने छेल्ला छ मासमां काइ कठिन तप न आदरे,(आम साडा दश वर्ष थाय).[२५६] त्यारपछीना छ मासमां आकरा तप करे अने परिमि आंबिल करे. [२५७]. छेल्ला वर्षमा मासखमण अने अर्ध मासखमणना तप करे अने आहारनो त्याग करीने अणसणरूप तप करे. [२५८]. कन्दर्प भावना, अभियोग्य भावना, किल्बिषी भावना, मोह भावना, अने असुरत्व भावना ए पांच भयकर भावना पैकी कोइ भावना मरण समये उपजे तो दुर्गतिना कारण रूप थइ पडे छे [२५९]

1 Last selfmortification which is to end with death.

मिच्छा दसण रत्ता सन्नि याणाहु हिंसगा । इय जे मरति जीवा तेसिं पुण दुल्लहा बोही ॥२६०॥ सम्मद्दंसण रत्ता अनियाणा सुक्कलेसमोगाढा । इय जे मरति जीवा सुलहा तेसिं भवे बोही ॥ २६१ ॥ मिच्छा दसण रत्ता सनियाणा किन्हलेसमोगाढा । इय जे मरति जीवा तेसिपुण दुल्लहा बोहि ॥२६२॥ जिणवयणे अणुरत्ता जिणवयण जे करति भावेण । अमला असं किलिट्ठा ते होंति परित्त ससारी ॥२६३॥ बाल मरणाणि बहुसो अकाम मरणाणि चेवय । बहुणि मरिहृति तेवराया जिणवयणजेनयाणाति ॥ २६४ ॥ बहु आगम विन्नाणा समाहि मुप्पायगाय गुणग्गाही । एएण कारणेण अरिहा आलोयणसोउं ॥ २६५ ॥ कदप्प कोकुइयाइं तहसील सहाव हास विगहाहि । विम्हावितोय पर कंदप्प भावण कुणइ ॥२६६॥

जे जीव मिथ्या दर्शन (अन्य धर्म)मा अनुरक्त रहे छे, ते पाप अने जीव हिंसा करे छे अने एवा जीवने भवान्तरे पण जिन धर्मनी प्राप्ति थवी दुर्लभ छे [२६०] जे जीव सम्यक दर्शन (जिन धर्म)मां अनुरक्त रहे छे ते पाप रूपी मळ रहित अने शुक्ल लेश्यावाळा थाय छे अने एवा जीवने मोक्ष सुलभ थइपडे छे. [२६१] जे जीव मिथ्या दर्शनमा अनुरक्त रहे छे, ते पापकर्म करे छे ते कृष्ण लेश्यावाळा थाय छे, अने एवा जीवने बोधि (जिन धर्मनी प्राप्ति) दुर्लभ थइ पडे छे [२६२] जे जीव जिन वचन (सिद्धांत)मा अनुरक्त रहे छे अने ते प्रमाणे भावथी वर्ते छे ते मळ रहित अने (मोह मन्मथादि) क्लेश रहित थाय छे अने काळे करीने ससार (जन्म मरण) थी मुक्त थाय छे. [२६३] जे जीव जिन वचनने विषे श्रद्धा राखतो नथी ते वारंवार अकाम मरणने पामे छे, (जन्म मरणना फेरा फर्या करे छे). [२६४] जेओ आगम (सिद्धांतना अर्थ)ने जाणनारा छे, जेनु ज्ञान विशिष्ट छे, जेओ अन्यने समाधि (श्रद्धा) उपजावी शके छे, अने जेओ अन्यने गुण ग्रहण करावी शके छे (अर्थात-अन्यना दुर्गण टाळी शके छे) एवा आचार्यो आ मुक्तिनो मार्ग (आलोचना) साभळवाने योग्य छे. [२६५]. जेओ हास्य, विकथा, कर्मकथा, कायचेष्टा आदि करीने अन्यने विस्मय पमाडे छे ते कन्दर्प भावना भावे छे. [२६६].

मता जोग काउ भूई कम्म च जे पउजति । साय रस इड्ढि हेउ अभिओग भावण कुणइ ॥२६७॥ नाणस्स केव-लीणं धम्मायरियस्स सघ साहूण । माई अवन्नवाई किव्विसिय भावणं कुणइ ॥२६८॥ अणुबद्ध रोस पसरो तहय निमित्तमि होइ पाडिसेवी । एएहिं कारणे हिं आसुरिय भावण कुणइ ॥२६९॥ सथ्थग्गहण विसभक्खणं च जलण च जलप्पवेसीय । अणायार भड सेवी जम्मण मरणाणि बंधति ॥ २७० ॥ इइ पाउ करे बुद्धे नायए परिनिव्वुए । छत्तीस उत्तरज्झाए भवसिद्धिय सम्मएत्तिबेमि ॥२७१॥ जीवाजीव विभत्तिज्झयण सम्मत्तं ॥३६॥

जेओ मंत्र प्रयोग करे छे अने पोताना सुख, आनद अने प्राप्तिने अर्थे शरीरे राख वगेरे चोळे छे ते अभियोग्य भावना भावे छे. [२६७]. जे मूर्ख जीवो ज्ञाननी, केवलीनी, धर्माचार्यनी, संघनी अने साधुनी अशातना (निंदा) करे छे ते किल्विष भावना भावे छे. [२६८]. जेओ हमेशां क्रोध करे छे अने जेओ शुभाशुभ भविष्य भाखे छे ते आसुरी भावना भावे छे. [२६९]. जेओ आत्म वध करवाने, शस्त्र वापरे छे, विषपान करे छे, जळ अथवा अग्निमां प्रवेश करे छे अने अनाचार आदरे छे, तेओ जन्म-मरणना बंध बांधे छे, अर्थात अनंता भव बांधे छे. (अने मोह भावना भावे छे). [२७०]. ज्ञाता अने निर्वाण पहोंचेला श्री महावीर भगवाने उपर प्रमाणे श्री उत्तराध्ययन सूत्रना छत्रीस अध्ययन प्रकट कर्यां छे जे श्रवण करवाथी भव्य जीव भवसिद्धिने पामे छे. [२७१].*

आ प्रमाणे सुधर्मा स्वामी जंबु स्वामीने कहे छे.

* प्रो. जेकोबी कृत भाषान्तरमां २६७ गाथा छे. सूत्रमां २७२ गाथा छे, पण कोइ स्थळे अनुक्रम आपवामां सरत चूक थयेली छे तेथी कुल गाथा २७१ थाय छे.

श्री उत्तराध्ययनजी सूत्र समाप्त.